र पढ़िये! लेनिन

न० प० कूज़िन,
म० इ० कोन्दाकोव,
प० व० ज़िमीन,
म० न० कोल्माकोवा,
व० इ० लुबोव्स्की,
ग० व० बेरेज़िना,
अ० इ० फ़ोतेयेवा

सोवियत संघ में जन-शिक्षा

1

प्रगति प्रकाशन
मास्को

संपादक – न० प० कुज़िन, म० इ० कोन्दाकोव
अनुवादक – मदनलाल 'मधु'

НАРОДНОЕ ОБРАЗОВАНИЕ В СССР
На языке хинди

विषय-सूची

न० प० कूज़िन

समाजवादी क्रान्ति और जन-शिक्षा

सोवियत शिक्षा-प्रणाली महान अक्तूबर क्रान्ति की सन्तान है। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सोवियत संघ में किये गये क्रान्तिकारी रूप-परिवर्त्तनों का एक सब से महत्त्वपूर्ण परिणाम है – समाजवाद की पूर्ण और निश्चित विजय और व्यापक पैमाने पर कम्युनिज़म के निर्माण की ओर संक्रमण, नये, सोवियत व्यक्ति का पालन-शिक्षण।

सोवियत संघ में उच्च कोटि के उद्योगों की स्थापना हो चुकी है, देहातों में सहकारिता की लेनिन की योजना को सफल व्यावहारिक रूप दिया जा चुका है। सोवियत संघ के शक्तिशाली औद्योगिक राज्य बनने और बड़े पैमाने के समाजवादी कृषि-उत्पादन की स्थापना से नगरों और देहातों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं में वास्तविक क्रान्ति हुई।

मेहनतकशों के मूलभूत हितों की समानता के आधार पर मज़दूर वर्ग और किसानों का सम्बन्ध मज़बूत हुआ, सोवियत संघ की जातियों के अटूट समाजवादी बहनापे ने स्पष्ट रूप धारण किया और जांची-परखी नेत्री – कम्युनिस्ट पार्टी – के गिर्द एकजुट सोवियत जनता की नैतिक-राजनैतिक एकता

क़ायम हुई। समाजवाद ने लोगों को सही अर्थ में ज्ञान-दान किया और समाज के आत्मिक जीवन को अत्यधिक समृद्ध बना दिया।

अर्थतन्त्र के कायाकल्प, समाजवादी सामाजिक सम्बन्धों के विकास और समाजवादी राज्य-व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हुए सांस्कृतिक जीवन के क्षेत्र में क्रमिक ठोस क्रान्ति करना समाजवाद के निर्माण की लेनिनवादी योजना का अभिन्न अंग है।

किसी देश की ऐतिहासिक जातीय विशेषतायें चाहे कुछ भी क्यों न हों और वहां अतीत से विरासत में मिला सांस्कृतिक स्तर कैसा भी क्यों न हो, सांस्कृतिक क्रान्ति हर समाजवादी क्रान्ति का अनिवार्य अंग होती है। हां, हर देश में उसे अमली शक्ल देने के अलग-अलग ढंग हैं, किन्तु उसका सामाजिक सार एक जैसा ही है। वह सार है—समाजवादी संस्कृति को पूंजीवादी संस्कृति का स्थान देना, समाज के समूचे आत्मिक जीवन को पूरी तरह जनवादी बनाना। यह संस्कृति, विज्ञान और कला की सभी उपलब्धियों को जन-सम्पत्ति बनाने, सभी मेहनतकशों के शैक्षणिक और सांस्कृतिक स्तर को निरन्तर ऊंचा उठाने की प्रक्रिया है। नयी, समाजवादी संस्कृति हज़ारों सालों के दौरान मानवजाति की सभी महान उपलब्धियों को अपने में समेट लेती है और मानव के सर्वतोमुखी विकास की असीम सम्भावनायें प्रस्तुत करती है।

सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान सांस्कृतिक लाभों का नगरों और गांवों, मानसिक और शारीरिक श्रमकर्मियों तथा पुरुषों और नारियों में वितरण के मामले में शोषणकारी सामाजिक व्यवस्था द्वारा पैदा की गई सभी तरह की असमानता को दूर किया जाता है। संस्कृति का जातीय रूप प्रत्येक जाति के लिये समाजवादी समाज के आत्मिक जीवन के साझे भण्डार में योगदान करना सम्भव बनाता है। सांस्कृतिक निधियों के स्वतंत्र विनिमय के आधार पर विभिन्न जातियों की संस्कृतियों की पारस्परिक समृद्धि, अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया जारी रहती है।

सांस्कृतिक क्रान्ति का अन्तिम लक्ष्य है—कम्युनिस्ट विचारधारा, उच्च नैतिक आदर्शों से सम्पन्न और मानसिक तथा शारीरिक दृष्टि से सामंजस्यपूर्ण नये मानव का निर्माण। "५० वर्षों के दौरान लोगों के जीवन में आमूल परिवर्त्तन हो गया है,"—महान अक्तूबर क्रान्ति की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के जनरल सेक्रटरी ले० इ० ब्रेज्नेव ने अपने भाषण में कहा था—"हमने एकदम नयी दुनिया रच

डाली है – नये समाजवादी सम्बन्धों की दुनिया, नये, सोवियत व्यक्ति की दुनिया। सोवियत लोगों के आत्मिक क्षितिज का विराट विस्तार हुआ है, उनके नैतिक गुण, श्रम, समाज और एक दूसरे के प्रति उनका रवैया बदल गया है।"

पूंजीवादी प्रेस में इस बात का आग्रहपूर्वक प्रचार किया जा रहा है कि मानो विकसित देशों में किसी तरह की सांस्कृतिक क्रान्ति नहीं हो सकती, क्योंकि वहां उसकी वस्तुगत आवश्यकता नहीं है। बहुत ज़ोर देकर यह कहा जाता है कि जन-सम्पर्क-साधनों (प्रेस, सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन) के विकास, स्कूलों के जाल-विस्तार और मानो अनेक देशों में उच्च वर्गों के लिये अलग शिक्षा-व्यवस्था के उन्मूलन के निर्णायक प्रयासों से सर्वसाधारण और समाज की उच्च श्रेणियों की संस्कृति का अन्तर ख़त्म होता जा रहा है। वैज्ञानिक-प्राविधिक क्रान्ति सारी दुनिया को अपनी लपेट में लेती जा रही है, सामान्य संस्कृति-विस्तार हो रहा है और इस तरह मानो वह सभी की पहुंच के भीतर हो रही है।

आधुनिक समाज में जन-सम्पर्क-साधनों का विकास और जनसाधारण के उच्च शिक्षा-स्तर की मांग निर्विवाद बातें हैं। किन्तु इस से संस्कृति के वैचारिक सार और राजनैतिक स्वरूप में कोई अन्तर नहीं पड़ता। अन्तर्विरोधी समाज में आत्मिक निधियां, शिक्षा और संस्कृति समान रूप से सभी नागरिकों की पहुंच के भीतर नहीं हैं और न हो सकती हैं। वहां उच्च वर्गों के लिये अलग शिक्षा-व्यवस्था का अन्त उत्कृष्ट तथा प्रगतिशील शिक्षाशास्त्रियों और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं का सपना ही है।

पिछले कुछ अर्से में विकसित पूंजीवादी देशों की शिक्षा-प्रणाली में हुए सभी परिवर्त्तनों के बावजूद वहां के स्कूल वर्ग-स्कूल ही हैं। पूंजीवादी देशों के सरकारी स्कूलों तक की असमान आर्थिक स्थिति का तथ्य सर्वविदित है। विशेषाधिकारवाली आबादी के हलकों के स्कूलों का बजट अधिक होता है, उनकी इमारतें बेहतर होती हैं, उनमें शिक्षा-सम्बन्धी आधुनिक साजसामान होता है और वहां अधिक योग्यताप्राप्त अध्यापक होते हैं। उदाहरण के लिये, संयुक्त राज्य अमरीका में धनी नगरोपान्त के एक छात्र पर ग़रीब शहरी हलके के छात्र की तुलना में १० गुना अधिक ख़र्च किया जाता है। सरकारी स्कूलों के साथ-साथ महंगे निजी स्कूलों का अस्तित्व शिक्षा के वर्ग-स्वरूप का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। ब्रिटेन में कुल छात्रों का १०, सं० रा० अमरीका में १२ और जर्मन संघात्मक गणतंत्र में १५ प्रतिशत इन

स्कूलों में शिक्षा पाता है। इन स्कूलों में पढ़ाई का खर्च इतना अधिक है कि केवल बहुत धनी लोग ही अपने बच्चों को वहां पढ़ा सकते हैं। इस सिलसिले में अमरीकी शिक्षाशास्त्री बोलत्सेल का यह कथन सर्वथा न्यायसंगत है कि उनका "उद्देश्य उच्च वर्गों को अन्य वर्गों से अलग करना है"। इन निजी स्कूलों में पूंजीवादी संसार के "कप्तान" तैयार किये जाते हैं। मिसाल के तौर पर आधुनिक ब्रिटेन के ८० प्रतिशत जनरल, ८३ प्रतिशत विशप, ८५ प्रतिशत जज, ६५ प्रतिशत कूटनीतिज्ञ और ६७ प्रतिशत उच्च कर्मचारी इन्हीं निजी स्कूलों से शिक्षाप्राप्त हैं।

तथाकथित मानसिक योग्यता गणक के आधार पर छात्रों का चयन ऐसे ही उद्देश्यों की पूर्ति करता है। यह तो सभी जानते हैं कि ऐसी चयन-विधि न तो वस्तुगत है और न उसका कोई वैज्ञानिक आधार ही है। कुल मिलाकर नतीजा यह होता है कि सम्पत्तिशाली वर्गों के बच्चों को असली तालीम मिलती है और मेहनतकशों के बच्चों के साथ शिक्षा देने का खेल खेला जाता है।

अमरीकी स्कूल की चर्चा करते हुए "न्यूयार्क टाइम्स" (जनवरी १९६८) तक को "शिक्षा-क्षेत्र में धनियों और निर्धनों, कालों और गोरों, सरकारी और निजी, शहरी और नगरोपान्ती स्कूलों के बीच बढ़ती खाई की प्रवृत्ति" पर जोर देना पड़ा।

पूंजीवादी संसार के अन्य देशों में भी ऐसी ही तस्वीर सामने आती है। यह बात उल्लेखनीय है कि जर्मन संघात्मक गणतन्त्र के माध्यमिक स्कूलों में मजदूरों के बच्चों की संख्या कुल छात्र-संख्या का केवल ५ प्रतिशत है। फ़्रांस के माध्यमिक स्कूलों के प्रत्येक दस छात्रों में से आठ उद्योगपतियों और कारोबारी लोगों के बच्चे हैं और मजदूरों के बच्चों की संख्या दो है।

कई पूंजीवादी देशों के स्कूलों में शिक्षा-स्तर के कुछ ऊपर उठाये जाने से स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। मेहनतकशों के अधिकतर बच्चे केवल उसी स्तर की शिक्षा पाते हैं, जो आधुनिक उद्योग के बड़े पैमाने के पेशों के लिये अपेक्षित होती है।

मेहनतकशों के बच्चों को न्यूनतम ज्ञान-दान तक सीमित करने के साथ-साथ पूंजीवादी समाज के कर्णधार युवाजन को अपने विचारधारात्मक सांचे में ढालने के लिये पूरा जोर लगाते हैं। कम्युनिज्म के विरुद्ध संघर्ष-साधन के रूप में वे स्कूलों से बड़ी आशायें रखते हैं। "लोगों के दिमागों के लिये

ज़ोरदार लड़ाई हो रही है," अमरीकी दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री फ० ग्रूबेर ने लिखा है, "कम्युनिज़्म और स्वतन्त्र जगत् का विचारधारात्मक संघर्ष अब कक्षाओं, स्कूलों में चल रहा है, क्योंकि शत्रुओं को जीतने और अपने जीवन-ढंग को शाश्वत बनाने के लिये शिक्षा मानव-निर्मित अत्यधिक शक्तिशाली शस्त्रों में से एक है।"

सामाजिक जीवन की घटनायें और तथ्य पूंजीवादी शिक्षाशास्त्रियों के इन आधारहीन विचारों का पूरी तरह खण्डन करते हैं कि स्कूलों का राजनीति-मुक्त होना और वर्ग-समाज में वर्गहीन शिक्षण सम्भव है। जीवन नयी शक्ति के साथ लेनिन की इस स्थापना की पुष्टि करता है कि वर्गहीन और राजनीति-मुक्त स्कूल की बात झूठ और ढोंग है।

हर देश की जन-शिक्षा-प्रणाली वहां की सांस्कृतिक-ऐतिहासिक परम्पराओं, किन्तु मुख्यतः प्रभुत्वशाली वर्ग की मांगों के अनुसार बनाई जाती है। वर्ग-समाज में शिक्षा-प्रणाली के वर्ग-स्वरूप को हमेशा बहुत साफ़ तौर पर देखा जा सकता है।

सोवियत संघ में मैत्रीपूर्ण वर्गों का समाज है। समाजवाद ने नयी दुनिया के संघर्ष में मज़दूर वर्ग, सामूहिक किसानों और बुद्धिजीवियों के हितों को एक कर दिया है। विज्ञान और संस्कृति की सभी उपलब्धियां प्रगति के शक्तिशाली प्रेरक और सभी की ख़ुशहाली के आधार हैं।

सोवियत संघ में सांस्कृतिक क्रान्ति नीचे उल्लिखित अनेक परिस्थितियों द्वारा पैदा की गयी बहुत बड़ी कठिनाइयों के बीच सम्पन्न की गयी :

सोवियत लोग कम्युनिस्ट समाज के प्रथम निर्माता हैं। वे अनजाने अनदेखे मार्ग पर क़दम बढ़ाते हैं ;

ज़ारशाही रूस से विरासत में मिले आर्थिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन तथा भयानक गरीबी ने विदेशी हस्तक्षेप और गृहयुद्ध के कारण तबाह हो गयी अर्थव्यवस्था के फलस्वरूप और भी गम्भीर रूप धारण कर लिया ;

सोवियत संघ की जातियों ने जब समाजवादी क्रान्ति के पथ पर क़दम बढ़ाया तो वे पितृसत्तात्मक-कबायली व्यवस्था से लेकर आधुनिक पूंजीवाद तक के सामाजिक विकास के विभिन्न स्तरों पर थीं। उनके शिक्षा और संस्कृति-स्तर भी भिन्न थे ;

सोवियत सत्ता की विजय के समय देश के अधिकांश वयस्क लोग निरक्षर थे। इसलिये निरक्षरता का उन्मूलन सोवियत संघ में सांस्कृतिक क्रान्ति की

सबसे जरूरी शर्त बन गया। लेनिन ने स्पष्ट किया कि "निरक्षर देश में कम्युनिस्ट समाज का निर्माण नही हो सकता"।

देश के शत्रुतापूर्ण घेरे और अन्दरूनी उग्र वर्ग-संघर्ष के वातावरण में समाजवाद और समाजवादी संस्कृति का निर्माण किया गया।

सोवियत संघ मे जो महान सामाजिक-आर्थिक और राजनैतिक कायाकल्प हुआ है, सोवियत जन-शिक्षा-प्रणाली उसी का परिणाम है। योग्यता-प्राप्त अध्यापकों और भौतिक साधनों के अत्यधिक अभाव की कठिन परिस्थितियों में राज्य ने नई जन-शिक्षा-प्रणाली की व्यवस्था की जिसने सारी आबादी की साक्षरता, विज्ञान और संस्कृति का द्रुत उत्थान और उगती पीढ़ी का समाजवाद की भावना के अनुरूप पालन-शिक्षण सुनिश्चित किया। पुराने बुद्धिजीवियों के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि जनता की सेवा को आगे आये और समाजवाद के ध्येय के प्रति निष्ठावान नये मजदूर-किसान बुद्धिजीवियों का जन्म हुआ। सोवियत संघ में शिक्षा-क्षेत्र में हुए परिवर्त्तन बहुत ही शानदार हैं और पूर्वाग्रहरहित कोई भी व्यक्ति साफ़ तौर पर यह देख सकता है कि इतने थोड़े समय में दुनिया के किसी भी देश में इतने बढ़िया परिणाम प्राप्त नहीं किये गये हैं। आइये, कुछ तथ्यों की चर्चा हो जाये।

शिक्षा-स्तर की दृष्टि से क्रान्तिपूर्व का रूस यूरोप का एक पिछड़ा हुआ देश था। महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की पूर्ववेला में स्कूल जाने की उम्रवाले ४/५ बच्चे शिक्षा नहीं पा रहे थे। शिक्षा पानेवाले बच्चों में से अधिकतर प्रारम्भिक शिक्षा ही पाते थे। व्ला० इ० लेनिन ने १९१३ में बड़ी कटुता के साथ लिखा था: "ऐसा असभ्य देश, जिसमें शिक्षा, तालीमी रोशनी और ज्ञान की दृष्टि से आम जनता को इतना अधिक लूटा गया हो – रूस के अतिरिक्त यूरोप में एक भी नहीं रह गया है।"

जारशाही रूस में १०० से अधिक जातियां, अल्प जातियां और जातीय दल रहते थे। जारशाही द्वारा गैररूसी जातियों के आर्थिक और जातीय उत्पीड़न के कारण उनमें से अधिकांश निरक्षर रहे। सुदूर उत्तर, उत्तर-पूर्व, मध्य एशिया और जारशाही रूस के कुछ अन्य क्षेत्रों की बहुत सी अल्प जातियों की अपनी लिपियां नहीं थीं। ताजिकिस्तान के ९ से ५० साल तक के लोगों में केवल २.३, किर्गीजिया में ३.१ और तुर्कमनिस्तान में ७.८ प्रतिशत लोग साक्षर थे।

शहरों में एक हजार व्यक्तियों के पीछे प्रारम्भिक से अधिक शिक्षावाले लोगों की संख्या ६१ और देहातों में केवल ३ व्यक्ति थी।

समाजवादी क्रान्ति ने जातियों के सदियों पुराने सांस्कृतिक पिछड़ेपन को दूर करने की परिस्थितियां पैदा कीं। बहुत ही थोड़े अर्से में मेहनतकशों, मुख्यतः उगती पीढ़ी की शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही बड़ा काम किया गया।

गृहयुद्ध और जन-अर्थव्यवस्था की बहाली (१९१७–१९२८) के कठिन वर्षों में भी, जब तबाहहाली को दूर करने और अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिये एक-एक कौड़ी की बचत करनी पड़ रही थी, पूरे देश में, दूरस्थ भागों तक में, नये स्कूल खोले जा रहे थे, छात्रों की संख्या बढ़ रही थी, सर्वसामान्य प्रारम्भिक शिक्षा की ओर संक्रमण करने तथा माध्यमिक शिक्षा के विकास के लिये ज़मीन तैयार हो रही थी। इन वर्षों के दौरान देशव्यापी पैमाने पर वयस्कों को साक्षर बनाने का विशद कार्य किया गया।

१९३० में सर्वसामान्य अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा का क़ानून पास किया गया। इस क़ानून के मुताबिक़ उन सभी बच्चों के लिये चारवर्षीय प्रारम्भिक स्कूल में दाखिल होना लाज़िमी करार दिया गया, जो पहली सितम्बर तक आठ साल के हो गये हों। तीन सालों में ही अर्थात् १९३३ के आरम्भ तक यह कार्यभार सफलतापूर्वक सम्पन्न कर दिया गया था।

पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं (१९२८–१९३७) में अर्थव्यवस्था के द्रुत उत्थान और ज़ोरदार सांस्कृतिक निर्माण ने सामान्य शिक्षा के सभी तरह के स्कूलों के विकास की गति तेज़ कर दी। शहरों और गांवों में माध्यमिक स्कूलों की संख्या बढ़ गयी। प्राविधिक स्कूलों और उच्च विद्यालयों का जाल अधिक विस्तृत हुआ। चौथे दशक के अन्त तक शहरों में सर्वसामान्य सातवर्षीय शिक्षा-प्रणाली मूलतः लागू हो गयी थी और देहातों में भी इस क्षेत्र में बड़ी सफलताएं प्राप्त की गयी थीं। इसी समय तक राजकीय संगठनों और सार्वजनिक हलक़ों के संयुक्त प्रयास से वयस्कों की निरक्षरता को लगभग ख़त्म कर दिया गया था। ५ करोड़ अनपढ़ों और ४ करोड़ कमपढ़ों को पढ़ाया जा चुका था।

तीसरी पंचवर्षीय योजना (१९३८–१९४२) के दौरान शहरों में सर्वसामान्य दसवर्षीय माध्यमिक शिक्षा और देहातों में अनिवार्य सातवर्षीय शिक्षा की ओर संक्रमण को पूरा करने की व्यवस्था की गयी थी।

मगर सोवियत संघ पर फ़ासिस्ट जर्मनी के विश्वासघाती आक्रमण के कारण इन लक्ष्यों को व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सका। जर्मन-फ़ासिस्ट आक्रमकों ने जन-शिक्षा के कार्य को भयानक नुक़सान पहुंचाया। ८२ हज़ार स्कूल बरबाद कर डाले गये, जिनमें पहले १ करोड़ ५० लाख छात्र

शिक्षा पाते थे, ३३४ उच्च शिक्षा-संस्थाओं को तबाह कर दिया गया और बहुत से पुस्तकालय जला डाले गये। अध्यापकगण बहुत बड़ी संख्या में मोर्चों पर मारे गये। लाखों तरुण-तरुणियां स्कूल छोड़कर उद्यमों में काम करने चले गये। किन्तु युद्धोत्तरकाल में जनता के बहुत ही कठोर श्रम की बदौलत अपेक्षाकृत थोड़े अर्से में जर्मनों से मुक्त किये गये क्षेत्रों में स्कूलों का जाल बहाल किया गया और पूरी जन-शिक्षा-प्रणाली बहुत तेजी से विकसित होने लगी।

१६५० में सारे देश में अनिवार्य सातवर्षीय शिक्षा की ओर संक्रमण शुरू हुआ। दो साल बाद यह कार्यभार पूरा कर दिया गया। पनपती पीढ़ी के लिए सर्वसामान्य दसवर्षीय माध्यमिक शिक्षा के कार्यक्रम को अमली शक्ल देने के पथ पर अगला महत्त्वपूर्ण क़दम १६५६ में उठाया गया : सर्वसामान्य आठवर्षीय शिक्षा अनिवार्य घोषित की गई। १६६१ के अंत तक आठवर्षीय शिक्षा की ओर संक्रमण का काम पूरा हो चुका था।

१६७० की अखिल सोवियत संघीय जनगणना के आंकड़े जन-शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त की गयी सफलताओं की गवाही देते हैं। इनके अनुसार ६६.८ प्रतिशत पुरुष और ६६.७ प्रतिशत नारियां साक्षर थीं। सोवियत संघ व्यापक साक्षरता और अत्यधिक शिक्षा-विकास का देश बन गया और उसने दुनिया के अनेक देशों को पीछे छोड़ दिया। तुलना के लिये हम यूनेस्को के आंकड़ों पर नजर डालते हैं। १६६६ में विकसित पूंजीवादी देशों में १४ साल से ऊपर की उम्रवालों में निरक्षरों का प्रतिशत सं० रा० अमरीका में २.५, फ़ांस में ३.६ और इटली में ८.४ था। जहां तक कुछ ही समय पहले औपनिवेशिक जुए से मुक्त हुए विकासशील देशों का सम्बन्ध है, तो वहां तो उपनिवेशवादियों की "सभ्यकारी भूमिका" के परिणाम शिक्षा-क्षेत्र में विशेषकर बहुत स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। १५ साल से अधिक उम्रवालों में भारत में ७२.२ प्रतिशत, मिस्र अरब गणराज्य में ८०.५, पाकिस्तान में ८१.५, मोरक्को में ८६.८, और लीबिया में ८७.१ प्रतिशत लोग निरक्षर थे।

सोवियत संघ के स्कूलों में हमारे देश की जातियों की ५७ भाषाओं में शिक्षा दी जाती है। ४० से अधिक अल्प जातियों ने सोवियत सत्ताकाल में ही पहली बार अपनी लिपियां बनायीं। हर नागरिक के लिये किसी भी भाषा में बोलने और अपने बच्चों का किसी भी भाषा में पालन-शिक्षण करने का अधिकार सुनिश्चित है। किसी भी भाषा के उपयोग के लिये

किसी भी तरह के विशेषाधिकार, बन्दिशें या दबाव नहीं हैं। सोवियत संघ में जातियों की भ्रातृत्वपूर्ण मैत्री और पारस्परिक विश्वास की परिस्थितियों में समानाधिकार तथा आपसी समृद्धि के आधार पर जातीय भाषाओं का विकास होता है।

संघीय जनतन्त्रों के स्कूलों में मातृभाषा के साथ-साथ पूर्ण स्वैच्छिक आधार पर रूसी भाषा भी सिखाई जाती है। इससे अनुभव के पारस्परिक आदान-प्रदान और हर जाति तथा अल्प जाति को सभी अन्य जातियों की सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा विश्व संस्कृति के सम्पर्क में आने की दृष्टि से मदद मिलती है। रूसी भाषा वास्तव में सोवियत संघ की सभी जातियों के लिये अन्तरजातीय सम्पर्क और सहयोग की भाषा बन गयी है।

सोवियत संघ में लेनिनवादी जातीय नीति को अडिग रूप से अमली शक्ल देने के परिणामस्वरूप समाजवादी जातियां वास्तविक समृद्धि की ओर बढ़ रही हैं। २४ वीं पार्टी कांग्रेस में ले० इ० ब्रेज्नेव ने इसी बात पर जोर देकर कहा है कि "समाजवादी निर्माण के सालों में हमारे देश में **लोगों के एक नये ऐतिहासिक साझेपन ने जन्म लिया है जिसका नाम है सोवियत जनता**"। सोवियत संघ की सभी जातियां साझे जीवन-हितों से एक परिवार के रूप में सूत्रबद्ध हैं और मिलकर एक ही लक्ष्य – कम्युनिज़्म – की ओर बढ़ रही हैं। विभिन्न जातियों के सोवियत लोगों के समान आत्मिक गुण बने हैं, जो नये सामाजिक सम्बन्धों से पैदा हुए हैं और जिन्होंने सोवियत संघ की जातियों की सर्वश्रेष्ठ परम्पराओं को अपने में जज्ब कर लिया है। इसमें समूची सोवियत शिक्षा-प्रणाली और सर्वप्रथम स्कूल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

यह सब कुछ पूंजीवादी संसार में विद्यमान व्यवस्था से कितना भिन्न है, जहां सामाजिक सम्बन्धों और शिक्षा-क्षेत्र में जातीय और नसली भेदभाव सामाजिक जीवन का विशेष लक्षण है। उदाहरण के लिये सं० रा० अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय ने १९५४ में ही स्कूलों में नसली अलगाव के अन्त का निर्णय स्वीकार कर लिया था। किन्तु अभी तक दक्षिणी राज्यों के उन स्कूलों में जहां गोरे बच्चे पढ़ते हैं, नीग्रो लोगों के बहुत ही कम बच्चों को शिक्षा पाने की सम्भावना मिली है। यहां तक कि न्यूयार्क में भी गोरों-कालों की शर्मनाक अलग-अलग शिक्षा का प्रचलन है। सं० रा० अमरीका के प्रेस के कुछ आंकड़ों के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में पृथक स्कूलों में

पढ़नेवाले नीग्रो बालकों की संख्या बढ़ गयी है। १९५४ में यदि ऐसे स्कूलों में २२ लाख बच्चे पढ़ते थे, तो १९६७ में उनकी संख्या २५ लाख थी। इस बात को सरकारी तौर पर स्वीकार किया गया है कि "अमरीका में पैदा हुए नीग्रो बालक के लिये, उसी दिन और उसी स्थान पर पैदा हुए गोरे बालक की तुलना में माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने की लगभग आधी, कालेज ख़त्म करने या किसी पेशे में निपुण होने की एक-तिहाई और बेरोजगार रहने की दुगुनी सम्भावना होती है।"

सोवियत संघ में जन-शिक्षा के विकास के कुछ अन्य तुलनात्मक आंकड़े हम यहां प्रस्तुत करते हैं।

क्रान्तिपूर्व रूस के सभी तरह के सामान्य शिक्षा के स्कूलों में छात्रों की संख्या १ करोड़ से कम थी, जबकि १९७० में इनकी संख्या ४ करोड़ ९० लाख से अधिक थी। जारशाही रूस की उच्च शिक्षा-संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या १ लाख २७ हजार थी, जबकि १९७० में सोवियत विद्यार्थियों की संख्या ४६ लाख थी। क्रान्तिपूर्व के रूस में कुशल मजदूर तैयार करने की राजकीय व्यवस्था नहीं थी। सोवियत संघ में व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों का जाल काफ़ी विस्तृत है। केवल १९७० में ही व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा के विद्यालयों ने लगभग १६ लाख कुशल युवा मज़दूर तैयार किये।

संघीय जनतंत्रों में जन-शिक्षा की सफलतायें विशेषत: आश्चर्यचकित करनेवाली हैं। उदाहरणार्थ क्रान्ति के पहले किर्गीज़िया की छात्र-संख्या ७ हज़ार थी और १९६८—१९६९ में ७ लाख २३ हजार। इसी अवधि में ताजिकिस्तान के आंकड़े क्रमश: ४०० और ६ लाख ९९ हज़ार थे। कज़ाख़ सोवियत समाजवादी जनतंत्र में अब क्रान्तिपूर्व की छात्र-संख्या की तुलना में अध्यापक-संख्या ही २० गुनी (१ लाख ४० हज़ार) है।

भारत के एक यात्री ने उज्बेकिस्तान की यात्रा के बाद यह लिखा—"आंकड़ों से परिचित होने पर इस बात का विश्वास हो जाता है कि उज्बेकिस्तान ने वास्तव में ही कल्पनातीत छलांग लगायी है। इस विकास का एक सब से आश्चर्यजनक पहलू है—उज्बेक और रूसी भाषाओं में शिक्षा की प्रणाली। यहां तो सबसे पहले निरक्षरता का उन्मूलन करने की ही जरूरत थी। १९१४ में प्रारंभिक स्कूलों की छात्र-संख्या १७ हज़ार थी। १९३० में वह ३ लाख ५० हज़ार से अधिक हो गयी। इस वक़्त उज्बेकिस्तान में ६८०० स्कूल हैं, जिनमें २५ लाख से अधिक छात्र शिक्षा

पाते हैं। वहां दो विश्वविद्यालय, ३२ उच्च विद्यालय और १०५ प्राविधिक स्कूल हैं और उनकी विद्यार्थी-संख्या २ लाख ८० हजार है।"

अक्तूबर क्रान्ति के पहले बेलोरूस की ८२ प्रतिशत आबादी अपढ़ थी। सोवियत सत्ताकाल में बेलोरूस न केवल पूर्ण साक्षरता का जनतन्त्र बन गया, बल्कि उच्च शिक्षा-स्तर की दृष्टि से कभी का अनेक विकसित पूंजीवादी देशों से बाजी मार चुका है।

इस समय उक्रइना में हर दूसरा मजदूर और हर तीसरा सामूहिक किसान माध्यमिक या उच्च शिक्षाप्राप्त है।

हमारे देश के उन क्षेत्रों से सम्बन्धित आंकड़े भी कुछ कम दिलचस्प नहीं हैं, जहां अक्तूबर क्रान्ति के पहले प्रारम्भिक शिक्षा का काफ़ी प्रचार था। मसलन १९१३ में एस्तोनिया की छात्र-संख्या ९२ हजार थी, जबकि इस समय २ लाख १५ हजार है; लिथुआनिया में १ लाख १८ हजार थी और अब ५ लाख ९२ हजार है। बात सिर्फ़ संख्या-वृद्धि की ही नहीं है। सोवियत सत्ताकाल में शिक्षा में मूलभूत गुणगत परिवर्तन भी हुए हैं। क्रान्तिपूर्व, मेहनतकशों के बच्चों को अधिक से अधिक प्रारम्भिक शिक्षा मिलती थी। सोवियत सत्ताकाल में उनके लिये माध्यमिक, विशेष माध्यमिक और उच्च शिक्षा-संस्थाओं के दरवाजे पूरी तरह खुले हुए हैं।

पूंजीवादी लिथुआनिया में ७५ हजार निवासियों के पीछे एक माध्यमिक स्कूल था और हर १० हजार लोगों के पीछे १६ विद्यार्थी थे। इस समय हर १० हजार लोगों के पीछे सामान्य और विशेष स्कूलों में शिक्षा पानेवाले छात्रों की संख्या २ हजार है और उच्च शिक्षा-संस्थाओं के विद्यार्थियों की संख्या १७० है, जो आस्ट्रिया की तुलना में ३ गुनी, फ़्रांस की तुलना में २.५ गुनी और पश्चिमी जर्मनी की तुलना में ३.५ गुनी है।

सोवियत संघ में नारी को जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष के बराबर अधिकार प्राप्त है। हां, इस अधिकार की सिर्फ़ घोषणा ही नहीं की गयी, बल्कि उसे वास्तव में सुनिश्चित किया गया है। शिक्षा-प्राप्ति की समान सम्भावनायें नारियों और पुरुषों की सामाजिक समानता का एक ज्वलन्त उदाहरण है। सोवियत संघ में काम करनेवाले पुरुषों और नारियों का शिक्षा-स्तर लगभग समान है।

१८९७ की अखिल रूसी जनगणना के अनुसार ९ साल से ४९ साल तक की उम्रवाली बालिकाओं-नारियों में केवल १७ प्रतिशत साक्षर थीं। १९७० में ९९.७ प्रतिशत नारियां साक्षर थीं। १९७० में काम करनेवाली

एक हज़ार नारियों में ६५१ उच्च और माध्यमिक (पूर्ण और अपूर्ण) शिक्षाप्राप्त थीं।

पूर्वी क्षेत्रों की नारियों के जीवन में हुआ परिवर्तन हमारे देश के सामाजिक और सांस्कृतिक कायाकल्प का एक बहुत ही उज्ज्वल प्रमाण प्रस्तुत करता है। जनगणना के आंकड़ों के अनुसार सोवियत सत्ता के पहले सालों में हर १०० क़ज़ाख़ और उज़्बेक नारियों में से केवल एक साक्षर थी। अब सिर्फ़ इतना ही नहीं कि सभी कज़ाख़ और उज़्बेक नारियां साक्षर हैं, बल्कि यह कि उनमें से अधिकांश माध्यमिक और उच्च शिक्षाप्राप्त हैं।

इन जनतन्त्रों की लाखों नारियां उद्योग और कृषि में काम करती हैं, उनमें से अनेक जन-अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण क्षेत्रों का संचालन भार सम्भाले हुए हैं।

सोवियत संघ में इस बात की पूरी कोशिश की जाती है कि मज़दूर और किसान विस्तृत अर्थ में सुशिक्षित हो जायें, कि जनसाधारण भौतिक और आत्मिक जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा तथा क्षमताओं का विकास कर सकें।

विभिन्न प्रकार की शिक्षा के विकास ने कुल आबादी को सुसंस्कृत और सुशिक्षित बनाने में बड़ा योग दिया है। १९७० में सोवियत संघ में ७ करोड़ ९० लाख लोग तरह-तरह की तालीम पा रहे थे। इसका मतलब यह है कि हमारे देश का हर तीसरा आदमी पढ़ रहा था। १९१३ में अगर रूस में केवल २ लाख ९० हज़ार व्यक्ति उच्च, अपूर्ण उच्च और विशेष माध्यमिक शिक्षाप्राप्त थे, तो १९७० में सोवियत संघ में उनकी संख्या २ करोड़ ४३ लाख थी। देहाती आबादी का शिक्षा-स्तर विशेषतः बहुत ऊंचा हुआ है। १९७० के अन्त के आंकड़ों के अनुसार गांव में काम करनेवाली आबादी का आधे से अधिक भाग माध्यमिक (पूर्ण और अपूर्ण) तथा उच्च शिक्षाप्राप्त है।

एक अन्य तुलना भी दिलचस्प है। जैसा कि सर्वविदित है, दुनिया में ३ अरब से अधिक लोग रहते हैं, उनमें से लगभग २४ करोड़ ४० लाख यानी कुल का लगभग बारहवां भाग सोवियत संघ में रहता है। मगर दुनिया में प्रकाशित होनेवाली हर चौथी किताब सोवियत है, हर चौथा विद्यार्थी सोवियत है, हर चौथा वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता सोवियत विद्वान है और हर चौथा डाक्टर सोवियत है।

सोवियत जन-शिक्षा-प्रणाली जिन सिद्धान्तों पर ग्राधारित है, उनका क्रान्ति के पहले वर्षों में निरूपण हुग्रा ग्रौर उन्हें ग्रडिग रूप मे ग्रमली शक्ल दी जा रही है। उनका सार क्या है?

सबसे पहले तो यह है युक्तिसंगत ग्रौर पूर्ण जनवाद, लिंग, नसल, जातीयता ग्रौर ग्रार्थिक स्थिति के भेदभाव के बिना सभी नागरिकों के लिये उच्च शिक्षा पाने तक की ग्रौपचारिक नहीं, बल्कि वास्तविक समान सम्भावना।

सोवियत शिक्षा-प्रणाली का सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है – शिक्षा के सभी रूपों ग्रौर ग्रवस्थाग्रों की एकता ग्रौर उनकी क्रमिक ग्रनुगमनता। सभी संघीय जनतंत्रों के लिये स्कूलों, विशेष माध्यमिक ग्रौर उच्च शिक्षा-संस्थाग्रों की एकीकृत प्रणाली है। यहां ऐसे "गतिरोधक" स्कूल नहीं हैं, जो शिक्षा की ग्रगली ग्रवस्था में प्रवेश करने में बाधक हों। छात्र किसी भी तरह की रुकावट के बिना प्रारम्भिक स्कूल की पढ़ाई ख़त्म कर ग्रपूर्ण माध्यमिक स्कूलों (ग्राठवर्षीय) में ग्रौर ग्राठवर्षीय स्कूल के बाद सामान्य माध्यमिक, विशेष माध्यमिक स्कूल या व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालय में पहुंचते हैं ग्रौर सभी प्रकार के माध्यमिक स्कूलों की पढ़ाई समाप्त कर उच्च शिक्षा-संस्थाग्रों में प्रवेश पाते हैं। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि सभी माध्यमिक स्कूलों में पढ़ाई के कार्यक्रम तथा ग्रवधि एक जैसे ही हैं। मातृभाषा ग्रौर साहित्य, जातीय स्कूल में रूसी भाषा, जनतन्त्र के इतिहास ग्रौर भूगोल जैसे विषयों के मामले में प्रत्येक संघीय जनतन्त्र के ग्रपने पाठ्यक्रम हैं। संघीय सरकार की ग्रनुमति से संघीय जनतन्त्र स्कूलों में ग्रपनी शिक्षा-ग्रवधि निर्धारित करने का भी ग्रधिकार रखते हैं। उदाहरण के लिये बाल्टिक सागर के तटवर्ती सोवियत समाजवादी जनतन्त्रों (लिथुग्रानिया, लाटविया, एस्तोनिया) के जातीय माध्यमिक स्कूल देश के ग्रन्य जनतन्त्रों की भांति दसवर्षीय नहीं, बल्कि ग्यारहवर्षीय हैं।

इसके साथ ही सभी तरह के स्कूलों में सभी छात्रों के लिये एक ही जैसा ग्रौर काफ़ी ऊंचा शिक्षा-स्तर सुनिश्चित है। कारण कि सामान्य शिक्षा के ऐसे विस्तृत ग्राधार पर ही युवाजन की प्रतिभा का प्रकट ग्रौर विकसित होना सम्भव है। इसके ग्रलावा माध्यमिक ग्रौर उच्च श्रेणियों में छात्रों की पसन्द के मुताबिक स्वैच्छिक पढ़ाई की भी व्यवस्था की जाती है। इसका उद्देश्य विज्ञान या कला प्रविधि ग्रौर व्यावहारिक कुशलता के क्षेत्र में छात्रों के व्यक्तिगत रुझानों ग्रौर दिलचस्पियों को ग्रधिक ग्रच्छी तरह पूरा

करने की सम्भावनायें देना है। किन्तु अनिवार्य शिक्षा ही ऐसे पाठ्यक्रमों के अनुसार होती है, जिन पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लेने से स्वैच्छिक पढ़ाई के बिना ही छात्र किसी भी तरह की शिक्षा की उच्च सीढ़ी पर चढ़ सकते हैं। गणित का गहन ज्ञान प्राप्त करनेवाले तरुण-तरुणियां किसी भी तरह की औपचारिक बाधाओं के बिना भाषाशास्त्र, इतिहास तथा किसी अन्य विभाग में प्रवेश पा सकते हैं और इसी तरह इसके उलट भाषा और साहित्य की अधिक गहरी जानकारी पानेवाले युवाजन किसी भी तरह की रुकावट के बिना, मसलन, भौतिकी-गणित की विशेष उच्च शिक्षा-संस्था, में दाख़िल हो सकते हैं, बशर्ते कि वे ऐसा चाहें और इसके लिये उन्होंने पर्याप्त तैयारी की हो।

सोवियत संघ की सभी शिक्षा-संस्थाओं में – ज़ाहिर है कि, सैनिक संस्थाओं को छोड़कर – सह-शिक्षा है। नारियों को क़ानूनी तौर पर, और वास्तव में भी पुरुषों के समान शिक्षा पाने के अधिकार और अवसर प्राप्त हैं। हमारे देश की उच्च शिक्षा-संस्थाओं में नारियां कुल विद्यार्थी-संख्या का ४७ प्रतिशत हैं। माध्यमिक स्कूलों और विशेष माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओं की ऊंची श्रेणियों में तो तरुणियों की संख्या तरुणों से कुछ अधिक (५४ प्रतिशत) ही है।

सोवियत सत्ता की एक पहली आज्ञप्ति धर्म को राज्य और स्कूल को धर्म से अलग करने के बारे में थी। इस तरह धर्म-मुक्त शिक्षा को क्रमगत व्यावहारिक रूप देने की नींव रखी गयी। धर्म-सेवक तैयार करनेवाले विद्यालय राजकीय शिक्षा-प्रणाली में शामिल नहीं हैं। वे धर्मानुयायियों के ख़र्च पर चलाये जाते हैं।

सभी राजकीय शिक्षा-संस्थाओं में भौतिक दर्शनशास्त्र के आधार पर शिक्षा दी जाती है और वह सभी तरह के धार्मिक पूर्वाग्रहों और अन्धविश्वासों को दूर करने की ओर लक्षित है।

सर्वसामान्य और अनिवार्य शिक्षा के सामान्य जनवादी सिद्धान्तों को अडिग रूप से व्यावहारिक शक्ल दी जा रही है। साथ ही सभी बच्चों के लिये अनिवार्य शिक्षा की सीढ़ी धीरे-धीरे ऊंची की जा रही है। १९५८ तक सातवर्षीय शिक्षा अनिवार्य थी, अब आठवर्षीय शिक्षा अनिवार्य है तथा इन दिनों देश अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा (अर्थात् १० वर्षीय पढ़ाई) की ओर संक्रमण के कार्य को पूरा कर रहा है।

सोवियत संघ के संविधान में नागरिकों के शिक्षा-अधिकार को स्वीकार

किया गया है और निम्न से उच्चतम शिक्षा-संस्थाओं की निःशुल्क पढ़ाई, व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों, विशेष माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा-संस्थाओं के विद्यार्थियों को सरकारी वजीफ़े देने की विधि, अनेक बच्चोंवाले परिवारों और अनाथ बालकों के लिये राजकीय तथा सार्वजनिक संस्थाओं की विधिवत आर्थिक सहायता, स्कूलों में मातृभाषा में पढ़ाई, कारखानों, राजकीय और सामूहिक फ़ार्मों में मेहनतकशों को उत्पादन प्रविधि और कृषि-सम्बन्धी निःशुल्क प्रशिक्षण देने की व्यवस्था द्वारा सुनिश्चित किया गया है।

सर्वसामान्य शिक्षा को वास्तविक और पूर्ण व्यावहारिक रूप देने के हेतु स्कूलों से दूरी पर स्थित स्थानों के बच्चों को स्कूल पहुंचाने के लिये मुफ़्त सवारी, मुफ़्त या रियायती भोजन का प्रबन्ध किया जाता है। कम आबादी या कठोर जलवायुवाले इलाकों में, जैसे कि उत्तरी इलाक़ों, कुछ पहाड़ी स्थानों और चरागाहों के अधिकतर बच्चों का पूरा ख़र्च राज्य बर्दाश्त करता है।

सोवियत संघ में सभी शिक्षा-संस्थायें राजकीय हैं, राजकीय ख़र्च पर चलायी जाती हैं और जन-अर्थव्यवस्था तथा लोगों की जरूरतों को यथासम्भव ध्यान में रखते हुए राजकीय योजनानुसार उनका विकास किया जाता है। सोवियत संघ में सारी जनता स्कूल की चिंता करती है। सोवियत लोगों के लिये स्कूल, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की चिन्ता हर दिन की बात हो गयी है, उनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है।

सोवियत शिक्षा-प्रणाली से परिचित होनेवाले अनेक विदेशी शिक्षा-विशेषज्ञों ने स्कूल, शिक्षा और अध्यापक के प्रति सभी सोवियत लोगों के चिन्ताशील और अत्यधिक सम्मानपूर्ण रवैये पर जोर दिया है।

उदाहरण के लिये सोवियत संघ की यात्रा के बाद सं० रा० अमरीका के एक अध्यापक-प्रतिनिधिमण्डल के नेता देरतिक ने ये विचार प्रकट किये – "हम तो यह सोच भी नहीं सकते थे कि एक राज्य के नाते सोवियत संघ ने राष्ट्रीय प्रगति के साधन के रूप में शिक्षा के लिये अपने को किस हद तक समर्पित कर दिया है। जहां कहीं भी हम गये, सभी जगह हमें शिक्षा के ध्येय के प्रति केवल अनुराग के लक्षण ही दिखाई दिये। इसलिये हम तो आश्चर्यचकित ही रह गये।"

"अगर मुझ से यह पूछा जाये," "ब्रिटेनिका" विश्वकोश के प्रकाशक और अध्यक्ष विलियम बेन्टोन ने अपनी पुस्तक "सोवियत संघ में शिक्षक

ग्रौर शिक्षा" में लिखा है, "कि क्या सोवियत संघ में शिक्षा की ग्रच्छी व्यवस्था है? तो मेरा जवाब होगा – हां, वह वास्तव में ही ग्रच्छी है ग्रौर ग्रधिकाधिक ग्रच्छी होती जा रही है... सोवियत शिक्षा की प्रगति ग्रमरीका द्वारा हर लड़के ग्रौर हर लड़की के लिये, उनमें से प्रत्येक, जिसके योग्य है, उच्चतम शिक्षा-स्तर पाने की समान सम्भावना पैदा करने के स्वप्न के सम्मुख चुनौती प्रस्तुत करती है। सोवियत स्कूल में शिक्षा की गहनता इतनी ग्रधिक है कि दसवर्षीय स्कूल की पढ़ाई समाप्त करनेवालों की विभिन्न विषयों की जानकारी, जिन में कठिन विषय भी शामिल हैं, १२ वर्षीय माध्यमिक ग्रमरीकी स्कूल के ज्ञान-स्तर के कम से कम बराबर ग्रौर सम्भवतः कुछ ग्रधिक ही है... सोवियत दसवर्षीय स्कूल के ग्रौसत छात्र ग्रमरीकी माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई समाप्त करनेवाले ग्रधिकांश छात्रों की तुलना में ग्रधिक रसायन, भौतिकी, जैविकी ग्रौर गणित पढ़ते हैं। इतना ही नहीं, सातवर्षीय सोवियत स्कूलों की पढ़ाई ख़त्म करनेवाले भी ग्रमरीकी माध्यमिक स्कूल समाप्त करनेवाले ग्रधिकांश छात्रों के मुक़ाबले में ज्यादा जानकारी प्राप्त करते हैं। ऐसा ग्रन्तर ग्रमरीकी शिक्षा-प्रणाली ग्रौर उसके स्तर के लिये बहुत बड़ी चुनौती पेश करता है।"

सोवियत संघ में इस समय विद्यमान जन-शिक्षा-प्रणाली के ढांचे को निम्न तालिका के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। (देखिये पूरक नं० १)।

इस ढांचे की पहली कड़ी है – स्कूलपूर्व की बाल-संस्थायें – शिशुसदन ग्रौर बालोद्यान ग्रथवा मिश्रित शिशुसदन-बालोद्यान संस्थायें, जिन में (मां-बाप की इच्छा होने पर) दो-तीन महीने की ग्रायु से सात साल तक के बच्चों का पालन-शिक्षण किया जाता है।

स्कूलपूर्व की संस्थायें पालन-शिक्षण की दृष्टि से बहुत महत्त्व रखती हैं ग्रौर जन-ग्रर्थव्यवस्था तथा समाज के लिये बहुत ही जरूरी कार्य सम्पन्न करती हैं। वे नारियों को उत्पादन में भाग लेने, ग्रपना शिक्षा-स्तर ऊंचा करने तथा देश के सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भाग लेने की विस्तृत सम्भावनाएं सुनिश्चित करती हैं।

सोवियत शिक्षा-प्रणाली का मूलाधार है – सामान्य शिक्षा का श्रमगत पोलीटेक्निकल माध्यमिक स्कूल। यह स्कूल छात्रों को सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करता है, उनका कम्युनिस्ट दृष्टिकोण बनाता है ग्रौर उनका सर्वतोमुखी विकास सुनिश्चित करता है। स्कूल युवाजन को जीवन,

सोवियत संघ में जन-शिक्षा का ढांचा
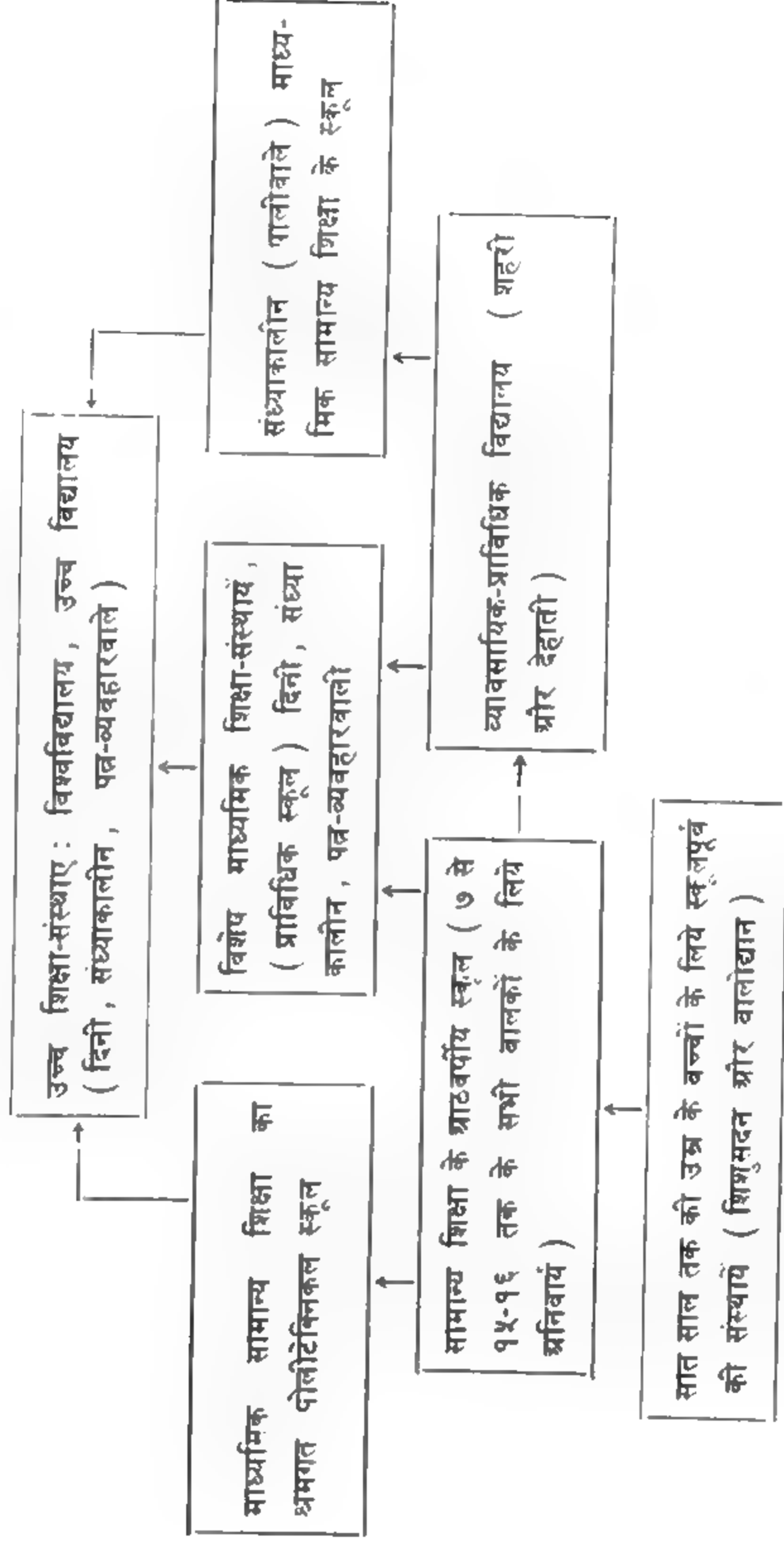
समाजोपयोगी श्रम, पेशे के सजग चुनाव और आगे शिक्षा जारी रखने के लिये तैयार करता है।

माध्यमिक स्कूलों में बच्चे ७ साल से लेकर १७-१८ साल की उम्र तक पढ़ते हैं। संगठन की दृष्टि से उसे तीन भागों—प्रारम्भिक (१ से ३ श्रेणी तक), अपूर्ण माध्यमिक (४ से ८ श्रेणी तक) और पूर्ण माध्यमिक (९-१० या ११ श्रेणियां) में बांटा जाता है। माध्यमिक स्कूल में तीनों भाग और आठवर्षीय स्कूल में पहले दो भाग शामिल हैं। स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भिक श्रेणियां भी स्वावलम्बी स्कूल हो सकती हैं। देहातों में, जहां थोड़ी थोड़ी आबादीवाले बहुत-से स्थान बिखरे हुए हों, इस चीज़ का बहुत महत्व है। प्रारम्भिक स्कूल को समाप्त कर छात्र निकटतम आठवर्षीय या दसवर्षीय स्कूल में अनिवार्य रूप से दाखिल हो जाते हैं। १९७०—१९७१ में हमारे देश में १ लाख ९० हज़ार से अधिक सामान्य शिक्षावाले स्कूल थे, जिनकी छात्र-संख्या ४ करोड़ ९४ लाख थी। नगर और गांव के प्रारम्भिक, अपूर्ण माध्यमिक और माध्यमिक स्कूल में एक जैसा ज्ञान दिया जाता है। इसलिये सोवियत संघ के सारे क्षेत्र में एक स्कूल से दूसरे स्कूल में (उसी श्रेणी में) किसी भी प्रकार की बाधा के बिना जाना सम्भव है।

इस समय हमारे देश में आठवर्षीय शिक्षा समाप्त करनेवाले लगभग ८० प्रतिशत छात्र इसके बाद पूर्ण माध्यमिक शिक्षा पाते हैं। यह प्रतिशत हर साल बढ़ता जायेगा। सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा की ओर संक्रमण का कम्युनिज़्म के निर्माण की मूलभूत समस्याओं—नगर और गांव, मानसिक और शारीरिक श्रम के अन्तरों का क्रमिक अन्त—के समाधान की दृष्टि से बहुत महत्त्व है।

सोवियत संघ में किस-किस तरह से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की जा सकती है?

आठवर्षीय शिक्षा समाप्त करने के बाद अधिकतर छात्र सामान्य शिक्षा के माध्यमिक स्कूलों के अगले दर्जों ९-१० (११) में पढ़ाई जारी रखते हैं। तरुणों का एक भाग (१०-१२ प्रतिशत) विशेष माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओं में दाखिल हो जाता है, जहां ३-४ साल के दौरान ये लोग सामान्य माध्यमिक और व्यावसायिक शिक्षा पाते हैं। आठवर्षीय शिक्षा समाप्त करनेवालों का १५ प्रतिशत से अधिक भाग व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों में प्रवेश करता है, जहां जन-अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं

के लिये योग्यताप्राप्त कर्मी तैयार किये जाते हैं। ऐसी संस्थाओं का शिक्षा-काल एक से तीन-चार साल तक होता है। ३-४ साल के शिक्षा-काल वाले व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों की संख्या, जहां भावी कर्मी सामान्य माध्यमिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षण भी पाते हैं, हर साल बढ़ती जाती है। १९७५ तक इन विद्यालयों में प्रतिवर्ष ३-४ लाख किशोर दाखिल होने लगेंगे।

अपेक्षाकृत संक्षिप्त शिक्षा-काल के व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों की पढ़ाई समाप्त करनेवाले और इसी भांति जन-अर्थव्यवस्था में काम करने और किसी कारण पहले माध्यमिक शिक्षा न प्राप्त कर सकनेवाले युवाजन के लिये सन्ध्याकालीन (या काम के समय के मुताबिक़ पालीवाले) या पत्र-व्यवहारवाले सामान्य माध्यमिक शिक्षा के स्कूल क़ायम किये गये हैं। आम स्कूलों के मुक़ाबले इन में शिक्षा-काल एक साल अधिक है। १९६८-१९६९ के शिक्षावर्ष में सामान्य माध्यमिक शिक्षा पूरी करनेवालों में २३ प्रतिशत काम करनेवाले युवाजन थे, जिन्होंने संध्याकालीन (पालीवाले) स्कूलों की पढ़ाई ख़त्म की थी। उच्च शिक्षा-संस्थाओं में आगे पढ़ाई जारी रखने की दृष्टि से सामान्य माध्यमिक स्कूलों, संध्याकालीन (पालीवाले) और पत्र-व्यवहारवाले तथा विशेष माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओं की शिक्षा समाप्त करनेवालों के क़ानूनी अधिकार समान हैं। इसमें सोवियत शिक्षा-प्रणाली का सुसंगत जनवाद और एकरूपता व्यक्त होती है।

सोवियत संघ में सामान्य माध्यमिक शिक्षा के आम स्कूलों के अलावा कुछ विशेष स्कूल भी हैं। इन में संगीत, नृत्य और अन्य ललित कलाओं की विशेष योग्यता रखनेवाले बच्चों के, और इसी भांति, विदेशी भाषाओं की अधिक अच्छी तैयारी करानेवाले माध्यमिक स्कूल शामिल हैं।

ऐसे स्कूल और माध्यमिक स्कूलों में कुछ ऐसे दर्जे संगठित किये गये हैं, जिनमें गणित, भौतिकी, रसायन और जैविकी का अधिक गहन अध्ययन होता है। इन सभी स्कूलों में अन्य सभी विषयों की आवश्यक जानकारी भी प्रदान की जाती है और इस तरह इच्छा होने पर कोई भी छात्र विशेष स्कूल की किसी भी कक्षा से सामान्य स्कूल की उसी कक्षा में जा सकता है। ये चुने हुए या दिमागी तौर पर श्रेष्ठ बच्चों के नहीं, बल्कि ऐसे बच्चों के स्कूल हैं, जो ज्ञान की किसी शाखा में पर्याप्त गहरी रुचि और क्षमता व्यक्त करते हैं। इन स्कूलों में विस्तृत जनवादी आधार पर छात्रों को दाखिल किया जाता है। ऐसी विशेष योग्यतावाले छात्रों को चुनने का एक

तरीक़ा है – तरुणों के लिये गणित, भौतिकशास्त्र, रसायन, जैविकी, इतिहास और साहित्य की वार्षिक देशव्यापी प्रतियोगितायें। इस तरीक़े ने अपनी उपयोगिता पूरी तरह सिद्ध कर दी है। इन प्रतियोगिताओं में लाखों छात्र उत्साह से भाग लेते हैं। ऐसी प्रतियोगिताओं में सफलता का मतलब होता है – विशेष स्कूल में दाखिल होने की सिफ़ारिश। मगर मुख्य चीज़ होती है – स्कूल में दाखिल होने के इच्छुकों के साथ अध्यापकों की बातचीत। यह बातचीत परीक्षा नहीं होती। यह बातचीत खुले और बड़े बेतकल्लुफ़ ढंग से होती है और किशोरों की दिलचस्पियों तथा रुझानों को अधिक अच्छी तरह से स्पष्ट करने में मदद देती हैं।

सोवियत संघ में मानसिक या शारीरिक दोषवाले बच्चों के लिये सामान्य शिक्षा के विशेष स्कूल भी हैं। इन स्कूलों के छात्रों के लिये अधिकतम सम्भव सामान्य शिक्षा (माध्यमिक तक) और साथ ही आवश्यक व्यावसायिक तैयारी की व्यवस्था की जाती है।

यतीम और विभिन्न कारणों से माता-पिता की देखरेख से वंचित या परिवार में पालन-शिक्षण की अनुकूल परिस्थितियां न पानेवाले बच्चों की विशेष चिन्ता की जाती है। उनका सारा खर्च राज्य देता है और, नियमतः, प्रत्येक के लिये सामान्य शिक्षा के छात्रावास स्कूल में माध्यमिक शिक्षा सुनिश्चित करता है। सोवियत संघ के छात्रावास स्कूल सुसंगठित, सुनियोजित और आवश्यक साजसामान से अच्छी तरह लैस शिक्षा-संस्थायें हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, आठवीं कक्षा की पढ़ाई समाप्त करने पर किशोर व्यावसायिक-प्राविधिक स्कूल में प्रारम्भिक व्यावसायिक शिक्षा और ३-४ साल की शिक्षा-कालवाली विशेष शिक्षा-संस्थाओं में माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा पाते हैं।

सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले प्राविधिक विद्यालयों तथा व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों का विस्तृत जाल काम करनेवाले युवाजन की व्यावसायिक कुशलता बढ़ाने में मदद देता है।

उच्च शिक्षा-संस्थायें (विश्वविद्यालय, उच्च विद्यालय, अकादमियां) सोवियत जन-शिक्षा-प्रणाली की महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। वे जन-अर्थव्यवस्था और संस्कृति की सभी शाखाओं के लिये उच्च योग्यताप्राप्त कर्मी तैयार करती हैं।

४ से ६ साल तक के शिक्षा-कालवाले दिनी उच्च विद्यालय उच्च शिक्षा-संस्थाओं का आधारभूत रूप हैं। जन-अर्थव्यवस्था में लगे हुए अधिकतर

विशेषज्ञ उच्च विद्यालयों के संध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले विभागों द्वारा शिक्षा पाकर अपनी योग्यता बढ़ाते हैं।

उच्च सोवियत शिक्षा-संस्थायें श्रेष्ठ अनुसन्धानक और व्यावहारिक कार्यकर्त्ता तैयार करती हैं, जो आधुनिक विज्ञान और प्रविधि के क्षेत्रों में अग्रणी रहते हैं। इस समय सोवियत संघ के कुल वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं का लगभग आधा भाग तीस साल की उम्र तक के नौजवान हैं।

स्कूल के अतिरिक्त बच्चों, किशोरों और वयस्कों के लिये विद्यमान राजकीय और सार्वजनिक संस्थाओं की चर्चा किये बिना सोवियत शिक्षा-प्रणाली का विवरण अधूरा ही रह जायेगा।

ऐसी संस्थाओं में शामिल हैं पायनियरों और स्कूली छात्रों के प्रासाद तथा भवन, तरुण प्राविधिकों और तरुण प्रकृतिप्रेमियों के केन्द्र, तरुणों के लिए विशेष थियेटर और स्टूडिओ, बच्चों के लिये सिनेमाघर, बच्चों की रेलें, बच्चों के जहाज़। इन्ही के अन्तर्गत आते हैं बच्चों और किशोरों के लिये लाखों प्रतियों के संस्करण छापनेवाले विशेषीकृत प्रकाशन गृह, बाल-पुस्तकालयों (स्कूली पुस्तकालयों को छोड़कर) का जाल, बच्चों के खेलकूद के स्कूल और क्लब। पायनियरों और स्कूली छात्रों के स्वास्थ्य और खेलकूद शिविरों का घना जाल भी ऐसी ही संस्थाओं में सम्मिलित है।

ये सभी संस्थायें स्कूलों की शिक्षा-दीक्षा की अनुपूर्ति करती हैं और फ़ुरसत के वक़्त का समझदारी से उपयोग करने में बच्चों को सहायता देती हैं।

विभिन्न शिक्षाक्रमों की विकसित प्रणाली कलकारख़ानों और कार्यालयों में काम करनेवालों की योग्यता-वृद्धि सुनिश्चित करती है। राजनीतिक विद्यालयों और मण्डलों, ज्ञान और संस्कृति की विभिन्न शाखाओं से सम्बन्धित जन-विश्वविद्यालयों का बहुत बड़ा जाल विद्यमान है। इन संस्थाओं में हर इच्छुक मनपसन्द दिशा में अपना ज्ञान बढ़ा सकता है। तरह-तरह के वैज्ञानिक, वैज्ञानिक-प्राविधिक समाज भी क्रियाशील हैं। क्लबों, संस्कृति-भवनों और प्रासादों का विस्तृत जाल न केवल समझदारी से मनबहलाव की, बल्कि मेहनतकशों का अपना दृष्टि-विस्तार करने, अपनी रुचियों और मांगों को पूरा करने की सम्भावना भी देता है।

सिनेमा, रेडियो और टेलीविज़न बच्चों तथा बड़ों के दृष्टि-विस्तार में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं।

सोवियत जनता संसार की सबसे अधिक पढ़ने वाली जनता है। यूनेस्को के आंकड़ों के अनुसार (१६६७ का सांख्यिकीय वार्षिक पत्र) सोवियत संघ प्रकाशन-कार्य में संसारभर में सबसे आगे है। पुस्तकालयों की संख्या की दृष्टि से भी सोवियत संघ का दुनिया में पहला स्थान है।

मेहनतकशों का फ़ुरसत का वक़्त तथा उनकी ख़ुशहाली और अधिक बढ़ने से उन्हें अपना शिक्षा तथा संस्कृति स्तर ऊंचा करने की विशेषत: बड़ी सम्भावनायें मिली हैं।

संस्थाओं के ढांचे और इसी भांति शिक्षा-प्रणाली के संचालन में वास्तविक और सुसंगत जनवाद का सोवियत शिक्षा-प्रणाली के राजकीय स्वरूप के साथ बढ़िया ताल-मेल इस प्रणाली की ख़ास विशेषता है। जन-शिक्षा-प्रणाली के सुधार से सम्बन्धित मामूली महत्त्व तक के किसी भी प्रश्न पर प्रेस और मेहनतकशों की सभाओं तथा संगठनों में विस्तृत विचार-विमर्श के बिना राजकीय सत्ता के उच्च कार्यकर्त्ता कोई निर्णय स्वीकार नहीं करते हैं। इस सिलसिले में विज्ञान तथा शिक्षा-सम्बन्धी कार्यकर्त्ता विशेष भूमिका अदा करते हैं। स्कूलों के संचालन में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के सिद्धान्त का अनुकरण करते हुए सोवियत सार्वजनिक क्षेत्र इस में अत्यधिक सक्रिय भाग लेते हैं। माता-पिताओं की समितियां किसी न किसी रूप में सभी बाल-संस्थाओं में क्रियाशील हैं।

शिक्षा-दीक्षा-प्रणाली में परिवार और स्कूल एक अभिन्न इकाई का रूप धारण करते हैं। परिवार स्कूल की मदद करता है और दूसरी तरफ़ स्कूल परिवार को सहायता देता है।

अध्यापक की अत्यधिक प्रतिष्ठा सोवियत संघ में स्कूल की महत्त्वपूर्ण भूमिका की सूचक है। अध्यापक का व्यवसाय बहुत ही सम्मानित और प्रतिष्ठित है। विख्यात राजकीय और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों में बहुत-से भूतपूर्व अध्यापक हैं।

इस समय सोवियत संघ सांस्कृतिक क्रान्ति के समाप्ति-काल में प्रवेश कर चुका है।

उत्पादन-शक्तियों की वृद्धि, प्रविधि का विकास, उत्पादन का बेहतर संगठन, मेहनतकशों की सामाजिक सक्रियता तथा कम्युनिस्ट ढंग पर जीवन का पुनर्निर्माण बहुत हद तक सामान्य शिक्षा और सभी मेहनतकशों के व्यावसायिक प्रशिक्षण के स्तरों के और अधिक ऊंचा होने तथा लोगों के और अधिक सांस्कृतिक परिष्कार पर ही निर्भर है। इसीलिये तो सोवियत

समाजवादी राज्य विस्तृत और बहुमुखी वैज्ञानिक अनुसन्धान के विकास द्वारा देश की शिक्षा-दीक्षा-संस्थाओं की गतिविधियों के वैज्ञानिक शिक्षाशास्त्रीय आधारों को और बेहतर बनाने की निरन्तर चिन्ता करता है।

सोवियत संघ में अगले कुछ समय में ही जन-अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति की आवश्यकताओं के अनुसार माध्यमिक और उच्च शिक्षावाले विशेषज्ञ तथा विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के लिये जवान वैज्ञानिक तैयार करने के काम को बहुत हद तक बढ़ाया जायेगा। सोवियत समाज के मेहनतकशों की वैज्ञानिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के अन्य विभिन्न रूपों का विकास जारी रहेगा।

म० न० कोल्माकोवा

स्कूलपूर्व का पालन-शिक्षण

सोवियत संघ में शिशु-जन्म के बहुत पहले से ही उसकी चिन्ता की जाने लगती है। ३८ हज़ार प्रसूति-उपचारक और नारी-रोग चिकित्सक, लगभग ७५ हज़ार बाल-चिकित्सक, २२ विशेष अनुसन्धान-संस्थान और उच्च विद्यालयों के २०० उपविभाग मां और बच्चे के स्वास्थ्य की समस्याओं के समाधान में व्यस्त हैं। २० हज़ार से अधिक नारी और बाल-परामर्श-केन्द्र गर्भवती नारियों और नवजात शिशुओं की सेवा करते हैं। प्रसूति के समय मुफ़्त डाक्टरी सहायता दी जाती है। अस्पतालों और प्रसूति गृहों में जच्चाओं के लिए २ लाख २५ हज़ार स्थान हैं। सभी कामगारिनों, कर्मचारिनों और सामूहिक किसान-नारियों को गर्भ और शिशु-जन्म के सिलसिले में ११२ दिन की सवेतन छुट्टी दी जाती है। जुड़वां बच्चे होने या प्रसूति-सम्बन्धी जटिलतायें पैदा हो जाने पर छुट्टी की अवधि बढ़ा दी जाती है। शिशु-जन्म और उसके बाद की छुट्टी समाप्त होने पर नारी अपनी इच्छा से काम पर लौटने से इन्कार कर सकती है और उस स्थिति में उसे एक साल तक उसी नौकरी पर वापस आने का अधिकार होता है और इस समय को उसकी नौकरी के सेवाकाल में गिना जाता है। नवजात

शिशु की निरन्तर चिकित्सीय देखभाल की जाती है। ६ महीने तक बाल-चिकित्सालय की एक ही नर्स नवजात शिशु की सेवा करती है। बच्चों के डाक्टर शिशु के विकास और उसके स्वास्थ्य की चिन्ता करते हैं। बाल-परामर्श-केन्द्रों के अन्तर्गत दूधजन्य चीजों के रसोईघर स्थापित किये गये हैं, जहां मातायें बच्चों के लिये अतिरिक्त खुराक मुफ्त हासिल कर सकती हैं।

स्कूलपूर्व के बच्चों के सार्वजनिक पालन-शिक्षण की राजकीय प्रणाली सोवियत जनता की एक प्रमुखतम सामाजिक उपलब्धि है। क्रान्तिपूर्व के रूस में स्कूलपूर्व की केवल कुछ दर्जन संस्थायें ही थीं। तथाकथित २५ "जन" बालोद्यान थे, जो कुछ दानशील लोगों और खैराती संस्थाओं के चन्दों पर चलते थे।

व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की पहलक़दमी पर मार्च १९१८ में पेत्रोग्राद में पहले पहल हमारे देश में मजदूरों के बच्चों के लिये बालोद्यान स्थापित किया गया। लेनिन ने शिशुसदनों और बालोद्यानों को कम्युनिज्म के अंकुर कहा, "...जो **दरअसल औरतों को आजाद कर सकते हैं**, जो दरअसल सामाजिक उत्पादन और सार्वजनिक जीवन में उनकी भूमिका के लिहाज़ से मर्दों के साथ उनकी नाबराबरी को कम और उसका अंत कर सकते हैं।"

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) ने १९१९ में हुई अपनी ८वीं कांग्रेस में जो पार्टी कार्यक्रम स्वीकार किया, उसमें स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं का विस्तृत जाल फैलाने, बच्चों का सार्वजनिक पालन-शिक्षण और नारियों की मुक्ति सुनिश्चित करने से सम्बन्धित एक ख़ास पैरा था। शिक्षा के पहले जन-कमिसार अ० व० लुनाचार्स्की ने १९२० में "स्कूलपूर्व के पालन-शिक्षण के बारे में घोषणापत्र" प्रकाशित कराया। स्कूलपूर्व की बाल-संस्थायें जन-शिक्षा की सामान्य प्रणाली का अभिन्न अंग बन गयीं। उनके सामाजिक और शिक्षा-सम्बन्धी कार्यभारों को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया।

सोवियत सत्ता के ५० से अधिक सालों के दौरान स्कूलपूर्व की पालन-शिक्षण-प्रणाली का बहुत विकास हुआ है। अब हमारे देश में कोई भी ऐसा नगर, हलक़ा, बड़ा उद्यम, सामूहिक फ़ार्म या राजकीय फ़ार्म नहीं है, जिसकी अपनी बाल-संस्थायें न हों। सोवियत संघ में शिशुसदनों और बालोद्यानों की कुल संख्या ७५ हजार से अधिक है। शिशुसदनों और बालोद्यानों ने सोवियत परिवार के जीवन-ढंग में गहरी जड़ जमा ली है, जनता में नेकनामी हासिल कर ली है। मेहनतकश स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं को

केवल इसलिये मूल्यवान नहीं मानते हैं कि मां जब तक काम पर होती है, बच्चे को वहां छोड़ सकती है, बल्कि मुख्यत: तो वे उन्हें उनके शिक्षाशास्त्रीय सारतत्त्व और इस चीज़ के लिए महत्त्व देते हैं कि वहां बच्चे के सर्वतोमुखी विकास, उसके पालन-शिक्षण की चिन्ता की जाती है। इस समय ऐसे बहुत से परिवार हैं जहां मातायें काम नहीं करतीं, मगर फिर भी मां-बाप बच्चों को बालोद्यान में दाखिल कर देते हैं। किन्तु स्थिति को इस रूप में समझना ठीक नहीं होगा कि सोवियत संघ में स्कूलपूर्व की उम्र के सभी बच्चो को अनिवार्यत: स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं में भेजा जाता है। राज्य अपना कार्यभार यह नहीं मानता कि स्कूलपूर्व के सभी बच्चों के लिए शिशुसदनों और बालोद्यानों की स्थापना करे, बल्कि यह कि सभी इच्छुक मेहनतकशों को अपने बच्चों को शिशुसदनों, बालोद्यानों या ग्रीष्मकालीन स्वास्थ्य-केन्द्रों में भेजने की सम्भावना दे सके। १९७० में स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं (शिशुसदनों और बालोद्यानों) में ९३ लाख बच्चों का पालन-शिक्षण हो रहा था। अब बहुत से नगरों में स्कूलपूर्व की बाल-संस्थायें पर्याप्त संख्या में हैं।

सभी शिशुसदन, बालोद्यान और बाल-स्वास्थ्य-केन्द्र राज्य के नियन्त्रण में हैं। स्कूलपूर्व की संस्थाओं के निर्माण और उन्हें साजसामान से लैस करने के लिये राज्य विशेष धन की व्यवस्था करता है। चुनांचे २४ वीं पार्टी कांग्रेस के निर्देशानुसार चालू पंचवर्षीय योजना में २० लाख से अधिक स्थानोंवाली स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं के निर्माण की पूर्वकल्पना की गयी है। इतना ही नहीं, उद्यमों को (उद्यम के डायरेक्टर तथा ट्रेड यूनियन समिति के साझे निर्णय के अनुसार) राज्य द्वारा उनके रिहायशी मकानों के निर्माण के लिये निर्धारित धनराशि का कुछ भाग बाल-संस्थाओं के निर्माण के लिये इस्तेमाल करने का हक हासिल है।

सोवियत राज्य विशेष क़ानूनों द्वारा स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं का योजनाबद्ध विकास सुनिश्चित करता है। मिसाल के तौर पर, सोवियत संघ की सरकार के निर्णयानुसार नये मकानों का ५ प्रतिशत क्षेत्र स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं को दिया जाता है। ऐसे उद्यमों के लिए, जहां ५०० से अधिक कामगारिनें काम करती हों, यह लाजिमी है कि उनकी अपनी स्कूलपूर्व की संस्थायें हों और उत्पादन तथा कामगारों की वृद्धि और औसत जन्म-दर को ध्यान में रखते हुए उनके विकास की भावी योजना भी बनायें।

स्कूलपूर्व की संस्थाओं के रख-रखाव के कुल खर्च का (जिसमें बच्चों के भोजन और डाक्टरी सहायता का खर्च भी शामिल है) अधिकतर भाग राज्य देता है। मां-बाप उसका बहुत ही कम हिस्सा अदा करते हैं और वह बच्चे पर होनेवाले कुल खर्च का १५-२५ प्रतिशत से अधिक नहीं होता। शिशुसदनों और बालोद्यानों में २५ प्रतिशत बालकों (पंगु माता-पिताओं, अनेक बच्चोंवाले परिवारों और एकाकी माताओं के बालकों) को मुफ्त रखा जाता है।

स्कूलपूर्व की विभिन्न प्रकार की संस्थायें विभिन्न विभागों के अधीन है। उदाहरण के लिये, शिशुसदन, जहां २-३ महीने से लेकर तीन साल तक के बच्चों का पालन-शिक्षण होता है, स्वास्थ्य-रक्षा-विभाग के संगठनों के संचालन में हैं। कुछ कारखानों, राजकीय फ़ार्मों और सामूहिक फ़ार्मों के अपने बालोद्यान होते हैं, जिनका संचालन वे ही करते हैं और कुछ का जन-शिक्षा-विभाग के स्थानीय संगठन। पहले ढंग के बालोद्यानों में मुख्यत: मजदूरों, उद्यम के कर्मचारियों, राजकीय फ़ार्म और सामूहिक फ़ार्म के किसानों के बच्चों को लिया जाता है; दूसरे ढंग के बालोद्यानों में इस या उस छोटे हलके में रहनेवाले सभी लोगों के बच्चों को दाखिल किया जाता है। शिक्षा-मन्त्रालय के निकाय स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं का विधि-सम्बन्धी संचालन करते हैं।

स्कूलपूर्व की सोवियत पालन-शिक्षण-प्रणाली का विशेष लक्षण यह है कि वह मेहनतकश नारियों की जरूरतों के अधिकतम अनुरूप है। शहरों और देहातों में दिनी (१०-१२ घंटोंवाले) और ऐसे शिशुसदन तथा बालोद्यान भी हैं जहां दिन-रात के लिये ऐसे बच्चों को भेजा जा सकता है, जिनकी मातायें रात को काम करती हैं। हफ़्तेभर की अवधि के बालोद्यान भी हैं। शारीरिक या मानसिक विकास की दृष्टि से दोषयुक्त बच्चों (अंधों, बहरों, दिमागी दोषवालों) और ऐसे ही पोलियो से रोग ग्रस्त हो चुके बच्चों के लिये खास चिकित्सीय दिनचर्या और उनके दोषों को दूर करने के कार्यक्रमवाली स्कूलपूर्व की विशेष संस्थायें हैं।

शिशुसदनों और बालोद्यानों के बीच ताल-मेल बैठाने के लिए तजरबे की शक्ल में इन दोनों बाल-संस्थाओं की मिली-जुली संस्थायें – शिशुसदन-बालोद्यान बनायी गयी हैं। इन में माता-पिता की इच्छा होने पर २ महीने से ७ साल तक के बच्चों का पालन-शिक्षण किया जाता है।

मौसमी शिशुसदनों और बालोद्यानों का भी विस्तृत विकास हुआ है।

नियमतः गर्मी की फ़सल बटोरने के मौसम में इन्हें देहातों में संगठित किया जाता है। कुछ नगरों में लोगों ने सेवा भाव से प्रेरित होकर बालोद्यान बनाये है। यहां ३-४ घण्टों तक बच्चे रहते हैं। अध्यापक-शिक्षण-संस्थाओं के विद्यार्थी सार्वजनिक कार्यकर्त्रियां और पेंशनर किसी मुआवज़े के बिना अक्सर इन बालोद्यानों के बच्चों की देखभाल करते हैं। ऐसी संस्थायें उन परिवारों के हितों की चिन्ता करती हैं, जहां मातायें दिनभर काम नहीं करतीं।

सख़्त बीमारी भोग चुके और स्थायी डाक्टरी देखभाल और इलाज की अपेक्षा रखनेवाले बच्चों के लिये निरोगसदनों के ढंग के बालोद्यानों का जाल विस्तृत किया जा रहा है। ऐसे बालोद्यानों में डाक्टर के निर्णय के अनुसार बच्चों को ६ महीने से १ साल तक के लिये भेजा जाता है। ऐसी बाल-संस्थायें नियमतः नगर से बाहर बड़े जंगलों के निकट स्थापित की जाती हैं। चिकित्सीय दिनचर्या की सारी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ख़ास नक़्शों के मुताबिक़ उनकी इमारतें बनायी जाती हैं।

लेनिनग्राद के नगरोपान्त में, कारेल संयोग-भूमि के सुन्दर-सुरम्य स्थल पर बच्चों की "सूर्य" नामक स्वास्थ्य-नगरी बनायी गयी है। चीड़ के जंगलों और झीलोंवाले बहुत बड़े क्षेत्र में यहां १२ विभिन्न बाल-संस्थायें स्थापित हैं, जिनमें २ महीनों से साल भर तक के लिये दो हज़ार बच्चे रहते हैं। बच्चों की ख़ुशी और दिलचस्पी की हर चीज़ यहां उपलब्ध है। यहां खेलकूद के मैदान हैं, खुला और बन्द थियेटर हैं, बन्द तालाब है, समुद्री खाड़ी में नहाने की जगह है, गुलीवेर की अद्भुत भूल-भुलैयां है, छोटा-सा चिड़ियाघर और वनस्पति वाटिका है, "लगभग असली" मोटर-कारें हैं और उनके लिये असली सड़क है।

दिनचर्या में कई तरह के इलाजी काम शामिल होते हैं और बच्चों को पथ्याहार दिया जाता है। इस नगरी की अपनी जल-चिकित्साशाला और प्रकृति-चिकित्साशालायें हैं। इस नगरी में इतने अधिक स्थान हैं कि लेनिनग्राद के वे सभी बच्चे, जिनके लिये स्वास्थ्य-सुधार ज़रूरी होता है, यहां आकर रह सकते हैं। अनेक कारख़ानों, फ़ैक्टरियों और सामूहिक फ़ार्मों की अपनी बहुशाखीय बाल-संस्थायें हैं। इनमें बच्चों के चिकित्सालय, शिशुसदन, दूधजन्य चीज़ें तैयार करनेवाले रसोईघर बालोद्यान, बंगले, बाल-स्वास्थ्य-संस्थायें शामिल हैं। मिसाल के लिये, मास्को के "त्योख्गोर्नाया मनुफ़ाक्तूरा" नामक कपड़ा मिल के अन्तर्गत २ शिशुसदन,

२ बालोद्यान, बच्चों का चिकित्सालय तथा २ निरोगसदन हैं, जिनमें से एक मास्को में है और दूसरा काले सागर के तट पर। नाशक़न्द की कपड़ा मिल में कई हज़ार नारियां काम करती हैं और हर मां अपने बच्चे को शिशुसदन या बालोद्यान में दाख़िल कर सकती है। अल्ताई के ट्रैक्टर कारख़ाने के २२ बालोद्यान बनाये गये हैं, जिनमें कारख़ाने के मजदूरों और कर्मचारियों के २७०० बच्चों का पालन-शिक्षण होता है। कोई एक वर्कशॉप हर बालोद्यान का संरक्षण करती है। मज़दूर निरन्तर इस बात की चिन्ता करते हैं कि बालोद्यान में बच्चों की दिलचस्पी और ख़ुशी की हर चीज़ हो। उन्होंने बच्चों के लिये हिंडोले, छायादार ओसारे, खुमियों की शक्ल-वाली बड़ी छतरियां, लतागृह और खुला थियेटर बनाये हैं, खेलकूद के मैदानों की व्यवस्था की है। सभी बालोद्यानों के लिये वाद्ययंत्र और चल-चित्र कैमरे ख़रीदे गये हैं, वहां जानवर पाले गये हैं। झील के किनारे सनोबर के जंगल में बंगला बनाया गया है, जहां ७५० बच्चे एकसाथ आराम करते हैं।

देहाती इलाक़ों में स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं के विकास में बहुत महत्वपूर्ण सफलतायें प्राप्त की गयी हैं। क्रान्ति से पहले रूस में स्कूलपूर्व की एक भी देहाती संस्था नहीं थी। इस समय देहातों में शिशुसदनों और बालोद्यानों की संख्या २५,२०० है। उनमें १० लाख से अधिक बच्चों का पालन-शिक्षण होता है।

उदाहरण के लिए हम बेल्गोरोद प्रदेश के शेबेकीन्स्की हलक़े के अनुभव का उल्लेख कर सकते हैं। यहां अब हर सामूहिक फ़ार्म की स्कूलपूर्व की बाल-संस्था है। केवल पिछले तीन सालों में ही ५० से अधिक शिशुसदनों और बालोद्यानों का निर्माण किया गया है, जिन में से ३० सालभर चालू रहते हैं। एक माध्यमिक स्कूल में बालोद्यानों के लिये शिक्षिका-प्रशिक्षण-कक्षा की विशेष व्यवस्था की गयी है। धीरे-धीरे स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं के ख़र्च का पूरा भार सामूहिक फ़ार्म उठाने लगे हैं। इस समय भी बहुत-से बालोद्यानों में बच्चों की देखभाल के लिये माता-पिताओं से कुछ भी नहीं लिया जाता।

शिशुसदनों और बालोद्यानों का स्वरूप क्या है? बच्चों के रहन-सहन की स्थिति कैसी है? उनके काम का सार क्या है?

शिशुसदन में २-३ महीने से ३ साल तक की उम्र के बच्चों को दाख़िल किया जाता है। वहां बच्चों को अलग-अलग दलों में बांटा जाता

है (१ साल तक, १ से २ साल और २ से ३ साल तक के बच्चों के दल बनाये जाते हैं)। हर दल के साथ शिक्षिका और धाय काम करती हैं। छोटे बच्चों के दल की शिक्षिका अनिवार्य रूप से माध्यमिक चिकित्सा शिक्षाप्राप्त होती है। माध्यमिक शिक्षाशास्त्रीय शिक्षाप्राप्त शिक्षिका बड़े बच्चों के दल में काम करती है। किन्तु उसने संक्षिप्त मेडिकल कोर्स भी अवश्य पास किया होता है। नियमत: डाक्टर या अध्यापक शिशुसदन का संचालक होता है। शिशुसदन के बच्चों की दिनचर्या बिल्कुल अलग-अलग होती है। बच्चे के स्वास्थ्य और विकास को ध्यान में रखते हुए उसे डाक्टर की सलाह के मुताबिक खुराक दी जाती है। काम करनेवाली मातायें दोपहर के खाने की छुट्टी के वक़्त अपने बच्चों को दूध पिलाने आती हैं। ज़रूरत होने पर उद्यम उनके लिये सवारी की विशेष व्यवस्था करते हैं। शिशुसदन की कार्यकर्त्रियों का काम बच्चों के स्वास्थ्य और उनके शारीरिक विकास की स्थिति की देखरेख तक ही सीमित नहीं रहता। शिक्षिकायें और धायें बच्चों की चलने-फिरने तथा बोलने की क्षमता के विकास की भी चिन्ता करती हैं।

गर्मियों में शिशुसदन किसी देहाती बंगले में स्थानान्तरित हो जाता है। शहर में तो ऐसे ही शिशुसदन रह जाते हैं, जिनके पास औद्योगिक उद्यमों से दूर काफ़ी अच्छा हरा-भरा क्षेत्र होता है। साथ ही वे निरोगसदन जैसी दिनचर्या बना लेते हैं ताकि बच्चे अधिकतम समय तक खुली हवा में रहें।

बालोद्यान में ३ से ७ साल तक के बच्चों को दाखिल किया जाता है। वहां उन्हें छोटे (३-४ साल), मंझले (५-६ साल) और बड़े (६-७ साल) बच्चों को तीन दलों में बांटा जाता हैं। बच्चों की आयुगत विशेषताओं तथा उनके सर्वतोमुखी – मानसिक, नैतिक, शारीरिक और कलात्मक विकास के अनुरूप वैज्ञानिक आधार पर हर दल की दिनचर्या बनायी जाती है। बच्चों को बालोद्यान में तीन बार, और रात के दल में रह जानेवालों को चार बार खाना दिया जाता है। विशेष अनुसन्धान-संस्थान बालोद्यान में बच्चों के खाने-पीने की समस्याओं पर काम करते हैं। बच्चों के प्रत्येक आयु-दल के भोजन की मात्रा भोजन विज्ञान के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार तय की जाती है। डाक्टर स्थायी रूप से बच्चों के स्वास्थ्य की निगरानी करता है। बालोद्यान में दिन के दौरान शरीर को पक्का करनेवाली जरूरी कार्रवाइयां की जाती हैं (सुबह की कसरत, ठण्डे पानी में तौलिया भिगोकर शरीर को रगड़ना-पोंछना,

खुली हवा में सोना, सैर आदि)। बच्चों को तरह-तरह से व्यस्त रखा जाता है। वे दिन में ३-४ घण्टे खेलते हैं। इसके अलावा (नियमतः खेल के रूप में ही) वाणी, चित्रकारी, मूर्त्तिकारी, मॉडल बनाने, गायन-वादन तथा नृत्य की क्षमता का विकास किया जाता है। बड़े दल के बच्चों को स्कूल के लिये तैयार किया जाता है। वे पढ़ना-लिखना सीखते हैं। ऐसे पाठ हर दिन होते हैं और उन पर ४०-५० मिनट ख़र्च किये जाते हैं। बालोद्यान का शिक्षण बच्चों में ज्ञान-लालसा पैदा करने तथा उन्हें दृढ़संकल्पी बनाने की दृष्टि से उन पर बहुत अच्छा प्रभाव डालता है, उन्हें मानसिक श्रम करना सिखाता है, अनुशासन और संगठन-भावना पैदा करने में सहायक होता है। शिक्षण के दौरान बच्चों में बातचीत की क्षमता का विकास होता है, वे कलात्मक गतिविधियों में कुशल हो जाते है।

शारीरिक स्थिति के अनुरूप स्कूलपूर्व के बालक के श्रम करने – परिवार और बालोद्यान के शारीरिक श्रम में क्षमता के अनुसार हिस्सा लेने का उसके मानसिक विकास पर बहुत महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मंझले और बड़े दल के बच्चे सीधे-सादे काम करते हैं – भोजनालय में ड्यूटी बजाते हैं, मेज़ लगाते हैं, पक्षियों और मछलियों की देखभाल और खिलौनों को व्यवस्थित करते हैं। बालोद्यान इस बात की चिन्ता करता है कि परिवार में ये आदतें और पक्की हों।

बालोद्यान का सारा शिक्षण-कार्य विशेष रूप से तैयार किये गये कार्यक्रम के अनुसार होता है। इस कार्यक्रम में बच्चों की उम्र के मुताबिक़ उनके शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यशास्त्रीय शिक्षण के कार्यभारों और विधियों को ठोस रूप दिया गया है, स्कूलपूर्व के बच्चों के लिये अभ्यासों, जानकारी और कुशलताओं का स्तर तय किया गया है। बालोद्यानों के व्यावहारिक कार्यकर्त्ताओं के सक्रिय सहयोग से वैज्ञानिकों ने शिक्षकों के लिये चित्रकारी, मूर्तिकारी, पठन और गणना, व्यायाम और खेलकूद, संगीत और नृत्य-सम्बन्धी विधिगत सहायक सामग्री तैयार की है।

हमारे देश में "मलीश" (बच्चा) नामक प्रकाशन गृह है, जो स्कूलपूर्व के बच्चों के लिये किताबें और मेज़ी खेल, ख़ुद काग़ज़ की चीज़ें और खिलौने बनाने के लिये सामग्री प्रकाशित करता है। बच्चों की सचित्र पत्रिकायें "मुर्ज़ील्का" और "वेस्योलिये कार्तीन्की" (मनोरंजक चित्र) बहुत बड़ी संख्या में छपती हैं। संघीय जनतन्त्रों में बच्चों के लिए उनकी

मातृभाषाओं में साहित्य छपता है। दो सौ से अधिक कारख़ाने बच्चों के लिए खिलौने तैयार करते हैं। सोवियत संघ के हल्के उद्योगों के मन्त्रालय के अन्तर्गत खिलौनों का अनुसन्धान-संस्थान बच्चों की रुचियों का अध्ययन और खिलौनों के इतिहास पर काम करता है, खिलौनों के नये नमूने बनाता है। शिक्षा-मन्त्रालय के अन्तर्गत खिलौनों से सम्बन्धित कलात्मक-प्राविधिक परिषद बनाई गई है, जिस में अध्यापक, चित्रकार, कलकारख़ानों तथा व्यापारिक संगठनों के संचालक, डाक्टर, इंजीनियर और रूपांककार शामिल हैं। खेलों और खिलौनों की प्रादेशिक, इलाक़ाई, जनतन्त्रीय और अखिल सोवियत संघीय प्रदर्शनियां नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं।

स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं की शिक्षिकायें बच्चों के परिवारों, उनके माता-पिता से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाये रखती हैं। नियमित रूप से माता-पिताओं की सभायें और परिवार में बच्चों के पालन-शिक्षण के बारे में वार्तायें आयोजित की जाती हैं, डाक्टर, वकील और शिक्षाशास्त्री उन्हें परामर्श देते हैं, व्याख्यान सुनाते हैं। माता-पिताओं के लिए बच्चों के पालन-शिक्षण पर रोशनी डालनेवाला साहित्य छापा जाता है।

बहुत से माता-पिताओं ने उन बालोद्यानों में ही, जहां उनके बच्चों का पालन-शिक्षण होता है, शिक्षाशास्त्र-सम्बन्धी अपने पहले सबक़ हासिल किये हैं। मास्को के फ़ेज़र कारख़ाने के मजदूर अ० तीमोफ़ेयेव बताते हैं—

"१९३३ में मैं अपनी बिटिया को कारख़ाने के बालोद्यान में ले गया था और तभी से इसके साथ मेरी दोस्ती बनी हुई है। अब जब बीते वर्षों पर नजर डालता हूं, तो यह बात मुझे बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि वहां की शिक्षिकाओं ने मेरी बेटी, और ख़ुद मुझे भी बच्चों की तरफ़ ध्यान देने, उसके आन्तरिक जगत, उसकी आवश्यकताओं में गम्भीर रुचि लेने की शिक्षा देकर कितना लाभ पहुंचाया है। पर इस बालोद्यान ने क्या केवल मुझे ही इस जटिल विज्ञान की शिक्षा दी है?"

स्कूलपूर्व की संस्थाओं के संचालकों और शिक्षिकाओं से बहुत अधिक अपेक्षा की जाती है। बच्चों के पालन-शिक्षण के मामले में उनकी जानकारी लगभग सर्वतोमुखी होनी चाहिये। उन्हें बच्चों, उनकी आयुगत विशेषताओं और उनके मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान होना चाहिये, बच्चों के पालन-शिक्षण की विधि में पारंगत होना चाहिये, उनमें अभिव्यक्तिपूर्ण ढंग से पढ़ने, गाने, चित्रकारी करने और माडल बनाने की क्षमता होनी चाहिये।

स्कूलपूर्व के शिक्षिका-प्रशिक्षण-विद्यालय और अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के स्कूलपूर्व के विभाग शिशुसदनों और बालोद्यानों के कर्मचारियों का प्रशिक्षण करते हैं। नगरीय, प्रादेशिक और जनतन्त्रीय अध्यापकों के ज्ञान-सुधार-संस्थानों के स्कूलपूर्व के विभागों में शिक्षिकाओं की योग्यता को बढ़ाया जाता है। यहां बालोद्यानों की संचालिकाओं और शिक्षिकाओं के लिये नियमित रूप से कोर्सों, गोष्ठियों और व्याख्यानों की व्यवस्था की जाती है। स्कूलपूर्व की संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं के लिये विशेष पत्रिकायें निकलती हैं। लगभग सभी जनतन्त्रों में "स्कूलपूर्व का पालन-शिक्षण" नामक पत्रिका प्रकाशित होती है।

बालोद्यानों की शिक्षणकार्य-प्रणाली परिवर्तनहीन या गतिहीन नहीं है। वैज्ञानिक अनुसन्धान के तथ्यों और श्रेष्ठ संस्थाओं के अनुभव के आधार पर उस में निरन्तर संशोधन किया जाता है।

हमारे देश में स्कूलपूर्व के पालन-शिक्षण की समस्याओं के क्षेत्र में बहुत बड़ा अनुसन्धान-कार्य हो रहा है। स्कूलपूर्व का शिक्षण सोवियत शिक्षाशास्त्र का अभिन्न अंग बन गया है। शिक्षाशास्त्रियों के साथ-साथ समाजशास्त्री, मनोविज्ञानशास्त्री और शरीरविज्ञानशास्त्री इन समस्याओं पर काम करते हैं। सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के अन्तर्गत स्कूलपूर्व के शिक्षण का अनुसन्धान-संस्थान बनाया गया है। इस संस्थान में शिक्षाशास्त्री, मनोविज्ञानशास्त्री और शरीरविज्ञानशास्त्री मिल-जुलकर स्कूलपूर्व की उम्र के बच्चों की शिक्षण-समस्याओं पर अनुसन्धान करते हैं। विद्वान लोग बच्चों की वाक्, चिन्तन, स्मरण तथा मानसिक और निर्माण-क्षमताओं के विकास की समस्याओं पर काम करते हैं। स्कूलपूर्व के बच्चों के नैतिक शिक्षण, वयस्कों, मां-बाप और हमउम्रों के साथ उनके सम्बन्धों को निरूपित करनेवाले नैतिकता के मामूली नियमों के ग्रहण, भावनाओं के निर्माण, विभिन्न आयु-अवस्थाओं में बच्चे के बौद्धिक, भावनात्मक और संकल्पगत विकास के पारस्परिक सम्बन्धों तथा कला और साहित्य के माध्यम से बच्चों के शिक्षण की समस्याओं की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है।

सोवियत संघ की चिकित्साविज्ञान अकादमी की अनेक संस्थायें भी स्कूलपूर्व के बच्चों की समस्याओं पर अनुसन्धान कर रही हैं। यहां बहुत कम उम्र के बच्चों के पालन-शिक्षण से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान ढूंढ़े जाते हैं। वैज्ञानिकों की खोज से पता चला है कि नन्हे-मुन्नों का सर्वांगीण स्नायविक-मानसिक विकास उनके सक्रिय पालन-शिक्षण (वयस्कों

के साथ मिलने-जुलने, विशेष व्यायामों द्वारा हाथों-पैरों के विकास, ध्वनियों और रंगों के अन्तर की समझ आदि) द्वारा ही सम्भव है। इन खोजों के परिणामस्वरूप यह पूर्वधारणा बदल गयी है कि २-३ साल तक की उम्र के बच्चों को विशेष साफ़-सुथरे और स्वास्थ्यप्रद वातावरण में केवल देखभाल की ही जरूरत होती है। वैज्ञानिक नन्हे-मुन्नों के पालन-शिक्षण और विकास का विशेष कार्यक्रम तैयार करने में लगे हुए हैं। बच्चों के शारीरिक विकास की अनुकूलतम स्थितियों की खोज की जा रही है, स्कूलपूर्व के बच्चों के दिनभर के कार्यक्रम, उनके शारीरिक शिक्षण के उपायों और विधियों को सुधारा जा रहा है।

प० अ० ज़िमीन

सोवियत स्कूल

पूंजीपति वर्ग के प्रभुत्व-साधन की जगह सामाजिक वर्ग-विभाजन के पूर्ण उन्मूलन, उसके कम्युनिस्ट कायाकल्प के साधन के रूप में स्कूल का परिवर्त्तन समाजवादी क्रान्ति का स्वाभाविक परिणाम और उसका अभिन्न अंग था।

सामान्य जनवादी परिवर्तन इस दिशा में सबसे पहले क़दम थे। समाजवादी क्रान्ति ने उन्हें पूरी तरह अमली शक्ल देने की जरूरी परिस्थितियां पैदा कीं। बहुत ही थोड़े अर्से में ऐसे एकरूपी श्रम-स्कूल की स्थापना की गयी, जिसमें सभी को शिक्षा पाने के समान अवसर प्राप्त हैं, शिक्षा पाने के लिये सामाजिक श्रेणी और सम्पत्ति-सम्बन्धी विशेषाधिकारों को ख़त्म किया गया, लड़के-लड़कियों को सहशिक्षा दी जाने लगी और इस तरह उनकी शिक्षा-सम्बन्धी असमानता का अन्त कया गिया, स्कूल को धर्म से अलगाया गया और इसके फलस्वरूप शिक्षा ने ठोस धर्म-निरपेक्ष रूप धारण किया, छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाने लगी और राज्य ने स्कूली शिक्षा के सारे ख़र्च का पूरा भार अपने ऊपर ले लिया।

सोवियत सत्ता की स्कूल-सम्बन्धी पहली ही दस्तावेज़ों – "एकरूपी श्रम-स्कूल का घोषणापत्र" और "रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतन्त्र के एकरूपी श्रम-स्कूल के बारे में स्थापना" – में उपर्युक्त सिद्धान्तों को सुनिश्चित रूप दिया गया और उन्हें दृढ़तापूर्वक अमली शक्ल दी गयी। विश्व इतिहास में स्कूल पहली बार पूर्ण समानता के आधार पर क्रान्ति सम्पन्न करनेवाले मजदूर वर्ग और सभी मेहनतकशों की सेवा करने लगा। सोवियत स्कूल के प्रथम संस्थापकों को मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा का सहारा लेते हुए, जीवन की मांगों तथा समाजवादी निर्माण-योजनाओं को ध्यान में रखते तथा साथ ही प्रगतिशील पूंजीवादी शिक्षाशास्त्र के अच्छे तत्त्वों का उपयोग करते हुए अनदेखी-अनजानी राहों पर चलना पड़ा।

स्कूल का मुख्य कार्यभार था – कम्युनिजम के सक्रिय और आस्थावान निर्माता शिक्षित करना। ठोस रूप में इसका क्या अर्थ था? समाजवादी स्कूल को कैसा होना चाहिये?

सबसे पहले तो उसे मानव का सर्वतोमुखी मानसिक और शारीरिक विकास सुनिश्चित करना होता है, ताकि वह उन सभी अनुकूल सम्भावनाओं से लाभ उठा सके, जो समाजवाद हर व्यक्ति के लिये प्रस्तुत करता है। साथ ही उसे हर किसी को देश की मानसिक और भौतिक सम्पदा की वृद्धि के लिये तैयार करना होता है। सामान्य शिक्षा सर्वतोमुखी विकास की आधारशिला है। इस शिक्षा में प्राकृतिक-गणितीय और सामाजिक विषयों का उपयुक्ततम मिलाप है; श्रम-शिक्षण, गायन-वादन, ललित कलाओं, व्यायाम और खेलकूद को भी उचित स्थान दिया गया है। समाजवादी समाज में व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास के सिद्धान्तों और साधनों को "एकरूपी श्रम-स्कूल का घोषणापत्र" में पूरी तरह स्पष्ट किया गया। सर्वतोमुखी विकास के सार का अर्थ भी मूलतः भिन्न था। समाजवादी विचारधारा के अनुसार उसका रूप निर्धारित हुआ।

सोवियत राज्य के संस्थापक व्ला० इ० लेनिन ने कहा था कि कम्युनिस्ट और समाजवाद का सक्रिय निर्माता कोई केवल तभी बन सकता है, जब वह उस सारी सम्पदा के ज्ञान से अपनी स्मरण-शक्ति को समृद्ध कर ले, जिसे मानवजाति ने रचा है, उसमें से उसे चुन ले, जो समाजवाद के काम आ सके। यही विचार स्कूल के पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों की नींव बने। विज्ञान का सम्मान, उगती पीढ़ी की जीवन के लिये तैयारी और कम्युनिस्ट

दृष्टिकोण के निर्माण में उसकी भूमिका की गहरी समझ, सोवियत अध्यापकों के कार्य का एक प्रमुख आधार है। वैज्ञानिक-प्राविधिक क्रान्ति, बच्चों के विकास की प्रत्यक्ष द्रुत गति और समाजवाद से कम्युनिज्म की ओर संक्रमण के सिलसिले में सामाजिक सम्बन्धों के संशोधन ने शिक्षा के सारतत्त्व के वैज्ञानिक स्तर को ऊंचा करने की मांग की।

श्रम-शिक्षण और पोलीटेक्निकल तालीम सोवियत शिक्षा के अभिन्न अंग हैं। वे जीवन और समाजवादी निर्माण के साथ शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध सुनिश्चित करते हैं। पोलीटेक्निकल तालीम का सार यह है— विज्ञानों के मूलभूत तत्वों के आधार पर छात्रों को आधुनिक उत्पादन के संगठन के सिद्धान्तों, उसकी प्रविधि और प्रौद्योगिकी के सुधार की सम्भावनाओं से परिचित कराना और उन में व्यावसायिक स्तर से नीचे की श्रम-योग्यता पैदा करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्कूल के निकटवर्ती उद्यमों का परिचय दिया जाता है, स्कूली वर्कशॉपों में लकड़ी और धातु के हस्त तथा मशीनी विधायन का काम सिखाया जाता है, हाथ के श्रम द्वारा, स्कूल के शिक्षण-प्रयोगीय खेतों पर काम की व्यवस्था की जाती है, बिजली और रेडियो इंजीनियरी सिखायी जाती है तथा घरेलू कामकाज, कलकारखानों और सामूहिक तथा राजकीय फ़ार्मों में व्यावहारिक काम करवाया जाता है, प्राविधिक सृजन और आविष्कार क्षमता का विकास किया जाता है तथा वनस्पति और पशु-पालन का प्रयोगीय कार्य करवाया जाता है। छात्रों की उम्र, उनकी वैज्ञानिक तैयारी (ताकि छात्रों के श्रम-शिक्षण में संकुचित रवैये से बचा जा सके) और स्कूल के आस-पास विद्यमान उद्यमों को ध्यान में रखते हुए छात्रों के व्यावहारिक कार्य के स्वरूप और आकार में भेद किया जाता है।

समाजवादी समाज में श्रम केवल कर्त्तव्य ही नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के लिये प्रतिष्ठा की बात है। स्कूल आरम्भ से ही श्रम के प्रति अत्यधिक सजग और सृजनात्मक रवैये की शिक्षा देता है। छात्र स्कूल और उद्यमों में तरह-तरह के शिक्षा-श्रम के अलावा समाजोपयोगी काम भी करते हैं और उनके द्वारा मानो नागरिक के कर्त्तव्य की पूर्ति का आरम्भ होता है। व्ला० इ० लेनिन ने कहा था कि पढ़ाई, शिक्षण और शिक्षा-दीक्षा में हमारी आस्था न होती, अगर वह तूफ़ानी जिन्दगी से कटी हुई और केवल स्कूल के घेरे में ही बन्द होती; शिक्षा के सभी प्रश्नों को इस तरह प्रस्तुत करना चाहिये कि युवाजन हर दिन, हर गांव और हर शहर में मजदूरों

और किसानों के साथ मिलकर सामान्य श्रम का कोई न कोई, बेशक बहुत छोटा और बहुत साधारण, प्रश्न हल करें।

स्कूल में और स्कूल के बाहर छात्रों का सारा जीवन और उनकी गतिविधियां, जिन्हें अध्यापक, युवा कम्युनिस्ट संघ और पायनियर संगठन संगठित करते हैं, शोषणकारी सामाजिक व्यवस्था से उत्पन्न, व्यक्तिवाद और स्वार्थवाद से परिपूर्ण विचारधारा से मूलतः भिन्न, समाजवादी विचारधारा और समाजवादी मानवतावाद के आधार पर सामूहिकतावाद, मैत्री और साथी के नाते आपसी मदद और सहायता की भावना पैदा करती हैं। समाजवादी सामूहिकतावाद किसी आदमी की व्यक्तिगत इच्छाओं-आवश्यकताओं की तुष्टि, उसकी क्षमताओं और गुणों के विकास में बाधा नहीं बनता, जैसा कि मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षाशास्त्र के विरोधी सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। इसके विपरीत, समाजवादी समाज में हर व्यक्ति को अपने विकास की असीम सम्भावना मिलती है और सजग अनुशासन तथा समाज के सभी सदस्यों की आत्मिक समृद्धि उसका भरपूर जीवन सुनिश्चित करती है।

शिक्षा-दीक्षा के सबसे महत्वपूर्ण कार्यभारों में से ये हैं – भौतिकवादी दृष्टिकोण, कम्युनिस्ट विचारों और विश्वासों का निर्माण, अपनी प्रतिष्ठा, वीरता और शूरता के रूप में श्रम के प्रति कम्युनिस्ट रवैया, सार्वजनिक सम्पत्ति के प्रति कम्युनिस्ट रवैया पैदा करना, सजग अनुशासन की शिक्षा देना, समाजवादी मानवतावाद, मैत्री, साथीपन और दूसरे ऐसे गुण पैदा करना, जो समाजवादी क्रान्ति द्वारा अस्तित्व में लाये गये नये समाज के लोगों के नैतिक स्वरूप की विशेषतायें हैं।

बच्चों और युवाजन में समाजवादी मातृभूमि के प्रति प्यार, उसकी सफलताओं, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के नेतृत्व में सोवियत जनता की वीरतापूर्ण उपलब्धियों के प्रति गर्व की भावना पैदा की जाती है। साथ ही साथ मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों का अनुकरण करते हुए अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की शिक्षा के प्रश्न भी हल किये जाते हैं।

सार्वजनिक हल्कों के विस्तृत सहयोग से स्कूल कम्युनिस्ट शिक्षण के जटिल कार्यभार पूरे करता है। बालक और तरुण वास्तविक जीवन में लगातार ऐसे लोगों के सम्पर्क में आते रहते हैं, जिन के वही दृष्टिकोण होते हैं और जिन में वही गुण पाये जाते हैं, जिनकी उन्हें स्कूल में शिक्षा दी जाती है। वे अग्रणी मजदूरों, कर्मचारियों, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, संगीतज्ञों,

चित्रकारों और समाजवादी निर्माण के अन्य सक्रिय कार्यकर्त्ताओं से मिलते-जुलते हैं। स्कूल को बहुत ही विभिन्न रूपों में सार्वजनिक सहायता मिलती है। इसका एक बहुत ही प्रभावकारी रूप है–कारखानों, सामूहिक फ़ार्मों, राजकीय फ़ार्मों तथा कार्यालयों में बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के लिये परिवार व स्कूल के सहयोग-आयोगों का निर्माण तथा स्कूलों में माता-पिताओं की समितियों की स्थापना।

स्कूल में बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के सार को नया क्रान्तिकारी रूप देने के लिये शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रिया के संगठनात्मक रूपों और विधियों में परिवर्त्तन करना ज़रूरी हुआ। छात्रों की सक्रियता और उनकी स्वावलम्बिता बढ़ाने, शिक्षा की विकासशील भूमिका को मजबूत करने, छात्रों की व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास करने, पाठों में और स्कूल के बाहर व्यक्तिगत और सामूहिक कार्य में अनुकूलतम सन्तुलन पैदा करने के लिये ऐसी आवश्यकता अनुभव हुई।

पनपती पीढ़ी के सर्वतोमुखी आत्मिक और शारीरिक विकास से सम्बन्धित मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा ने बच्चों के साथ कक्षा में और स्कूल के बाहर कई तरह का व्यावहारिक कार्य आवश्यक बना दिया, जो बच्चों द्वारा पाठों में प्राप्त ज्ञान को और समृद्ध करे तथा जिसमें बच्चों की वैयक्तिक इच्छाओं और रुचियों का अधिकाधिक ध्यान रखा जाये।

क्रान्ति के बाद के पहले ही वर्षों में सोवियत शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्त, शिक्षा-दीक्षा के मूलभृत ध्येय और कार्यभार तथा उन्हें अमली शक्ल देने के उपाय और तरीके तय किये गये। सोवियत शिक्षाशास्त्र मार्क्सवादी-लेनिनवादी है, क्योंकि समाज और उगती पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा के बारे में मार्क्स और लेनिन का सिद्धांत ही उसका आधार था और आज भी है।

सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी और उसके अनुसन्धान-संस्थानों का विस्तृत जाल और प्रत्येक संघीय जनतन्त्र में वैज्ञानिक-शिक्षा-शास्त्रीय केन्द्र विस्तृत अनुसन्धान-कार्य कर रहे हैं।

अगले अध्यायों में सोवियत स्कूल में शिक्षा के सार, संगठन के सिद्धान्तों और शिक्षा की विधियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है।

सोवियत स्कूल में शिक्षा के विषय

स्कूल के क्रान्तिकारी रूप-परिवर्तन ने शिक्षा के सार को भी नई शक्ल देने की मांग की। इतिहास, समाजशास्त्र और ललित साहित्य के पाठ्यक्रमों में आमूल परिवर्त्तन हुआ, प्राकृतिक-गणितीय पाठ्यक्रमों पर अधिक जोर दिया जाने लगा, पोलीटेक्निकल तालीम, श्रम. सौन्दर्यशास्त्रीय और शरीर-विकास-सम्बन्धी शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने के उपाय तय किये गये। बाद के सालों में शिक्षा-प्रणाली के विकास और जीवन की मांगों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्त्तन किये गये।

इस समय सोवियत स्कूल शिक्षा की नयी और संशोधित योजनाओं तथा पाठ्यक्रमों को लागू कर रहा है। सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था तथा विज्ञान और प्रविधि के तूफ़ानी विकास ने ऐसा करना आवश्यक बना दिया है। सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी और शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के विशेष आयोग ने प्रमुख विद्वानों, सुयोग्य अध्यापकों तथा शिक्षा-विधि-विशेषज्ञों के सक्रिय सहयोग से शिक्षा की नई योजनायें और कार्यक्रम तैयार किये हैं।

सामान्य शिक्षा के श्रमगत पोलीटेक्निकल माध्यमिक स्कूल की एक आम शिक्षा-योजना हम अगले पन्ने पर प्रस्तुत करते हैं।

रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतन्त्र के जातीय (ग़ैररूसी) और अन्य जनतन्त्रीय दसवर्षीय स्कूलों की प्रत्येक कक्षा में निश्चित घंटों की तुलना में हर हफ़्ते के दौरान २-३ घंटों की वृद्धि की इजाजत है। जिन स्कूलों में ग़ैररूसी भाषा में पढ़ाई होती है, वहां सोवियत मन्त्रिपरिषद की अनुमति से शिक्षा-काल ११ वर्ष हो सकता है।

पाठ्यक्रम आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों को ध्यान में रखकर तैयार किये गये हैं, वे उसके विकास की मूलभूत दिशाओं और प्राविधिक क्रान्ति तथा समाज के विकास में उसकी बढ़ती हुई भूमिका को यथासम्भव इंगित करते हैं। स्कूली पाठ्यक्रम जीवन और व्यवहार से घनिष्ठ सम्बन्ध के आधार पर बनाये गये हैं।

भूतपूर्व पाठ्यक्रमों के एक बहुत ही गम्भीर दोष को दूर किया गया है जिसके अनुसार ८वीं कक्षा तक पर्याप्त सैद्धान्तिक सामान्यीकरण के बिना वर्णनात्मक सामग्री पर ही मुख्यतः ध्यान केन्द्रित किया जाता था।

नं०	विषय	कक्षा के अनुसार सप्ताह में शिक्षा के घंटे										सप्ताह में कुल घंटे
		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
१.	रूसी भाषा	१२	१०	१०	६	६	३	३	२	२/०	—	५३
२.	साहित्य	—	—	—	२	२	२	२	३	४	३	१८
३.	गणित	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५८
४.	इतिहास	—	—	—	२	२	२	२	३	४	३	१८
५.	समाजशास्त्र	—	—	—	—	—	—	—	—	—	२	२
६.	प्रकृतिशास्त्र	—	२	२	२	—	—	—	—	—	—	६
७.	भूगोल	—	—	—	—	२	३	२	२	२	—	११
८.	जैविकी	—	—	—	—	२	२	२	२	०/२	२	११
९.	भौतिकशास्त्र	—	—	—	—	—	२	२	३	४	५	१६
१०.	खगोलशास्त्र	—	—	—	—	—	—	—	—	—	१	१
११.	नक़्शानवीसी	—	—	—	—	—	१	१	१	—	—	३
१२.	रसायनशास्त्र	—	—	—	—	—	—	२	२	३	३	१०
१३.	विदेशी भाषा	—	—	—	—	४	३	३	२	२	२	१६
१४.	ललित कला	१	१	१	१	१	१	—	—	—	—	६
१५.	गायन और संगीत	१	१	१	१	१	१	१	—	—	—	७
१६.	कसरत	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२०
१७.	श्रम-शिक्षा	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२०
१८.	अनिवार्य शिक्षा के घंटे	२४	२४	२४	२४	३०	३०	३०	३०	३०	३०	२७६
	स्वैच्छिक शिक्षा के घंटे	—	—	—	—	—	—	२	४	६	६	—

साथ ही नये पाठ्यक्रम बालकों की ज्ञान-अर्जन की आयुगत विशेषताओं, सजग रूप से सैद्धान्तिक सामग्री को पचाने की उनकी सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हैं। पाठ्यक्रमों में से ऐसे तथ्यों और आंकड़ों को निकाला गया है, जिन को रटे बिना व्यापारों तथा प्रक्रियाओं के सार-स्पष्टीकरण का काम चल सकता है।

शिक्षा के सार-निर्धारण में सोवियत शिक्षाशास्त्र के एक प्रमुख सिद्धान्त – पोलीटेक्निकल शिक्षा के सिद्धान्त – की तरफ़ बहुत अधिक ध्यान दिया गया है, जिसे मार्क्स ने अपने समय में प्रस्तुत किया था और फिर लेनिन ने जिसे विकसित किया था। सोवियत समाज के विकास की वर्तमान अवस्था में शिक्षाशास्त्रीय, सामाजिक और जन-अर्थव्यवस्था की दृष्टि से पोलीटेक्निकल शिक्षा ने विशेष महत्त्व प्राप्त कर लिया है।

प्रारम्भिक शिक्षा। प्रारम्भिक कक्षाओं में विज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों का गहन और सजग रूप से विधिवत ज्ञान प्राप्त करने की नींव पड़ती है। इस समय सोवियत स्कूलों में चार साल के बजाय तीन सालों में प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने की ओर क्रमिक संक्रमण हो रहा है। चार साल के पाठ्यक्रम को तीन साल में पूरा करने की सम्भावना प्रयोग द्वारा सिद्ध हो चुकी है। प्रारम्भिक शिक्षा के मुख्य कार्यभार हैं – पढ़ने, लिखने और गिनने का पक्का अभ्यास कराना, प्रकृति और समाज के जीवन की प्रारम्भिक जानकारी देना, सौन्दर्यशास्त्रीय, शारीरिक और श्रम की शिक्षा देना, तर्कसंगत चिन्तन का विकास और शिक्षा में कठिनाइयों पर क़ाबू पाने की क्षमता पैदा करना। प्रारम्भिक स्कूल में बच्चे मातृभाषा, गणित और प्रकृतिशास्त्र पढ़ते हैं, मामूली श्रम करते हैं, चित्रकारी, संगीत और व्यायाम की शिक्षा पाते हैं।

भाषा-सम्बन्धी पाठ्यक्रमों के अनुसार बालकों को अक्षरज्ञान, पढ़ने की क्षमता, प्रारम्भिक व्याकरण और वर्ण-विन्यास की जानकारी प्रदान की जानी चाहिये, वाणी के ज़बानी और लिखित रूपों तथा सुन्दर लिखावट का विकास करना चाहिये। पठन के पाठों में बालकों को अभिव्यक्तिपूर्ण ढंग से और जल्दी-जल्दी पढ़ने का अभ्यास कराया जाता है और पुस्तक को स्थायी संगिनी अनुभव करने की आदत डाली जाती है। व्याकरण के पाठों में वे व्याकरण का ऐसा प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करते हैं जो सही ढंग से लिखने, सही ढंग से बोलने और व्याकरण के आगामी पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक सीखने के लिये जरूरी होता है। वाणी, उसके लाक्षणिक

स्वरूप और तर्क-वितर्क करने की क्षमता के विकास की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। ग़ैररूसी स्कूलों में इच्छा होने पर बालक रूसी पढ़ते हैं। शिक्षा के दूसरे साल या पहले साल की दूसरी छमाही में रूसी भाषा सिखाई जाने लगती है।

गणित के पाठों में बालक गिनती करना, घटाना, बढ़ाना, गुना और विभाजन करना सीखते हैं, समय, लम्बाई और वज़न की मात्राओं तथा मापन-विधियों से परिचित होते हैं, सरल भिन्न की जानकारी हासिल करते हैं। सवालों के हल और ज़बानी गिनती की तरफ़ बहुत ध्यान दिया जाता है। पाठ्यक्रम में प्रारम्भिक ज्यामिति (रेखागणित) और बीजगणित (वर्ण-चिह्न, क्रियाओं के अंगों की पारस्परिक निर्भरता को प्रतिबिम्बित करनेवाले फ़ार्मूलों की रचना और प्रश्नों के हलों के फ़ार्मूले) भी शामिल हैं।

प्रकृतिशास्त्र के प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में बच्चों को जानदार (वनस्पति और जीवजन्तु) तथा बेजान प्रकृति (स्थल, पानी, हवा) से परिचित कराया जाता है। उन्हें अपने देश के बारे में भौगोलिक सूचना दी जाती है, वे मानवीय शरीर की बनावट का अध्ययन करते हैं और स्वास्थ्य-रक्षा के प्रश्नों से परिचित होते हैं। प्रकृति-व्यापारों का विधिपूर्वक निरीक्षण किया जाता है, नियमित रूप से सैरें आयोजित की जाती हैं, सीधे-सादे तजरबे किये जाते हैं। प्रकृति-रक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। बालक पेड़-पौधे लगाते हैं, उनकी देखभाल करते हैं।

श्रम के पाठों में बालक काग़ज़, दफ़्ती, कपड़े और विभिन्न प्राकृतिक सामग्रियों (बालू, मिट्टी, सीपियों, लकड़ी) से चीज़ें बनाने का कौशल प्राप्त करते हैं। उन्हें प्राविधिक रूपांकन की प्रारम्भिक जानकारी दी जाती है (वे खिलौने, मॉडल और नमूने बनाते हैं, हिस्से जोड़कर चीज़ों को शक्ल देते हैं)। बिजली-यंत्रों का व्यावहारिक उपयोग सिखाया जाता है। पाठ्य-क्रम में शिक्षण-प्रयोगीय खेत में कृषि-श्रम को भी स्थान दिया गया है (फ़सल के मुताबिक खण्ड-विभाजन और खेत की तैयारी, खेती के मामूली तजरबे करना)। देहाती स्कूलों में शहरी स्कूलों के मुकाबले में ज़मीन पर अधिक काम कराया जाता है।

ललित कलाओं की शिक्षा में वास्तविक चीज़ों और मॉडलों का चित्रण और सजावटी काम शामिल हैं। इस शिक्षा का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि बालकों में ललित कला-सम्बन्धी क्रियाशीलता की क्षमता और कौशल पैदा किया जाये, बल्कि यह भी कि उनमें सौन्दर्य-बोध की चेतना तथा कला

के प्रति प्यार और दिलचस्पी भी बढ़ायी जाये। ललित कला की प्रमुख रचनाओं और महान चित्रकारों के बारे में वार्तायें भी इसी उद्देश्य की पूर्ति करती हैं। चित्रकारी के पाठों का पठन और श्रम के पाठों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।

संगीत और गायन के पाठ्यक्रम के तीन मूलभूत भाग हैं– स्वर-ज्ञान का विकास, गायन और संगीत-श्रवण। संगीत की व्यावहारिक शिक्षा नहीं दी जाती। बाल-संगीत विद्यालय, संगीत मंडलियां, स्टूडियो, पायनियर भवनों और प्रासादों के वाद्यवृन्द यह कार्य सम्पन्न करते हैं। स्कूलों में सहगन-दल, वाद्यवृन्द और संगीत-मंडल बनाये जाते हैं।

व्यायाम बालक के सर्वतोमुखी विकास का महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रारम्भिक स्कूल में बालक तरह-तरह की पंक्तियां बनाने और उन्हें नये रूप देने समेत विभिन्न व्यायाम, सामान्य विकास की कसरतें (किसी चीज के बिना, बड़े और छोटे गेंद के साथ, आकृति सुन्दर बनाने के लिये) करते हैं। उन से तेज चलना, भागना और कूदना-फांदना भी कराया जाता है। तीसरी कक्षा में डंडों और गोलों की नटबाजी वाली कसरतों, मैदानी खेलों और स्कीइंग की वृद्धि हो जाती है। डाक्टर की अनुमति से ही बालकों को व्यायाम के पाठों में जाने दिया जाता है। जिन बालकों को स्वास्थ्य बुरा होने के कारण व्यायाम के पाठों में जाने की इजाजत नहीं होती, उन्हें चिकित्सीय व्यायाम कराया जाता है। व्यायाम के अधिकतम पाठ खुली हवा में–स्कूल के खेलकूद-मैदानों, क्रीड़ांगनों और बच्चों के पार्कों में–होते हैं।

माध्यमिक शिक्षा। प्रारम्भिक शिक्षा अपूर्ण माध्यमिक शिक्षा (४ से ८ कक्षा तक) और पूर्ण माध्यमिक शिक्षा (९-१० कक्षाओं तक तथा कुछ जनतन्त्रों में ९-११ कक्षाओं) के स्तर पर विज्ञानों के मूलभूत सिद्धांतों का क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिये आधारशिला होती है। चौथी कक्षा से एक अध्यापक नहीं, (जैसा कि तीसरी कक्षा तक होता है), बल्कि कई अध्यापक पढ़ाने लगते हैं। अध्यापकगण बालकों को मानसिक रूप से अपने को इस नई स्थिति के अनुसार ढालने में मदद देते हैं। आठवर्षीय और माध्यमिक स्कूल के पाठ्यक्रम में १० से अधिक स्वतन्त्र विषय शामिल हैं।

रूसी भाषा का विधिगत पाठ्यक्रम चौथी-नौवीं कक्षाओं में पढ़ाया जाता है। इसमें उच्चारण, शब्द-भंडार, शब्द-रचना, व्याकरण (रूप-विचार और वाक्य-रचना) तथा सही लिखावट के अभ्यास (हिज्जों और

तो ऐसे शुरू हुआ था शिक्षा-शिखर की ओर बढ़ने का मार्ग

न० कों० क्रुप्स्काया और अ० व० लूनाचार्स्की १९२५ में मास्को में हुई अखिल सोवियत सर्वांग अध्यापक कांग्रेस के प्रतिनिधियों के बीच

उत्तरी ध्रुवीय वृत्त के पार तालनाख बस्ती। "स्वेत्ल्याच्योक" (जुगनू) बालोद्यान के बच्चे न तो कड़ाके के जाड़े-पाले से घबराते हैं और न ही लम्बी ध्रुवीय रातों से

प्रकृति में जान-पहचान

एस्तोनिया के कोख्त्ला-यार्वे नगर के एक बालोद्यान में
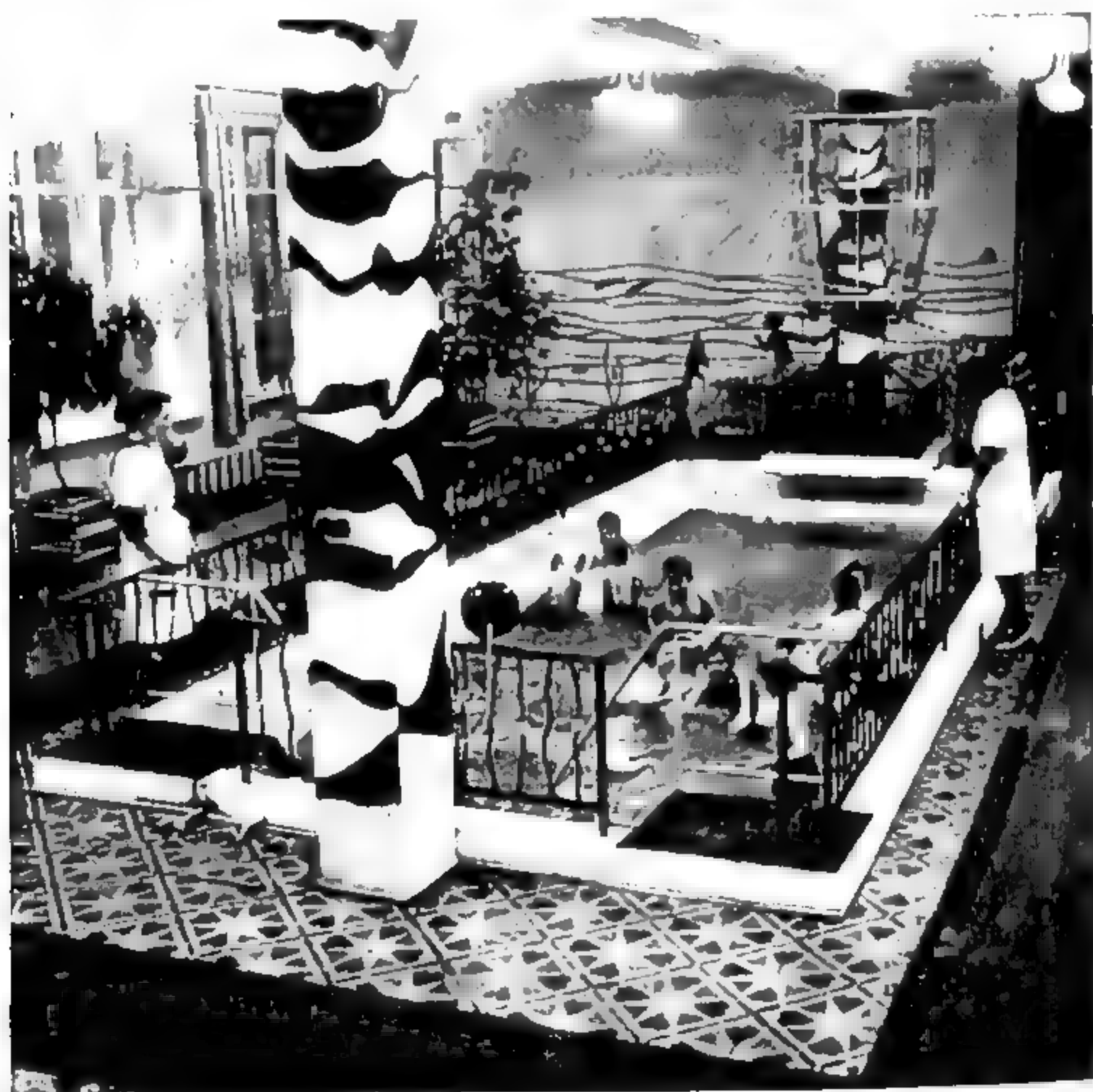
लेनिनग्राद के ये बालक अपनी
भी तस्वीरें बनाते हैं और
अपने दोस्तों की भी

मीर्नी नगर का माध्यमिक स्कूल नं० ८

ऊँचे अल्ताई पर्वतों की ग्रोन-गराई बस्ती के माध्यमिक स्कूल में २५० छात्र हैं

स्वायत्तक क्षेत्र के नेनेत्स, ननाइत्स और उत्तरी जातियों के शिकारियों और मछुओं के बच्चे छात्रावास स्कूलों में शिक्षा पाते हैं

किशीनेव नगर की ईरा जादान का विशेष संगीत विद्यालय में शिक्षा का दूसरा साल चल रहा है

विदेशी भाषा की पढ़ाई के लिये यहां सब जरूरी साजसामान है

ताजिकिस्तान में मदरीहीन आइनी छात्रावास स्कूल। अरबी भाषा पाठ्यक्रम में शामिल है

क्रास्नोदार क्षेत्र के "क्रास्नो-आर्मेइस्की" राजकीय फ़ार्म के माध्यमिक स्कूल की ९ वीं कक्षा में पाठ चल रहा है

स्कूल का प्रसारण-कक्ष

कीरोवाकान के स्कूल नं० ३ के छात्र—आगे चलकर यही इलेक्ट्रानिक मशीनों पर काम करेंगे

नववर्ष का फ़र्वृक्ष – जाड़े की छुट्टियों में सबसे ज़्यादा दिलचस्प त्योहार होता है

ताशकन्द के जवान इमारतसाज़ – जवान मज़दूरों के स्कूल में शिक्षा पाते हैं

लेनिनाबाद की कपड़ा मिल के संस्कृति प्रासाद में बाल-लोक-नृत्य-मण्डली अभ्यास कर रही है।

स्कूल का गीत समारोह

चिर्चिक (उज़्बेकिस्तान) नगर के पायनियर और स्कूली बालकों के प्रासाद में कठपुतली थियेटर के प्रथम नाटक-प्रदर्शन के पहले।

पायनियरों की एक सभा

"आर्तेक"–इस सुन्दर नगरी के मालिक हैं–पायनियर
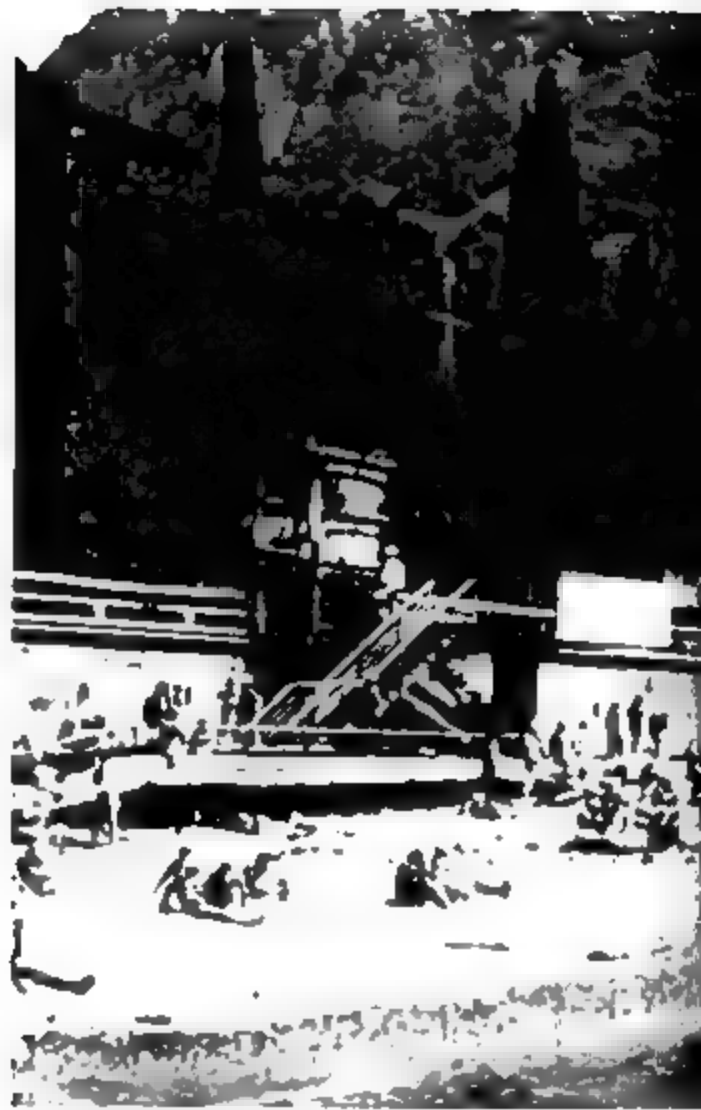
गर्मियों के शिविरों के लिये सुन्दरतम स्थान चुने जाते हैं

वोरकूता के बाल-पायनियरों के प्रासाद की एक झांकी
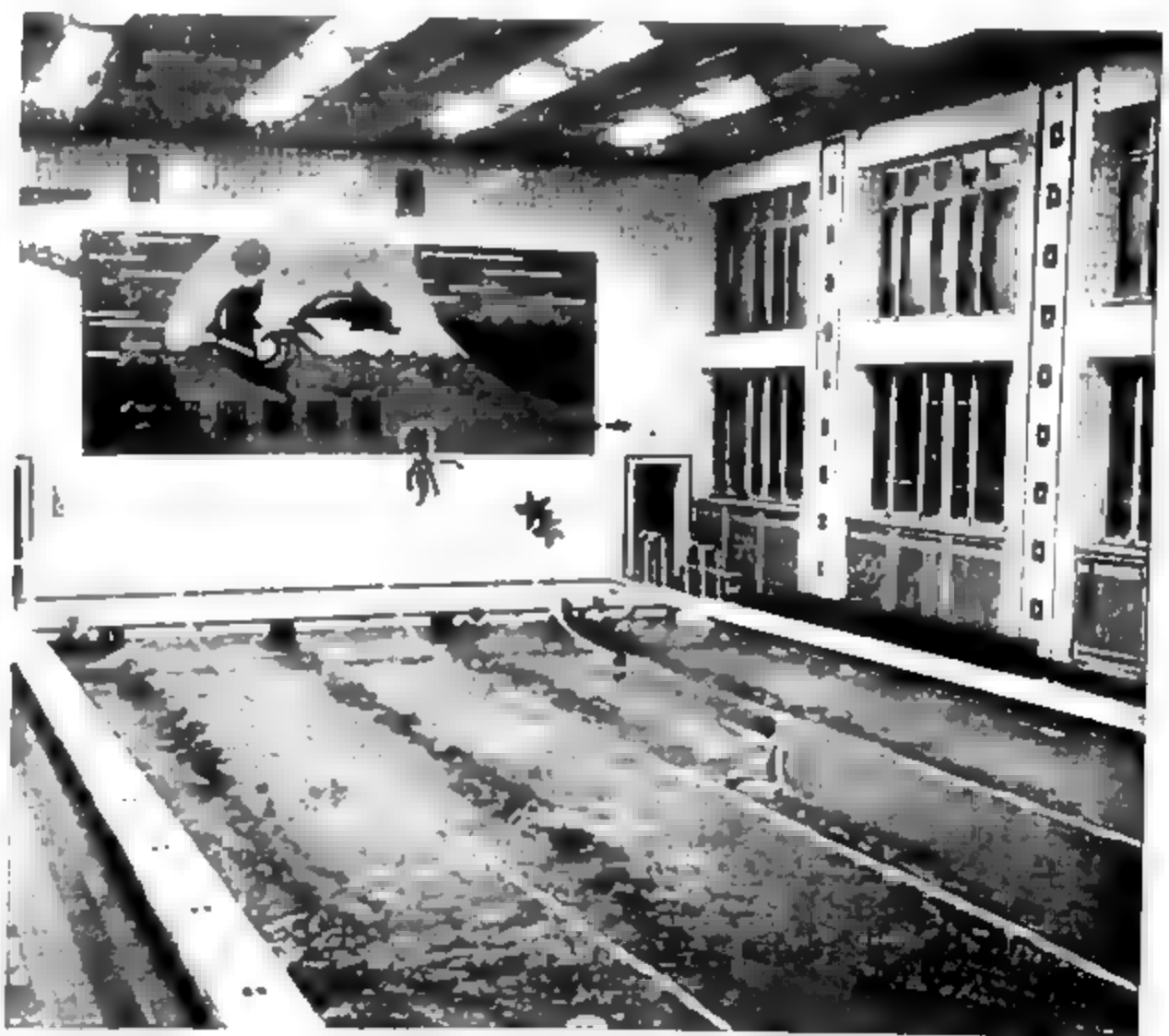
त्बिलीसी में बालकों का फुट-बाल स्कूल

कभी ये वॉलीबाल के शान-दार खिलाड़ी बनेंगे

ऊंचा सुननेवाले बच्चों के स्कूल में

कक्षा में प्राप्त ज्ञान खेत में जाकर पक्का होता है

विराम-चिह्नांकन), वाणी के जबानी और लिखित रूपों का विकास, शैली के तत्वों और भाषा के बारे में कुछ अन्य सामान्य जानकारी शामिल है। कठिन विषयों को मिली-जुली कक्षाओं में दो अवस्थाओं में बांट कर पढ़ाया जाता है। वक्तृता-शक्ति के विकास की ओर ख़ास ध्यान दिया जाता है।

संघीय और स्वायत्त समाजवादी जनतन्त्रों के जातीय स्कूलों में निर्देशित सिद्धान्तों के अनुसार मातृभाषा और रूसी भाषा (जो छात्रों और उनके माता-पिताओं की इच्छा होने पर ही पढ़ायी जाती है) का पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। प्रत्येक कक्षा में मातृभाषा और रूसी भाषा की पढ़ाई का समय जनतन्त्र का शिक्षा-मन्त्रालय तय करता है।

स्कूल के **साहित्य-पाठ्यक्रम** (चौथी से दसवीं कक्षा तक) का कार्यभार छात्रों का रसात्मक और नैतिक विकास करना है, उनकी कलात्मक रुचियों को रूप देना है। छात्र रूसी और सोवियत साहित्य, सोवियत संघ की जातियों की कृतियों और विदेशी साहित्य का परिचय प्राप्त करते हैं। यह कार्यक्रम दो अवस्थाओं में बांटा गया है – चौथी से सातवीं कक्षा तक – प्रारम्भिक साहित्य-पाठ्यक्रम, आठवीं से दसवीं कक्षा तक – क्रमबद्ध पाठ्यक्रम। पहली अवस्था में छात्र कलाकृतियों के रूप में साहित्यिक रचनाओं की विशेषता तथा साहित्य की आधारभूत विधाओं का प्रारम्भिक परिचय पाते हैं, भावपूर्ण ढंग से पढ़ना सीखते हैं और उनमें ख़ुद पढ़ने की इच्छा पैदा होती है। दूसरी अवस्था में ऐतिहासिक-साहित्यिक दृष्टि से साहित्य का अध्ययन किया जाता है। इस अवस्था में लेखक के सृजन मार्ग के स्पष्टीकरण और उसकी रचनाओं के कलात्मक और सामाजिक महत्त्व की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। छात्रों को साहित्य के सैद्धान्तिक पक्ष की भी जानकारी करायी जाती है। इस कार्यक्रम में तीन तरह की रचनायें शामिल हैं – एक तो वे हैं जिन का अनिवार्य रूप से कक्षा में अच्छी तरह विश्लेषण किया जाता है, दूसरी ऐसी रचनायें हैं, जिन्हें पढ़ना तो लाजिमी है, मगर जिनका कक्षाओं में विस्तृत विश्लेषण नहीं किया जाता और तीसरी ऐसी रचनायें होती हैं, जिनकी छात्रों को पसन्द के मुताबिक घर पर पढ़ने की सिफ़ारिश की जाती है।

संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों में उनका अपना और रूसी साहित्य पढ़ाया जाता है। जनतन्त्रों के शिक्षा-मन्त्रालय उनके पाठ्यक्रम तैयार करते हैं।

आठवर्षीय और माध्यमिक स्कूल के सभी वर्षों के दौरान **इतिहास** पढ़ाया

4—1387

जाता है। चौथी कक्षा में रूस के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में कहानियों से उसका प्रारम्भ होता है। इस के बाद इतिहास का क्रमबद्ध पाठ्यक्रम चलता है। पांचवीं कक्षा में प्राचीन संसार का इतिहास ; छठी कक्षा में मध्ययुग का इतिहास ; सातवीं कक्षा में प्राचीनतम समय से १८वीं शताब्दी के अन्त तक का रूस का इतिहास ; आठवीं कक्षा में – नया इतिहास, पहला काल (१९वीं शताब्दी के आठवें दशक तक) और १८वीं सदी के अन्त से १९वीं सदी के अन्त तक का रूस का इतिहास ; नौवीं कक्षा में – नया इतिहास, दूसरा काल (१९१४–१९१८ के प्रथम विश्वयुद्ध समेत), २०वीं शताब्दी के आरम्भ से रूस में समाजवाद की विजय तक और १९१७ से दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति तक विदेशों का नवीनतम इतिहास ; दसवीं कक्षा में – सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण का अन्त और कम्युनिज़्म के व्यापक निर्माण तथा विदेशों का नवीनतम इतिहास। इतिहास का अध्ययन सामाजिक-आर्थिक ढांचों के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा के आधार पर समाज के विकास की नियमबद्धता की वैज्ञानिक समझ बढ़ाने में छात्रों की सहायता करता है। इतिहास के पाठ्यक्रम में इतिहास-स्रष्टा और भौतिक तथा अभौतिक निधियों के रचयिता के रूप में जनसाधारण की भूमिका को क्रमिक ढंग से स्पष्ट किया जाता है। संघीय जनतन्त्रों के जातीय स्कूलों में जनतन्त्र का इतिहास या तो अलग पाठ्यक्रम के रूप में या रूस के इतिहास के सिलसिले में पढ़ाया जाता है।

तरुणों की वैचारिक-राजनैतिक परिपक्वता में **समाजशास्त्र का पाठ्यक्रम** बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह अन्तिम (१०वीं या ११वीं) कक्षा में पढ़ाया जाता है। इसमें द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के मूलभूत तत्व, उत्पादन के पूंजीवादी ढंग के लक्षण, पूंजीवाद की चरम और अन्तिम अवस्था के रूप में साम्राज्यवाद के लक्षण शामिल हैं और वह पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण का क्रान्तिकारी रूप स्पष्ट करता है। इस पाठ्यक्रम का मूलभूत भाग समाजवाद और उत्पादन के समाजवादी ढंग (उत्पादन के साधनों पर समाजवादी स्वामित्व, समाजवादी उत्पादन का ध्येय और उसकी प्राप्ति के साधन, जन-अर्थव्यवस्था का योजनाबद्ध विकास, समाजवाद के अन्तर्गत माल-मुद्रा सम्बन्ध, समाजवाद के अन्तर्गत श्रम और वितरण, समाजवादी समाज का सामाजिक ढांचा, समाजवाद के अन्तर्गत जातियां और अल्प जातियां, सोवियत राज्य और

कानून, सोवियत नागरिकों के मूलभूत अधिकार और कर्तव्य) से सम्बन्धित मुख्य प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित करना है।

आगे इस पाठ्यक्रम में समाजवाद के कम्युनिज़्म में बदल जाने – सोवियत संघ में समाजवाद की पूर्ण और निश्चित विजय, कम्युनिज़्म के भौतिक-प्राविधिक आधार के निर्माण, कम्युनिस्ट सामाजिक सम्बन्धों और समाजवाद की आत्मिक संस्कृति की संरचना तथा मेहनतकशों के कम्युनिस्ट शिक्षण की समस्याओं की ओर ध्यान दिया गया है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका, उसके ध्येय और कार्यभार, मेहनतकशों के साथ उसके सम्पर्कों की विविधता और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में उसकी भूमिका के अध्ययन के साथ यह पाठ्यक्रम समाप्त होता है। अन्त में महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के विश्वव्यापी महत्त्व पर प्रकाश डाला जाता है। समाजशास्त्र का अध्ययन स्कूल के अन्य विषयों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखते हुए किया जाता है। छात्रों की इतिहास, साहित्य, जैविकी, भौतिकशास्त्र, रसायन और भूगोल की जानकारी दार्शनिक निष्कर्षों और इस कोर्स की अन्य सैद्धान्तिक समस्याओं को समझने के लिये ज़मीन तैयार करती है।

चौथी-दसवीं (११वीं) कक्षाओं में **गणित के पाठ्यक्रम** को बहुत महत्त्व दिया जाता है। इसे गणित के आधुनिक स्तर के अनुरूप बनाने के लिये पाठ्यक्रमों में गणित और बीजगणित के बीच की कृत्रिम बाधाओं को दूर कर दिया गया है, सामग्री के अध्ययन में फलीय रवैये को अधिक दृढ़तापूर्वक व्यावहारिक रूप दिया जाता है, प्राकृतिक विज्ञान और प्रविधि के लिये अधिक महत्त्व रखनेवाली धारणाओं और विधियों – नियामक (coordinate), दिष्टों (vector), व्युत्पन्न (derivative) और समाकल (integral) आदि पर अधिक ध्यान दिया जाता है। ९वीं कक्षा में चलन कलन (differential calculus) का और १०वीं कक्षा में समाकल (integral) का अर्थ स्पष्ट किया जाता है। दिष्ट (vector) ७वीं कक्षा में समझा दिये जाते हैं।

गणित के ज्ञान का छात्रों के श्रम-पाठों और भौतिकी, रसायन, ड्राइंग की पढ़ाई में उपयोग किया जाता है, वह पोलीटेक्निकल शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। पाठ्यक्रम में भूपृष्ट-सर्वेक्षण और भूमापन को स्थान दिया गया है।

६ठी-१०वीं कक्षाओं में **भौतिकी** पढ़ाई जाती है। इसका पाठ्यक्रम

दो हिस्सों में बांटा गया है। पहला हिस्सा छठी-सातवीं कक्षाओं में और दूसरा आठवीं-दसवीं कक्षाओं में पढ़ाया जाता है।

पाठ्यक्रम में यान्त्रिकी, प्रकाशविज्ञान, बिजली और तापविज्ञान की जानकारी दी जाती है। सभी स्पष्टीकरण पदार्थों की बनावट के व्यूहाणु सिद्धान्त के अनुसार दिये जाते हैं। बिजली का अध्ययन करते समय व्यूहाणु की धारणा के साथ-साथ परमाणु की रचना की प्रारम्भिक जानकारी भी दी जाती है।

भौतिकी के विधिवत पाठ्यक्रम का वैज्ञानिक स्तर पहले की तुलना में अधिक ऊंचा है, मगर वर्णन का प्रयोगीय आधार सुरक्षित रखा गया है। हर कक्षा के पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक भाग प्रयोगों के साथ समाप्त होता है।

पदार्थ की बनावट के व्यूहाण्विक और परमाणविक तथा व्यूहाण्विक बल गति विज्ञान और इलैक्ट्रॉन-सम्बन्धी सिद्धान्त भौतिकी के पाठ्यक्रम के वैज्ञानिक आधार हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से कई द्वन्द्वात्मक-भौतिकवादी दार्शनिक विचार स्पष्ट हो जाते हैं।

पाठ्यक्रम में शामिल सर्वप्रचलित यन्त्रों, तापइंजनों, बिजली के उत्पादन और उसके उपयोग का अध्ययन, संचार-साधनों तथा बिजली और रेडियो इंजीनियरी का परिचय, प्रयोगशालीय कार्य, भौतिकी-सम्बन्धी व्यावहारिक कार्य और उद्यम-दर्शन पोलीटेक्निकल शिक्षा की समस्याओं के समाधान में सहायक होते हैं।

खगोलशास्त्र का पाठ्यक्रम माध्यमिक स्कूल की भौतिकी-गणित-सम्बन्धी शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग तथा छात्रों का द्वन्द्वात्मक-भौतिकवादी दृष्टिकोण बनाने का साधन है। यह कोर्स १०वीं (११वीं) कक्षा में पढ़ाया जाता है। इस विषय की संक्षिप्त भूमिका के बाद छात्र सौरमण्डल की रचना, सौरमण्डल के कायों की भौतिक बनावट; तारों और तारों के बीच के अन्तरिक्ष; ब्रह्माण्ड तथा आकाशीय कायों के उद्भव और विकास का परिचय पाते हैं। खगोलीय निरीक्षण के लिये विशेष समय दिया जाता है। खगोलशास्त्र के पाठ्यक्रम में अन्तरिक्ष की खोज की नवीनतम उपलब्धियों को स्थान दिया गया है।

रसायनशास्त्र के पाठ्यक्रम (७वीं-१०वीं कक्षाओं में) में प्रांगारिकी (organic chemistry) और अप्रांगारिकी (inorganic chemistry) के मूलभूत सिद्धान्त पढ़ाये जाते हैं। शुरू में छात्र रसायन की आधारभूत धारणाओं को समझ लेते हैं और इसके बाद आवर्त्त नियम तथा मूल द्रव्यों की आवर्त्त प्रणाली

तथा पदार्थों की संरचना से परिचित होते है और इस ग्राधार पर कुछ ग्रधिक विशिष्ट ग्रौर महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का ग्रध्ययन करते हैं।

ग्रांगारिकी १०वी कक्षा में पढ़ायी जाती है। इसमें मूलभूत विषय हैं – हाइड्रोकार्बन, ग्राक्सीजन-युक्त ग्रांगारिक संयोग, नाइट्रोजन-युक्त ग्रांगारिक संयोग। रासायनिक सम्बन्धों के इलैक्ट्रानीय स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ग्रांगारिकी ग्रौर ग्रग्रांगारिकी के बारे में सामान्यीकरण के साथ पाठ्यक्रम समाप्त होता है।

सिद्धान्त का व्यवहार के साथ सम्बन्ध छात्रों के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण रासायनिक उद्यमों, जैसे कि धातु-उद्योग, रासायनिक खाद का उत्पादन ग्रौर दाहक पदार्थों का शोधन करनेवाले कारखानों की कार्रवाई तथा ऊर्जा में रसायन की भूमिका के वैज्ञानिक ग्राधार का परिचय सुनिश्चित करता है। हर विषय के साथ प्रयोगशाला में तजरबे ग्रौर व्यावहारिक कार्य किये जाते हैं।

जैविकी का पाठ्यक्रम ५वीं कक्षा से शुरू होता है। चौथी ग्रौर प्रारम्भिक कक्षाग्रों में प्रकृतिशास्त्र की शिक्षा के समय छात्रों को सजीव प्रकृति की थोड़ी-बहुत जानकारी करा दी जाती है। पांचवीं ग्रौर छठी कक्षा की तीन तिमाहियों के दौरान छात्र वनस्पतिशास्त्र, छठी कक्षा की ग्रन्तिम तिमाही ग्रौर ७वीं कक्षा में जन्तुविज्ञान, ८वीं कक्षा में मानवशरीरविज्ञान तथा ९वीं-१०वीं कक्षाग्रों में सामान्य जैविकी पढ़ते हैं। पाठ्यक्रम में पैत्रागतिकी (genetics) ग्रौर पारिस्थिकी तथा शरीरक्रिया-सम्बन्धी सामग्री के चयन के व्यूहाण्विक ग्राधारों तथा जीवकोष की बनावट ग्रौर कार्यों को स्पष्ट करने के सिलसिले में व्यूहाण्विक जैविकी की उपलब्धियों को स्थान दिया गया है। सारा पाठ्यक्रम विकास के सिद्धान्त पर ग्राधारित है। सामान्य जैविकी के पाठ्यक्रम में जैविकी के विकास की मुख्य दिशाग्रों पर ग्रधिक विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है, किन्तु वनस्पति, जन्तु ग्रौर मानवशरीरविज्ञान की पढ़ाई के समय भी छात्रों को डार्विन की शिक्षा के ग्राधार पर जीव-जगत के विकास, मानव के प्रादुर्भाव, जीवकोष-विद्या, उपापचयन, वंशवृद्धि, उत्तराधिकार में वंशगत लक्षणों की प्राप्ति की नियमबद्धता तथा जीवधारी ग्रौर उसके परिवेश के पारस्परिक सम्बन्ध का परिचय दिया जाता है। छात्रों का जीवन-दृष्टिकोण बनाने में इन सब चीजों का बहुत महत्त्व होता है।

जैविकी की शिक्षा छात्रों को कृषि के वैज्ञानिक ग्राधार समझने में

मदद देती है। सैद्धान्तिक पढ़ाई के साथ-साथ वास्तविक चीजें दिखायी जाती हैं, प्रयोगशाला में तजरुबे किये जाते हैं और खेतों में असली काम कराया जाता है।

भूगोल का पाठ्यक्रम ५-१० वीं कक्षाओं में चलता है। छात्रों को भूगोल की प्रारम्भिक जानकारी चौथी और प्रारम्भिक कक्षाओं में प्रकृतिशास्त्र की पढ़ाई के समय प्राप्त होती है। ५-७ वीं कक्षाओं में प्राकृतिक भूगोल की पढ़ाई होती है। छात्र ठोस सामग्री के आधार पर सारी पृथ्वी की प्रकृति के विकास की नियमबद्धता से परिचित होते हैं, विभिन्न देशों और क्षेत्रों की प्राकृतिक विभिन्नता के बारे में सूचना प्राप्त करते हैं, दुनिया के राजनैतिक मानचित्र का परिचय पाते हैं। ८-९ वीं कक्षाओं में पढ़ाई का विषय होता है – आर्थिक भूगोल (आबादी – समाज की मुख्य उत्पादन-शक्ति के रूप में, अर्थव्यवस्था के विकास का वर्तमान स्तर, अर्थव्यवस्था की विभिन्न शाखाओं के पारस्परिक सम्बन्धों और स्थाननिर्धारण की विशेषतायें, श्रम के भौगोलिक विभाजन की नियमबद्धता)।

५ वीं कक्षा में प्राकृतिक भूगोल का आम कोर्स, ६ठी कक्षा में महाद्वीपों का प्राकृतिक भूगोल, ७ वीं कक्षा में सोवियत संघ का प्राकृतिक भूगोल, ८ वीं कक्षा में सोवियत संघ का आर्थिक भूगोल और ९ वीं कक्षा में विदेशों का आर्थिक भूगोल पढ़ाया जाता है।

संघीय जनतन्त्रों में उक्त पाठ्यक्रम के अलावा जनतन्त्र के प्राकृतिक और आर्थिक भूगोल की भी पढ़ाई होती है।

प्राकृतिक भूगोल के पाठ्यक्रमों में सामाजिक राजनैतिक ढंग की कुछ जानकारी भी शामिल होती है। मसलन छठी कक्षा में अफ़्रीका का अध्ययन करते हुए जनसंख्या, उसके घनत्व और नृवंशीय स्वरूप के साथ-साथ अफ़्रीकी जातियों की जीवन-स्थिति, अर्थव्यवस्था के ढंग, बस्तियों के प्रकार, महाद्वीप का औपनिवेशिक अतीत, महाद्वीप का आधुनिक राजनैतिक मानचित्र, अपनी स्वाधीनता के लिये अफ़्रीकी जातियों का नवउपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष आदि की ओर ध्यान दिया जाता है। दूसरे महाद्वीपों के पाठ्यक्रमों में भी, उनकी सामाजिक-राजनैतिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इसी तरह के प्रश्न शामिल किये जाते है।

पाठ्यक्रम के प्रत्येक भाग में गोलक और नक़शे के साथ व्यावहारिक कार्य और प्रदेश का स्वतन्त्र भौगोलिक वर्णन शामिल है।

छठी-८ वीं कक्षाओं में ड्राइंग सिखाई जाती है। इस के मुख्य अंग हैं –

रूप-रेखा, खाके, प्राविधिक रेखाचित्र और खाकों के मुताबिक नमूने बनाना। इनका अधिकतर भाग गणित और श्रम के पाठ्यक्रमों तथा पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रश्नों के हल के साथ घनिष्ठ रूप में सम्बन्धित है।

विदेशी भाषा (अंग्रेज़ी, फ़ांसीसी, जर्मन या स्पेनी) की पढ़ाई ५ वीं कक्षा में शुरू होती है और स्कूल की शिक्षा समाप्त होने तक जारी रहती है। इसका ध्येय यह होता है कि छात्र रोज़मर्रा की ज़िन्दगी और सामाजिक विषयों पर बातचीत करना और विदेशी भाषा में सामग्री पढ़ना सीख जायें। शब्द-भंडार, उच्चारण और व्याकरण-सम्बन्धी छात्रों की जानकारी उनके विदेशी भाषा में बातचीत करने और एक खास हद तक लिख पाने के ध्येय की पूर्ति के अनुसार ही होती है। विदेशी भाषा की पढ़ाई के समय छात्र तत्सम्बन्धित देश के इतिहास, भूगोल और उसके सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन से भी परिचित होते हैं। यह चीज छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, अन्य राष्ट्रों की संस्कृति और प्रगतिशील परम्पराओं के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने में सहायक होती है।

विदेशी भाषा की कक्षा में अगर २५ से अधिक छात्र होते हैं, तो उन्हें दो दलों में बांट दिया जाता है। माध्यमिक स्कूलों में पढ़ाई के प्राविधिक साधनों का उपयोग निरंतर बढ़ाया जा रहा है, विशेष भाषा-कक्ष बनाये जा रहे हैं।

ऐसे विशेष स्कूल भी हैं, जिनमें कुछ विषय विदेशी भाषा में ही पढ़ाये जाते हैं। इन स्कूलों में विदेशी भाषा की पढ़ाई दूसरी कक्षा से ही शुरू हो जाती है। ८वीं कक्षा से कुछ विषयों की विदेशी भाषा में ही शिक्षा दी जाती है। ऐसे माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने पर छात्रों का भाषा पर काफ़ी अधिकार हो जाता है।

श्रम तरुण छात्रों की पोलीटेक्निकल तैयारी का एक सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है। शुरू की कक्षाओं में आरम्भ किया हुआ काम ४थी-८वीं कक्षाओं में जारी रहता है। श्रम के पाठ छात्रों को प्रारम्भिक प्राविधिक, कृषि और घरेलू कामकाज की योग्यता और कुशलता प्रदान करते हैं। श्रम के पाठ नियमतः स्कूल की वर्कशॉपों और स्कूल के शैक्षणिक-प्रयोगीय खेतों में दिये जाते हैं। श्रम-शिक्षण-कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूली वर्कशॉपों में लकड़ी, धातु और बिजली इंजीनियरी के कार्य की धीरे-धीरे अधिकाधिक जटिल शिक्षा दी जाती है। ७वीं कक्षा में छात्र लकड़ी और धातु विधायन-ख़राद और स्क्रूविंग ख़राद पर काम करना सीख जाते हैं। ८वीं कक्षा में छात्र धातु-

काट खराद पर काम करते है, आन्तरिक दहन इंजन और बिजली की मशीनों का अध्ययन करते हैं, यन्त्र-सम्बन्धी, रसायन-सम्बन्धी, जैविकी-सम्बन्धी, ऊर्जा-सम्बन्धी प्रौद्योगिकी के बारे में **सामान्य जानकारी** प्राप्त करते है। खाकों को समझने, सृजनात्मक ढंग से डिज़ाइन तैयार करने और नमूने बनाने की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। छात्रों की भौतिकी, रसायन, जैविकी और गणित की जानकारी को ध्यान में रखते हुए श्रम-शिक्षा-कार्यक्रम के सभी भागों की सैद्धान्तिक जानकारी दी जाती है।

घरेलू कामकाज (सामान्य श्रम-शिक्षा-कार्यक्रम के पाठ-भेद के रूप में) के शिक्षा-कार्यक्रम में पाककला, सिलाई, घर में प्रकाश-व्यवस्था, कमरे की सजावट और रसोई घर की सफ़ाई शामिल हैं। घरेलू कामकाज के विद्युत-चालित यन्त्रों, घर में काम आनेवाली मशीनों और बिजली के उपकरणों का उपयोग जानना, फूल-पौधे उगाना तथा फूल और झाड़ियां आदि रोपना इसके अन्तर्गत आते हैं।

देहाती स्कूलों के लिये दो शिक्षा-कार्यक्रम हैं, जिनमें से इच्छानुसार एक चुना जा सकता है। ये हैं – "प्राविधिक और कृषिश्रम" तथा "कृषि और घरेलू कामकाज-सम्बन्धी श्रम"।

चौथी-आठवीं कक्षाओं के लिये कोई भी श्रम-शिक्षा-कार्यक्रम व्यावसायिक योग्यता प्रदान नहीं करता।

९ वीं-१० वीं कक्षाओं में श्रम-शिक्षा प्रविधि और प्रौद्योगिकी की व्यावहारिक शिक्षा का रूप धारण कर लेती है। यह शिक्षा विस्तृत सामान्य वैज्ञानिक और पोलीटेक्निकल आधार पर व्यावसायिक तैयारी से कुछ कम स्तर पर दी जाती है। छात्रों को दोवर्षीय विशेष कार्यक्रमों के अनुसार, उनकी पसन्द के मुताबिक बिजली इंजीनियरी, रेडियो इलैक्ट्रानिकी, धातुकर्म, मोटर गाड़ियों, प्राविधिक ड्राइंग, व्यावहारिक रसायन, ट्रैक्टरों, फलोत्पादन, साग-सब्ज़ी-उत्पादन, पशु-पालन, कृषि-रसायन, कपड़ाकर्म या टाइपिंग की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। स्कूल अपनी भौतिक संभावनाओं और छात्रों की रुचियों के अनुसार व्यावहारिक शिक्षा का चुनाव करते हैं।

जहां उचित व्यवस्था होती है, वहां पेशों के स्तर तक तैयारी करा दी जाती है। ऐसी स्थिति में माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई समाप्त करनेवाले छात्र माध्यमिक शिक्षा के प्रमाणपत्र के साथ व्यावसायिक निपुणता का प्रमाणपत्र भी पाते हैं और उनकी कार्य-श्रेणी निर्धारित की जाती है।

श्रम-शिक्षा की कक्षा में छात्रों की संख्या २५ से अधिक होने पर उन्हें दो दलों में बांट दिया जाता है। बहुत-से माध्यमिक स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों को मोटरों, ट्रैक्टरों और कृषि-मशीनों पर काम करने की शिक्षा दी जाती है।

छठी कक्षा तक **ललित कला** के पाठ जारी रहते हैं। पेंसिल और जल-रंगों की चित्रकारी के साथ-साथ सजावटी रेखाचित्र भी बनाये जाते हैं। सृजनात्मक कल्पना के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। छात्रों को ललित कला की प्रमुख रचनाओं से परिचित कराने का काम भी जारी रहता है।

संगीत और गायन की अनिवार्य शिक्षा ७वीं कक्षा में समाप्त हो जाती है (इसके बाद पढ़ाई के समय के पश्चात इनकी शिक्षा दी जाती है)। पाठों में सोलो तथा सहगान की योग्यता बढ़ाई जाती है, स्वरलिपियों की जानकारी विस्तृत की जाती है, स्वरकारों और उनके कृतित्व की विशेषताओं के बारे में संक्षिप्त सूचना दी जाती है, विभिन्न प्रकार की संगीत-रचनायें सुनवाई जाती हैं।

सभी कक्षाओं के छात्र हफ्ते में दो घंटे **व्यायाम** करते हैं। हर कक्षा में व्यायाम, दौड़-कूद, स्कीइंग, मैदानी खेलों, बास्कटबाल (ऊंची कक्षाओं में हाथ-गेंद और वॉलीबाल) की शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त इच्छानुसार तैराकी, स्केटिंग, किशोरों के लिये कुश्ती तथा लड़कियों के लिये कलात्मक व्यायाम की शिक्षा की व्यवस्था भी की जाती है। शिक्षाक्रम में किशोरों-किशोरियों के लिये दौड़-कूद, स्कीइंग, स्केटिंग और तैराकी के अलग-अलग मानक निर्धारित किये गये हैं। छात्रों को व्यायाम के पाठ में जाने के लिये डाक्टर की अनुमति लेनी होती है। इच्छुकों को अनिवार्य शिक्षा के अतिरिक्त खेलकूद-विभागों, खेलकूद के विशेष स्कूलों (संध्यकालीन और रविवारीय) में शिक्षा पाने की सुविधा भी दी जाती है। तरह-तरह की स्वास्थ्यप्रद कसरतों को स्कूल के दैनिक कार्यक्रम में स्थान दिया गया है। बड़े विरामों में खेलों और पाठों के समय हल्की कसरत की व्यवस्था है। शिक्षाक्रम के अनुसार सभी छात्रों के लिये सभी विषयों की पढ़ाई समान है, मगर छात्रों की रुचियों के अनुसार **अतिरिक्त स्वैच्छिक शिक्षा** भी दी जाती है।

श्रमगत पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण की उपयुक्त व्यवस्था, विज्ञानों के मूलभूत सिद्धान्तों के शिक्षण की राजनैतिक उन्मुखता, ऐच्छिक शिक्षा के

समावेशन, उद्यमों, सामूहिक फ़ार्मों और राजकीय फ़ार्मों तथा कार्यालयों के साथ स्कूलों का सम्पर्क छात्रों के सजग रूप से पेशा चुनने में सहायक होता है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस ने युवाजन के रुझान और जन-अर्थव्यवस्था के लिये कुशल कार्यकर्त्ताओं की मांगों को ध्यान में रखते हुए छात्रों को पेशों की ओर प्रवृत्त करने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया है।

सोवियत स्कूली छात्रों को उनकी पढ़ाई के विषयों में अत्यधिक सही वैज्ञानिक जानकारी दी जाती है। इससे उनमें मार्क्सवादी-लेनिनवादी भौतिकवादी जीवन-दृष्टिकोण का आधार-निर्माण सुनिश्चित होता है, सामयिक राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं को अच्छी तरह समझने, समाजवाद की शक्ति और सबसे अधिक न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के रूप में कम्युनिज़्म की अनिवार्य विजय को साफ़ तौर पर पहचानने की क्षमता पैदा होती है। साथ ही स्कूल की समूची पढ़ाई बालकों का सर्वतोमुखी विकास और जीवन के साथ शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध सुनिश्चित करती है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य के संस्थापक व्ला० इ० लेनिन के जीवन से छात्रों का परिचित होना उनकी शिक्षा-दीक्षा की दृष्टि से बहुत ही महत्त्व रखता है। यह कार्य मुख्यतः इतिहास, साहित्य और समाजशास्त्र के पाठों में पूरा किया जाता है। किन्तु लेनिन की शिक्षा और कार्य इतने सर्वतोमुखी है कि पाठ्यसामग्री को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करने और सोवियत संघ में कम्युनिज़्म के निर्माण में लेनिन के मूलभूत विचारों की क्रियान्विति को स्पष्ट करने की आवश्यकता अनुभव होने पर सभी विषयों के अध्यापक अनिवार्य रूप से लेनिनवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों का सहारा लेते हैं।

सोवियत स्कूल में शिक्षा-संगठन और शिक्षा-विधियां

सोवियत स्कूलों की स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा-प्रक्रिया के संगठन के विभिन्न रूपों का वैज्ञानिक अनुसन्धान और उनकी व्यावहारिक जांच-पड़ताल की गयी। परिणामस्वरूप सोवियत अध्यापनशास्त्र के उसूलों के मुताबिक़ आवश्यक सुधार के साथ कक्षीय-पाठ विधि को ही अधिक उपयुक्त माना गया। उच्च कक्षाओं में प्रयोगशालीय काम और सेमिनारों का शिक्षा-

संगठन के सहायक कार्य के रूप में उपयोग किया जाता है। स्वतन्त्र रूप से घर के लिये दिये गये पाठ तैयार करना छात्रों के काम का स्थायी अंग है। इसके लिये स्कूल के पाठों में छात्र आवश्यक योग्यता प्राप्त करते हैं, जहां सामूहिक कार्य के साथ वैयक्तिक कार्य को मिलाया जाता है।

हर कक्षा के पाठ स्थायी छात्र संख्या के साथ उनके कमरों, भौतिकी, रसायन, जैविकी और ड्राइंग के कक्षों, व्यायाम के हॉलों, शिक्षा-सम्बन्धी वर्कशॉपों या खुली हवा (भूगोल, जैविकी, व्यायाम) में होते हैं। पाठ-सम्बन्धी सैरें (प्रकृति-परिचय, औद्योगिक और कृषि उद्यमों, संग्रहालयों और प्रदर्शनियों को देखना आदि) भी होती हैं।

नगरों और गांवों के अधिकतर माध्यमिक स्कूलों में भी कक्षीय शिक्षा-पद्धति चालू की गयी है, अर्थात भौतिकी, रसायन और जैविकी के परम्परागत कक्षों के साथ-साथ अन्य सभी विषयों (भाषा, साहित्य, इतिहास आदि) के कक्ष भी बनाये जाते हैं। इन कक्षों में दृश्यमान सहायक सामग्री और प्राविधिक साधनों, दस्तावेजों और सन्दर्भ-पुस्तकों के संकेन्द्रण से सभी विषयों का बहुत प्रभावपूर्ण ढंग से शिक्षण सम्भव होता है।

पाठ का सब से प्रमुख कार्य छात्रों को विशिष्ट विषय-शिक्षाक्रमों की विधिपूर्वक और तर्कपूर्ण सुसंगतता के साथ नवीनतम ज्ञान से समृद्ध करना है। अध्यापक का कार्यभार विभिन्नतम विधियों, पाठों की बढ़िया योजना और हर पाठ की श्रेष्ठ व्यवस्था द्वारा छात्रों को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से ज्ञान ग्रहण करवाना है।

ज्ञान का सुदृढ़ीकरण और उसकी जांच, व्यावहारिक कौशल और योग्यता प्रदान करना शिक्षा-प्रक्रिया के अभिन्न अंग हैं। इन कार्यभारों को हर विषय की विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए बड़े अच्छे ढंग से सोच-समझकर तैयार किये गये अभ्यासों द्वारा पूरा किया जाता है।

घर के लिये दिया जानेवाला काम ज्ञान को पुख्ता करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। छात्रों को घर पर पाठ्यपुस्तक के तत्सम्बन्धी पैरे को पढ़ने और उसका सार समझने, सवाल हल करने, रूसी या विदेशी भाषा के अभ्यास करने या निबन्ध लिखने का काम दिया जाता है। घर के लिये दिये जानेवाला काम पूरा करने से छात्रों के स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की योग्यता की पारंगतता में मदद मिलती है। स्कूल के निर्देशक और अध्यापक घर के लिये दिये जानेवाले काम की मात्रा और जटिलता निर्धारित करते हैं जिससे कि छात्रों पर अधिक बोझ न पड़े।

पांच अंकों की प्रणाली ५ (उत्तम), ४ (अच्छा), ३ (संतोषजनक), २ (बुरा), १ (बहुत बुरा) के अनुसार छात्रों के ज्ञान की कोटि, उनकी क्षमता और योग्यता को परखा जाता है। जबानी सवालों, तरह-तरह की परीक्षाओं, निबन्धों, भूगोल और इतिहास के नक़्शों पर छात्रों के स्वतन्त्र कार्य, ड्राइंग और प्रयोगशालीय कार्य के आधार पर छात्रों के ज्ञान की जांच की जाती है।

उद्देश्यों और स्वरूप के मुताबिक पाठ बहुत भिन्नतापूर्ण हैं। छोटी और बीच की कक्षाओं में अक्सर ऐसे पाठ होते हैं, जिन में ऊपर इंगित शिक्षा-प्रक्रिया के अधिकतर अंश पाये जाते हैं। पाठ के अंशों के बीच समय का विभाजन और उनका तर्कसंगत क्रम अध्यापक निर्धारित करता है। संश्लेषित पाठों के साथ-साथ अधिक विशिष्ट पाठ – व्याख्यान (उच्च कक्षाओं में), प्रयोगशालीय कार्य, सेमिनार (छात्रों के भाषण और उन पर विचार-विनिमय) आदि के ढंग के पाठ भी होते हैं। योग्यता और कुशलता को पुख्ता करने, ज्ञान को जबानी जांचने, पाठ्यसामग्री को दोहराने और क्रमबद्ध करने आदि के पाठ भी होते हैं।

शिक्षा-प्रक्रिया के दौरान अध्यापक और छात्रों के विभिन्न प्रकार के कार्यों के ताल-मेल के अनेक रूप हो सकते हैं। शिक्षा के सामान्य ध्येयों और प्रत्येक पाठ के ध्येयों की पूर्त्ति के लघुतम मार्ग का चुनाव अध्यापक पर, उसकी वैज्ञानिक और शिक्षाशास्त्रीय तैयारी पर निर्भर करता है। सोवियत अध्यापनशास्त्र अध्यापक के मार्ग-दर्शन का आधार है।

इसमें शिक्षा और सदाचार-शिक्षण के अभिन्न सम्बन्ध का सिद्धान्त सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा के दौरान ही छात्रों का जीवन-दृष्टिकोण, उनकी नैतिक धारणायें और कलात्मक रुचियां बनती हैं, उनमें नागरिकता, समाजवादी देशभक्ति और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावनायें जन्म लेती हैं। सभी पाठ, उनकी विषय-वस्तु चाहे कुछ भी क्यों न हो, छात्रों में ज्ञान और विद्या-पिपासा पैदा करते हैं, उनमें संगठनशीलता, अनुशासन, श्रम-प्रियता और कार्य के प्रति जिम्मेदारी की भावना भरते हैं।

शिक्षा का उच्च स्तर सुनिश्चित करने की दृष्टि से चेतनशीलता, ज्ञान के सुदृढ़ीकरण और क्रमबद्धता का बहुत महत्त्व है। ये तीनों गुण आपस में सम्बन्धित हैं और एक-दूसरे को समृद्ध करते हैं।

चेतनशीलता और ज्ञान की सुदृढ़ता तथा साथ ही पोलीटेक्निकल शिक्षण के कार्यभारों की पूर्त्ति को सुनिश्चित करने की दृष्टि से सिद्धान्त और

व्यवहार, शिक्षण और जीवन के बीच सम्बन्ध बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। स्कूल इस बात का यत्न करता है कि स्कूल की पढ़ाई समाप्त करनेवाले हर छात्र को यह स्पष्ट हो जाये कि विज्ञान और प्रविधि की उपलब्धियों का व्यावहारिक कार्यों, औद्योगिक और कृषि-उत्पादन तथा रहन-सहन की सुव्यवस्था में कैसे उपयोग किया जाता है, ताकि वह प्राप्त ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग करना सीख जाये। शिक्षण-कक्षों और प्रयोगशालाओं, स्कूली वर्कशापों और प्रयोगीय खेतों में दी जानेवाली शिक्षा, कल-कारख़ानों, राजकीय और सामूहिक फ़ार्मों में किया जानेवाला व्यावहारिक काम, विभिन्न प्रकार का समाजोपयोगी कार्य, कल-कारख़ानों, आधुनिक प्रविधि की प्रदर्शनियों, पोलीटेक्निकल संग्रहालयों तथा जन-अर्थव्यवस्था की उपलब्धियों की प्रदर्शनियों की सैरें इसी ध्येय की पूर्ति में योग देती हैं। ये सभी कार्य छात्रों को उनके व्यावसायिक झुकाव स्पष्ट करने और बाद में पेशे का चुनाव करने में बहुत बड़ी मदद देते हैं।

छात्रों का **मानसिक विकास** करनेवाली शिक्षा के सिद्धान्त का उपयोग शिक्षा-प्रक्रिया की उच्च प्रभावशीलता की आवश्यक शर्त है। तथ्यों, परिणामों और निष्कर्षों को, कभी-कभी तो अच्छी तरह समझे बिना ही रटने से छात्रों पर अत्यधिक दिमाग़ी बोझ पड़ना अनिवार्य बात है और इससे उनका विकास रुक जाता है। सोवियत शिक्षाशास्त्र इस बात की सब से पहले मांग करता है कि छात्रों की मानसिक क्षमताओं, उनमें तर्कपूर्ण चिन्तन, ध्यान-संकेन्द्रण और सृजनात्मक कल्पना का विकास हो।

ज्ञान-प्राप्ति में छात्रों की सक्रियता के विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। शिक्षण की विभिन्न विधियों का उपयोग, ढंग से सोचे-विचारे गये पाठ और छात्रों के स्वतन्त्र कार्य का संगठन इस में योग देते हैं।

छात्रों की उम्र और शिक्षा-सामग्री के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए विश्लेषण और समन्वय, तथ्य प्रस्तुतीकरण और निष्कर्षण की विधियों से काम लिया जाता है। पाठ्यपुस्तकों के चित्रों से लेकर तजरबों, शैक्षणिक फ़िल्मों तथा टेलीविजन कार्यक्रमों तक दृश्यमान सहायक सामग्री का विस्तृत उपयोग किया जाता है। अध्यापनशास्त्र और विधि-सम्बन्धी सभी साधनों का लक्ष्य यही है कि शिक्षा छात्रों के सर्वतोमुखी विकास में सहायक हो।

अध्यापक बालकों और तरुणों में शिक्षा के प्रति अभिरुचि, ज्ञान-पिपासा

और विज्ञान के प्रति लगाव पैदा करने की निरन्तर कोशिश करना है। पाठों की विषय-वस्तु, पाठों के ढंग की विविधता, अध्यापक के व्यक्तिगत गुण और अपने विषय की ओर छात्रों को आकर्षित करने की उसकी क्षमता इस उद्देश्य की सफल पूर्ति को सुनिश्चित करती है।

शिक्षा के दौरान कठिनाइयों को ढंग से धीरे-धीरे सामने लाना छात्रों की रुचि का विकास करने, नये ज्ञान की प्राप्ति की इच्छा को रूप देने और दृढ़ता जैसे गुण पैदा करने में सहायक होता है। कठिनाइयों को सफलतापूर्वक दूर करने से छात्रों को सन्तोष होता है। विषय कठिन है या आसान, आसानी से छात्रों की समझ में आयेगा या नहीं, इस बारे में निर्णय करते समय केवल पाठों में प्राप्त ज्ञान को ही नहीं, बल्कि ढेर सारी उस जानकारी को भी ध्यान में रखा जाता है, जो छात्र स्कूल के अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं, फिल्मों, रेडियो और टेलीविजन से प्राप्त करते हैं।

छात्रों की तरफ वैयक्तिक ध्यान देने के सिद्धान्त को पाठ के सामूहिक कार्य और छात्रों के स्वतन्त्र कार्य के संगठन में भी दृढ़तापूर्वक व्यावहारिक रूप दिया जाता है। होशियार छात्रों को कठिन काम दिया जाता है और कमजोरों को आसान। किन्तु दोनों ही तरह के काम शिक्षाक्रम के अनुसार होते हैं और उसके मूलभूत सार का ग्रहण किया जाना सुनिश्चित करते हैं। स्पष्ट है कि उनका गुणगत स्तर (अंकों के रूप में "५", "४", "३" आदि) भिन्न होगा। श्रेष्ठ अध्यापक उत्तम ("५") और अच्छे ("४") अंक पानेवाले छात्रों की संख्या सफलतापूर्वक बढ़ा लेते हैं।

किन्हीं भी कारणों से पढ़ाई में पिछड़ जानेवाले छात्रों के लिये अतिरिक्त पाठों की व्यवस्था की जाती है, ताकि कम से कम समय में उन्हें अपनी कठिनाइयां दूर करने में मदद मिल सके। अतिरिक्त पाठ अधिकतम वैयक्तिक होते हैं। शारीरिक और मानसिक विकास की दृष्टि से दोषवाले बच्चे विशेष स्कूलों में शिक्षा पाते हैं।

सुशिक्षित, अध्यापन की कला में पारंगत और बालकों की आयुगत विशिष्टताओं से भली-भांति परिचित अध्यापक प्रत्येक पाठ को बहुत रुचिकर बना देते हैं, शिक्षा-साधनों और विधियों का ऐसा अनुकूलतम ताल-मेल बैठाते हैं, जो छात्रों की सक्रियता, काम के प्रति जिम्मेदारी का रवैया और सारी कक्षा का सृजनात्मक अन्दाज सुनिश्चित करता है। नयी दिलचस्प सामग्री देनेवाले, विषय-वस्तु तथा स्वरूप की दृष्टि से आकर्षक और "आम" पाठों का बारी-बारी से होना तो अनिवार्य ही है। मगर

अच्छे ढंग से तैयार अध्यापक को दोनों ही तरह के पाठ छात्रों की शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर प्राप्त करने में मदद देते हैं।

सोवियत शिक्षाशास्त्र नवीनतम प्राविधिक साधनों के उपयोग से शिक्षा-प्रक्रिया के भावी सुधार के मार्ग खोज रहा है।

मशीनों द्वारा पढ़ाई की प्रयोगीय जांच को अधिकाधिक विस्तृत किया जा रहा है। पिछले वर्षों में शिक्षा देनेवाली मशीनों की तरफ़ अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है, उनके नये रूप सामने आये हैं। मशीनों के उपयोग से ज्ञान की जांच करने, दक्षता को पक्का करने और पाठों को दोहराने जैसे शिक्षा-कार्यों को अधिक अच्छी तरह पूरा करना सम्भव होता है।

मगर शिक्षा के लिये मशीनों के अधिकतम विविधतापूर्ण इस्तेमाल के बावजूद शिक्षा-प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका प्रमुख और निर्णायक बनी रहती है। अध्यापक और छात्र के बीच सजीव सृजनात्मक सम्पर्क – शिक्षा-दीक्षा के कार्यभारों की सफल पूर्ति की अनिवार्य शर्त है।

शिक्षा देनेवाली मशीनों का उपयोग यदि अभी प्रयोगीय जांच की अवस्था में है, तो अन्य अनेक आधुनिक प्राविधिक साधनों के इस्तेमाल ने सोवियत स्कूल में दृढ़ स्थान प्राप्त कर लिया है। शैक्षणिक फ़िल्मों को इस सम्बन्ध में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल है। स्कूलों को उनके लिये विशेष रूप से बनाये गये नगर और हलका-फ़िल्म-केन्द्रों से फ़िल्में मिलती हैं। शिक्षा के लिये फ़िल्मों के उपयोग के बारे में बहुत बड़ी संख्या में गाइडें छापी जाती हैं। सुबोध वैज्ञानिक, समाचार, दस्तावेजी और सामान्य फ़िल्मों का भी शिक्षा-दीक्षा के लिये विस्तृत उपयोग किया जाता है। माध्यमिक स्कूलों के अधिकतर शिक्षा-कक्षों में प्रोजेक्टर लगे हुए हैं।

शिक्षा के लिए टेपरेकार्डरों, रेडियो और टेलीविजन का इस्तेमाल आम बात हो गयी है। विदेशी भाषाओं, और इसी तरह संघीय तथा स्वायत्त जनतन्त्रों में रूसी भाषा की पढ़ाई के लिये भाषा-कक्षों की संख्या बढ़ रही है। केन्द्रीय टेलीविजन और संघीय जनतन्त्रों के टेलीविजन-केन्द्र विस्तृत शिक्षा-कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

शिक्षाक्रम का स्तर ऊंचा होने से परम्परागत शिक्षा-साधनों तथा सहायक सामग्री में और अधिक सुधार जरूरी हो गया। शिक्षा-संगठन और शिक्षा-विधियों का सुधार, शिक्षाशास्त्र और हर अध्यापक के लिये क्रियाशीलता का विस्तृत क्षेत्र और सृजनात्मक खोजों की असीम सम्भावनायें प्रस्तुत करता है।

स्कूल के कार्य और आन्तरिक व्यवस्था का संगठन

स्कूल के अन्दरूनी जीवन के स्पष्ट संगठन, विवेकपूर्ण आन्तरिक व्यवस्था के बिना, जो अध्यापकों और छात्रों की कार्य-क्षमता सुनिश्चित करे, शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर स्थापित करना सम्भव नहीं। स्थायी कार्य-लय निर्धारित करने, सभी प्रकार की शिक्षा की उच्च प्रभावशीलता, संगठनात्मकता और अनुशासन सुनिश्चित करने की दृष्टि से शिक्षा-दिवस, सप्ताह और वर्ष की वैज्ञानिक आधारवाली पद्धति का बहुत महत्त्व है।

स्कूल की सारी गतिविधियां शरीरक्रियाविज्ञान, उच्च स्नायविक क्रियाओं, सामान्य और आयुगत मनोविज्ञान के तथ्यों, स्कूल की सफ़ाई और श्रम के वैज्ञानिक संगठन की मांगों के अनुसार पूरी तरह वैज्ञानिक आधारों पर तय की जाती है। अनेक वर्षों के दौरान पड़ गयी परम्पराओं का भी ख़ास महत्त्व है।

स्कूल-प्रवेश। देश के सभी स्कूलों में शिक्षावर्ष सितम्बर की पहली तारीख़ को शुरू होता है। इसके पहले के तीन महीनों में नये छात्रों को स्कूल में दाख़िल किया जाता है।

सितम्बर की पहली तारीख़ को सात साल के बच्चों को स्कूल में भर्ती किया जाता है। मां-बाप बच्चे के जन्म और स्वास्थ्य के प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते हैं। कोई एक अध्यापक मां-बाप और बच्चे के साथ बातचीत करता है, परिवार के जीवन और बच्चे के स्वास्थ्य की स्थिति की जानकारी प्राप्त करता है, बच्चे के विकास-स्तर, पढ़ने-लिखने और गिनती करने की उसकी क्षमता के बारे में सामान्य धारणा बनाता है। स्वाभाविक और सुखद वातावरण में यह बातचीत होती है।

स्कूल में पढ़ाई का पहला दिन बड़ा ही दिलचस्प और रंगारंग होता है। इस दिन को पर्व के रूप में मनाने की परम्परा पड़ गई है। स्कूली बालक अपने साथ फूल लाते हैं और मां-बाप उन्हें स्कूल पहुंचाने आते हैं। स्कूल के डायरेक्टर छात्रों को नया शिक्षावर्ष आरम्भ होने की बधाई देते हैं और पढ़ाई में उनकी सफलताओं की कामना करते हैं। स्कूल का संरक्षण करनेवाले संगठन – कारख़ाना, सामूहिक फ़ार्म, राजकीय फ़ार्म या उद्यम

के प्रतिनिधि भी अध्यापकों और छात्रों को बधाई देते हैं। बड़ी कक्षाओं के छात्र प्रथम कक्षा के बालकों को पहले पाठ में पहुंचाने जाते हैं।

आठवर्षीय और माध्यमिक स्कूल न केवल पहली कक्षा में, बल्कि चौथी कक्षा में भी छात्रों को दाख़िल करते हैं। निकट के प्रारम्भिक स्कूलों की पढ़ाई समाप्त करनेवाले छात्र अनिवार्य रूप से इन स्कूलों में दाख़िल होते हैं। माध्यमिक स्कूल निकट के आठवर्षीय स्कूलों की पढ़ाई समाप्त करनेवाले छात्रों को ९ वीं कक्षा में दाख़िल करते हैं। आवश्यकता होने पर बीच की कक्षाओं में भी छात्रों को दाख़िल किया जाता है।

चौथी कक्षा में प्रारम्भिक स्कूल की सूचियों के अनुसार तथा इसी प्रकार आठवर्षीय स्कूल की पढ़ाई की समाप्ति के प्रमाणपत्र के आधार पर छात्रों को परीक्षा के बिना अगली कक्षाओं में दाख़िल किया जाता है। स्कूल से दूर रहनेवाले छात्रों को स्कूल के छात्रावास में स्थान मिल जाता है।

शिक्षावर्ष के दौरान मां-बाप के अनुरोध पर छात्रों को मुख्यत: निवासस्थान के परिवर्तन के कारण स्कूल बदलने की अनुमति दे दी जाती है।

शिक्षावर्ष का संगठन। शिक्षावर्ष को चार भागों में बांटा गया है—१ सितम्बर से ४ नवम्बर तक पहले भाग की पढ़ाई जारी रहती है (५ से ९ नवम्बर तक पतझड़ की छुट्टियां होती हैं); दूसरे भाग की अवधि होती है – १० नवम्बर से २९ दिसम्बर तक (३० दिसम्बर से १० जनवरी तक जाड़े की छुट्टियां होती हैं); तीसरा भाग ११ जनवरी से २३ मार्च तक होता है (२४ से ३१ मार्च तक बसन्त की छुट्टियां होती हैं); चौथा भाग १ अप्रैल से शिक्षावर्ष की समाप्ति तक चलता है। १ से ७ वीं कक्षाओं में शिक्षावर्ष परीक्षाओं और व्यावहारिक कार्य समेत ३० मई, ८ वीं कक्षा में १० जून और ९ वीं-१० वीं (११ वीं) कक्षाओं में २५ जून को समाप्त हो जाता है। ८ वीं और १० वीं (११ वीं) कक्षाओं की शिक्षा-समाप्ति-परीक्षायें १ जून को शुरू होती हैं और क्रमश: १० जून तथा २५ जून को समाप्त होती हैं। ९ वीं कक्षा में १ से २५ जून तक नियमत: समाजोपयोगी व्यावहारिक श्रम कराया जाता है।

शिक्षा-मन्त्रालय के निर्णयानुसार संघीय जनतन्त्र दसवर्षीय स्कूलों में, जहां रूसी भाषा में पढ़ाई नहीं होती, शिक्षावर्ष को बढ़ाया जा सकता है, मगर एक हफ़्ते से ज्यादा नहीं।

छुट्टियों का छात्रों के विश्राम और संगठित मनोरंजन के लिये उपयोग किया जाता है।

पतझड़ की छुट्टियां (५ से ६ नवम्बर तक) महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की वर्षगांठ के त्योहार के दिनों में होती है। स्कूलों में छोटी कक्षाओं के छात्रों के लिये सुबह के समय और बड़ी कक्षाओं के छात्रों के लिये शाम को समारोह आयोजित किये जाते हैं। क्रान्ति के अनुभवी कार्यकर्त्ताओं, गृहयुद्ध और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीरों और श्रम वीरों के साथ मुलाक़ातें आयोजित की जाती हैं। छात्र एकसाथ थियेटर, सिनेमा और संग्रहालय देखने जाते हैं।

जाड़े की छुट्टियों में करोड़ों बच्चे स्कूलों, संस्कृति-प्रासादों और ट्रेड यूनियनों के क्लबों, थियेटरों, पायनियरों और स्कूली बालकों के प्रासादों-भवनों में नववर्ष के फ़र-वृक्ष के समारोहों में भाग लेते हैं। इन दिनों में थियेटर स्कूली बालकों के लिये सुबह के कार्यक्रम पेश करते है। देश के अधिकतर भागों में खेलकूद की प्रतियोगितायें, स्कीज़ पर और पैदल सैरें आयोजित की जाती है। कमज़ोर बच्चों के लिये जाड़े के स्वास्थ्यप्रद शिविर संगठित किये जाते हैं।

वसन्त की छुट्टियों की मुख्य चीज़ है – परम्परागत "बाल-पुस्तक-सप्ताह"। बाल-पाठकों के साथ लेखकों की समारोही भेंटों के साथ यह सप्ताह शुरू होता है। इस "सप्ताह" के दिनों में पायनियर प्रासादों और भवनों, पुस्तकों की दुकानों और ट्रेड यूनियनों के क्लबों में भी लेखकों और बच्चों की मुलाक़ातें आयोजित की जाती हैं। स्कूल बाल-पुस्तकों की प्रदर्शनियों और पाठक-सम्मेलनों का आयोजन करते हैं।

गर्मी की छुट्टियां (जो सब से अधिक लम्बी होती हैं) विस्तृत रूप से स्वास्थ्यप्रद कार्य के लिये उपयोग में लायी जाती हैं। लाखों-करोड़ों बच्चे नगर के बाहर पायनियर शिविरों में आराम करते हैं। यहां आराम और मनोरंजन को सामूहिक फ़ार्मों तथा राजकीय फ़ार्मों में कुछ शारीरिक श्रम के साथ मिलाया जाता है। शहर में रह जानेवाले बच्चों के लिये पार्कों, स्कूलों और ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं के अन्तर्गत शिविर खोले जाते हैं। बड़ी कक्षाओं के लाखों छात्र देश की पद-यात्राओं, सोवियत जनता के युद्ध और श्रम-सम्बन्धी कीर्ति स्थानों, व्ला० इ० लेनिन के जीवन और कार्यों से सम्बन्धित स्थानों की यात्राओं पर चल देते हैं। छुट्टियों के दौरान स्कूली छात्र शक्ति, अनुभवों और अनुभूतियों का बड़ा संचय कर लेते हैं।

शिक्षा-सप्ताह का संगठन। पाठ-सूची ही सप्ताह के दौरान अध्यापकों और छात्रों के कार्य का संगठन करनेवाली मूल दस्तावेज होती है। यह सूची एक साल या छ: महीने के लिये तैयार की जाती है। कुछ खास परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही उस में परिवर्त्तन किये जाते हैं। पाठों की स्थायी सूची काम की दृढ़ लय निश्चित करती है, स्कूल में व्यवस्था को मजबूत बनाने में मदद देती है। पढ़ाई के काम से सम्बन्धित स्कूल का डिप्टी-डायरेक्टर अधिकतम मनोवैज्ञानिक-शिक्षाशास्त्रीय मांगों को, जो उस से की जाती हैं, ध्यान में रखते हुए यह सूची तैयार करता है। हर दिन और सप्ताह तक छात्रों की कार्य-क्षमता को आवश्यक स्तर पर बनाये रखने के लिये वह शिक्षा के बोझ का यथासम्भव समान विभाजन (कठिन और आसान पाठों को बारी-बारी से स्थान देकर) सुनिश्चित करता है।

अध्यापक के हितों को भी ध्यान में रखा जाता है। सम्भावना होने पर उसे सप्ताह में कम से कम एक पाठ-मुक्त दिन दिया जाता है। अध्यापक के समय के अविवेकपूर्ण व्यय को यथासम्भव कम किया जाता है।

पाठ-सूची के अलावा, पाठों से असम्बद्ध कार्य के समय-निर्धारण द्वारा भी स्कूल के जीवन को नियमित किया जाता है। छात्र-मंडलियों, खेलकूद के विभागों तथा पायनियरों के एकत्रित होने और युवा कम्युनिस्ट संघ के सदस्यों की सभाओं के दिन और घण्टे नियत किये जाते हैं। इससे छात्रों के दलों और संगठनों के आत्मनिर्भर स्वरूप में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती, मगर यह आवश्यक संगठनशीलता सुनिश्चित करती है, समय की अनुचित बरबादी को खत्म करती है।

स्कूल साप्ताहिक कार्यक्रम की सीमाओं में न आनेवाली कार्रवाइयों– खेलकूद की प्रतियोगिताओं, क्रान्ति-सम्बन्धी पर्वों, जयन्तियों, विभिन्न विषयों की प्रतियोगिताओं आदि के दिनों की सूची भी तैयार करते हैं। पूरे साल या आधे साल के लिये ऐसी कार्रवाइयों के समय तय कर लिये जाते हैं, क्योंकि उनकी तैयारी के लिये आम तौर पर बहुत क़ाफ़ी वक़्त की जरूरत होती है।

शिक्षा-दिवस का संगठन। दिन के पहले आधे भाग में स्कूल में पाठ होते हैं। हर पाठ ४५ मिनट का होता है। पाठों के बीच १० मिनट का अवकाश दिया जाता है। ३० मिनट का एक बड़ा अवकाश होता है। यह अवकाश आम तौर पर तीसरे पाठ के बाद होता है और इस समय केवल

विश्राम ही नहीं, नाश्ता भी किया जाता है। दूसरा और तीसरा अवकाश २० मिनट का भी हो सकता है।

नियमत: कक्षा के स्थायी छात्रगण ही पाठों के समय उपस्थित रहते हैं। १ से ७वीं कक्षा तक उनकी संख्या ४० और ६वीं-१०वीं कक्षाओं में ३५ तक हो सकती है। देहातों में छात्रों की संख्या कम भी हो सकती है। पाठों के समय हाज़िरी के बारे में बहुत कड़ाई बरती जाती है।

पढ़ाई में पिछड़ जानेवाले छात्रों को अध्यापक पाठों के पहले या उनके बाद अतिरिक्त पाठ दे सकते हैं। इस अतिरिक्त पढ़ाई को असाधारण उपाय माना जाता है। ऐसे पाठों के समय अलग-अलग छात्रों की तरफ़ अधिकतम ध्यान दिया जाता है। ऐसे पाठों का समय ३०–४० मिनट तक होता है। इन पाठों में छात्र सर्वथा अपनी इच्छा से ही आते हैं।

दिन के दूसरे आधे भाग में छात्रों की रुचियों के अनुसार तरह-तरह के पाठ्येतर कार्य की शिक्षा दी जाती है। छात्र अपनी इच्छानुसार इनका चुनाव करते हैं। अध्यापकों के अलावा छात्रों के माता-पिता और स्कूल का संरक्षण करनेवाले कल-कारख़ानों तथा संगठनों के विशेषज्ञ (इंजीनियर, कृषिविज्ञ, डाक्टर, चित्रकार, कलाकार) ऐसे शौक़िया मण्डलों, स्टूडिओ और क्लबों का संचालन करते हैं।

छोटी और बीच की कक्षाओं के ऐसे छात्रों के लिये, जिन के माता-पिता काम पर होते हैं और जिन के परिवार में ऐसे वयस्क नहीं होते, जो बच्चे की देखभाल कर सकें, लम्बे शिक्षा-दिवसवाले दल बनाये जाते हैं। ऐसे बच्चे पाठों की समाप्ति पर स्कूल के भोजनालय में खाना खाते हैं। सबसे छोटे बच्चे दोपहर के खाने के बाद सोते हैं। लम्बे शिक्षा-दिवसवाले दलों के कार्यक्रम में बच्चों की हवाख़ोरी (खेलकूद, सैर-सपाटा), घर के लिये दिया गया स्कूल का काम करना, स्कूल के अन्दर मिल-जुलकर खेलना, कोई किताब पढ़ना आदि शामिल हैं। हर दल का एक शिक्षक होता है।

लम्बे शिक्षा-दिवसवाले दल किसी भी स्कूल में संगठित किये जा सकते हैं। मगर, इनके अलावा, लम्बे शिक्षा-दिवसवाले स्कूलों का एक ख़ास जाल भी विद्यमान है। ऐसे स्कूलों का कार्यक्रम इस बात को ध्यान में रखकर बनाया जाता है कि उनके सभी छात्रों को दिनभर स्कूल में ही रहना होता है।

कुछ स्कूलों में दो पालियां होती हैं। ऐसा होने पर स्कूल की इमारत

में व्यवस्था करने के लिये गालियों के बीच छोटा-सा मध्यान्तर किया जाता है।

स्कूल के कार्यक्रम को अमल में लाने के लिये अध्यापकों और छात्रों की ड्यूटियां लगाई जाती हैं। आम तौर पर सप्ताह में एक कक्षा अपने कक्षा-अध्यापक के निर्देशन में ड्यूटी पर रहती है। ड्यूटी पर रहनेवालों को (वे बांहों पर ख़ास पट्टा बांधे रहते हैं) किसी प्रकार के प्रशासकीय अधिकार नहीं होते, मगर प्रचलित परम्परा के अनुसार उन्हें नैतिक बल अवश्य प्राप्त होता है। छोटी कक्षाओं (१-४) को ड्यूटी पर नहीं लगाया जाता। सामूहिक जीवन के संगठन में छात्रों का सम्बन्ध जोड़ने की दृष्टि से ऐसी ड्यूटी बजाने का बहुत ही बड़ा शिक्षात्मक महत्त्व है।

छात्रों का अगली कक्षाओं में जाना और स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करना। विभिन्न रूपों में छात्रों के ज्ञान की हर दिन जांच की जाती है और उन्हें अंक दिये जाते हैं।

१-८ कक्षाओं में छात्रों को हर दिन की जांच में प्राप्त किये गये अंकों के आधार पर हर तिमाही के, और ९–१० कक्षाओं में हर छमाही के अंक दिये जाते हैं। ऊंची कक्षाओं में हर दिन के अंकों के अलावा शिक्षाक्रम के अधिक कठिन विषयों की परीक्षायें भी ली जाती हैं। ये परीक्षायें छात्रों को काफ़ी हद तक उच्च शिक्षा-संस्थाओं की शिक्षा-पद्धति के लिये तैयार कर देती हैं।

८ वीं और १० वीं कक्षा में (कुछ जनतन्त्रों में ११वीं कक्षा में) शिक्षा-समाप्ति-परीक्षायें भी होती हैं। रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतन्त्र के स्कूलों की ८ वीं कक्षा में रूसी भाषा की लिखित (निबन्ध) और ज़बानी, गणित की लिखित (बीजगणित और हिसाब) और ज़बानी (रेखागणित और बीजगणित) परीक्षायें ली जाती हैं। १० वीं कक्षा में साहित्य की लिखित (निबन्ध) और ज़बानी, बीजगणित और मौलिक कलन (लिखित), रेखागणित, भौतिकी, रसायन, सोवियत संघ के इतिहास और समाजशास्त्र तथा विदेशी भाषा की (ज़बानी) परीक्षायें ली जाती हैं। अध्यापक-परिषद के निर्णयानुसार केवल उन्हीं छात्रों को परीक्षाओं में बैठने दिया जाता है, जिन्होंने सभी विषयों में कम से कम "३" अंक प्राप्त किये हों। परीक्षा-आयोग परीक्षाओं के परिणाम वार्षिक अंकों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करता है। एक या दो विषयों में

असफल रहनेवाले छात्रों को अगला शिक्षावर्ष आरम्भ होने के पहले दुबारा उन्हीं विषयों की परीक्षायें देने का अधिकार होता है। ८ वीं कक्षा के छात्रों को दूसरी बार की परीक्षा में एक भी विषय में असन्तोषजनक अंक मिलने पर दूसरे साल के लिये रोक लिया जाता है। ऐसी स्थिति में १० वीं (११ वीं) कक्षा के छात्रों को स्कूल में शिक्षा पाने के प्रमाणपत्र के साथ स्कूल से विदा कर दिया जाता है। उन्हें अगले वर्ष उन विषयों की परीक्षायें देने का अधिकार दिया जाता है, जिन में उनके असन्तोषजनक अंक होते हैं। अध्यापक-परिषद के निर्णयानुसार आठवर्षीय स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करने-वाले छात्रों को प्रमाणपत्र दिया जाता है, जो उन्हें सामान्य शिक्षावाले माध्यमिक स्कूल की ६ वीं कक्षा, विशेष शिक्षावाली माध्यमिक संस्था और व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालय में दाख़िल होने का अधिकार देता है; माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करनेवालों को माध्यमिक शिक्षा का प्रमाणपत्र दिया जाता है, जो उन्हें उच्च शिक्षा-संस्थाओं, प्राविधिक विद्यालयों और कम अवधिवाली विशेष माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओं में प्रवेश पाने का अधिकार देता है। बीमारी के कारण छात्रों को डाक्टर के निर्णय के आधार पर परीक्षा-मुक्त किया जा सकता है, बशर्ते कि शिक्षावर्ष की सभी तिमाहियों में सभी विषयों में उनके अंक "३" से कम न रहे हों। ऐसी स्थिति में उन्हें पढ़ाई की समाप्ति का प्रमाणपत्र वार्षिक अंकों के आधार पर दिया जाता है।

माध्यमिक स्कूल की ८ वीं और १० वीं (कुछ जनतन्त्रों में ११वीं) कक्षाओं की अन्तिम परीक्षाओं में ऐसे छात्रों को बैठने की अनुमति नहीं दी जाती, जिनका आचार-व्यवहार का वार्षिक अंक असन्तोषजनक हो। (आचार-व्यवहार के अंक "शानदार" (मिसाली), "सन्तोषजनक" और "असन्तोषजनक" होते हैं।) उन्हें इस बात का प्रमाणपत्र दिया जाता है कि उन्होंने सामान्य शिक्षा के माध्यमिक स्कूल का शिक्षाक्रम पूरा कर लिया है। वे अपने कार्य-स्थान से अच्छा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करके अगले तीन वर्षों में माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई की समाप्ति की परीक्षायें दे सकते हैं।

८ वीं कक्षा की परीक्षायें लेने के लिये परीक्षा-आयोग बनाया जाता है, जिस में स्कूल के प्रवन्धकर्त्ताओं का एक प्रतिनिधि (आयोग का अध्यक्ष), विषय को पढ़ानेवाला अध्यापक और उसी विषय या उस से मिले-जुले विषय का अध्यापक सहायक के रूप में शामिल होता है। १० वीं कक्षा के परीक्षा-आयोग में स्कूल का डायरेक्टर (आयोग का अध्यक्ष), अध्यापक, दो-तीन

सहायक (उच्च शिक्षा-संस्थाओं के अध्यापकों समेत) और जन-शिक्षा-विभाग के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।

संघीय जनतन्त्र का शिक्षा-मन्त्रालय लिखित परीक्षाओं के लिये विषय और प्रश्न तथा ज़बानी परीक्षाओं के लिए प्रश्न-पत्र तय करता है। विषयों और प्रश्नोंवाले पैकेट परीक्षा शुरू होने के समय ही खोले जाते हैं। विषयों के कुछ उदाहरणों और सवालों को छोड़कर, जिन्हें अध्यापक चुनता है और स्कूल का डायरेक्टर जिनकी पुष्टि करता है, ज़बानी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्रों की सभी छात्रों को पहले से ही जानकारी होती है (वे बहुत बड़ी संख्या में छापे जाते हैं)।

संघीय और रूसी संघ के स्वायत्त जनतन्त्रों तथा स्वायत्त प्रदेशों के जातीय स्कूलों में, जहां मातृभाषा में पढ़ाई होती है, उपर्युक्त परीक्षाओं के अतिरिक्त मातृभाषा और उसके साहित्य की लिखित और ज़बानी परीक्षायें भी होती हैं। लिखित परीक्षाओं और ज़बानी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र जनतन्त्र के शिक्षा-मन्त्रालय (स्वायत्त प्रदेश का जन-शिक्षा-विभाग) तैयार करते हैं।

कुछ संघीय जनतन्त्रों (उक्रइना, कज़ाख़स्तान, जार्जिया) में ८ वीं तथा १० वीं (११ वीं कक्षा) में स्कूल छोड़ने की परीक्षायें ही नहीं, बल्कि चौथी कक्षा से लेकर अगली कक्षा में जाने की परीक्षायें भी होती हैं।

१ से ७ कक्षा तक और ९ वीं कक्षा में स्कूल की अध्यापक-परिषद के निर्णयानुसार वार्षिक अंकों के आधार पर छात्रों को अगली कक्षाओं में चढ़ाया जाता है।

तीन या अधिक विषयों में असन्तोषजनक अंकोंवाले छात्रों को ही दूसरे वर्ष के लिये उसी कक्षा में रोका जाता है। जो छात्र सभी परीक्षाओं में दो विषयों तक असन्तोषजनक अंक पाते हैं, उनका प्रश्न अगला शिक्षावर्ष प्रारम्भ होने के पहले, उनके ज्ञान की दुबारा जांच द्वारा हल किया जाता है। ऐसे छात्रों के लिये स्कूल गर्मियों की छुट्टियों में परामर्श की व्यवस्था करता है। दुबारा जांच के समय एक भी विषय में असन्तोषजनक अंक पानेवाले छात्रों को एक और साल के लिये उसी कक्षा में रोक लिया जाता है।

४-९ कक्षाओं के ऐसे छात्रों को, जो ऊंचे ज्ञान-स्तर और शिक्षा के प्रति ज़िम्मेदारी के रवैये का परिचय देते हैं (अनुकरणीय आचरण के साथ सभी विषयों में "५" अंक प्राप्त करते हैं), प्रशंसापत्र दिये जाते हैं।

माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई समाप्त करनेवालों को "शिक्षा और श्रम में शानदार सफलता और अनुकरणीय आचरण के लिये" स्वर्ण-पदक और प्रशंसापत्र देने की व्यवस्था है। माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करनेवाले ऐसे छात्रों को स्वर्ण-पदक दिये जाते हैं, जिन्होंने पढ़ाई के अन्तिम दो सालों में सभी विषयों में श्रेष्ठ वार्षिक अंक प्राप्त किये हों, स्कूल के सामाजिक जीवन में सक्रिय भाग लिया हो और अन्तिम परीक्षा में श्रेष्ठ अंक ("५") पाये हों। प्रशंसा-पत्र उन छात्रों को दिये जाते हैं, जिन्होंने ९-१० वीं कक्षाओं में किसी एक या कुछ विषयों में विशेष सफलतायें प्राप्त की हों और उन में श्रेष्ठ अंक पाये हों। स्वर्ण-पदक या प्रशंसापत्र पानेवालों को उच्च शिक्षा-संस्थाओं में प्रवेश करने के समय प्रवेश के नियमों द्वारा निर्धारित कुछ सुविधायें मिलती हैं।

शिक्षा-दीक्षान्त-समारोह के समय माता-पिताओं तथा सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में प्रमाणपत्र, पदक और प्रशंसापत्र दिये जाते हैं।

छात्रों के ज्ञान के लिए अंक देना, एक जटिल शिक्षाशास्त्रीय समस्या है। ज्ञान-जांच को सुधारने और अंकों की अधिकतम वस्तुपरकता को सुनिश्चित करने की समस्या पर विशेष वैज्ञानिक कृतियां रची जाती हैं, शिक्षाशास्त्रीय पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख लिखे जाते हैं। शिक्षा-मन्त्रालयों ने अलग-अलग विषयों के लिये छात्रों के ज्ञान के अंक-मानकों की पुष्टि की है।

छात्रों की ज्ञान-कोटि बेहतर बनाने, उन में लगन और अनुशासन की भावना पैदा करने का काम स्कूल माता-पिताओं के घनिष्ठ सम्पर्क द्वारा सम्पन्न करता है। इन प्रश्नों पर सारे स्कूल और कक्षाओं की माता-पिता-सभाओं में विचार-विनिमय किया जाता है। माता-पिता अपने बच्चों की सफलता-असफलता की सूचना उनकी स्कूली डायरी से पाते रहते हैं। ५ वीं कक्षा से हर छात्र अपने कक्षा-अध्यापक की देखरेख और सहायता से ऐसी डायरी लिखता है। वह उसमें घर के लिये दिया जानेवाला हर दिन का काम दर्ज करता है। अध्यापक दैनिक और प्रत्येक तिमाही (छमाही) के अंक और अपने कर्त्तव्य के प्रति छात्र के रवैये के बारे में टिप्पणियां लिखता है। जब छात्र की शिक्षा और आचार-व्यवहार के सम्बन्ध में कुछ ऐसे प्रश्न सामने आते हैं, जिन्हें माता-पिता और अध्यापक को मिलकर हल करने की जरूरत महसूस होती है, तो अध्यापक छात्र के घर भी जा सकता है या मां-बाप को स्कूल में बुला सकता है। स्कूल के

मामलों में माता-पिता की दिलचस्पी को हर तरह से प्रोत्साहन दिया जाता है।

आठवर्षीय अनिवार्य शिक्षा के क़ानून की पूर्ति और सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा को लागू करने की तैयारी। ७ से १५-१६ साल तक के बच्चों को अनिवार्य आठवर्षीय शिक्षा देने के क़ानून की पूर्ति के लिये दो संगठनात्मक बातें बहुत महत्व रखती हैं – स्कूल में दाख़िल होने की उम्रवाले बच्चों की सूची तैयार करना और प्रत्येक स्कूल के लघु क्षेत्र का सही निर्धारण।

ऐसे बच्चों की सूची हर साल तैयार की जाती है। इसकी ज़िम्मेदारी गांव, हलक़े और नगर की सोवियतों पर है।

मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की हलक़ा या नगर सोवियत (अगर नगर हलक़ों में विभाजित न हो) की कार्यकारिणी समिति हर स्कूल के लिये तथाकथित लघु क्षेत्र तय करती है। प्रारम्भिक स्कूल का लघु क्षेत्र (विशेषकर नगर में) बहुत बड़ा नहीं होता। दो-तीन किलोमीटरों तक की दूरी के सभी के सभी गांव इस में शामिल होते हैं। आठवर्षीय स्कूल के तो मानो दो लघु क्षेत्र होते हैं – एक तो पहली से तीसरी कक्षा के लिये और दूसरा चौथी से आठवीं कक्षा के लिये। आसपास के प्रारम्भिक स्कूलों के लघु क्षेत्र आंशिक रूप से या पूरी तरह चौथी से आठवीं कक्षावाले लघु क्षेत्र में शामिल होते हैं। गांव के हर माध्यमिक स्कूल का कार्य क्षेत्र भी इसी भांति निर्धारित किया जाता है। मगर उसके तीन भाग होते हैं – एक तो पहली से तीसरी कक्षा तक, दूसरा चौथी से आठवीं कक्षा तक और तीसरा नौवीं-दसवीं (ग्यारहवीं) कक्षा तक। इस अन्तिम भाग में आसपास के आठवर्षीय स्कूलों के लघु क्षेत्र आंशिक रूप से या पूरी तरह शामिल होते हैं। अगर किसी बस्ती में कई माध्यमिक स्कूल हों, तो निकट के आठवर्षीय स्कूलों की पढ़ाई ख़त्म करनेवाले छात्र अपनी इच्छानुसार किसी भी माध्यमिक स्कूल में दाख़िल हो सकते हैं। शहरों में, जहां माध्यमिक स्कूलों का जाल काफ़ी विस्तृत है, उच्च कक्षाओं के लिये क्षेत्र की कड़ी सीमायें नहीं होतीं, किन्तु आठवर्षीय स्कूलों की पढ़ाई समाप्त करनेवाले छात्र नियमत: निकटतम माध्यमिक स्कूल की ९ वीं कक्षा में दाख़िल होते हैं। सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा की ओर संक्रमण के सिलसिले में छात्रों के ९ वीं कक्षा में दाख़िले की योजना की पूर्ति की तरफ़ बहुत ध्यान दिया जाता है। ऐसी योजना जन-शिक्षा का हलक़ा (नगर) विभाग तय करता है।

अपने लघु क्षेत्र की सीमाओं में हर स्कूल सभी बच्चों की १ से ८वीं कक्षा तक की पढ़ाई के लिये ज़िम्मेदार है। इसके लिये वह माता-पिता के साथ आवश्यक सम्पर्क रखता है और ख़ास मुश्किलें सामने आने पर सामाजिक संगठनों, जन-शिक्षा विभाग और स्थानीय सोवियत की कार्यकारिणी समिति की भी मदद लेता है। अगर कोई एक भी बालक स्कूल में दाख़िल नहीं होता या बीच में ही पढ़ाई छोड़ देता है, तो यह बहुत असाधारण घटना होती है। आठ साल की पढ़ाई पूरी होने के पहले बच्चे को स्कूल भेजने के मामले में टाल-मटोल करनेवाले माता-पिताओं के ख़िलाफ़ प्रशासकीय कारंवाइ की जाती है – उन्हें जुर्माना देना पड़ता है। हलक़े की कार्यकारिणी समिति यह सवाल तय करती है।

स्कूल, सार्वजनिक और सोवियत संगठन अनिवार्य सर्वसामान्य शिक्षा के कानून की पूर्त्ति की निरन्तर चिन्ता करते हैं। स्कूल से दूर रहनेवाले छात्रों के लिये छात्रावास की व्यवस्था की जाती है, उन्हें स्कूल लाने और घर पहुंचाने के लिये परिवहन का प्रबन्ध किया जाता है और ज़रूरतमन्दों को माली मदद दी जाती है। स्कूलों के अन्तर्गत छात्रावासों में इस समय १६ लाख से अधिक छात्र रहते हैं। छात्रावासों का जाल हर दिन विस्तृत होता जाता है। राजकीय बजट से मिलनेवाली रक़म, ट्रेड यूनियनों तथा सहकारी संस्थाओं तथा सामूहिक फ़ार्मों के चन्दों से बनाये गये सर्वशिक्षा कोष से ज़रूरतमन्दों की आर्थिक सहायता की जाती है।

सर्वसामान्य अनिवार्य आठवर्षीय शिक्षा के क़ानून को अमली शक्ल देने के लिये बहुपक्षीय स्थायी नियंत्रण की व्यवस्था की गयी है। स्थानीय सोवियतों और सार्वजनिक संगठनों के प्रतिनिधि इस कानून के पालन की विशेष जांच करते हैं। मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतों के शिक्षा और संस्कृति-आयोग या सोवियतों की कार्यकारिणी समितियां इनके परिणामों पर बहुत ध्यान से गौर करती हैं। जन-शिक्षा विभाग के इन्स्पेक्टर निरन्तर क़ानून के लागू किये जाने की जांच करते हैं। जांच का उद्देश्य दोष-त्रुटियों को सामने लाना ही नहीं, बल्कि मुख्यतः तो अनुभव के प्रचार द्वारा स्कूलों की मदद करना है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस के निर्णयानुसार सामान्य शिक्षा के माध्यमिक स्कूलों (मुख्यतः तो इन्हीं के द्वारा), विशेष माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओं और व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों के माध्यम से १९७१–१९७५ के दौरान सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा के कार्यक्रम को पूरी तरह व्यावहारिक रूप दे दिया जाना चाहिये।

शिक्षावर्ष के लिए स्कूल की तैयारी और सफल कार्य के लिए परिस्थितियां पैदा करना। गर्मी की छुट्टियों के दौरान स्कूल नये शिक्षावर्ष के लिये तैयारी करता है। इसका मतलब है – स्कूली इमारतों, छात्रावासों की छुटपुट या बड़ी मरम्मत, साजसामान की मरम्मत और शिक्षा-सम्बन्धी सामग्री की खरीदारी। गर्मियों की छुट्टियां आरम्भ होने से पहले अगले शिक्षावर्ष में अध्यापकों के शिक्षा-कार्यों का प्रश्न तय कर दिया जाता है। पढ़ाई शुरू होने के दो हफ्ते पहले तक अवश्य ही अध्यापकों की खाली जगहों पर नये अध्यापक रख लिये जाते हैं।

शिक्षावर्ष के लिये तैयारी का सारा काम सार्वजनिक हलकों के विस्तृत सहयोग के साथ पूरा किया जाता है।

हर साल अनेक नये स्कूल बनाये जाते हैं। सरकारी पूंजी से हर साल १० लाख से ज्यादा और सामूहिक फ़ार्मों तथा अन्य स्थानीय संगठनों के खर्च से लाखों छात्रों के लिये शिक्षा-स्थान बढ़ते हैं। १९७१–१९७५ के दौरान केवल सरकारी पूंजी-विनियोग से ६० लाख छात्रों के लिये स्कूल बनाये जायेंगे।

स्कूली इमारतें खास नमूनों के मुताबिक बनाई जाती हैं। १३००, ९६०, ९२०, ६४०, ५२०, ३२०, १६०,८० और ४० छात्रों की स्कूली इमारतों के खास नक्शों के अनुसार ही अधिकतर निर्माण-कार्य होता है। इन इमारतों के निर्माण में इलाक़े की जल-वायु के मुताबिक़ (हमारे देश के विभिन्न भागों में जलवायुगत अन्तर बहुत हैं) तब्दीलियां की जाती हैं।

स्कूल की मुख्य इमारतों के सभी नक्शों में शिक्षाशास्त्रीय और स्वास्थ्य-सफ़ाई की मांगों के अनुसार निर्धारित समान मानकों को ध्यान में रखा जाता है। स्कूल की इमारत में कक्षाओं और विशेष शिक्षा-कक्षों के अतिरिक्त वर्कशॉपें, कसरत और सभा के हाल, भोजनालय, पुस्तकालय, अध्यापक-कक्ष, छात्रों के सार्वजनिक संगठनों का कमरा, डायरेक्टर और उनके सहायक के कमरे, डाक्टर का कमरा (चिकित्सा-कक्ष) आदि बनाये जाते हैं। ९२०-१३०० स्थानोंवाले बड़े स्कूलों में उक्त सभी कक्ष होते हैं। देहाती स्कूलों के पास ही अध्यापकों के लिये रिहायशी मकान भी बनाया जाता है।

१६०, ८० और ४० स्थानोंवाली स्कूली इमारतें देहातों के प्रारम्भिक स्कूलों के लिए हैं। इनमें विशेष शिक्षा-कक्ष, वर्कशापें और पुस्तकालय नहीं होते।

स्कूल के क्षेत्र में खेलकूद की सुविधाओं (प्रारम्भिक स्कूलों में खेलों का मैदान), शिक्षण-प्रयोगीय खेत, पेड़-पौधों और साज़-सामान के लिये अहाते की व्यवस्था की जाती है।

छात्रों की स्वास्थ्य-रक्षा। स्कूल का कार्यक्रम, जो स्वास्थ्य-सफ़ाई के वैज्ञानिक मानकों के अनुसार होता है, छात्रों की स्वास्थ्य-रक्षा की एक आवश्यक शर्त है। इसका अर्थ है शिक्षावर्ष का युक्तियुक्त संगठन, शिक्षा-सप्ताह और शिक्षा-दिवस की उचित व्यवस्था, छात्रों पर पढ़ाई के बोझ की निरंतर जांच, स्कूली इमारतों की उपयुक्त स्थिति, डाक्टरी जांच और चिकित्सा-सेवा का प्रबंध।

स्कूल का डायरेक्टर, डाक्टर और अध्यापक छात्रों की कार्य-क्षमता की स्थिति की ओर स्थायी रूप से ध्यान देते हैं, मां-बाप के साथ उनके घर का कार्यक्रम नियमित करते हैं, इस बात की चिन्ता करते हैं कि छात्र स्कूल के बाहर की तरह-तरह की दिलचस्पियों में बहुत न उलझ जायें। मिसाल के तौर पर दो से अधिक मण्डलों, विभागों या स्टूडियो में उन्हें शामिल होने से मना किया जाता है। इस बात की भी बहुत कोशिश की जाती है कि घर के लिये दिया जानेवाला काम बहुत अधिक न हो। स्कूलों में इस प्रश्न पर निरन्तर विचार-विनिमय होता रहता है।

शहरों में बच्चों के अस्पताल के पोलीक्लीनिक विभाग और देहातों में क्षेत्रीय या हलक़ा-अस्पताल का डाक्टर और नर्स छात्रों की डाक्टरी देख-भाल करते हैं।

डाक्टर का कर्तव्य है कि वह निरन्तर छात्रों के स्वास्थ्य की जांच करे, उनकी व्यायाम-क्षमतायें निश्चित करे, इलाज बताये, बुरे स्वास्थ्यवाले बच्चों को स्वास्थ्य-सदन भेजे, रोगों की रोक-थाम के टीके लगाये, इमारत की सफ़ाई का निरीक्षण करे, अध्यापकों के साथ छात्रों और माता-पिताओं को चिकित्सा और स्वास्थ्य-सफ़ाई-सम्बन्धी ज्ञान-दान में हिस्सा ले, रेडक्रास और लाल अर्द्धचन्द्र संस्था की स्कूली शाखाओं की कारंवाइयों में मदद दे।

गर्मियों के महीनों में अधिकतर छात्र नगर के बाहर पायनियर शिविरों में तथा ऊंची कक्षाओं के छात्र श्रम और विश्राम-शिविरों में आराम करते हैं। सभी तरह के विश्राम भी डाक्टर की देखरेख में होते हैं।

स्कूल और छात्र। छात्रों में स्वतन्त्र कार्य-क्षमता और पहलक़दमी का विकास करना सोवियत शिक्षाशास्त्र का एक सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। स्वयं बालक ही इस कार्यभार की पूर्त्ति करते हैं। वे मिल-जुलकर सभी की बहुमुखी इच्छाओं और रुचियों की पूर्त्ति, और हर किसी के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास, क्षमताओं और प्रतिभा के प्रकट होने की सम्भावना पैदा करते हैं।

स्कूल में छात्रों के बीच के संबंध बहुत ही विविधतापूर्ण होते हैं। सर्वप्रथम छात्र का सम्बन्ध अपनी कक्षा से होता है। रुचियों के अनुसार तरह-तरह के मण्डल होते हैं (वैज्ञानिक और प्राविधिक मण्डल, शौक़िया कलाकार मण्डल, खेलकूद-मण्डल)। ये मण्डल अक्सर छात्रों के क्लबों का रूप लेते हैं। स्थायी कारंवाई वाले मण्डलों के अलावा किसी अलग कार्य, जैसे कि पद-यात्रा, स्कूल के मैदान में पेड़-पौधे लगाने आदि के लिये वक़्ती दल भी बन जाते हैं।

तीन मुख्य संगठन – छात्र-समिति, पायनियर संगठन और युवा कम्युनिस्ट संघ छात्रों के जीवन और गतिविधियों का निर्देशन करते हैं। पायनियर बनने के पहले बच्चों को "अक्तूबरी" दलों में संगठित किया जाता है।

छात्र-समिति आम सभा में या ५-१० वीं कक्षाओं की सभा में चुनी जाती है। यह समिति एक साल तक काम करती है। यह मनोरंजन-सांस्कृतिक कार्यों, स्वास्थ्य-सफ़ाई और साज़-सामान आदि के आयोग बनाती है। कक्षा-सभाओं में छात्र अपने मानीटर चुनते हैं। सभी मानीटर नियमतः छात्र-समिति में शामिल होते हैं। अनेक स्कूलों में समिति का चुनाव नहीं होता – उसके सभी कार्य पायनियर और युवा कम्युनिस्ट संघ पूरे करते हैं।

स्कूल का पायनियर संगठन स्वेच्छा और स्वतःस्फूर्त ढंग से १० से १४ साल तक के छात्रों को एकबद्ध करता है। पायनियर अपने संगठन की आम सभा में दल-परिषद और दस्तों में दस्ते की परिषद चुनते हैं। पायनियर मुखिया, जो स्कूल की अध्यापक-परिषद का सदस्य होता है, दल के काम का निर्देशन करता है। ऊंची कक्षाओं के छात्र, उच्च शिक्षा-संस्थाओं के विद्यार्थी और स्कूल का संरक्षण करनेवाली संस्था के मज़दूर या कार्यकर्त्ता दस्तों के मुखिया होते हैं। बच्चों के साथ काम में सजीव रुचि प्रकट

करनेवाले युवा कम्युनिस्ट संघ के सदस्यों को यह सार्वजनिक काम सौंपा जाता है।

युवा कम्युनिस्ट संघ ७ वी कक्षा से शुरु करके सभी अधिक सक्रिय छात्रों को सूत्रबद्ध करता है। समिति – उसका कार्यकारी निकाय होती है और आम सभा में एक साल के लिये चुनी जाती है। कक्षाओं में इस संघ के संगठनकर्त्ता चुने जाते हैं।

युवा कम्युनिस्ट संघ और पायनियर संगठन अपने सदस्यों की वैचारिक-राजनैतिक शिक्षा, उनकी व्यक्तिगत रुचियों की तुष्टि की चिन्ता करते हैं, मैत्री और साथीपन की भावना पैदा करते हैं, समाजोपयोगी काम का संगठन करते हैं, ज्ञान की उच्च कोटि और सजग अनुशासन के संघर्ष में अध्यापकों को मदद देते है। युवा कम्युनिस्ट संघ और पायनियर संगठन का काम वहां अधिक प्रभावकारी होता है, जहां स्कूल के प्रबन्धक और अध्यापक उसकी ओर अधिक ध्यान देते हैं, समझदारी और नीति कुशलता से संघ के सदस्यों और पायनियरों की सक्रियता तथा पहलक़दमी को बढ़ावा देते हैं।

युवा कम्युनिस्ट संघ की हलक़ा (नगर) समिति तथा इसी भांति पायनियर संगठन की हलक़ा (नगर) परिषद स्कूल की शाखाओं का निर्देशन करती हैं।

अध्यापक और स्कूल के अन्य कार्यकर्त्ता। डायरेक्टर, डिप्टी डायरेक्टर, अध्यापक, पायनियर मुखिया, पुस्तकालयाध्यक्ष और डाक्टर इन में शामिल होते हैं। इन्हीं को मिलाकर स्कूल की अध्यापक-परिषद बनती है। माता-पिता की समिति का अध्यक्ष भी इस परिषद में होता है।

स्कूल के प्रशासकीय कार्यकर्त्ता (डायरेक्टर और डिप्टी डायरेक्टर) उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अध्यापन के अनुभव और संगठनात्मक क्षमतावाले अध्यापकों में से नियुक्त किये जाते हैं। जन-शिक्षा का हलक़ा (नगर) विभाग सारे अध्यापकों की नियुक्ति करता है, हलक़ा (नगर) विभाग की सिफ़ारिश पर स्वायत्त जनतन्त्र के शिक्षा-मन्त्रालय या प्रादेशिक (इलाक़ाई) विभाग द्वारा डायरेक्टर को नियुक्त किया जाता है।

इमारत और साजसामान के मामलों का डिप्टी डायरेक्टर, इमारत की प्राविधिक देखरेख और झाड़पोंछ करनेवाले लोग भी स्कूल के कर्मचारियों में शामिल होते हैं। इन सभी को डायरेक्टर नियुक्त करता है।

स्कूल के डायरेक्टर को एक व्यक्ति के प्रबन्ध-अधिकार प्राप्त हैं, किन्तु शिक्षा-सम्बन्धी मुख्य प्रश्न सामूहिक रूप से – अध्यापक-परिषद में विचार-विमर्श द्वारा हल किये जाते हैं। अध्यापक-परिषद विचार-विनिमय और परामर्श-सम्बन्धी निकाय है और एक तरह से अध्यापकों की सृजनात्मक प्रयोगशाला है। उसके हर सदस्य को खुलकर अपने विचार प्रकट करने, सुझाव देने और उन पर विचार करवाने का अधिकार प्राप्त है। छात्रों को एक कक्षा से दूसरी कक्षा में चढ़ाने, स्कूल की पढ़ाई की समाप्ति और पुरस्कार के बारे में परिषद का निर्णय अन्तिम होता है।

विभिन्न स्कूलों की अध्यापक-परिषदों के कार्य की विषय-वस्तु केवल शिक्षावर्ष, कभी-कभी शिक्षा की छमाही और तिमाही के परिणामों तथा नये शिक्षावर्ष के कार्यभारों और काम की योजना-सम्बन्धी कुछ समस्याओं के बारे में ही समान हो सकती है। बाकी बातों में उनमें बड़ी विविधता पाई जाती है। इस परिषद में प्रत्येक स्कूल की अपनी अधिक महत्त्वपूर्ण समस्याओं और देश में स्कूली शिक्षा के विकास से पैदा होनेवाले नये कार्यभारों पर विचार-विनिमय किया जाता है।

बड़े स्कूलों में अधिक सीमित महत्व के कार्यक्रम तथा पढ़ाई के विधि-सम्बन्धी प्रश्नों पर सामूहिक विचार और निर्णय करने के हेतु प्रारम्भिक कक्षाओं और अलग-अलग विषयों (भाषा और साहित्य, गणित, भौतिकी आदि) अथवा मिले-जुले कई विषयों के लिये विधि-संघ बनाये जाते हैं। अध्यापक-परिषद आम तौर पर अधिक अनुभवी और प्रतिष्ठित अध्यापकों को ही इन संघों के अध्यक्ष बनाती है।

एक सार्वजनिक संगठन के रूप में ट्रेड यूनियन स्कूल के सभी कर्मचारियों को सूत्रबद्ध करता है। ट्रेड यूनियन के सदस्य आम सभा में एक वर्ष के लिये अपना संचालन निकाय – स्थानीय समिति चुनते हैं। छोटे स्कूलों में ट्रेड यूनियन के संगठनकर्त्ता का चुनाव किया जाता है, जो ट्रेड यूनियनों की हलका (नगर) समिति के निर्देशन में काम करता है। स्थानीय समिति के अन्तर्गत उसकी प्रमुख कारंवाइयों के लिये आयोग बनाये जाते हैं। ट्रेड यूनियन अपने सदस्यों की योग्यता बढ़ाने, उनके कार्य की आवश्यक स्थितियां पैदा करने की चिन्ता करती है, अपने सदस्यों की सांस्कृतिक और रहन-सहन सेवा-सम्बन्धी प्रश्नों की ओर ध्यान देती है, इस बात का निरीक्षण करती है कि प्रबन्धक स्कूली कर्मचारियों के श्रम-रक्षा और वेतन आदि के बारे में क़ानून द्वारा निर्धारित मानकों का पालन करते हैं या नहीं।

ट्रेड यूनियन के एक भी सदस्य को ट्रेड यूनियन की स्थानीय समिति की सहमति के बिना न तो काम से अलग किया जा सकता है, न उसका तबादला ही मुमकिन है। प्रबन्धकों के साथ ट्रेड यूनियनों के सदस्यों के झगड़े पर विचार करने के लिये श्रम-विवाद-सम्बन्धी आयोग बनाया जाता है, जिस में दोनों पक्षों का समान प्रतिनिधित्व होता है।

पार्टी संगठन, जिस में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य-अध्यापक शामिल होते हैं, अध्यापकों की सृजनात्मक पहलक़दमी के विकास में सक्रिय शक्ति होता है। स्कूली पार्टी संगठन स्कूल के कार्यकलापों पर नैतिक प्रभाव डालता है, स्कूल के मुख्य कार्यभारों के निर्धारण और उनके व्यावहारिक समाधान में अपने सदस्यों की अग्रणी भूमिका सुनिश्चित करता है। स्कूल के अध्यापकों का युवा कम्युनिस्ट संघ इसी के निर्देशन में काम करता है।

स्कूल के प्रबन्धकर्त्ता (डायरेक्टर और डिप्टी डायरेक्टर) अध्यापकों और अन्य स्कूली कर्मचारियों के काम का निर्देशन करते हैं। डायरेक्टर और डिप्टी डायरेक्टर पाठों का निरीक्षण करते है, आवश्यकता होने पर कुछ कक्षाओं में जांच करते हैं, छात्रों की कापियां और अध्यापकों के रजिस्टर देखते हैं, अध्यापक-परिषद और विधि-संघों के कार्य में सक्रिय भाग लेते हैं।

अध्यापकों के बीच शिक्षा-कार्य का उचित विभाजन स्कूल के सफल कार्य के लिये बहुत महत्त्व रखता है। अध्यापकों को किसी एक कक्षा का संचालक बनना होता है, शिक्षा-कक्षों, प्रयोगीय खेतों और मण्डलों का संचालन करना होता है, खेलकूद की प्रतियोगिताओं की तैयारी और शौक़िया कला-कार्यक्रमों के आयोजन की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर होती है।

१ से ३ कक्षा तक के अध्यापकों को हफ़्ते में २४ घण्टों और ४ से १० (११) कक्षा के अध्यापकों को १८ घण्टों के काम के लिये नियत वेतन दिया जाता है। अगर काम १८ घण्टों से बढ़ जाये तो अतिरिक्त घण्टों के लिये भी अध्यापकों को मासिक वेतन के अनुसार ही पारिश्रमिक मिलता है। मातृभाषा और विदेशी भाषा, साहित्य और गणित के लिखित काम की जांच, कक्षा के संचालन, शिक्षा-कक्षों और प्रयोगीय खेतों के कार्य की देखरेख, कक्षा के बाहर खेलकूद के काम का सामान्य निर्देशन, कुछ क़िस्म के मण्डलों के संचालन के लिये भी पारिश्रमिक दिया जाता है। अध्यापक का मूलभूत वेतन उसकी शिक्षा और अध्यापन काल पर निर्भर करता है।

माता-पिता और स्कूल। सोवियत शिक्षाशास्त्र यह मानता है कि स्कूल और परिवार के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की सफलता की एक निर्णायक शर्त है। स्कूल, उसके अध्यापक इस बात की कोशिश करते हैं कि माता-पिता स्कूल को मदद दें, शिक्षा और आचरण के सम्बन्ध में बच्चों से स्कूल के समान ही मांगें करें।

माता-पिताओं के साथ काम के मुख्य रूप हैं – शिक्षाशास्त्रीय व्याख्यान, सारे स्कूल और कक्षा की माता-पिताओं की सभायें। ऐसी सभाओं में स्कूल के हर दिन के जीवन की समस्याओं पर ही नहीं, बल्कि शिक्षण के विविध प्रश्नों, छात्रों के घरेलू कार्यक्रम, घर पर दिये गये काम की तैयारी में मदद, स्वभाव के बुरे लक्षणों को दूर करने की समस्याओं पर भी, जो परिवार के साथ स्कूल का सम्बन्ध दृढ़ करने की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, विचार-विनिमय किया जाता है।

माता-पिताओं के साथ स्कूल का काम उन्हें शिक्षाशास्त्रीय ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है। माता-पिता स्कूल की सभी कार्रवाइयों के क्षेत्र में उसके सक्रिय सहायक होते हैं। हर स्कूल में मां-बाप की आम सभा में मां-बाप की समिति चुनी जाती है। उसमें हर कक्षा के माता-पिताओं के प्रतिनिधि होते हैं।

यह समिति माता-पिताओं को शिक्षा-दीक्षा के क्षेत्र में प्रबुद्ध करने में स्कूल के डायरेक्टर की सहायता करती है, उन्हें स्कूल में ड्यूटी देने, पर्वों-त्योहारों, खेलकूद की प्रतियोगिताओं और मण्डलों के संचालन में भाग लेने के लिये प्रेरित करती है। ऐसे माता-पिताओं को समिति की बैठक में बुलाया जाता है, जो अपने बच्चों की तरफ़ पर्याप्त ध्यान नहीं देते। समिति के अपने माली साधन होते हैं। शौक़िया कलाकारों के कार्यक्रमों के टिकट बेचकर और अन्य ऐसे ही स्रोतों से वह धन जमा करती है। यह धन बच्चों के मनोरंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों, एक कक्षा की पढ़ाई समाप्त कर दूसरी कक्षा में जाने के समय उपहार देने और पद-यात्राओं की व्यवस्था के लिये ख़र्च किया जाता है। माता-पिताओं से किसी तरह का चन्दा जमा करने की इजाज़त नहीं दी जाती।

माता-पिताओं की सक्रिय समिति – वह स्कूल के अन्दरूनी मामलों और विस्तृत सार्वजनिक हलक़ों से स्कूल के सम्बन्ध सुदृढ़ करने में बहुत अच्छी सहायिका होती है।

स्कूल और सामाजिक हलक़े। सामाजिक हलक़े स्कूल के मामलों में तरह-तरह से हिस्सा लेते हैं।

कल-कारख़ानों, सामूहिक फ़ार्मों, राजकीय फ़ार्मों और दफ़्तरों में बच्चों के पालन-शिक्षण में परिवार और स्कूल को सहायता देने के लिये विशेष आयोग बनाये जाते हैं। उद्यमों के युवा कम्युनिस्ट संघ स्कूल के युवा कम्युनिस्ट संघ-सदस्यों से सम्पर्क स्थापित करते हैं, पायनियर दस्तों के लिये मुखिया देते हैं।

विभिन्न सामाजिक संगठन स्कूल के शिक्षावर्ष की श्रेष्ठ तैयारी, बच्चों के ग्रीष्मकालीन विश्राम, लम्बी सैरों और पद-यात्राओं के आयोजन की समाजवादी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते हैं।

पार्टी, ट्रेड यूनियनों और सामूहिक फ़ार्म के सदस्यों की सभाओं में स्कूलों, परिवारों में बच्चों के पालन-शिक्षण आदि में मदद देने के प्रश्नों पर सोच-विचार किया जाता है।

पनपती पीढ़ी के पालन-शिक्षण में स्कूल, परिवार और सामाजिक हलकों की सामंजस्यपूर्ण कार्रवाइयां और सभी तरह का सहयोग – समाजवादी जनवाद की एक ठोस अभिव्यक्ति हैं।

स्कूल के काम का नियोजन। सोवियत स्कूल के संचालक और अध्यापक काम के नियोजन को बहुत महत्त्व देते हैं। ढंग से तैयार की गयी योजना स्कूल के केवल प्रस्तुत कार्यभारों को ही नहीं, बल्कि भावी कार्यभारों को भी सफलतापूर्वक हल करने में सहायक होती है।

नियमत: काम की योजना पूरे साल के लिये तैयार की जाती है। उसमें पिछले वर्ष के परिणामों का संक्षिप्त विश्लेषण होता है, नये शिक्षा-वर्ष के मुख्य कार्यों की संक्षिप्त रूप-रेखा होती है, मूलभूत कार्य-क्षेत्रों के व्यावहारिक कार्यभार – आठवर्षीय अनिवार्य शिक्षा के क़ानून की पूर्ति और सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा की क्रियान्विति, शिक्षा-दीक्षा में सुधार, पाठ्येतर शिक्षण-कार्य, माता-पिताओं के साथ काम और सामाजिक हलक़ों के साथ सम्पर्क आदि तय किये जाते हैं।

योजना में अध्यापक-परिषद की गतिविधियों का सार दिया जाता है, छात्रों के वैज्ञानिक और प्राविधिक मण्डलों, शौक़िया कलाकार मण्डलों, खेलकूद के विभागों और बड़े पैमाने की कार्रवाइयों (पर्वों, खेलकूद की

प्रतियोगिताओं और विभिन्न विषयों में छात्रों की प्रतियोगिताओं आदि में हिस्सा) की सूची दी जाती है।

अनेक स्कूलों की योजनाओं में एक-दो समस्याओं को चुन लिया जाता है और पूरा अध्यापक-दल उन पर काम करता है (व्ला० इ० लेनिन के जीवन और कार्यों के उदाहरण पर छात्रों का शिक्षण, कम्युनिज़्म के निर्माताओं की नैतिक नियमावली और छात्रों का नैतिक शिक्षण, सौन्दर्यशास्त्रीय शिक्षण का सुधार, पढ़ाई में यांत्रिक साधनों का व्यापक उपयोग, मशीनों द्वारा शिक्षा आदि)।

साल के दौरान योजना में ऐसे परिवर्त्तन किये जाते हैं, जीवन जिनकी मांग करता है। शिक्षावर्ष आरम्भ होने के पहले योजना के मसविदे पर विस्तृत विचार-विनिमय होता है और उसे निश्चित रूप दिया जाता है।

योजना-निर्माता अध्यापकों के समय की बचत की ओर बहुत ध्यान देते हैं। सभी तरह की बैठकों की संख्या इस तरह यथासम्भव कम की जाती है कि उनके लिये सप्ताह में एक से अधिक शाम न लगे।

प्रत्येक अध्यापक के काम की वार्षिक योजना – शिक्षा-कार्यक्रम होती है। शिक्षावर्ष आरम्भ होने के पहले अध्यापक विषय-कार्यक्रम की मदों के अनुसार समय-विभाजन निर्धारित करता है। हर मद की प्रयोगशालीय और अन्य व्यावहारिक कार्यों, सैरों और जांच-कार्यों को इंगित करनेवाली विस्तृत अध्यापन-योजना काम की आधारभूत दस्तावेज़ होती है। हर कक्षा की विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए योजना बनायी जाती है। विषय की मदों-सम्बन्धी योजना प्रत्येक पाठ के लिये अध्यापक की तैयारी आसान बनाती है, सामग्री के अध्यापन की क्रमबद्धता और शिक्षा-समय का युक्तियुक्त उपयोग सुनिश्चित करती है।

कक्षा का संचालन करनेवाला अध्यापक ही शिक्षा की तिमाही या छमाही की कार्य-योजनायें तैयार करता है। स्कूल की वार्षिक योजना और कक्षा के छात्रों की रुचियां उनका आधार होती हैं। योजना-पूर्त्ति में कक्षा-अध्यापक युवा कम्युनिस्ट संघ और पायनियर संगठनों से सहायता लेते हैं।

स्कूल के सार्वजनिक संगठनों – ट्रेड यूनियन की स्थानीय समिति, मां-बाप की समिति, पार्टी और युवा कम्युनिस्ट संघ की शाखाओं – की अपनी कार्य-योजनायें होती हैं, जो स्कूल की योजना से अभिन्न रूप में सम्बन्धित होती हैं।

स्कूल का बजट। स्कूल का खर्च चलाने के लिये राज्य आवश्यक धन की व्यवस्था करता है। हर स्कूल का सालाना तख़मीना (१ जनवरी से ३१ दिसम्बर तक) होता है, जिसकी पुष्टि जन-शिक्षा का हलक़ा (नगर) विभाग करता है। तख़मीने में अध्यापकों और अन्य कर्मचारियों का वेतन, दफ़्तरी और दूसरे खर्चों (ताप, बिजली, इमारत को साफ़-सुथरा रखने का व्यय आदि), कर्मचारियों के दौरों, पुस्तकालय के लिये पुस्तकों समेत दूसरे शिक्षा-सम्बन्धी खर्चों, शिक्षा-सम्बन्धी और अन्य साजसामानों, बच्चों के खान-पान, छात्रों के पाठ्येतर काम तथा इमारत की चालू और बड़ी मरम्मत के लिये खर्चों का पूर्वानुमान होता है।

बजट में नियत की गयी रक़म के अलावा स्कूल अपने शिक्षण-प्रयोगीय खेतों की उपज बेचकर, वर्कशॉपों द्वारा पूरे किये जानेवाले आर्डरों और स्कूल की इमारत को किराये पर देकर तथा ऐसे ही अन्य स्रोतों से अतिरिक्त आय भी प्राप्त करते हैं। ज़रूरतमन्द बच्चों को माली सहायता देने के लिये सर्वशिक्षा कोष के साधन भी स्कूलों को उपलब्ध होते हैं। स्कूल की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जन-शिक्षा का हलक़ा विभाग उनकी मात्रा तय करता है।

इन्दराज और रिपोर्ट। प्रथम इन्दराज की दस्तावेजें, जिन्हें स्कूल तैयार करता है, राजकीय सांख्यिकीय रिपोर्ट की सूचना-स्रोत होती हैं।

सभी स्कूलों के लिये राजकीय सांख्यिकीय रिपोर्ट के एक जैसे फ़ार्म हैं। शिक्षावर्ष का आरम्भ होने के फ़ौरन बाद (५ सितम्बर को) पहली रिपोर्ट पेश की जाती है। पहली छमाही में शिक्षा-योजना के सभी विषयों में छात्रों के अंकों के आधार पर दूसरी रिपोर्ट तैयार की जाती है। तीसरी रिपोर्ट शिक्षावर्ष के परिणामों के बारे में होती है।

स्कूल की रिपोर्टों और इन्स्पेक्टरों द्वारा उनके कामों की जांच के निष्कर्षों द्वारा जन-शिक्षा के निकायों के लिये स्थिति को सही रूप में समझना और भावी सुधार के उपाय निर्धारित करना सम्भव होता है।

ग० व० बेरेज़िना,
अ० इ० फ़्रोतेयेवा

सोवियत स्कूलों और अन्य बाल-संस्थाओं द्वारा शिक्षा-दीक्षा

सोवियत स्कूल बच्चों की कम्युनिस्ट शिक्षा, समाज के सक्रिय, सर्वतोमुखी और सामंजस्यपूर्ण विकासवाले सदस्यों, उच्च शिक्षाप्राप्त, शारीरिक और मानसिक श्रम के लिए अच्छी तरह तैयार, बहुमुखी मानसिक आवश्यकताओं-वाले लोगों, उच्च नैतिक आदर्शों और विकसित सौन्दर्य-बोधवाले लोगों के शिक्षण के कार्यभारों को दृढ़ता और विधिपूर्वक सम्पन्न करता है।

स्कूल के साथ-साथ ग़ैरस्कूली बाल-संस्थायें, सार्वजनिक संगठन, लेखकों, चित्रकारों और स्वरकारों के संघ आदि इस शिक्षण-कार्य में हिस्सा लेते हैं। स्कूल और ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं के अलावा ट्रेड यूनियनों के क्लब और संस्कृति-प्रासाद, संस्कृति-मन्त्रालय के संगठन – पुस्तकालय, संग्रहालय, थियेटर, सिनेमाघर, क्लब और स्वैच्छिक खेलकूद संघ पढ़ाई के बाद के ख़ाली वक़्त में बच्चों के शिक्षण-कार्य में हिस्सा लेते हैं। मुहल्लों में भी बच्चों के साथ विस्तृत शिक्षण-कार्य का आयोजन किया जाता है।

ग़ैरस्कूली बाल-संस्थायें जन-शिक्षा-प्रणाली की एक प्रमुखतम उपलब्धि हैं। वे बच्चों की विविध आवश्यकताओं और रुचियों की पूर्त्ति, उनकी क्षमताओं

के स्पष्टीकरण और निरूपण तथा उनके सर्वतोमुखी विकास में सहायक होती हैं।

इस वक्त सोवियत देश में ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं – पायनियर भवनों और प्रासादों, बाल प्राविधिक केन्द्रों, बाल प्राकृतिक-केन्द्रों, सैरों-यात्रा-केन्द्रों, बाल खेलकूद-विद्यालयों, बाल रेलवे, क्रीड़ांगनों और पार्कों की संख्या हज़ारों में है।

पायनियर भवन और पायनियर प्रासाद ग़ैरस्कूली बहुशाखीय संस्थायें हैं। वे बच्चों के सभी तरह के शौक़िया कार्यक्रमों को संगठित करती हैं और साथ ही पायनियरों के कार्य की केन्द्र हैं, स्कूलों को पायनियर दल, दस्ते और टोलियां संगठित करने में विधि-सम्बन्धी सहायता देती हैं। पायनियर भवनों और प्रासादों के पास अच्छी इमारतें और बच्चों की तरह-तरह की दिलचस्पियों की पूर्ति के लिये अच्छी व्यवस्था है।

कुछ साल पहले राजधानी के एक सुन्दरतम स्थल – लेनिन पहाड़ियों - पर मास्को के युवा कम्युनिस्ट संघ के सदस्यों की पहलक़दमी और उन्हीं के बल पर मास्को के नगर पायनियर प्रासाद का नया इमारत-समूह बनाया गया। यहां दर्शकों का हॉल और पायनियरों के कार्य-कक्ष बढ़िया साजसामान से सज्जित हैं। प्रासाद में व्ला० इ० लेनिन का संग्रहालय है, कई लेनिन-कक्ष हैं, जहां लेनिन की रचनाओं का पाठ होता है, पुराने बोल्शेविकों से मुलाकातें होती हैं और लेनिन के बारे में फ़िल्में दिखाई जाती हैं। स्कूली छात्रों के पाठ्येतर काम के लिये यहां प्राविधिक प्रयोगशालायें हैं, नृत्य-शिक्षा के हॉल, चित्रकारी के स्टूडिओ और खेलकूद के कमरे हैं, तरह-तरह के खेलों की व्यवस्था है, विश्राम-क्षेत्र है, बाग और खेत है, जानवरों के पालन का प्रबन्ध है, युवा कारीगरों का क्लब है। यहां रेडियो और खिलौने आदि बनाने की शिक्षा देने की भी व्यवस्था है।

लेनिनग्राद में एक सुन्दरतम प्रासाद, जिस में लगभग ३०० हॉल और कमरे हैं, बच्चों को सौंप दिया गया है। प्रासाद में १०० से अधिक प्रयोगशालायें और प्राविधिक कक्ष हैं, उसका अपना क्रीड़ांगन और पार्क, तालाब और ग्रीष्मकालीन शिविर है। उसकी प्रयोगशालाओं, स्टूडियो और वर्कशॉपों को साजसामान से लैस करने में शहर के दो सौ से अधिक उद्यमों ने हिस्सा लिया। प्रासाद में १०० से अधिक क्लब, मण्डल और दल काम करते हैं, जिनमें बाल-इतिहासज्ञों और अन्तरिक्ष-नाविकों, मोटर-प्रेमियों और सामूहिक खेलों के संगठनकर्त्ताओं के क्लब, नाच का स्टूडियो, व्यावहारिक

कलाओं के मण्डल, पुस्तकालय कार्यकर्त्ताओं का स्कूल और व्याख्याताओं का केंद्र भी शामिल है। प्रासाद में ३०० से अधिक अनुभवी अध्यापक बालकों की सहायता करते हैं, प्रमुख वैज्ञानिक बाल-समाजों और मण्डलों का नेतृत्व करते हैं। वे व्याख्यान देते हैं, प्रयोगशालाओं में काम सिखाते हैं और सैरों का आयोजन करते हैं।

ग़ैरस्कूली विशेषीकृत बाल-संस्थाओं का जाल हर साल बड़ा होता जाता है। बाल-प्राविधिकों के केन्द्र प्राविधिक कार्यों – रेडियो और बिजली इंजीनियरी, हवाई जहाज़ों और जहाज़ों के नमूने बनाने तथा मोटरों के कामों में दिलचस्पी लेनेवाले बालकों को संगठित करते हैं।

बाल-प्रकृतिप्रेमी-केन्द्रों में पौधाविज्ञों और कृषि रसायनज्ञों, फूलों और पशु-प्रेमियों, मछली-पालकों और चाय-उत्पादकों के बहुत ही विविधतापूर्ण मण्डल और विभाग काम करते हैं। बाल-प्रकृतिप्रेमी-केन्द्रों के अपने खेत, तापघर, वनस्पति-उद्यान और पशु-पालन फ़ार्म हैं। बाल-यात्री-केन्द्र स्कूली छात्रों के लिये आस-पास की पद-यात्रायें और यात्रायें आयोजित करते हैं। बाल-रेलवे और बाल-जलपोत बालकों को रेलवे और जहाज़ों की यातायात-प्रणाली से परिचित कराते हैं।

ट्रेड यूनियनों के सांस्कृतिक संगठन बालकों के सर्वतोमुखी विकास और शिक्षण में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस समय ट्रेड यूनियनों के क्लबों और संस्कृति प्रासादों के अन्तर्गत लगभग ६ हज़ार बाल-विभाग, बाल प्राविधिकों के १४७५ केन्द्र और क्लब, स्कूली छात्रों के साढ़े सात हज़ार कमरे, हज़ारों बाल-खेलकूद स्कूल, स्टूडियो, मण्डल, प्राविधिक कक्ष और प्रयोगशालायें क्रियाशील हैं। क्लबों और संस्कृति प्रासादों में बच्चों के लिये नियमित रूप से दिनी कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, फ़िल्में दिखाई जाती हैं और उत्पादन-क्षेत्र के अग्रणी लोगों के साथ मुलाक़ातों की व्यवस्था की जाती हैं। जाड़े की छुट्टियों में सभी जगह नये साल के फ़र-वृक्ष का समारोह मनाया जाता है। २ करोड़ से ज्यादा बच्चे हर साल इसका आनन्द लेते हैं। अनेक उद्यमों के अन्तर्गत ट्रेड यूनियनों के ख़र्च पर विशेष बाल-संस्कृति-भवन बनाये गये हैं। मास्को की कपड़ा मिल "त्र्योख़गोर्नाया मनुफ़क्तूरा" का पाब्लिक मोरोज़ोव नामक बाल-संस्कृति-भवन, रेलवेवालों का केन्द्रीय बाल-भवन, मेट्रो निर्माताओं का बाल-संस्कृति-भवन और बच्चों का कलात्मक शिक्षा-भवन विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

सामूहिक फ़ार्मों के क्लब भी बालकों के लिये अपने द्वार खोल रहे हैं।

तूफ़ानी वैज्ञानिक-प्राविधिक प्रगति की परिस्थितियों में विज्ञान, उसकी नवीनतम उपलब्धियों और उसकी भावी उन्नति की सम्भावनाओं में बालकों और तरुणों की दिलचस्पी स्वाभाविक बात है।

स्कूल, गैरस्कूली बाल-संस्थायें, उच्च शिक्षा-संस्थायें और अनुसन्धान-संस्थान विज्ञान में बालकों की दिलचस्पी, प्रकृति और समाज के बारे में उनकी स्थायी ज्ञान-पिपासा को पूरा करते हैं। विभिन्न मण्डल और स्कूल के विज्ञान-समाज इस ध्येय की पूर्त्ति में छात्रों की मदद करते हैं।

छात्र यथातथ्य विज्ञानों और प्रविधि की नवीनतम उपलब्धियों, इतिहास, साहित्य और कला के बारे में व्याख्यान सुनते हैं, ख़ुद रिपोर्टें पेश करते हैं, पुरातत्त्वीय, भूतत्त्वीय और लोक-साहित्य-सम्बन्धी अभियानों में हिस्सा लेते हैं तथा अनुसन्धान-संस्थानों और कारोबारी संगठनों के आर्डर पूरे करते हैं। क्रीमिया के सार्वजनिक हलक़ों के सहयोग से संगठित "लघु विज्ञान अकादमी" (खोजी) बहुत विख्यात है। यह अकादमी भौतिकी, रसायन, गणित और खगोलशास्त्र के सैकड़ों बाल-प्रेमियों को सूत्रबद्ध करती है। उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतन्त्र की विज्ञान अकादमी के अन्तर्गत साइबरनेटिक्स का संस्थान और रसायन-संस्थान, खनिज भण्डारों का क्रीमियाई संस्थान तथा सेवास्तोपोल का पोलीटेक्निकल संस्थान इस "लघु अकादमी" को बहुत महत्त्वपूर्ण सहायता देते हैं।

मोल्दाविया का किशीनेव विश्वविद्यालय और नगरों तथा गांवों के स्कूल अनेक वर्षीय मैत्री सूत्रों में बंधे हुए हैं। विद्वान उच्च कक्षाओं के छात्रों को व्याख्यान देते हैं, मण्डलों का संचालन और विभिन्न विषयों की प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हैं। विश्वविद्यालय के प्रयोगीय भौतिकी विभाग के अन्तर्गत स्कूली भौतिकी मण्डल काम करता है। बालक स्वतन्त्र रूप से प्रयोगशालाओं में तजरबे करते हैं और जटिल सवालों के हल खोजते हैं। गणित विभाग के लोग बाल-गणितज्ञों के क्लबों का संचालन करते हैं। अनेक वर्षों से रसायन विभाग के अन्तर्गत बाल-रसायनज्ञों का मण्डल विद्यमान है। इतिहास विभाग के वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता गांवों में जाकर बालकों के सम्मुख व्याख्यान देते हैं। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भी सहायता-कार्य में सक्रिय भाग लेते हैं।

सृजनात्मक दलों में छात्रों का भाग लेना कोई खेल नहीं, बल्कि अनजानी चीज़ों को जानने के उत्साह और प्रयासों से परिपूर्ण श्रम होता है। अनेक बार छात्रों, विशेषकर ऊंची कक्षाओं के छात्रों के काम (जैसे

कि भू-तालिकाओं की तैयारी, ऋतु और जल-विज्ञान-सम्बन्धी निरीक्षण आदि) से व्यावहारिक लाभ होता है। स्कूली छात्रों के दस्ते देश के खनिज पदार्थों के अध्ययन में भाग लेते हैं, सोवियत संघ के भूतत्वीय मन्त्रालय द्वारा दिये गये कार्य पूरे करते हैं। उदाहरण के लिये चेल्याबिन्स्क के स्कूली छात्रों ने औद्योगिक महत्त्व के स्वर्ण-भण्डार खोज निकाले। अब वहां से सोना निकाला जा रहा है।

गणित, भौतिकी और रसायन की जानकारी से सम्बन्धित छात्र-प्रतियोगिताओं का विस्तृत प्रचार है। पिछले वर्षों में देशव्यापी पैमाने पर उनका आयोजन होने लगा है। ऐसी प्रतियोगितायें तीन दौरों में होती हैं। सब से पहले तो पत्र-व्यवहार द्वारा प्रतियोगिता होती है। ६-१० कक्षाओं के छात्रों के लिये बालकों और तरुणों के पत्र-पत्रिकाओं में गणित, भौतिकी और रसायन-सम्बन्धी प्रश्न छापे जाते हैं। प्रश्न ऐसे होते हैं कि छात्र समझ-बूझ, तर्कसंगत ढंग से सोचने की क्षमता प्रकट करें, कि वे अपने ढंग के प्रश्नों के उत्तर दे सकें। कोई भी मौलिक विचार, सवाल हल करने का तरीक़ा या ऐसा रुख़, जो सृजनात्मक रुझान का परिचय दे, प्रतियोगिता के दूसरे दौर में भाग लेने का आधार बनते हैं। यह दौर प्रदेश और इलाक़ा-केन्द्रों में वसन्त में होता है। इस दौर के विजेता प्रतियोगिता के अन्तिम दौर में एक-दूसरे से प्रतियोगिता करते हैं। ये भी परम्परायें-सी बन गयी गयी हैं कि अन्तिम दौर में भाग लेनेवाले छात्र देश के प्रमुख वैज्ञानिकों से मिलते हैं, अनुसन्धान-संस्थानों की प्रयोगशालाओं को देखने जाते हैं। प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले बहुत-से छात्रों की "उच्च विज्ञान" से यह जान-पहचान उन्हें उनका पेशा चुनने, अपना जीवन-मार्ग तय करने और वैज्ञानिक कार्य में अपने को लगा देने की तीव्र इच्छा पैदा करने में सहायक होती है।

पिछले वर्षों में उन विषयों की संख्या बढ़ गयी है, जिन में प्रतियोगितायें होती हैं। अब उन में जैविकी; भूगोल और भाषाशास्त्र भी शामिल कर लिये गये हैं।

ये प्रतियोगितायें प्रतिभावान बालकों-तरुणों को खोजने में सहायक होती हैं। अखिल संघीय प्रतियोगिताओं के विजेताओं में देश के प्रमुख वैज्ञानिक केन्द्रों के छात्र ही नहीं, बल्कि छोटे नगरों और गांवों के छात्र भी होते हैं।

सभी उम्रों के छात्रों की विज्ञान-सम्बन्धी दिलचस्पी का प्रविधि और उसकी आधुनिक उपलब्धियों के प्रति उनकी रुचि से गहरा सम्बन्ध है।

बाल-प्राविधिकों के मण्डलों और क्लबों का बड़ा प्रचार हुआ है। वायुयानों, जहाज़ों, जलविमानों, मोटरों, खेतीबाड़ी की मशीनों, तरह-तरह के यन्त्रों, रेकार्डिंग मशीनों, रेडियो और टेलीविज़नों, स्कूली रेडियो केन्द्र के संयोजन, धातु-विद्युत विधायन, स्वसंचालन और टेली यन्त्रों के कारगर नमूनों का निर्माण – ऐसे हैं वे व्यावहारिक कार्यभार, जिन्हें बाल-प्राविधिकों के मण्डल और क्लब पूरा करते हैं। इनमें इस तरह से शिक्षा दी जाती है कि छात्रों में अपने श्रम को युक्तियुक्त ढंग से संगठित करने की क्षमता पैदा हो, कि उन में काम के प्रति सृजनात्मक रवैया बन सके।

चेल्याबिन्स्क के ट्रैक्टर कारख़ाने ने अपने बाल-प्राविधिकों को दुमंज़िली नयी इमारत भेंट की है, जहां ३० प्राविधि-मण्डल काम करते हैं। मग्नीतोगोर्स्क के धातु कारख़ाने के बाल-प्राविधिकों का क्लब बहुत बड़ी संस्था बन गया है, जहां डेढ़ हज़ार से ज्यादा बालक बड़ी दिलचस्पी से प्रविधि-सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करते हैं। ये बाल-क्लब नवीनतम साजसामान, यंत्रों और औज़ारों से लैस हैं।

लगभग ४० सालों से काम करनेवाला ओदेस्सा का बाल-प्राविधिक-केन्द्र "अद्भुत कल्पनाओं का केन्द्र" कहलाता है। ओदेस्सा के अनेक स्कूलों के सहयोग से यहां स्वसंचालीकरण और टेलीमेकेनिकी का एक प्रदर्शन-हॉल बनाया गया है। लोकेटर (निर्धारक) का कारगर नमूना दर्शकों पर बहुत प्रभाव डालता है। यहां आधुनिक पनबिजलीघरों के संचालन की जटिल स्वचालन प्रणाली का भी प्रदर्शन किया जाता है।

देहात के छात्रों के प्राविधिक सृजन का भी विस्तृत विकास हो रहा है। सामूहिक फ़ार्मों और राजकीय फ़ार्मों में तरह-तरह की आधुनिक मशीनें हैं, इंजीनियर और प्राविधिक हैं। बहुत से देहाती स्कूलों में आविष्कारकों और बिजली सुधारकों के अखिल सोवियत संघीय समाज के मण्डल काम करते हैं। मण्डलों में भाग लेनेवाले छात्र ऐसी मशीनें और सहायक यन्त्र-भाग बनाते हैं जो खेतों और पशुपालन फ़ार्मों के मेहनतकशों का काम हल्का करते हैं। उदाहरण के लिये मगादान के बालकों ने अनाज लादनेवाला स्वचालित यंत्र बनाया है, जो उन खलियानों में काम आता है जहां बिजली नहीं होती। किसी भी सामूहिक फ़ार्म की वर्कशॉप में ऐसा यन्त्र बनाया जा सकता है। क्रास्नोदार इलाक़े के बाल-प्राविधिक-मण्डल ने संकरण फ़सलों के खेतों में मकई के भुट्टे और तम्बाकू के पुष्प-गुच्छ काटने के

सहायक यन्त्र-भाग, बाग़ों और अंगूर के बगीचों के लिये छोटे आकार के स्वचालित जल-सिंचक बनाये हैं।

बालकों के प्राविधिक सृजन का काम उन्हें श्रम-शिक्षा देने के सामान्य कार्यभारों के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है और इस बात की अपेक्षा करता है कि वे समाजोपयोगी श्रम में विस्तृत तथा विधिवत दिलचस्पी तथा वयस्कों के उत्पादक श्रम में यथाशक्ति हिस्सा लें।

१९६७ में आयोजित बाल-आविष्कारकों और सुधारकों की अखिल सोवियत संघीय प्रदर्शनी ने बाल-प्राविधिक-सृजन के बहुत ही अच्छे समाजोपयोगी परिणाम पेश किये। इस प्रदर्शनी में ७ लाख २५ हजार छात्रों ने हिस्सा लिया और उन्होंने २० हजार से अधिक सुधार प्रस्तुत किये। उन में से अधिकांश का उत्पादन में उपयोग किया जा रहा है।

बाल-प्राविधिकों की शौक़िया कार्रवाइयां अधिक विस्तृत हो रही हैं और नये रूप ले रही हैं। बाल-प्राविधिक ऐसे कार्यभारों को पूरा कर रहे हैं, जो वयस्कों के ही बस के हैं। क्रियाशील स्कूली बिजलीघरों, रेडियो-केन्द्रों और बाल रेलवे आदि का निर्माण किया जाता है। बालक ही इन्हें बनाते और चलाते हैं।

"बाल-प्राविधिको, स्कूल के लिये कुछ करो" आन्दोलन का विस्तृत प्रचार हुआ है। बालक कारगर नमूने तैयार करते हैं, कमरों में बिजली लगाते हैं और प्रयोगशालाओं को लैस करते हैं। बाल-प्राविधिकों की श्रेष्ठ कृतियों को आर्थिक उपलब्धियों की अखिल सोवियत संघीय प्रदर्शनी में दिखाया जाता है, जहां उनके लिये एक अलग मंडप की व्यवस्था है।

बाल-प्रकृतिप्रेमियों के क्लब लाखों बालकों को सूत्रबद्ध करते हैं। सोवियत स्कूल अपने छात्रों में प्रकृति के प्रति चिन्ताशील रहने की भावना पैदा करने की कोशिश करते हैं। स्कूल में आने के साथ ही बालक अपने इर्दगिर्द के जीव-जन्तुओं और वनस्पति की ओर ध्यान देने की शिक्षा पाते हैं। "सजीव प्रकृति के कोनों" में बाल-प्रकृतिप्रेमी पौधों और जानवरों की देखभाल करते हैं, गानेवाले पक्षियों और सजावटी मछलियों आदि को पालते हैं। बसन्त और पतझड़ में बड़े पैमाने पर बाग़ों, पार्कों और वनों में पेड़-पौधे रोपने की परम्परायें बन चुकी हैं।

"वन-दिवस", "पक्षी-दिवस" विस्तृत रूप से मनाये जाते हैं और फूलों की प्रदर्शनियां आयोजित की जाती हैं। लाखों छात्र वन और खेत-नाशक कीड़ों-मकोड़ों के विरुद्ध संघर्ष तथा पक्षियों के लिये चुग्गा और

घोंसले तैयार करते हैं। पायनियर कैम्पों में जीव-जन्तुओं और वनस्पति के अध्ययन के लिये सैरें और पद-यात्रायें आयोजित की जाती हैं, जंगली फल, खुमियां और औषधीय जड़ी-बूटियां बटोरने की व्यवस्था की जाती है। बाल-प्रकृतिप्रेमियों और प्रयोगकर्त्ताओं के विशेष शिविरों का आयोजन किया जाता है। इन में बालक आराम करने के साथ-साथ प्रकृति-अध्ययन का काम करते हैं। उक्रइनी जनतन्त्र के बाल-प्रकृतिप्रेमियों का शिविर अपने अस्तित्व के ३० सालों में बाल-प्रकृतिप्रेमियों की प्रयोगशाला बन गया है। जैविकी और बाल-प्रकृतिप्रेमियों की जनतन्त्रीय प्रतियोगिताओं के विजेता छुट्टियों में यहां आते हैं। बालक एक-दूसरे को अपनी उपलब्धियों से परिचित कराते हैं, वैज्ञानिकों और ऊंची फ़सल उगानेवालों से मिलते हैं। जाहिर है कि वे आराम भी करते हैं। इस शिविर में हर साल ६०० बालक छुट्टियां विताते हैं। इन में से अधिकांश के बचपन और तरुणावस्था की दिलचस्पी भावी पेशा बन जाती है।

बाल-प्रकृतिप्रेमियों के केन्द्र छात्रों के प्रयोगीय कार्य का, जिसका पिछले कुछ वर्षों में विशेष प्रचार हुआ है, निर्देशन करते हैं। स्कूलों के प्रयोगीय कार्य की विषय-वस्तु और विधि बालकों की आयुगत विशिष्टताओं के अनुरूप होती है। प्रारम्भिक कक्षाओं में छात्र पौधे रोपने और उनकी देखभाल के मामूली काम करते हैं और इस बात की तरफ़ ध्यान देते हैं कि कृषि-प्रविधि के उपयोग से पौधों के आकार और विकास में कैसे परिवर्त्तन होता है। बीच की कक्षाओं में छात्र प्रयोग करते हैं, जिनके परिणामों से कृषि विज्ञान और व्यवहार परिचित हैं। उच्च कक्षाओं के छात्र अनुसन्धान-सम्बन्धी कार्यभार अपने सम्मुख रखते हैं और अक्सर उन्हें सफल ढंग से पूरा करते हैं, कृषि-प्रयोगीय केन्द्रों और अनुसन्धान-संस्थानों द्वारा सौंपे गये कार्यभारों के अनुसार निरीक्षण करते हैं, जिनका उत्पादन की दृष्टि से बहुत महत्त्व होता है।

१६३४ से बाल-प्रकृतिप्रेमियों और प्रयोगकर्त्ताओं का केन्द्रीय स्टेशन मास्को में काम कर रहा है। यहां छात्रों द्वारा १६४८ में लगाया गया फलों और बेरियों का एक बड़ा बाग़ है, उत्पादन-प्रयोगीय भूखण्ड है, जहां स्कूली बाग़-बगीचों के लिये अधिक मूल्यवान पेड़-पौधों की वृद्धि की जाती है, तापघर, गर्म क्यारियां और पशु-पक्षी-केन्द्र है, जहां तरह-तरह के जानवर और पक्षी रखे जाते हैं, कृषि औज़ारों और मशीनों के मण्डप, प्रयोगशालायें तथा मधुमक्षिका-पालन केन्द्र है।

बाल-प्रकृतिप्रेमियों ने देहातों में तो विशेषतः बहुत बड़ी सफलतायें प्राप्त की हैं। उनके बहुत से तजरबों के परिणामों का सामूहिक और राजकीय फ़ार्मों के उत्पादन कार्य में उपयोग किया जा रहा है।

सोवियत स्कूल, ग़ैरस्कूली बाल-संस्थायें, परिवार और सार्वजनिक क्षेत्र इस बात की चिन्ता करते हैं कि हर किशोर-किशोरी अपनी रुचियों और रुझानों के अनुरूप मनपसन्द पेशा चुने।

विज्ञान और तरह-तरह के प्राविधिक सृजन में छात्रों को प्रवृत्त करना तथा बाल-प्रकृतिप्रेमियों का काम भावी पेशे के सजग चुनाव में काफ़ी हद तक सहायक होते हैं, युवाजन को समाज-हित के श्रम के लिये मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक रूप से तैयार करते हैं और छात्रों के व्यावहारिक कार्य का समाजोपयोगी रुझान उनकी नागरिक चेतना का निर्माण करता है।

* * *

सोवियत संघ को बालकों और युवाजन के सौन्दर्यशास्त्रीय शिक्षण का बहुत अनुभव प्राप्त है। साहित्य, ललित कला और संगीत, इतिहास और समाजशास्त्र के पाठों में, रहन-सहन के संगठन की शिक्षा और बालकों की तरह-तरह की शौक़िया कला-कार्रवाइयों के विकास द्वारा इसकी नींव पड़ती है।

ज़ाहिर है कि स्कूल की सौन्दर्यशास्त्रीय शिक्षा-दीक्षा का ध्येय बालकों को पेशेवर कलाकार बनाना नहीं होता। वह उन में कला की समझदारी पैदा करती है, उन्हें सौन्दर्य के प्रति संवेदनशील होना सिखाती है और सृजनात्मक रुझानों के विकास में मदद देती है।

संगीत-शिक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। संगीत के पाठों, मण्डलों और सहगान-दलों में बालकों को गाना सिखाया जाता है, उनमें संगीतात्मक अभिरुचि पैदा की जाती है, उन्हें रूसी और विदेशों के संगीत से परिचित कराया जाता है, संगीत सुनने और समझने की शिक्षा दी जाती है। स्कूलों में सहगान-दल और आर्केस्ट्रा संगठित किये जाते हैं, नियमित रूप से कन्सर्टों का आयोजन किया जाता है। बहुत-से नगरों और अनेक देहातों में बाल-संगीत-विद्यालय बना दिये गये हैं, जहां बालक स्कूल के बाद फ़ुरसत के वक़्त संगीत सीखते हैं। उच्च योग्यतावाले शिक्षकों की देखरेख में वे यहां माध्यमिक संगीत-शिक्षा पाते हैं।

सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के अन्तर्गत कलात्मक शिक्षा-संस्थान का बाल सहगान-दल, जिसका प्रोफ़ेसर व० ग० सोकोलोव पिछले ३० सालों से संचालन कर रहे हैं, सोवियत संघ और विदेशों में भी काफ़ी विख्यात है। इस अवधि में मास्को के लगभग १५ हज़ार स्कूली छात्र इस सहगान-दल में हिस्सा ले चुके हैं। बाद को ये सभी तो पेशेवर संगीतज्ञ, गान-शिक्षक, सहगान-दल के निर्देशक या सोलो गायक नहीं बने, मगर सहगान-दल के प्रत्येक गायक को जीवन भर के लिये कला से प्यार हो गया। यह सहगान-दल वास्तव में एक प्रयोगशाला है, जहां संगीत-शिक्षा की महत्त्वपूर्ण समस्याओं का अध्ययन होता है और उनके समाधान का मार्ग इंगित किया जाता है।

बाल्टिक तटवर्ती जनतन्त्रों ने संगीत-शिक्षा का बहुत बड़ा और मूल्यवान अनुभव एकत्रित किया है। यहां हज़ारों संगीतज्ञ और गायक बाल-सहगान-दलों का संचालन करते हैं। लाटविया, लिथुआनिया और एस्तोनिया में प्रतिवर्ष आयोजित किये जानेवाले परम्परागत गान-समारोहों में दसियों हज़ार छात्र हिस्सा लेते हैं।

बालक और किशोर पायनियर भवनों और पायनियर प्रासादों के बाल संगीत और कला-दलों में भी संगीत-शिक्षा पाते हैं। इन दलों में छात्र आम तौर पर अपनी ही इच्छा से नाम लिखाते हैं, मगर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अधिक योग्यता रखनेवाले बालकों को स्कूल के मण्डल भी यहां भेजते हैं। बड़े पायनियर भवनों और प्रासादों में गान-नाच-मण्डल भी बनाये जाते हैं, जिन में सहगान-दल, आर्केस्ट्रा और नृत्य-दल शामिल होते हैं। मास्को के पायनियर प्रासाद में व० स० लोकत्येव (जिनका हाल ही में देहान्त हो गया है) के निर्देशन में नाच-गान-मण्डल बनाया गया, जो हमारे देश में शौक़िया कलाकारों का एक लोकप्रिय मण्डल है। हमारे देश के सैकड़ों विख्यात गायकों, नर्तकों और संगीतज्ञों ने इसी मण्डल में अपना प्रथम कला-परिचय पाया। इस समय एक हज़ार से अधिक बालक इस में शिक्षा पाते हैं। इस मण्डल के कलाकार अनेक बार विदेशों में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने जा चुके हैं।

बालकों के शौक़िया कला-कार्यक्रम और बालकों की ललित कला-कृतियों की प्रदर्शनियां आयोजित करने की परम्परायें बन गयी हैं।

ललित कला में छात्रों की रुचि बहुत हद तक चित्रकारी, मूर्तिकला, सजावटी पच्चीकारी आदि में उनकी सफलताओं, बेशक वे बहुत मामूली ही

हों, से सम्बन्धित है। स्कूलों और ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं में विभिन्न मण्डल और स्टूडिओ काम करते हैं।

कीयेव के पायनियर प्रासाद के अन्तर्गत २० साल से ललित कला स्टूडिओ काम कर रहा है। स्टूडिओ में ७ दल हैं, जिन में ५ साल से लेकर १८ साल तक की उम्र के लगभग २०० बालक और तरुण शिक्षा पाते हैं। प्रत्येक दल में औसत शिक्षा-काल २ साल है। मॉडल के अनुसार चित्रकारी, रेखाचित्रों, चित्रों और मूर्तियों में सृजनात्मक विचारों को व्यावहारिक रूप देने की क्षमता की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। बहुत-से बालक पच्चीकारी और सजावटी काम में दिलचस्पी लेते हैं। स्टूडिओ के बालकों को क्लासीकल कला के इतिहास और प्रमुख चित्रकारों के कृतित्व का परिचय दिया जाता है।

सोवियत बच्चों द्वारा बनाये गये चित्रों का संसार के विभिन्न देशों में प्रदर्शन हो चुका है। न्यूयार्क (१६३६), ब्रसेल्स (१६५८) और मोनरिआल (१६६८) की विश्व प्रदर्शनियों में उनका ऊंचा मूल्यांकन हुआ है।

पायनियर भवनों और प्रासादों द्वारा बड़े पैमाने पर आयोजित कला-सम्बन्धी व्याख्यान और वार्तायें, कन्सर्ट, कला-समारोह, कला-प्रतियोगितायें और प्रदर्शनियां, गीतों और नाचों के समारोह आदि बालकों में कला-प्रेम जगाते हैं, छात्रों की कला-रुचियों का दायरा विस्तृत करते हैं और बालकों के मनपसन्द कला-क्षेत्रों में उनकी जानकारी को गहन बनाते हैं।

कलागत शिक्षण बालकों के कला-गुणों के स्पष्टीकरण और विकास, उनकी सर्वतोमुखी उन्नति, वैचारिक आस्था और नागरिक भावनाओं के निर्माण में सहायक होता है।

साहित्य द्वारा शिक्षण। ललित साहित्य कलात्मक, नैतिक और बौद्धिक विकास का एक सबसे अधिक शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण साधन है। बचपन और तरुणावस्था में, जब आस्थाओं, रुचियों और चरित्र का निर्माण होता ही है, जब प्रत्येक श्रेष्ठ पुस्तक जीवन में एक बहुत बड़ी घटना बन जाती है, साहित्य की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। सोवियत संघ बालकों और तरुणों के लिये अपने साहित्य पर उचित रूप से गर्व कर सकता है। वह अत्यधिक कलात्मक और नैतिक गुणों से ओत-प्रोत है। सच्चा

जनवाद, मानवतावाद, नागरिकता, जीवन की गहरी पकड़ – ये उसके विशेष लक्षण हैं।

बालकों के लिये पुस्तक-प्रकाशन का विकास – यह समाजवादी संस्कृति के इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ठ है। बच्चों के लिये पुस्तकें छापनेवाले प्रकाशन गृहों को प्रमुख लेखकों और चित्रकारों, विद्वानों और शिक्षाशास्त्रियों तथा मुद्रण कला के माहिरों का सहयोग प्राप्त है। सोवियत बाल-साहित्य वास्तव में ही बहुजातीय है।

हमारे देश में हर साल लगभग दो हजार बाल-पुस्तकों की २० करोड़ से अधिक प्रतियां छपती हैं। क्रान्तिपूर्व के रूस में प्रथम विश्व युद्ध के पहले, १९१३ में जितनी बाल-पुस्तकें छपती थीं, ये उस से ३० गुना अधिक हैं। सोवियत संघ में प्रकाशित हर छठी पुस्तक (पाठ्यपुस्तकों को छोड़कर) बाल-पाठक के लिये होती है।

एक सौ से अधिक प्रकाशन गृह बालकों और तरुणों के लिये साहित्य प्रकाशित करते हैं। प्रकाशन-कार्य के आकार और पैमाने की दृष्टि से विशेषीकृत प्रकाशन गृह "बाल-साहित्य" (जो अ० म० गोर्की की प्रेरणा पर १९३३ में स्थापित किया गया) सोवियत संघ के सबसे बड़े प्रकाशन गृहों में से एक है। यह बच्चों, किशोरों और तरुणों के लिये पुस्तकें छापता है। विषयों की विविधता और स्कूलपूर्व से लेकर तरुणावस्था तक के क्षेत्र विस्तार को देखते हुए इस प्रकाशन गृह को विश्वकोषीय कहा जा सकता है।

नन्हे-मुन्ने पाठकों का प्रकाशन गृह "मलीश" हर वर्ष कम से कम ५ करोड़ पुस्तक-प्रतियां प्रकाशित करता है। यह किताब, किताबी खेल, छपे हुए मेजी खेल, क्यूब और एल्बम भी छापता है। "मलीश" प्रकाशन गृह द्वारा प्रकाशित चीजें स्कूलपूर्व के बच्चों और छोटे स्कूली बालकों को प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाओं, लोक-साहित्य तथा सोवियत और विदेशी लेखकों की कविताओं, कहानियों और कथा-क़िस्सों से परिचित कराता है। विशेष पुस्तकमालायें भी निकाली जाती हैं। मसलन "तेरी मातृभूमि" छोटे बच्चों को सोवियत संघ की प्रकृति और जलवायु तथा इस बात की जानकारी देती है कि सोवियत लोग कैसे रहते और श्रम करते हैं। "विश्व चित्र-दर्शन" पुस्तकमाला बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है।

सभी संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों, इलाक़ों और प्रदेशों में प्रकाशन गृह बच्चों तथा तरुणों के लिये पुस्तकें छापते हैं। लाटविया में ऐसा प्रकाशन गृह है – "लीयेस्मा", मोल्दाविया में "कार्त्या माल्दोवेन्यास्के", उक्राइना में

"वीस्योल्का" और "मोलोद", उज़्बेकिस्तान में "योश ग्वार्डिया", जार्जिया में "नाकादूली", मिन्स्क में "बेलोरूस" और मास्को में "सोवेत्स्काया रोस्सीया" तथा "मोलोदाया ग्वार्दिया"।

सोवियत आज़रबैजान में पिछले ४० वर्षों में बालकों और तरुणों के लिये २६७० पुस्तकों की लगभग ३ करोड़ ४० लाख प्रतियां छप चुकी हैं। आज़रबैजानी सोवियत समाजवादी जनतन्त्र में सोवियत सत्ता की स्थापना की स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर बाल और तरुण-साहित्य का विशेषीकृत प्रकाशन गृह "ग्यांज्लीक" (जवानी) क़ायम किया गया। लिथुआनियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र में १९४० से १९६८ तक बच्चों के लिये १५६७ पुस्तकों की १,८५,२०,९०० प्रतियां छापी गयीं।

रूस की जातियों का प्राचीन साहित्य भी है और ऐसा साहित्य भी, जो सोवियत काल में जन्मा और रचा गया। इस समय केवल रूसी संघ के प्रकाशन गृह ३६ जातियों और अल्प जातियों की भाषाओं में, जिनकी ज़ारकालीन रूस में अपनी लिपियां भी नहीं थीं, पुस्तकें प्रकाशित करते हैं।

जातीय साहित्यों के विकास के साथ-साथ एक-दूसरे के साहित्य को समृद्ध, सशक्त और प्रेरित करने की प्रक्रिया निरन्तर चल रही है। बच्चों के लिये अच्छी पुस्तक, वह चाहे किसी भी भाषा में क्यों न लिखी गयी हो, सभी की साझी उपलब्धि बन जाती है।

सोवियत बाल-साहित्य में विषयों और विधाओं की बहुत विविधता है। इस व्यापक पुस्तकालय में हम विभिन्न देशों के प्रतिष्ठित और आधुनिक लेखकों की रचनायें पा सकते हैं। इसमें हमें मिल सकता है गद्य-पद्य साहित्य, पत्रकारिता की पुस्तकें, ऐतिहासिक कहानियां, महान लोगों की जीवनी-माला और स्कूली बालकों के पोलीटेक्निकल, शारीरिक और सौन्दर्यबोध के विकास में सहायक होनेवाली पुस्तकें। विभिन्न साहित्यिक विधाओं की इन तरह-तरह की पुस्तकों के महाभण्डार का एक ही उद्देश्य है—नये मानव, का, मानवतावादी-अन्तर्राष्ट्रीयतावादी का शिक्षण, जो शान्ति और नेकी की भावनाओं की रक्षा करने में समर्थ हो।

देश की वर्तमान स्थिति को प्रतिबिम्बित और सोवियत लोगों के जीवन का मनोरंजक ढंग से वर्णन करनेवाली पुस्तकों की विषय-वस्तु अधिकाधिक विस्तृत और विविधतापूर्ण होती जाती है। लेखक अपनी रचनाओं में यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि कैसे समाज-कल्याण के लिये सृजनात्मक

श्रम में व्यक्ति अपनी सभी ख़ुशियों का स्रोत पाता है, कैसे जनता का श्रम दुनिया का कायाकल्प करता है।

सोवियत बाल-साहित्य नागरिकता की भावना पैदा करने के लिये बहुत कुछ कर रहा है। पिछले वर्षों में बालकों के लिये ऐतिहासिक साहित्य का विस्तार हुआ है। आधुनिक साहित्य की एक सब से महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है – लेनिन-सम्बन्धी पुस्तक-संग्रह। इनमें लेनिन के रिश्तेदारों और साथियों-मित्रों के संस्मरणों को विशेष स्थान प्राप्त है। ये पुस्तकें सोवियत संघ की सभी जातियों की भाषाओं में छापी जाती हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी पढ़ी जाती हैं।

बालकों और किशोरों के लिये पुस्तक-रचयिता लेनिन का स्वरूप प्रस्तुत करने, महान नेता के मानसिक जगत् की गहराई को उभारने और उनके समूचे वीरतापूर्ण जीवन के क्रान्तिकारी उत्साह को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। बालकों और तरुणों के लिये लेनिन-सम्बन्धी पुस्तकों की तैयारी में सभी जनतन्त्रों के प्रमुखतम और युवा लेखक हिस्सा लेते हैं।

सुबोध वैज्ञानिक साहित्य की रचना निश्चय ही सोवियत बाल-साहित्य की एक उपलब्धि है। लेखकों, विद्वानों-वैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों के सामूहिक प्रयासों से बहुखण्डीय "बाल-विश्वकोष" तैयार किया गया है। कल्पनाविहारी लेखक भी बच्चों के लिये बहुत-सी दिलचस्प पुस्तकें लिखते हैं।

कविता-संग्रहों, कला-सम्बन्धी पुस्तकों – देश के शानदार स्मारकों, प्रसिद्ध संग्रहालयों और चित्रशालाओं, महान अभिनेताओं और संगीतज्ञों के बारे में पुस्तकों के बहुत बड़े-बड़े संस्करण निकाले जाते हैं। कृतित्व की प्रकृति को तो "सौन्दर्य जगत् में" नामक पूरी पुस्तकमाला ही समर्पित है।

बाल-पाठक विभिन्न पुस्तकमालाओं में बहुत दिलचस्पी लेते हैं। स्कूलपूर्व के बालक बड़े चाव से "मेरी पहली पुस्तकें" पुस्तकमाला देखते हैं, "हम ख़ुद पढ़ते हैं" पुस्तकमाला पहली कक्षा के बालकों के लिये है, "जानो और करो" पुस्तकमाला मॉडल बनाने, निर्माण करने और पेड़-पौधों की देखभाल करने के प्रेमियों के लिये है, "स्कूली पुस्तकालय" और "महान लोगों का जीवन" पुस्तकमालायें सभी स्कूली छात्रों के लिये हैं, "अपने साथ शिविर में ले जाओ" पुस्तकमाला पायनियरों के लिये है, "रोमानी, रास्ते में पढ़ने के लिये", "तुम्हारे हमउम्र" पुस्तकमालायें युवा कम्युनिस्ट संघवालों के लिये हैं, "ऐतिहासिक-क्रान्तिकारी पुस्तकालय" पुस्तकमाला इतिहास-प्रेमियों के लिये है और इसी तरह अनेक विभिन्न और दिलचस्प प्रकाशन हैं।

हमारे देश में बालकों के लिये ३८ और किशोरों के लिये ३६ पत्रिकायें निकलती हैं, जिनकी वार्षिक प्रति-संख्या २८ करोड़ ७० लाख है। पायनियरों के २६ और युवा कम्युनिस्ट संघवालों के ११५ अखबार निकलते हैं, जिनकी कुल वार्षिक प्रति-संख्या ४ अरब ४० करोड़ है। नन्हे-मुन्नों के लिये "वेस्योलिये कार्तीनकी" (मजेदार चित्र) पत्रिका की १३ लाख प्रतियां छपती हैं। उक्रइनी पत्रिका "वार्वीनोक" उक्रइनी और रूसी भाषा में निकलती है। बाल-पाठकों के लिये "पायनियर", "कोस्त्योर" (अलाव) "उराल्स्की स्लेदोपीत" (उराल का पथ-अन्वेषक) – किशोरों के लिये, "बाल-प्राविधिक" "बाल-प्रकृतिप्रेमी" आदि पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं।

हमारे देश में बालकों के लिये पुस्तकालयों का एक विस्तृत जाल बिछा हुआ है। स्कूली पुस्तकालयों में ३२ करोड़ से अधिक किताबें हैं। ५ हजार विशेष बाल-पुस्तकालयों में किताबों की संख्या ११ करोड़ से अधिक है। इतना ही नहीं, वयस्कों के पुस्तकालयों का भी बालक विस्तृत उपयोग करते हैं। अधिकांश परिवारों में निजी पुस्तकालय भी हैं।

विराट "पुस्तक-राज्य" की पुस्तकों को जानने-समझने के लिये विशेषज्ञ तरह-तरह की सिफ़ारिशी सामग्री तैयार करते हैं। ऐसी सामग्री हर पुस्तकालय, हर स्कूल और हर कक्षा में होती है। बाल-पाठक पुस्तकों के चुनाव में हमेशा सहायता पा सकते हैं।

लेखक स्कूलों और पुस्तकालयों में अपने पाठकों से मिलने, उन्हें अपनी सृजन-योजनाओं और विचारों के बारे में बताने, पुस्तकों के सम्बन्ध में उनकी राय जानने और उनसे अपने ढंग के "सामाजिक आर्डर" लेने के लिये आते हैं। बाल-साहित्य का विविध और मनोरंजक ढंग से प्रचार किया जाता है। इसके लिये पाठक-सम्मेलन, वाद-विवाद, विचार-विमर्श, कविता-दिवस, पुस्तक-प्रदर्शनियां और पुस्तक-बाजार आयोजित किये जाते हैं तथा स्कूलों की वसन्तकालीन छुट्टियों में अखिल सोवियत संघीय पुस्तक-समारोह – "बाल-पुस्तक-सप्ताह" मनाया जाता है, जिसे बालक "पुस्तक-नामकरण समारोह" कहते हैं। पूरे शिक्षावर्ष में "बाल-पुस्तक-सप्ताह" की तैयारी की जाती है। साहित्य-समारोह, कलात्मक पाठ-प्रतियोगितायें, बालकों द्वारा पढ़ी गयी पुस्तकों की सामग्री पर आधारित बाल-ललितकला-कृतियों की प्रदर्शनियां, साहित्य-गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। बालक साहित्यिक कृतियों के नाट्य-रूपान्तर तैयार करते हैं, बाल-साहित्य की कृतियों पर आधारित

फिल्में देखते हैं, उन पर विचार-विनिमय करते हैं, अभिनेताओं और निर्देशकों से मिलते हैं। रेडियो और टेलीविजन वालकों के मनपसन्द लेखकों और चित्रकार-सज्जाकारों के बारे में कार्यक्रममाला प्रस्तुत करते हैं, वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के बारे में बताते हैं और ऐसे ही अन्य कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। यह समारोह मास्को के किसी बढ़िया हॉल जैसे कि स्तम्भ हॉल या चाइकोव्स्की हॉल में शुरू होता है और रेडियो तथा टेलीविजन द्वारा सारे देश में प्रसारित किया जाता है।

"बाल-पुस्तक-सप्ताह" के दौरान अपने ढंग का देशव्यापी पुस्तक-बाज़ार भी आयोजित किया जाता है। किताबों की सभी दुकानें, ढंग से सजे स्टॉल और सड़कों पर अस्थायी स्टॉल बाल-साहित्य बेचते हैं। प्रकाशन गृह पुस्तकों के सुन्दर उपहार-संस्करण और बड़ी संख्या में सस्ते संस्करण छापते हैं। दुकानों तथा स्टॉलों पर ही विशेषज्ञ यह सलाह देते हैं कि विभिन्न उम्रों के बालक क्या पढ़ें और नयी छपनेवाली किताबों के चन्दे लिये जाते हैं। लेखक और कवि बालकों से मिलने, स्मरणार्थ उन्हें अपने ऑटोग्राफ़ देने के लिये यहां आते हैं।

पुस्तक-सम्बन्धी कार्य के संगठन, बाल-पाठकों के हितों के अध्ययन के सिलसिले में मास्को का लेनिन नामक राजकीय पुस्तकालय, लेनिनग्राद का सल्तीकोव-श्चेद्रीन सार्वजनिक पुस्तकालय और सभी जनतन्त्रीय पुस्तकालय बहुत सहायता देते हैं। बाल-पुस्तक-भवन, बाल-साहित्य के अपने ढंग के प्रचार-केन्द्र तथा बाल-पाठक और उनकी आवश्यकताओं के अध्ययन-केन्द्र हैं। "बाल साहित्य" प्रकाशन गृह के अन्तर्गत मास्को और लेनिनग्राद में ऐसे दो बाल-पुस्तक-भवन छठे दशक में ही बना दिये गये थे और कुछ ही समय पहले जार्जिया की राजधानी त्बिलीसी और उक्रइना की राजधानी कीयेव में बाल-पुस्तक-भवनों का उद्‌घाटन हुआ। ये संस्थायें, जो एक तरह से प्रकाशन गृहों की प्रयोगशालायें हैं, बाल-साहित्य-प्रचार के वैज्ञानिक विधि-केन्द्र के रूप में स्कूलों तथा बाल-पुस्तकालयों में बहुत बड़ा काम करती हैं। बालकों के लिये पुस्तकें छापनेवाले प्रकाशन गृह बाल-पाठकों से यह अनुरोध करते हैं कि वे बाल-पुस्तक-भवन को पुस्तकों के प्रभाव, उनके बारे में अपने विचार और टिप्पणियां लिख भेजें। इन भवनों में सैकड़ों सम्मति-पत्र, आलोचना-पत्र और सुझाव-पत्र आते हैं, जो लेखकों और प्रकाशन गृहों, शिक्षकों तथा पुस्तकालय-कार्यकर्त्ताओं के लिये दिलचस्प सामग्री होते हैं।

बाल-थियेटर। सोवियत सत्ता के पहले ही सालों में हमारे देश में नये ढंग के थियेटर – बाल-थियेटर का जन्म हुआ। इस समय २ करोड़ से अधिक स्कूली बालक प्रतिवर्ष बाल और किशोर-थियेटरों में जाते हैं। लगभग इतने ही स्कूली छात्र वयस्कों के आम थियेटरों में बालकों के लिये विशेष तमाशे देखते हैं। अपूर्ण आंकड़ों के अनुसार बाल-थियेटरों के दर्शकों की वार्षिक संख्या ६ करोड़ ५० लाख से ७ करोड़ तक मानी जाती है। अगले कुछ सालों में नये थियेटरों के उद्घाटन के फलस्वरूप यह संख्या और भी बढ़ जायेगी। इसके अलावा कई करोड़ उन बालकों को भी ध्यान में रखना चाहिये, जो रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से थियेटर का परिचय पाते हैं। थियेटर बालकों के वैचारिक-सौन्दर्यबोधात्मक शिक्षण में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। वे अपने दर्शकों के साथ सामयिक समस्याओं पर गम्भीर और सारपूर्ण बातचीत करते हैं, रंगमंच पर आधुनिक जीवन का वास्तविक रूप और अतीत के वीरों को प्रस्तुत करते हैं, सौन्दर्यगत रुचियों का निर्माण करते हैं, कम्युनिस्ट नैतिकता तथा देशभक्ति और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की उच्च भावनाओं को दृढ़ बनाते हैं।

सोवियत संघ में इस समय किशोर-दर्शकों के २५ थियेटर और ५२ जन-थियेटर, ६२ बाल-थियेटर और ७६ कठपुतली थियेटर काम करते हैं।

प्रतिष्ठित साहित्यिक विरासत से छात्रों को परिचित कराने में भी थियेटर स्कूलों को बहुत बड़ी मदद देते हैं। थियेटरों में श्रेष्ठ नाटकों के प्रस्तुतीकरण की विशेष परम्परायें हैं। इन नाटकों को थियेटर में देखने के बाद इनके स्कूली अध्ययन में सहायता देने के लिये विशेष तरीके खोज लिये गये हैं। हर थियेटर अपने विशेष दृष्टिकोण के अनुसार नाटकों का चुनाव करता है। उदाहरणार्थ किशोरों का सरातोव थियेटर "पिछले युगों में युवा व्यक्ति का स्वरूप" विषय के अनुरूप श्रेष्ठ नाटकों को चुनता है। इस विषय के अन्तर्गत दोस्तोयेव्स्की के "अपमानित और अवमानित", शेक्सपीयर के "हैमलेट", आ० नि० ओस्त्रोव्स्की के "आमदनीवाली जगह" और चेखोव के "तीन बहनें" नाटकों को शृंखलाबद्ध किया गया है। मास्को के केन्द्रीय बाल-थियेटर की सूची में माध्यमिक स्कूल के पाठ्यक्रम की रचनाओं के अलावा गोगोल की "मृत आत्मायें", डिकेन्स का "ओलीवेर ट्विस्ट" और पुश्किन का "बोरीस गोदुनोव" भी शामिल हैं।

हमारे देश के सर्वश्रेष्ठ बाल-थियेटरों का अनुभव यह बताता है कि श्रेष्ठ नाटक बाल-दर्शकों की केवल ज्ञान-वृद्धि ही नहीं करते, बल्कि उनकी

भावनाओं, कल्पना और विचारों को भी अत्यधिक प्रभावित करते हैं, उनके आत्मिक जगत् को समृद्ध बनाते हैं, उनके नैतिक और सौन्दर्यबोधात्मक शिक्षण में सहायक होते हैं।

किशोर-किशोरियां ऐतिहासिक, क्रान्ति-सम्बन्धी और ऐसे नाटकों को बहुत दिलचस्पी से देखते हैं, जिन में उग्र सामयिक समस्यायें उठायी जाती हैं। इनमें वे अपने नायक, ऐसे आदर्श देख पाते हैं, जिनका अनुकरण-अनुसरण करने को तैयार होते हैं। बाल-थियेटरों के अपने नाटककार हैं।

छोटे बालक कठपुतली थियेटरों के दीवाने हैं। कठपुतलियों के तमाशों में बालक सोवियत संघ और सारी दुनिया के लोक-साहित्य-भण्डार से परिचित होते हैं। से० ओब्राज्त्सोव के निर्देशन में राजकीय कठपुतली थियेटर सभी कठपुतली थियेटरों के लिये अपने ढंग का कलात्मक-विधिगत केन्द्र है।

बाल-थियेटर स्कूल के साथ स्थायी सम्पर्क रखते हुए अपनी कार्रवाइयां करते हैं। प्रत्येक बाल-थियेटर में शिक्षाशास्त्रीय विभाग है, जहां विशेषज्ञ-शिक्षाशास्त्री काम करते हैं। वे विभिन्न उम्रों के छात्रों द्वारा नाटक को समझ पाने से सम्बन्धित विशेषताओं का अध्ययन करते हैं, स्कूल के बाहर थियेटरी काम के संगठन में मदद देते हैं। दूसरी ओर सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के लिए आयोजित नाटक-प्रदर्शन में स्कूली अध्यापक भी आमंत्रित होते हैं और बाद में विचार-विनिमय में भी भाग लेते हैं और इस तरह शिक्षाशास्त्र के कार्यभारों को ध्यान में रखते हुए नाटक का सही रूप खोजने में थियेटर को सहायता प्रदान करते हैं। बाल-थियेटरों के शिक्षाशास्त्री स्कूली थियेटर-व्याख्यान-मण्डल, क्लब, कलाकारों से साक्षात्कार आयोजित करने में हिस्सा लेते हैं, यानी स्कूल में थियेटरी कला के बीज-रोपन में सहायक होते हैं।

थियेटर सभी छात्रों को निकट लाता है। थियेटर जाना, उसके लिये तैयारी और नाटक देखने के बाद का सारा काम अध्यापक को तीव्रानुभूति और चिन्तन के क्षणों में अपने छात्रों के मानसिक जगत् में झांकने और नाटक द्वारा उठायी गयी समस्याओं पर सोच-विचार को सही दिशा में निर्देशित करने की सम्भावना देता है।

बाल-सिनेमा। सोवियत बाल-सिने-उद्योग सोवियत सत्ता से केवल एक साल छोटा है। १६१८ में पहली सोवियत बाल-फ़िल्म बनी, जिसने बड़े सृजनात्मक कार्य की नींव रखी। इस समय बालकों के लिये हर

साल लगभग १ करोड़ फ़िल्म-प्रदर्शन होते हैं और करोड़ों बालक इन्हें देखते हैं।

सिनेमा हमारे बालकों के लिये दुनिया को जानने का एक सब से महत्त्वपूर्ण साधन है। हर दिन १५ लाख से अधिक बालक कथा-फ़िल्में, इतिवृत्तात्मक, सुबोध वैज्ञानिक चलचित्र और कार्टून फ़िल्में देखते हैं। बालकों और किशोरों के लिये फ़िल्में तैयार करनेवाला संसार का एकमात्र फ़िल्म-स्टूडिओ मास्को में है। यह है गोर्की नामक केन्द्रीय स्टूडिओ। "सोयूज़मुल्टफ़िल्म" स्टूडियो और जनतन्त्रीय स्टूडिओ बालकों के लिये शानदार कार्टून फ़िल्में बनाते हैं। सारे सोवियत संघ और दुनिया भर में ख्याति पानेवाली बाल-फ़िल्में देश के प्रमुखतम सिने-स्टूडिओं "मोसफ़िल्म" और "लेनफ़िल्म" में ही नहीं, बल्कि जातीय स्टूडिओ में भी तैयार होती हैं।

"श्कोलफ़िल्म" नाम का विशेष फ़िल्म-निर्माण-संगठन स्कूल के विभिन्न पाठ्य-विषयों के पाठों में दिखाने के लिये फ़िल्में बनाता है। अब लगभग सभी माध्यमिक स्कूलों और आधे से अधिक आठवर्षीय स्कूलों में फ़िल्में दिखाने की पूरी व्यवस्था है। इस तरह सिनेमा का शिक्षा, पायनियर सभाओं, स्कूली समारोहों और मण्डलों के कार्य में उपयोग किया जा सकता है।

अनेक बाल-सिनेमाघरों में स्कूलों के साथ मिलकर सिने-कलाप्रेमियों के क्लब और सिने-व्याख्यान-केन्द्र स्थापित किये जाते हैं। अध्यापकों, पायनियर मुखियाओं, माता-पिताओं तथा सांस्कृतिक कार्यकर्त्ताओं के निर्देशन में पायनियर और छात्र फ़िल्मों के चुनाव में हिस्सा लेते हैं, फ़िल्मों के बारे में विचार-विनिमय और वाद-विवाद आयोजित करते हैं, सिने-पत्र निकालते हैं, सिने-साज़सामान का अध्ययन करते हैं और फ़िल्में खींचते हैं।

बालकों के लिये फ़िल्में बनानेवाले, शिक्षक, गैरस्कूली बाल-संस्थाओं के कार्यकर्त्ता और सर्वप्रथम तो विशेष बाल-सिनेमाघर बहुत ध्यान से बाल-दर्शकों की इच्छाओं, मांगों, चलचित्रों के उनके मूल्यांकन का अध्ययन करते हैं, फ़िल्मों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया की ओर ध्यान देते हैं। यह सारा जटिल काम इसलिये किया जाता है कि हर नयी फ़िल्म बाल-दर्शकों को न केवल नई जानकारी ही दे, बल्कि उनमें श्रेष्ठ मानवीय भावनाओं को जागृत करे, उज्ज्वल भविष्य और मानव के सुख-सौभाग्य के नाम पर वीरतापूर्ण कारनामों के लिये उनका आह्वान करे।

सोवियत देश के बाल-दर्शकों के लिये न तो ऐसी फ़िल्में हैं और न हो ही सकती हैं, जो जातीय शत्रुता की आग भड़कायें, प्रतिशोधवाद, सैन्यवाद का प्रचार करें, मानवतावाद-विरोधी सिद्धान्तों की घोषणा करें। बालकों और किशोरों की सोवियत फ़िल्में अपने उच्च कलात्मक गुणों, क्रान्तिकारी मानवतावाद और जीवन की समृद्धता तथा विविधता को सही तौर पर प्रस्तुत करने के लिये अनेक बार अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार पा चुकी हैं।

बालकों के लिये रेडियो और टेलीविजन। बालकों, किशोरों और तरुणों के लिये हर दिन दसियों रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। मास्को का केन्द्रीय रेडियो स्टेशन, जनतन्त्रीय, इलाक़ाई और प्रादेशिक रेडियो-केन्द्र सोवियत संघ की ६० जातियों की भाषाओं में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

विषयों और विधाओं की विविधता बालकों और किशोरों के कार्यक्रमों का विशेष लक्षण है। वार्तायें और टीकायें, रेडियो साक्षात्कार और समीक्षायें, शब्द-चित्र तथा रेडियो रूपान्तर, रेडियो पत्रिकायें और संगीत-कार्यक्रम आदि प्रसारित किये जाते हैं।

रेडियो तो बचपन से ही अच्छा संगी बन जाता है और लगभग हर घर में अपना स्थान बना लेता है। वह बाल-श्रोताओं को बड़ी पीढ़ियों के जीवन और उनके संघर्ष, कम्युनिज्म के निर्माण और इस बारे में बताता है कि सारी दुनिया के मेहनतकश कैसे रहते-सहते तथा संघर्ष करते हैं, रेडियो स्वयं बालकों के जीवन की चर्चा करता है, नयी पुस्तकों और नयी खोजों, विज्ञान और प्रविधि की उपलब्धियों, खिलाड़ियों की सफलताओं आदि की जानकारी कराता है।

कितने ही सालों से स्कूल जाने के पूर्व बालक अपना विशेष कार्यक्रम "पायनियरों की उषा" सुनते हैं। यह स्कूल के जीवन, पायनियर-दलों, दस्तों और टोलियों तथा विदेशी मित्रों से सम्बन्धित कार्यक्रम होता है। प्रारम्भिक कक्षाओं के बालकों के लिये हर सप्ताह "नन्हा सितारा" कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिये पूरी कार्यक्रममाला "हमउम्र" है, जिसके अन्तर्गत कई दिलचस्प शीर्षक हैं जैसे कि "प्रसिद्ध लोग"—जिस में विभिन्न पेशों के ऐसे लोगों के बारे में बताया जाता है, जिनके जीवन किशोरों के लिये उदाहरण बन सकते हैं;

"अपरिचित युवाजन, नमस्ते!" – यह कार्यक्रम खुद उच्च कक्षाओं वाले छात्रों के सम्बन्ध में है, आदि। जिज्ञासु बाल-रेडियो-श्रोताओं के लिये "अगर अपने इर्दगिर्द देखें", "पितृभूमि के भण्डार" आदि कार्यक्रम हैं।

रेडियो कार्यक्रमों में साहित्य और कला की समस्याओं की ओर, विशेषत: "साहित्यिक दिशा-निर्देशक", बालकों के लिये रेडियो-थियेटर तथा विभिन्न संगीतात्मक-साहित्यिक कार्यक्रमों में बहुत ध्यान दिया जाता है। बाल-श्रोता संगीत कार्यक्रमों को बहुत दिलचस्पी से सुनते हैं। ५ वीं-१० वीं कक्षाओं के छात्रों के लिये, जो स्कूली विषयों के बारे में अपनी जानकारी अधिक विस्तृत करना चाहते हैं, "ज्ञान" नामक विशेष कार्यक्रममाला है। अखिल सोवियत संघीय रेडियो के बाल-विभाग के रेकार्ड-संग्रहालय में व्ला० इ० लेनिन और उनके साथियों के बहुत ही दिलचस्प रेकार्ड संग्रहीत हैं। इस अमूल्य निधि को "युवा लेनिनवादियों के नाम" तथा रेडियो इतिवृत्तात्मक कार्यक्रम "व्ला० इ० लेनिन की जीवनी" में स्थान दिया जाता है।

जनसाधारण तक पहुंचने की दृष्टि से टेलीविजन अब रेडियो की बराबरी कर सकता है। टेलीविजन की बहुत बड़ी सम्भावनायें हैं और वह अधिकाधिक लोकप्रियता प्राप्त करता जाता है। सोवियत टेलीविजन के लगभग १५० केन्द्र हैं और पुनर्प्रसारण-केन्द्रों सहित ४५० से अधिक। कई चेनलों पर एकसाथ कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। हर कार्यक्रम बालकों और किशोरों की रुचियों को ध्यान में रखता है। बालकों के लिये क्रमबद्ध कार्यक्रम तैयार किये जाते हैं, जो विशेष कार्यक्रमों या कार्यक्रममाला का रूप लेते हैं। उदारहरणार्थ किशोरों के लिये "किसे जीवन-आदर्श बनाया जाये", "दूर की हवायें", "पेशे की रंगीनी", छोटे बालकों के लिये "पुस्तक-ताक" "अलार्म घड़ी"; स्कूलपूर्व के बालकों के लिये "कुशल हाथ", "दो दोस्तों की सौ दिलचस्पियां" और "शुभरात्रि, बच्चो"। अनेक कार्यक्रम, विशेषत: संगीत और नाटक आदि किशोरों और वयस्कों के लिये समान रूप से होते हैं।

टेलीविजन का तीसरा कार्यक्रम, तथाकथित शिक्षा-कार्यक्रम पूरी तरह स्कूली छात्रों और प्राविधिक विद्यालयों तथा उच्च शिक्षा-संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिये है। यह कार्यक्रम पाठों के समय और शाम को ऐसे समय भी प्रसारित किया जाता है, जब पाठ नहीं होते। स्कूलों में पाठ्यक्रम के

अतिरिक्त ऐच्छिक विषयों की पढ़ाई शुरू होने के फलस्वरूप सन्ध्याकालीन कार्यक्रम का विशेष महत्त्व हो गया है।

कलाकारों के संघ बालकों के सौन्दर्यबोधात्मक शिक्षण में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के अन्तर्गत सौन्दर्यबोधात्मक शिक्षण की परिषद बनाई गई है, जिसमें संस्कृति और विज्ञान के कार्यकर्त्ता, विधि-विशेषज्ञ और अध्यापक शामिल हैं। इस कार्य में सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के सदस्य, स्वरकार द्मीत्री कोवालेव्स्की, लेखक सेर्गेइ मिख़ाल्कोव और कला तथा संस्कृति के अन्य बहुत-से कार्यकर्त्ता सक्रिय भाग लेते हैं।

• • •

सोवियत लोगों की इस बात में बहुत गहरी दिलचस्पी है कि नयी पीढ़ी स्वस्थ और शारीरिक दृष्टि से मजबूत हो। स्कूल की सभी कक्षाओं में व्यायाम के पाठ होते हैं, सुबह की कसरत कराई जाती है और कमजोर बालक चिकित्सीय व्यायाम करते हैं। इसके अलावा लगभग २ करोड़ बालक विभिन्न खेलकूद-विभागों में हिस्सा लेते हैं। लम्बी पद-यात्राओं, खेलों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। स्कूलों के खेलकूद-मण्डलों और विभागों में अनेक चैम्पियनों और विशारदों ने अपना मार्ग आरम्भ किया और स्कूल की समाप्ति के प्रमाणपत्रों के साथ-साथ दौड़-मार्गों और व्यायाम-हॉलों, टेनिस कोर्टों और साइकल के दौड़-मार्गों पर ख्याति प्राप्त की। किन्तु स्कूल का मुख्य कार्यभार यह नहीं है। वह खेलकूद को जन-प्रिय बनाने, सभी बालकों और युवाजन के व्यायाम-शिक्षण का स्तर ऊंचा उठाने का प्रयास करता है।

स्कूल के अतिरिक्त क्लबों और गैरस्कूली बाल-संस्थाओं के बहुसंख्यक खेलकूद विभाग बालकों के व्यायाम-शिक्षण में लगे हुए हैं। बाल-खेलकूद के स्कूलों का विकसित जाल ३० से अधिक प्रकारों के खेलकूद में रुचि लेनेवाले ७ लाख ७० हज़ार बालकों को सूत्रबद्ध करता है। स्कूली बालकों के खेल-कूद-केन्द्रों का विस्तृत निर्माण हो रहा है। सोवियत संघ के स्कूलों में ६.७ हज़ार से अधिक वालीबॉल के मैदान, ५१.७ हज़ार बास्कटबॉल के मैदान, ५६७ टेनिस कोर्ट, १६.३ हज़ार व्यायाम-हॉल, १३.६ हज़ार बहु-खेलकूद मैदान, १४४ तालाब और ५६०५ स्केटिंग

रिंक हैं। लगभग ३ हजार बाल-खेलकूद स्कूल काम कर रहे हैं। स्कीइंग, दौड़-कूद, व्यायाम और बास्कटबॉल अधिक लोकप्रिय हैं।

प्रतियोगिता तो खेलकूद का अभिन्न अंग है ही। जाहिर है कि प्रतियोगिताओं से न केवल परिणाम ही निकाले जाते हैं, बल्कि हज़ारों नये बालक भी खेलकूद की ओर आकर्षित होते हैं। संघीय जनतन्त्रों के शिक्षा-मन्त्रालय क्षेत्रीय और जनतन्त्रीय प्रतियोगितायें आयोजित करते हैं, जिनके पहले स्कूलों, हलकों, नगरों, प्रदेशों और इलाक़ों की प्रतियोगितायें होती हैं। १९५५ के ९वें अखिल सोवियत संघीय खेलकूद-समारोह की तैयारी में १ करोड़ ६० लाख और १९६७ के १० वें समारोह में लगभग २ करोड़ बालकों ने हिस्सा लिया। १९५४ से सभी जगह पायनियरों और स्कूली छात्रों के गर्मियों और जाड़ों के खेलकूद होते हैं। अखिल सोवियत संघीय सैनिक खेल "गढ़ी पर धावा", "कौंध", तथा "पायनियर प्राव्दा" समाचारपत्र और "सुनहरा गेंद" तथा "चमड़े का बॉल" प्रतियोगितायें बालकों में बहुत लोकप्रिय हैं।

विख्यात खिलाड़ियों द्वारा स्कूलों को सहायता देने की परम्परा बन गयी है। अखिल सोवियत संघीय पायनियर दलों के प्रदर्शन में, जब प्रत्येक पायनियर संगठन अपनी सफलताओं की रिपोर्ट पेश करता है, "पांच चक्रों का समारोह" नामक खेलकूद-प्रतियोगिता अवश्य ही शामिल की जाती है। कार्यक्रम में पायनियरों के हल्के अथ्लेटिक्स की टेट्रथॉन-प्रतियोगिताओं, खेलों, स्कीइंग के "पायनियर प्राव्दा" पुरस्कार की प्रतियोगिता, स्केटिंग की "ओलिम्पिक हिमकण" और खेलकूद की 'ओलिम्पिक बसन्त" प्रतियोगिता को स्थान दिया जाता है।

संगठित पर्यटन स्कूली छात्रों में बहुत लोकप्रिय है। स्कूल लम्बे-लम्बे अभियान आयोजित करते हैं और अनेक के अपने पर्यटन-शिविर हैं। ऐसे स्कूलों और कक्षाओं की संख्या हर साल बढ़ती जाती है, जो नियमित रूप से पर्यटन के लिये जाते हैं। रूसी संघ में ५-१० वीं कक्षाओं के लगभग आधे छात्र देश की सैरों और अभियानों में हिस्सा लेते हैं।

बालक के जीवन, उसके चरित्र-निर्माण में घर और आस-पास का वातावरण बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसलिये स्कूल और सार्वजनिक हलक़े मुहल्लों में बालकों की ओर बहुत ध्यान देते हैं।

भवन-प्रबन्ध-कार्यालयों और भवन-समितियों के अन्तर्गत बालकों और युवाजन के फ़ुरसत के वक़्त के सदुपयोग और मनोरंजन-व्यवस्था, बाल क्लब

ग्रौर मैदान, घर ग्रौर सड़क की खेलकूद-टोलियां तथा क्लब ग्रायोजित करने के लिये सहयोग-ग्रायोग ग्रौर युवा कम्युनिस्ट संघवालों ग्रौर युवाजनों के केन्द्र स्थापित किये गये हैं। खेलकूद के मैदानों को साजसामान से लैस किया जाता है, गली-मुहल्ले की खेलकूद-टोलियों के बीच तरह-तरह की प्रतियोगितायें ग्रायोजित की जाती हैं।

गोर्की प्रदेश में ट्रेड यूनियनों, युवा कम्युनिस्ट संघवालों ग्रौर स्कूलों के सामूहिक प्रयासों से मुहल्लों में बड़ा शिक्षण-कार्य किया गया है। इस समय ख़ुद बालकों ग्रौर भवनवासियों की प्रेरणा से ही ६०० स्केटिंग रिंक ग्रौर हॉकी के लगभग ४०० मैदान बनाये जा चुके हैं। भवन-प्रबन्ध-कार्यालयों के ग्रन्तर्गत ३३० क्लब काम कर रहे हैं। गोर्की नगर में "हमारे मुहल्ले का समारोह", खेलकूद-प्रतियोगितायें, गर्मी ग्रौर रूसी जाड़े के समारोह, तरह-तरह की चौकी-दर-चौकी दौड़ें ग्रौर ग्रन्य मनोरंजन, पर्यटन-समारोह ग्रौर पद-यात्रायें परम्पराग्रों का रूप ले चुकी हैं। ट्रेड यूनियनों के खेलकूद समाजों ग्रौर युवा कम्युनिस्ट संघवालों द्वारा मिलकर प्रतिवर्ष ग्रायोजित की जानेवाली मुहल्ला-टीमों की नगर-प्रतियोगिता में फूटबाल, वालीबॉल ग्रौर हॉकी की ७५० से ग्रधिक टीमें हिस्सा लेती हैं।

गर्मियों में जब युवाजन के खेलकूद ग्रौर पर्यटन-केन्द्रों में नगर के बाहर तथा नगर में पायनियर शिविर संगठित किये जाते हैं, तो सार्वजनिक हलक़े विशेष रूप से बहुत मदद देते हैं। हमारे देश के ग्रत्यधिक मनोरम स्थलों पर केवल ट्रेड यूनियनों ने लगभग ८ हजार पायनियर शिविर बनाये हैं, जिन में लगभग ६० लाख बालक हर साल ग्राराम करते हैं। गर्मियों में बच्चों के साथ काम करने के लिये कारख़ाने, सामूहिक फ़ार्म ग्रौर कार्यालय पायनियर मुखियाग्रों, गर्मी के काम के संगठनकर्त्ताग्रों, पद-यात्राग्रों ग्रौर ग्रभियानों के संचालकों की व्यवस्था करते हैं।

• • •

सामूचे शिक्षण-कार्य से सोवियत देश के हर युवा नागरिक को समाज के जीवन, सार्वजनिक संगठनों ग्रौर स्वशासन निकायों की कार्रवाइयों में सक्रिय भाग लेने के लिये तैयार किया जाता है। बालक के स्कूल में जाने के फ़ौरन बाद ही यह तैयारी शुरू हो जाती है। शिक्षा का उद्देश्य सभी तरह से बौद्धिक विकास करना ग्रौर बच्चों में सामूहिक व्यावहारिक कार्रवाई

में भाग लेने की इच्छा पैदा करना है। समाजवादी समाज के भावी नागरिक को भावी जीवन के लिये तैयार करने के ऐसे ही मुख्य ध्येय हैं।

बालकों और युवाजन में नागरिक सुलभ क्रियाशीलता, सामूहिक भावना, सोवियत मानव के नैतिक गुण और सार्वजनिक लाभ के लिये काम करने की तत्परता की शिक्षा देने की दृष्टि से लेनिन नामक पायनियर संगठन और युवा कम्युनिस्ट संघ बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। २ करोड़ ३० लाख बालक और किशोर पायनियर संगठन में सूत्रबद्ध हैं। लगभग ६० लाख स्कूली छात्र युवा कम्युनिस्ट संघ में हैं।

छात्रों के आपसी सम्बन्ध – ये सोवियत स्कूली बालकों के व्यक्तित्व के नैतिक विकास का सब से महत्त्वपूर्ण कारक हैं। वे सच्चे साथीपन, आपसी सहायता, सुसंगठन, अनुशासन और मधुर सम्बन्धों की शिक्षा देते हैं। बाल-संगठन बाल-व्यक्तित्व को एकरूप नहीं कर देता, जैसा कि कुछ पूंजीवादी शिक्षाशास्त्री सिद्ध करने की कोशिश करते हैं, बल्कि हर बालक का सर्वतोमुखी विकास सुनिश्चित करता है। पायनियर दस्तों और युवा कम्युनिस्ट संघ के दलों, क्लबों, स्कूली समाजों, मण्डलों और खेलकूद के विभागों में इस कार्यभार को पूरा किया जाता है। छात्र के व्यक्तित्व में अच्छे गुण पैदा करने की दृष्टि से मुहल्ले में रहनेवाले साथी-समूह की भूमिका भी कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं होती।

बालकों और तरुणों में सोवियत देशभक्ति की भावना, पितृभूमि के सम्मुख पुत्र के कर्तव्य की चेतना पैदा करने की ओर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। स्कूल, ग़ैरस्कूली बाल-संस्थायें, युवा कम्युनिस्ट संघ और सार्वजनिक संगठन उन्हें कम्युनिज्म के निर्माण में सोवियत संघ की उपलब्धियों और सोवियत जनता तथा कम्युनिस्ट पार्टी के क्रान्तिकारी, श्रम और युद्ध-सम्बन्धी कारनामों का विस्तृत परिचय देते हैं। सोवियत देश जब अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाने की तैयारी कर रहा था, उस समय जनता के क्रान्तिकारी, सैनिक और श्रम-सम्बन्धी यश-स्थानों के अखिल सोवियत संघीय कूच के रूप में मातृभूमि के इतिहास और अपने बुजुर्गों के वीरतापूर्ण कारनामों में युवाजन की दिलचस्पी प्रकट हुई। इस कूच में १ करोड़ से अधिक किशोर-किशोरियों ने हिस्सा लिया, जिन में से आधे स्कूली छात्र-छात्रायें थे। किशोर यात्रियों ने बहुत ही बढ़िया सामग्री इकट्ठी की, जिसके आधार पर जनता के सैनिक और श्रम-सम्बन्धी यश के स्कूली संग्रहालय बनाये गये हैं। कूच में भाग लेनेवालों ने उन मार्गों की यात्रा की, जहां

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के मोर्चे लड़े गये थे। उन्होंने वहां स्मारक, स्मारकशिलायें और स्मारकफलक स्थापित किये, वन और पार्क लगाये। उनके प्रयासों के फलस्वरूप युद्ध के अनेक अज्ञात वीरों के नाम प्रकाश में आये।

१६७० में युवा कम्युनिस्ट संघवालों तथा युवाजन का दूसरा कूच व्ला० इ० लेनिन के जन्म की शतीपूर्त्ति को समर्पित किया गया। किशोर-किशोरियां लेनिन के जीवन से सम्बन्धित स्थानों पर गये। उन्होंने देखा कि कैसे सभी जगह लेनिन के आदेशों को अमली शक्ल दी जा रही है और कारखानों, निर्माणस्थलों, सामूहिक फ़ार्मों, राजकीय फ़ार्मों के कार्यकर्त्ताओं तथा उन लोगों की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त की, जो श्रम या समर-क्षेत्र में कोई बड़ा कारनामा करने के फलस्वरूप लेनिन पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं।

सोवियत समाज का क़ानून, जिसकी सोवियत संघ के संविधान और कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में पुष्टि की गयी है, यह मांग करता है कि सोवियत बालकों और युवाजन को देशभक्त-अन्तर्राष्ट्रीयतावादी होने की शिक्षा दी जाये। सोवियत संघ बहुजातीय देश है। इस में एक सौ से अधिक समानाधिकारी जातियां और अल्प जातियां रहती हैं।

पूरे शिक्षा-काल में स्कूली छात्रों में मानव के प्रति मानवतापूर्ण रवैये, जातीय रीति-रिवाजों के सम्मान और सभी तरह के भेदभाव के प्रति असहिष्णुता की भावना का विकास किया जाता है। सोवियत देश के भावी नागरिक सभी जातियों के साथ मैत्री के वातावरण में बड़े होते हैं, उन्हें अन्य देशों के मेहनतकशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता की उच्च भावनाओं और शान्ति के विचारों के प्रति निष्ठावान रहने की शिक्षा दी जाती है।

समारोह, जनतन्त्रों की यात्रायें, प्रदर्शनियों के विनिमय, जनतन्त्रों के बीच और अखिल सोवियत संघीय खेलकूद-प्रतियोगितायें अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की शिक्षा में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिकायें अदा करती हैं। स्कूलों और ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं में अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री के क्लब बनाये गये हैं। यहां बालकों को दूसरी जातियों के जीवन, इतिहास, संस्कृति और कला से परिचित कराने के लिये विविध कार्य किये जाते हैं।

बालकों को विदेशों के मेहनतकशों के जीवन का परिचय देने के लिये भी बहुत कुछ किया जाता है। इस ध्येय की पूर्त्ति के लिये विदेशों की यात्रा कर आनेवाले लोगों के साथ भेंटों की व्यवस्था की जाती है, अन्तर्रा-

ष्ट्रीय प्रदर्शनियां दिखाई जाती हैं। अनेक स्कूलों के छात्र फ़्रांस, इंगलैंड और अन्य देशों के छात्रों के साथ पत्र-व्यवहार करते हैं। भ्रातृत्वपूर्ण समाजवादी देशों के बालकों के साथ तो सोवियत छात्रों के ख़ास तौर पर बहुत ही विस्तृत और विविध सम्बन्ध हैं।

सोवियत पायनियर और स्कूली छात्र अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध आत्मबलिदानी संघर्ष कर रही वीर वियतनामी जनता को सहायता देने के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते हैं। १९६७ के वसन्त में लेनिन नामक अखिल सोवियत संघीय पायनियर संगठन की केन्द्रीय परिषद ने मास्को, कीयेव, स्वेर्दलोव्स्क, इवानोवो नगरों के पायनियरों और पायनियर शिविर "आर्तेक" की पहलक़दमी और सोवियत संघ के सभी पायनियरों से उनके इस आह्वान का समर्थन किया कि वे स्कूली चीज़ों से भरे हुए दो जहाज़ वियतनाम भेजें। देश के हर पायनियर दल ने दूर-दराज़ के मित्रों के लिये अपना उपहार तैयार किया। प्रेस, रेडियो और टेलीविज़न बालकों को "सोवियत संघ के पायनियरों की ओर से वियतनाम को" आन्दोलन की विस्तृत जानकारी देते रहे। अखिल सोवियत संघीय पायनियर संगठन के जन्म-दिवस, १९ मई १९६८ को, व्लादीवोस्तोक और नोवोरोस्सीय्स्क से दो जहाज़ पायनियरों के उपहार लेकर वियतनाम की ओर रवाना हो गये।

स्कूलों और पायनियर शिविरों में आक्रमण के विरुद्ध और अपनी स्वतन्त्रता तथा स्वाधीनता के लिये संघर्षरत राष्ट्रों के साथ एकजुटता के दिन मनाये जाते हैं।

बाल-संगठनों की पहलक़दमी पर दुनिया के अनेक देशों के छात्र सोवियत संघ आते हैं। क्रीमिया के दक्षिणी तट पर स्थित अखिल सोवियत संघीय पायनियर शिविर "आर्तेक" में सोवियत बालकों के अतिरिक्त हर साल संसार के ५० से अधिक देशों के बालक आराम करते हैं।

सोवियत देश का पायनियर संगठन ८० देशों के बालकों के साथ सम्पर्क बनाये हुए है। "मेरा देश – मेरा घर" नामक अन्तर्राष्ट्रीय बाल-चित्र-प्रदर्शनियां, बाल-छायाचित्र प्रदर्शनियां, बाल-समाचारपत्रों के पुरस्कारों के लिये हॉकी, फ़ुटबाल और हल्के अथ्लेटिक्स की टीमों की परम्परागत प्रतियोगितायें करोड़ों बालकों में लोकप्रिय हो चुकी हैं।

व० इ० लुबोव्स्की

विशेष शिक्षा*

सोवियत नागरिकों के जीवन और श्रम की स्थितियों को बेहतर बनाने, रोगों की रोक-थाम के विराट कार्य सहित स्वास्थ्य-रक्षा-प्रणाली के विकास-सम्बन्धी सोवियत राज्य की कारंवाइयों से अनेक ऐसे कारण दूर कर दिये गये हैं, जो बालकों के विकास में बाधा डालते हैं। इस सिलसिले में जच्चा-बच्चे की रक्षा, नारी-श्रम की रक्षा, नारियों के लिये चिकित्सीय परामर्श-केन्द्रों की व्यवस्था, गर्भ के अन्तिम दो महीनों और शिशु-जन्म के बाद के दो महीनों की सवेतन छुट्टी, बाल-पोलीक्लीनिक, जो शिशु के जन्म के पहले दिनों से उनकी देखभाल करते हैं, आदि कार्यों का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। बाल-रक्षा-संस्थाओं के विशद कार्य पर प्रकाश डालने के लिये केवल एक आंकड़े का ज़िक्र करना ही काफ़ी होगा – जीवन के पहले वर्ष में १६ विभिन्न चिकित्सा-विशेषज्ञ शिशु की जांच करते हैं। रोक-थाम और चिकित्सा के इन सारे क़दमों का नतीजा यह है कि सोवियत संघ

---

*इस लेख की तैयारी में अ० प० गोज़ोवा, त० न० गोलोविना, ये० न० मार्त्सीनोव्स्काया और त० व० रोज़ानोवा ने भाग लिया है ।

में बच्चे कई ऐसे रोगों से बचे रहते हैं, जो अभी भी अत्यधिक विकसित पूंजीवादी देशों तक में बच्चों के विकास-सम्बन्धी दोष पैदा कर देते हैं। उदाहरण के लिये बहुत सालों से गर्भवतियों को ख़सरे (rubella) से बचाया जा रहा है, जिस के परिणामस्वरूप बहरे बच्चे पैदा होते हैं या उनमें कुछ अन्य दोष हो जाते हैं।

औषधियों की अच्छी जांच के फलस्वरूप सोवियत देश में बालकों के विकास में उस तरह के दोष बिल्कुल नहीं पाये जाते, जैसे कि, मिसाल के तौर पर, सं० रा० अमरीका और यूरोप के अन्य पूंजीवादी देशों में थैलीडोमाइड के उपयोग से सामने आये।

इस समय सोवियत संघ में बालकों के शारीरिक विकास-सम्बन्धी सभी दोषों का प्रतिशत दुनिया के अन्य देशों की तुलना में न्यूनतम है। मगर अभी ऐसे कुछ कारणों को पूरी तरह दूर नहीं किया जा सकता, जो बालक के सामान्य विकास में बाधा डालते हैं। ऐसे कारणों में प्रसूति-संबन्धी विरूपण, गर्भ के समय मां की कुछ बीमारियां और छुटपन में बालक की बहुत सख़्त बीमारी, मां-बाप से प्राप्त होनेवाले विकास-सम्बन्धी दोष आदि शामिल हैं। ये सभी कारण ऐसी विशेष परिस्थितियां पैदा करने की मांग करते हैं, जिन में ऐसे बालकों का पालन-शिक्षण सुनिश्चित हो सके, यानी विशेष शिक्षा की व्यवस्था की जाये।

सोवियत संघ में शारीरिक और मानसिक दोषवाले बालकों की शिक्षा एकीकृत राजकीय जन-शिक्षा-प्रणाली का ही अंग है। महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के कुछ समय बाद ही राज्य ने दोषवाले बालकों की संस्थाओं (जो अधिकतर निजी और ख़ैराती थीं) का बोझ अपने ऊपर ले लिया और उन्हें जन-शिक्षा-मन्त्रालय के अधीन कर दिया।

जन-कमिसार-परिषद के १० दिसम्बर, १६१६ के आदेश ने, जिस पर लेनिन के हस्ताक्षर थे, दोषवाले बालकों के शिक्षण और स्वास्थ्य-रक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न जन-कमिसारियतों के कार्य तय किये। इस आदेश के अनुसार मानसिक रूप से कम विकसित बालकों का तथाकथित सहायक स्कूलों में शिक्षण होता है और अंधे, बहरे तथा शारीरिक दोषवाले बालकों को शिक्षा की जन-कमिसारियत के तदनुरूप विद्यालयों में शिक्षा दी जाती है। स्नायविक और मानसिक रोगोंवाले बालकों को आरोग्यसदन के ढंग के स्कूलों और अस्पताली क़िस्म के स्कूलों में शिक्षा दी जाती है।

बहुत ही कम विकास वाले बालकों की शिक्षा का कार्य सामाजिक सुरक्षा की जन-कमिसारियत की संस्थाओं को सौंपा गया। बाद में दोषवाले बालकों के पालन-शिक्षण की एकीकृत प्रणाली बनाई गयी। विशेष संस्थाओं का जाल निरन्तर विस्तृत होता गया।

१६३१ में रूसी संघात्मक जनतन्त्र की शिक्षा की जन-कमिसारियत ने "शारीरिक दोषों, मानसिक रूप से कम विकसित और वाग्दोषोंवाले बालकों और किशोरों को सर्वसामान्य प्रारम्भिक शिक्षा देने" का आदेश दिया। सभी दोषवाले बालकों को शिक्षा देने के काम में अंधों के अखिल रूसी समाज और गूंगे-बहरों के अखिल रूसी समाज समेत अन्य सार्वजनिक संगठनों ने बहुत हिस्सा लिया।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के आरम्भ होने के पहले शारीरिक और मानसिक दोषवाले सभी बालकों को शिक्षा देने का काम अनेक बड़े नगरों में पूरी तरह सम्पन्न हो चुका था और अनेक प्रदेशों तथा इलाक़ों के केन्द्रों में भी पूरा होनेवाला था।

इस समय अंधे और बहुत कमजोर नजरवाले बालक १२ साल में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। बहरे और बहुत कम सुननेवाले बालकों के स्कूल के दूसरे वर्ग के अन्तर्गत आनेवाले लगभग बहरे बालक इसी अवधि में अपूर्ण माध्यमिक शिक्षा पूरी करते हैं, जबकि पहले वर्ग के अपेक्षाकृत कम बहरे बालक १२ साल में सामान्य बालकों के दसवर्षीय माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई ख़त्म कर लेते हैं।

काम करनेवाले वयस्क अन्धों, बहुत कमजोर नजरवालों, बहरों और बहुत कम सुननेवालों के लिये विशेष सन्ध्याकालीन माध्यमिक स्कूल संगठित किये जा चुके हैं।

सहायक स्कूलों (मानसिक रूप से कम विकसित बालकों के लिये) में ८ वर्ष की शिक्षा-व्यवस्था है। वे प्रारम्भिक शिक्षा की मूलभूत जानकारी देते हैं और ऐसे करते समय छात्रों को श्रम के लिये तैयार करने की ओर विशेष ध्यान देते हैं।

पांचवें दशक के अन्त में वाग्दोषोंवाले बालकों की सहायता के लिये आम माध्यमिक स्कूलों के अन्तर्गत वाक्-चिकित्सा-कक्ष स्थापित किये गये, मगर १९६२ से गम्भीर वाग्दोषोंवाले बालकों के लिये विशेष स्कूल स्थापित किये जाने लगे।

टांगों-बांहों के जन्मजात स्नायविक दोषवाले बालकों के लिये भी माध्य-

मिक स्कूल क़ायम किये जा चुके हैं। अंधे-गूंगे-बहरों के लिये भी एक विशेष संस्था विद्यमान है।

पिछले वर्षों में बहरे और कम सुननेवाले, अंधे और मानसिक रूप से कम विकसित, तथा इसी तरह वाग्दोषोंवाले बालकों के लिये स्कूलपूर्व की संस्थाओं का सफल विकास हो रहा है।

सातवें वर्ष में, स्कूल जाने की तैयारी के समय हलक़ा-पोलीक्लीनिक के चिकित्सा-विशेषज्ञ बालकों की सर्वतोमुखी जांच करते हैं। ऐसी जांच स्कूल में दाख़िल होने की अनिवार्य शर्त होती है। यदि किसी बालक में दृष्टि, श्रवण या वाक्-सम्बन्धी कोई गम्भीर दोष पाया जाता है, जो सामान्य स्कूल में उसके प्रवेश में बाधक होता है, तो बालक को उसके दोषानुरूप विशेष स्कूल में भेज दिया जाता है। विशेष स्कूलों के अन्तर्गत चयन-आयोग हैं, जिन में बाल-मानसिक रोग-चिकित्सक, दोषविज्ञ-शिक्षक, वाक्-चिकित्सक, विशेष स्कूल का कोई एक संचालक और आवश्यकतानुसार चक्षुरोगविज्ञ और कान-नाक-कण्ठरोगविज्ञ भी शामिल होते हैं। विशेषज्ञ बालक की सर्वतोमुखी जांच ही नहीं, बल्कि उसके सम्बन्ध में संग्रहीत सम्पूर्ण सामग्री का विश्लेषण भी करते हैं। प्राप्त तथ्यों पर विचार-विनिमय के बाद आयोग बालक के दोष का स्वरूप निर्धारित करता है और यह बताता है कि बालक को किस तरह की संस्था में भेजा जाना चाहिये।

बहरों के स्कूल में ऐसे बालकों को लिया जाता है जो बिल्कुल बहरे और गूंगे होते हैं और ऐसे बालकों को भी, जो ऊंची आवाज़ को सुनते तो हैं, मगर शब्दों की ध्वनियों का अन्तर नहीं समझ पाते या कुछ अलग-अलग स्वर-ध्वनियों को ही समझ पाते हैं। कम सुननेवालों के स्कूल में ऐसे बालकों को दाख़िल किया जाता है, जो सामान्य ऊंची आवाज़ में की जानेवाली बातचीत को ३ मीटर से अधिक दूरी पर नहीं सुन सकते और जिनकी वाक्-शक्ति श्रवण-शक्ति के अपर्याप्त विकास के कारण भी अविकसित होती है।

वाक्-चिकित्सा-स्कूलों में ऐसे बालकों को लिया जाता है, जिनकी श्रवण-शक्ति और मानसिक स्थिति सामान्य होती है, मगर वाक्-शक्ति में बहुत बड़े दोष होते हैं।

अन्धों के स्कूल में पूरी तरह अंधे बालकों को दाख़िल किया जाता है, जिनकी नज़र ०.०४ तक बची रह जाती है और जिसे चश्मे से ठीक करना सम्भव नहीं होता। यहां अधिक तीव्र दृष्टि, मगर अत्यधिक संकुचित दृष्टि-

क्षेत्रवाले बालकों को भी लिया जाता है। कमजोर नजरवालों के स्कूल ऐसे बालकों के लिये हैं, जिनकी नजर ०.०५ से ०.२ तक बच रही हो और जिसे चश्मे की सहायता से ठीक किया जा सकता हो तथा जिनका दृष्टि-क्षेत्र पर्याप्त हो।

टांगों-बांहों के दोषवाले बालकों के स्कूल में उन बच्चों को दाखिल किया जाता है, जिनकी बुद्धि सामान्य हो और जो पोलियो रोग के परिणामस्वरूप मस्तिष्क के पक्षाघात तथा टांगों-बांहों के अन्य दोषों से पीड़ित हों।

सहायक स्कूल में (मानसिक रूप से कम विकसितों के लिये) ऐसे बालकों को भेजा जाता है, जो आम स्कूल में एक-दो साल तक पढ़ाई में असफल रहें और जिनकी चिकित्सीय-शिक्षाशास्त्रीय जांच केन्द्रीय स्नायु-प्रणाली के गम्भीरतम दोष के कारण मानसिक कमजोरी साबित करे, यानी जो आम स्कूल में न पढ़े हों और जिनके बारे में चिकित्सीय मानसिक-स्नायविक रोग-संस्था ने ऐसा ही निष्कर्ष निकाला हो। आम स्कूल में लगातार पढ़ाई में असफल रहनेवाले और कभी-कभी सहायक स्कूलों में भेज दिये जानेवाले बालकों की बहुत ही अच्छी जांच के परिणामस्वरूप उनमें से स्नायविक कमजोरीवाले बालकों का एक ऐसा दल अलग करना सम्भव हुआ है, जिनका मानसिक विकास केवल कुछ समय के लिये ही रुक गया था। यह सिद्ध किया जा चुका है कि यदि इस दल के बालकों को उनके लिये विशेष रूप से पैदा की गयी स्थितियों में शिक्षा दी जाये, तो इस तरह की बाधा को पूरी तरह दूर किया जा सकता है। ऐसे बालकों को सहायक स्कूल में भर्ती नहीं किया जाता, जो शारीरिक दुर्बलता, पढ़ाई में लापरवाही या अन्य ऐसे ही वस्तुगत कारणों से, न कि केन्द्रीय स्नायु-प्रणाली के किसी गम्भीरतम दोष के कारण, पढ़ाई में पीछे रह गये हों। विकास की वक्ती बाधा, पढ़ाई में ऐसे बालकों का पिछड़ापन आम स्कूल में उनके लिये अतिरिक्त पाठों की व्यवस्था द्वारा दूर किया जाता है।

सभी विशेष स्कूलों के छात्र न केवल आम शिक्षा पाते हैं, बल्कि स्कूली वर्कशापों में व्यावसायिक तैयारी भी करते हैं और स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने पर उन्हें अवश्य ही काम भी दिया जाता है। ऐसे किशोरों के लिये, जो विकास के किसी बहुत बड़े दोष के कारण विशेष स्कूल की शिक्षा समाप्त करने पर सामान्य ढंग के उद्यम में काम नहीं कर

सकते, विशेष चिकित्सीय श्रम वर्कशॉपें और शिक्षण-उत्पादन उद्यम विद्यमान हैं।

सभी विशेष स्कूल (बड़े शहरों के कुछ सहायक स्कूलों को छोड़कर) छात्रावास स्कूल हैं और इस तरह वे बालकों के जीवन और विकास की अधिक अनुकूल परिस्थितियां सुनिश्चित करते हैं। छात्रावास स्कूलों में बालकों के लिये पाठ्यपुस्तकों, कपड़ों और जूतों समेत सभी जरूरी चीजों की व्यवस्था की जाती है। ग्राम स्कूलों की तरह इन छात्रावास स्कूलों में भी पढ़ाई निःशुल्क है और मां-बाप केवल बालकों के रहन-सहन का खर्च (जो उनके वेतन के अनुसार अलग-अलग होता है) देते हैं।

ग्राम स्कूलों की तुलना में विशेष स्कूलों की कक्षाओं में छात्र-संख्या कहीं कम है और १२ से १६ छात्रों तक होती है। कक्षाओं में पढ़ानेवाले अध्यापकों के अलावा ऐसे भी बहुत-से शिक्षक होते हैं, जो बालकों के साथ पढ़ाई के बाद का समय बिताते हैं, घर के लिये दिये गये काम की तैयारी और सैर-सपाटे की व्यवस्था करते हैं, मण्डलों का काम, मनोरंजन और विश्राम आयोजित करते हैं। इस तरह बालकों द्वारा छात्रावास में बिताये जानेवाले समय का पूरी तरह उनके विकास के लिये उपयोग करना सम्भव होता है। सभी विशेष स्कूलों के अपने डाक्टर हैं, जो स्थायी रूप से बालकों के स्वास्थ्य की देखभाल करते हैं। डाक्टरों और शिक्षकों के आपसी सहयोग से चिकित्सीय और दोष-सुधार-कार्य मुमकिन होता है।

छात्रावास का जीवन और शिक्षण छात्रों को न केवल ग्राम शिक्षा की अच्छी जानकारी देते हैं, बल्कि उन्हें व्यावहारिक कार्यों के लिये भी तैयार करते हैं। बालकों को स्वसेवा और स्कूल के बाग में काम करना सिखाया जाता है, वे मिलकर काम करना सीखते हैं। इन सब चीजों से बालकों की क्षमताओं के विकास, उनके सौन्दर्यशास्त्रीय शिक्षण, और सब से अधिक महत्वपूर्ण चीज तो यह है कि उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता मिलती है।

विशेष स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद शारीरिक दोषवाले बालक प्राविधिक विद्यालयों (कुछ प्राविधिक विद्यालयों में बहरों के लिये तो विशेष विभाग भी हैं), कला-स्टूडियो या स्कूलों तथा उच्च विद्यालयों में अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। अंधों और बहरों के विशेष स्कूलों की पढ़ाई समाप्त करनेवालों में अध्यापक, इंजीनियर और वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता भी हैं। एक प्रमुखतम सोवियत गणितज्ञ अकादमीशियन ल० स० पोन्त्र्यागिन

मास्को के अंधों के स्कूल के छात्र रहे थे; शिक्षाशास्त्र की केंडीडेट अंधी-बहरी-गूंगी ओ० इ० स्कोरोखोदोवा दोषविज्ञान के अनुसन्धान-संस्थान में सीनियर वैज्ञानिक कार्यकर्त्री हैं।

इस तरह दोषवाले बालकों को, उनके विकास की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अन्य बालकों के समान अपनी क्षमतायें प्रकट और विकसित करने, अमली कार्रवाइयों और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भाग लेने की पूरी सम्भावना प्राप्त है। विशेष राजकीय कानून के अनुसार शारीरिक दोषवाले लोग सभी तरह की राजनैतिक और नागरिक-सम्बन्धी पाबन्दियों से मुक्त हैं। उन्हें कुछ रियायतें हासिल हैं — दोषवाले बालकों और किशोरों के लिये पेन्शन सुनिश्चित है, काम और आराम की अधिक सुविधायें दी जाती हैं। सरकारी क़ानून सामान्य विकासवाले बालकों और पूरे सामाजिक परिवेश के साथ दोषवाले बालकों के सही पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होता है।

अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के दोषविज्ञान-विभागों (या शाखाओं) में विशेष शिक्षा-संस्थाओं के लिये अध्यापकों को शिक्षित किया जाता है। ऐसे विभागों या शाखाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती जाती है और अगर कुछ वर्ष पहले तक केवल मास्को, लेनिनग्राद और कीयेव में ही ऐसे विभाग थे, तो अब दोषविज्ञों का उच्च शिक्षण करनेवाली संस्थाओं की संख्या लगभग १० तक पहुंच चुकी है। दोषविज्ञान के विद्यार्थियों को दूसरे अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के विद्यार्थियों की तुलना में ५० प्रतिशत अधिक छात्रवृत्ति मिलती है और विशेष स्कूलों और स्कूलपूर्व की संस्थाओं के अध्यापकों-शिक्षकों को २५ प्रतिशत अधिक वेतन मिलता है।

विशेष स्कूलों और विशेष संस्थाओं के लिये अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं का जाल-विस्तार इस बात का प्रमाण नहीं है कि दोषवाले बालकों की संख्या बढ़ गयी है, बल्कि यह कि वे अधिक भेदपूर्ण वर्गीकरण के आधार पर तथा पूरी तरह विशेष शिक्षा के अन्तर्गत आ गये हैं।

विशेष स्कूलों और स्कूलपूर्व के प्रत्येक मूलभूत प्रकार के कार्य की अपनी विशेषतायें और समस्यायें हैं।

सहायक स्कूल मानसिक रूप से कम विकसित बालकों को आम प्रारम्भिक स्कूल की सामान्य शिक्षा देता है, दोष-सुधार और शिक्षा-दीक्षा की प्रक्रिया में उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्यलाभ में सहायक होता है, वाग्दोषों को दूर करता है, शिष्टाचार सिखाता है, समाजवादी समाज में

जीवन के नियमों का अनुकरण करने की शिक्षा देता है और विशेष शिक्षा-कार्यक्रमों के अनुरूप व्यावसायिक-श्रमगत तैयारी कराता है।

सहायक स्कूलों के छात्र अपने मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक विकास की विशिष्टताओं की दृष्टि से एक-दूसरे से बहुत भिन्न होते हैं। इसलिये उनके शिक्षण में भेद करने और प्रत्येक के प्रति अलग-अलग ढंग अपनाने के सिद्धान्त को अधिकतम व्यावहारिक रूप दिया जाता है। शिक्षण-कार्य के तैयारी-काल की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है, जब मानसिक दोषवाले बालकों के लिये वे विधियां निर्धारित की जाती हैं जो उनकी भावी शिक्षा-दीक्षा का जरूरी आधार होती हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं में हाथ के श्रम-शिक्षण को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। सहायक स्कूल का सारा कार्यक्रम शिक्षा-दीक्षा के दोष-सुधार की प्रवृत्तिवाले सिद्धान्त पर आधारित है। इसलिए इसमें सम्मिलित सारी सामग्री मात्रा और विषय-वस्तु की दृष्टि से बालकों के लिए सहजग्राह्य है, मगर साथ ही उसमें मानसिक रूप से कम विकसित बालकों की बौद्धिक और व्यावहारिक क्रियाशीलता के अधिकतम उपयोग और उनकी विकासोन्मुखता को ध्यान में रखा गया है।

मानसिक रूप से कम विकसित बालकों की श्रम-कुशलता के विशेष महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए सहायक स्कूल की उच्च कक्षाओं में लगभग ४० प्रतिशत समय उनकी व्यावसायिक तैयारी को दिया जाता है। बालक न केवल प्रौद्योगिक जानकारी ही पाते हैं और वर्कशॉपों में काम करते हैं, बल्कि उद्यमों में अपनी कार्य-विशिष्टता का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी हासिल करते हैं। स्कूल की पढ़ाई की समाप्ति के बाद मानसिक रूप से कम विकसित किशोरों की विशेष परीक्षा होती है, जिसमें प्राप्त विशिष्टता-सम्बन्धी उनकी योग्यता जांची जाती है।

मानसिक रूप से कम विकसित बालकों के संगीत, कलात्मक और शारीरिक शिक्षण की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। ऐसे पाठ छात्रों की रुचियों और प्रवृत्तियों, उनकी गुप्त क्षमताओं को सामने लाना और उनका विकास करना सम्भव बनाते हैं।

सहायक स्कूलों के आधार पर बहुत बड़ा अनुसन्धान-कार्य हो रहा है, जिसके सब से महत्त्वपूर्ण पहलू हैं – विशेष शिक्षा-दीक्षा के प्रभाव में मानसिक रूप से कम विकसित बालक के विकास की विशेषताओं के शिक्षाशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक-शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन के मार्गों और साधनों की खोज, शिक्षा-दीक्षा के सिद्धान्तों और सामान्य शिक्षा के विषयों और श्रम-सम्बन्धी

तैयारी की विशिष्ट विधियों आदि का निर्धारण। ज्ञान और व्यावहारिक कुशलता की अधिक प्रभावपूर्ण ग्रहणशीलता के लिये शिक्षा के प्राविधिक साधनों, मशीनी शिक्षा और ऐसे ही अन्य साधनों की गहन तैयारी और खोज की जा रही है। नैतिक शिक्षण के क्षेत्र, सामूहिक पाठ, श्रम, खेलकूद और अन्य प्रकार की कार्रवाइयों में सहायक स्कूल के छात्रों के आपसी सम्बन्धों के अध्ययन में अनुसन्धान-कार्य अधिक विस्तृत हो रहा है।

बहरे बालकों के स्कूल सर्वप्रथम तो सम्पर्क-सिद्धान्त पर भाषा सिखाते हैं। सीधे वाक्-सम्पर्क के विस्तृत उपयोग की परिस्थितियां पैदा की जाती हैं। इस कार्यभार की पूर्त्ति के लिये उंगलियों द्वारा बातचीत ने बहुत महत्त्व प्राप्त कर लिया है। शिक्षा की प्रारम्भिक अवस्था में उंगलियों द्वारा बातचीत बहरे बच्चों के आपसी सम्पर्क का मूल साधन रहने के बाद, जबानी और लिखित वाक्-सम्पर्क के विकासानुसार, धीरे-धीरे सहायक साधन बन जाती है और वाक्-सामग्री को ओष्ठ-पठन की तुलना में अधिक अच्छी तरह पचाने और समझ पाने में सहायता देती है।

श्रवण-शक्ति के दोषवाले बालकों के अनुसन्धान से उनकी वाक्-विशिष्टता को स्पष्ट करना और इसके आधार पर बालक की वाक्-शक्ति के विकास में अवशिष्ट श्रवण-शक्ति के महत्त्व के मूल्यांकन के मानदण्ड निर्धारित करना सम्भव हुआ है। बहरे बालकों की तुलना में, श्रवण-शक्ति के आंशिक दोषवाले बालक यानी जो कम सुनते हैं, श्रवण के आधार पर अपने इर्दगिर्द के लोगों की बातचीत सुनकर कुछ शब्द-भण्डार एकत्रित करने की स्थिति में होते हैं, यद्यपि उनका उच्चारण दोषपूर्ण होता है। कम सुननेवाले बालकों के स्कूल ऐसी परिस्थितियां पैदा करना अपना कार्यभार मानते हैं, जो छात्रों के सीमित वाक्-व्यवहार को अधिकतम समृद्ध कर सकें। कम सुननेवाले बालकों को मातृभाषा सिखाने के कार्यक्रम और विधियों में भाषा की मूलभूत नियमबद्धताओं (शब्द-भण्डार, उच्चारण और व्याकरण) पर व्यावहारिक रूप से अधिकार पाने के लिए क्रमबद्ध कार्य को ध्यान में रखा गया है। कम सुननेवाले बालकों के स्कूलों की पाठ्य-योजना में ओष्ठ-पठन और शब्दोच्चारण की कुशलता का विकास, बातचीत का व्याकरण-सम्बन्धी रूप-सुधार और शब्दों के ध्वनि और वर्ण-स्वरूप पर अधिकार-प्राप्ति सम्मिलित है। कम सुननेवालों के स्कूल में श्रवणगत अनुभूतिशीलता के विकास को विशेष स्थान दिया गया है।

श्रवण-शक्ति के दोषवाले बालकों के दोषों के सुधार और पूर्ति के कार्य में स्कूलपूर्व का पालन-शिक्षण एक अनिवार्य कड़ी है, जो दोषों को दूर करने और उनसे पैदा होनेवाले दूसरे विकारों की रोक-थाम में बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिणाम प्राप्त करना सम्भव बनाती है।

पिछली दशाब्दी में स्कूलपूर्व की संस्थाओं में उंगलियों द्वारा बातचीत की विधि का विस्तृत उपयोग होने लगा है। स्कूलपूर्व के बहरे बालकों के शिक्षण में उंगलियों के सम्पर्क-साधन के उपयोग ने जहां बालकों के सामान्य विकास को, वहां उनकी जबानी बातचीत के विकास को भी बहुत प्रभावित किया है।

इस समय श्रवण-शक्ति के दोषवाले स्कूलपूर्व के बालकों के बहुमुखी चिकित्सीय अन्वेषण और शुरू में ही रोग-निदान की विधियों की तैयारी की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बालकों की जांच करते समय बालक की श्रवण-शक्ति की स्थिति, दृष्टिगत ग्रहणशीलता, फ़ासले की धारणाओं, चिन्तन, व्यवहार और चरित्र की विशिष्टताओं को ध्यान में रखा जाता है।

श्रवण, दृश्यमान और स्पर्श-उपकरणों की सहायता से बहरों और बहुत कम सुननेवाले बालकों द्वारा बातचीत की ग्रहणशीलता की नियमितता का अध्ययन ओष्ठ-पठन के शिक्षण, श्रवणगत ग्रहणशीलता के विकास और उपयोग के विशेष कार्यक्रमों और विधि-निर्देश का आधार बना।

बहरों और बहुत कम सुननेवाले बालकों के उच्चारण को रूप देने से सम्बन्धित प्रश्नों के हल ढूंढ़ने के साथ-साथ उच्चारण-सम्बन्धी ऐसे कारकों का पता लगाया गया, जो वाणी की स्पष्टता पर अधिक प्रभाव डालते हैं। यही खोजें ही बहरों के प्रारम्भिक उच्चारण-शिक्षण की एकाग्रता विधि की रचना का आधार बनीं।

बहरों और कम सुननेवालों को उच्चारण सिखाने के लिये, "दृश्यमान वाणी" समेत उच्चारण के श्रवणगत, दृश्यमान और स्पर्श-कम्पन-सम्बन्धी नियन्त्रण-उपकरण बनाये गये।

दृश्यमान बातचीत के उपकरण बहरों और कम सुननेवालों के दोषों को तब दूर कर सकते हैं, जब श्रवण-शक्ति की मदद से उनका निर्धारण नहीं हो सकता। ऐसे उपकरण अलग-अलग ध्वनियों के उच्चारण और बातचीत की स्वर-लय तथा उतार-चढ़ाव-सम्बन्धी कार्य के लिये समान रूप से उपयोगी होते हैं।

अवशिष्ट श्रवण-शक्ति के उपयोग के लिये श्रवण-शक्ति के ह्रास की

सीमा और स्वरूप को ध्यान में रखते हुए ध्वनि को ऊंचा करनेवाले तरह-तरह के उपकरण बनाये जाते हैं।

अनुसन्धान-कार्य ने यह स्पष्ट किया है कि दृष्टि-दोषवाले बालकों में पूर्णतः अन्धों का प्रतिशत निरन्तर कम होता जा रहा है और इस समय उसका औसत १०.१% है। बाकी बालकों के पास कुछ न कुछ दृष्टि होती है। इन्हीं आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के स्कूल बनाये जाते हैं।

दृष्टि-दोषवाले बालकों के शिक्षणक्रम में दोष की पूर्ति की समस्या, ही अधिक महत्त्वपूर्ण है। विशेष शिक्षण की स्थितियों में अन्धों और कमजोर नजरवाले स्कूली बालकों के क्षतिपूरक-विकास की नियमितता को स्पष्ट किया जाता है और श्रवण, स्पर्श, गतिशीलता-सम्बन्धी तथा अन्य प्रकार की ग्राह्यता के आधार पर दोष दूर करने के उपाय और साधन खोजे जाते हैं। अंधे बालकों के इन्द्रिय बोध के विकास की विराट निहित क्षमताओं का पता लगाया गया है।

अनुसन्धान-कार्य के परिणामों ने अन्धों और कमजोर नजरवाले बालकों के अलग-अलग स्कूलों और शिक्षण के मार्गों और रूपों को निश्चित करना, शिक्षा-योजना और कार्यक्रम तैयार करना सम्भव बनाया।

अन्धों द्वारा उभरी बिन्दु-रेखाओं की ग्रहणशीलता की विशेषताओं के अध्ययन ने अन्धों को रेखाचित्रों तथा ख़ाकों को समझने और ख़ास ढंग की सहायक पाठ्यसामग्री बनाने में मदद दी। अन्धे और कमजोर नजरवाले स्कूली बालकों की अपने ढंग की ज्ञानवर्द्धक गतिविधियों के आधार पर विशेष उपकरण बनाये जाते हैं, जो प्रकाश-संकेतों को अंधों के लिये ग्राह्य ध्वनि और स्पर्श-संकेतों में बदलते हैं। इसी सिद्धान्त पर नयी पठन-मशीन बनायी गयी है, जो सामान्य लिपि को ब्राइल की प्रणाली के अनुसार विशेष संकेतों में बदल देती है। यह अलग-अलग शब्दों को नहीं, बल्कि पूरी पंक्ति को पढ़ना सम्भव बनाती है, जिससे पठन की गति काफ़ी बढ़ जाती है।

दृष्टि-दोषवाले बच्चों के स्कूलों में दृष्टि-दोष को दूर करने के साधनों के रूप में तरह-तरह के लेंसों की भी व्यवस्था है। वे पठन की गति को डेढ़ गुना करना सम्भव बनाते हैं। कमजोर नजर को क़ायम रखने और शारीरिक विकास में नये दोषों को रोकने की दृष्टि से यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

अंधे बच्चों (३ से ६ साल तक) की ग्रहणशीलता, वस्तुओं और फ़ासले की अनुमानशीलता, चिन्तन और वाणी के विकास की विशिष्टताओं

के गहन अध्ययन ने स्कूलपूर्व के अन्धे बच्चों के इन्द्रिय बोध-सम्बन्धी, मानसिक तथा शारीरिक विकास की प्रणाली तैयार करना सम्भव बनाया।

अंधे-बहरे-गूंगे बालकों और किशोरों की विशेष संस्थाओं में ख़ास ढंग की शिक्षा-प्रणाली का उपयोग किया जाता है। ऐसे बालकों का शिक्षण उन्हें ख़ुद अपनी देखभाल करने में कुशल बनाने के साथ शुरू होता है। वस्तुओं और गतिविधियों को सूचित करनेवाले संकेत ऐसे बालकों के आस-पास के लोगों के साथ उनके प्रथम सम्पर्क के साधन बनते हैं। इसके बाद उंगलियों की मदद से अभिव्यक्ति का माध्यम बनता है। धीरे-धीरे उंगलियों द्वारा बातचीत ही सम्पर्क का मुख्य रूप बन जाती है। एक ख़ास हद तक वस्तुओं और गतिविधियों का उंगलियों के संकेतों में अर्थ जानने के बाद अंधे-बहरे-गूंगे बालक उभरे बिन्दुओंवाली (ब्राइल की) वर्णमाला सीखते हैं यानी अभिव्यक्ति के लिखित रूप की शिक्षा पाते हैं।

इस समय सभी तरह के विशेष और आम स्कूलों में बालकों के वाग्दोषों को दूर करने और उनकी रोक-थाम की व्यवस्था है। इस सिलसिले में वाग्दोषों के प्रादुर्भाव और उनके स्वरूपों के अध्ययन की ओर बड़ा ध्यान दिया जाता है।

अनुसन्धान-कार्य ने मौखिक और लिखित वाग्दोषों का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव बनाया है। यह पता चला है कि बालक के वाणी-सम्बन्धी पूर्वविकास और उसके मौखिक वाणी की स्थिति पर ही यह अधिकतर निर्भर करता है कि वह किस हद तक लिखना-पढ़ना सीख सकता है। इस निर्भरता का पता चलने से वाणी, लेखन और पठन के दोष दूर करने की एकरूपी प्रणाली बनाना सम्भव हुआ, जिसका अब विस्तृत उपयोग किया जाता है और अच्छे नतीजे हासिल हो रहे हैं।

छोटी उम्र के बालकों में चूंकि कई क़िस्म और कई रूपों के वाग्दोष आम पाये जाते हैं, इसलिए इनके लिए स्कूलपूर्व की विशेष संस्थायें बनाने की आवश्यकता अनुभव हुई।

वाक्-चिकित्सा में अत्यधिक वाग्दोषवाले बालकों के लिए विशेष स्कूलों की स्थापना एक नई चीज़ है। पहले अविकसित वाणी, कुछ ध्वनियों, शब्दांशों और शब्दों का उच्चारण-दोष आदि चिकित्सा के अन्तर्गत आते थे। वाक्-चिकित्सकों ने शब्द-भण्डार, व्याकरण और उच्चारण-सम्बन्धी पक्षों में जटिल सम्बन्ध खोजे हैं और इसी भांति वाग्दोष तथा बच्चों के मानसिक विकास के दोषों के पारस्परिक सम्बन्ध भी स्पष्ट कर लिये हैं।

सभी तरह के विशेष स्कूलों का मुख्य कार्यभार है – छात्रों को अमली काम के लिये तैयार करना। विशेष स्कूलों का श्रम-प्रशिक्षण छात्रों की व्यावसायिक तैयारी, उनके मानसिक और शारीरिक दोषों का सुधार या उनका प्रतिकार सम्भव बनाता है। सभी तरह के विशेष स्कूलों में एक ही उसूल पर श्रम-प्रशिक्षण होता है, मगर बालकों में जितना ज्यादा शारीरिक या मानसिक दोष होता है, उनका प्रशिक्षण भी उतना ही अधिक विशिष्ट होता है।

विशेष स्कूलों के ऊंचे हुए शिक्षा-स्तर और बाद के वर्षों में व्यावसायिक प्रशिक्षण की बेहतर व्यवस्था ने उन पेशों का क्षेत्र विस्तृत करना सम्भव बनाया, जिनके लिये दोषवाले बालकों को तैयार किया जाता है। मिसाल के तौर पर कुछ ही समय पहले तक अंधे केवल छोटी-छोटी दस्तकारियां, जैसे कि ब्रुश बनाना, टोकरियां बुनना आदि ही सीखते थे। इस समय वे तरह-तरह के धातु-विधायन, रेडियो और बिजली उपकरणों की असेम्बलिंग आदि सीखते हैं। साथ ही अंधापन (या नजर की बेहद कमजोरी) ऐसे बालकों को शिक्षा देने की विशेष विधियों और उपायों तथा तरह-तरह के प्राविधिक साधनों का उपयोग जरूरी बनाता है।

बहरों की व्यावसायिक तैयारी के मामले में भी हस्तशिल्प सिखाने का संकुचित रवैया बदल दिया गया है। स्कूलों ने अमली तौर पर यह साबित कर दिया है कि बहरे आधुनिक औद्योगिक और कृषि उत्पादन के क्षेत्रों में तरह-तरह के पेशे सीख सकते हैं।

बालकों के शारीरिक-मानसिक विकास के दोषों के सुधार और प्रतिकार के कार्यभारों को संयुक्त शिक्षाशास्त्रीय, चिकित्सीय और प्राविधिक साधनों से सम्पन्न किया जाता है।

सभी प्रकार के विशेष स्कूलों के सफल कार्यकलापों की दृष्टि से दोषवाले बालकों की मनोदशा की जानकारी बहुत महत्त्व रखती है। इस के अन्तर्गत किसी भी तरह के प्राथमिक दोषवाले बालक के मानसिक विकास की विलक्षणताओं का पता लगाया जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने यह मालूम कर लिया है कि दोषवाले बालक के मानसिक विकास की विशिष्टतायें प्राथमिक दोष (उदाहरण के लिये बहरापन) तक ही सीमित नहीं रहतीं, बल्कि यह दोष मानसिक विकास की दृष्टि से कई और दोष भी पैदा कर देता है। मसलन छुटपन में ही बहरा हो जानेवाला बालक विशेष शिक्षण के बिना बोलना नहीं सीख सकता। मगर विशेष शिक्षण के बावजूद बहरा

बालक बहुत धीरे-धीरे और अपने ही ढंग से बोलना सीखता है, जिसका बालक के समूचे व्यक्तित्व-विकास पर प्रभाव पड़ता है।

दोषवाले बालकों के मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान का स्कूली शिक्षा की विधियों और सार पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिये बहरे बच्चों द्वारा रूसी भाषा के शब्द-भण्डार और व्याकरण-ग्रहण के क्षेत्रों में अनुसन्धान-कार्य ने इन बालकों को भाषा सिखाने की सारी विधियों (शिक्षाक्रमों, पाठ्यपुस्तकों, अध्यापन-विधियों) के निर्माण की कुछ मार्गें निर्धारित कीं। इन तब्दीलियों को असली शक्ल दी गयी और बहरे बच्चे पहले से कहीं ज्यादा अच्छी तरह भाषा सीखने लगे। सभी तरह के दोषवाले बच्चों की श्रम-प्रशिक्षण-प्रणालियों की तैयारी के लिये भी मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान का अत्यधिक महत्व है। यही श्रम-प्रशिक्षण तो इन बालकों को उनके भावी सामाजिक जीवन के लिए तैयार करना सम्भव बनाता है, उनमें श्रम की अनिवार्यता की चेतना पैदा करता है, श्रम-कुशलतायें, उत्पादन-सम्बन्धी कार्यभारों के अनुसार अपने कार्य की आयोजन-क्षमता और कार्य-प्रक्रिया के दौरान आत्मनियंत्रण कर सकना सुनिश्चित करता है।

मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों के संयुक्त प्रयासों की बदौलत, जिनसे दोषवाले बालकों की मानसिक विशिष्टताओं का संकुल स्वरूप सामने आ जाता है, शिक्षा और प्रशिक्षण के दौरान इन विशिष्टताओं को अधिक अच्छी तरह ध्यान में रखना सम्भव होता जा रहा है और इसके साथ ही ठीक समय पर विशेष स्कूलों के छात्रों की मानसिक विलक्षणताओं को सुधारने या कुछ स्थितियों में उनके पूर्ण प्रतिकार के प्रयास किये जा सकते हैं।

पिछले वर्षों में दोषवाले बालकों का चिकित्सीय और शरीरक्रियात्मक अध्ययन अधिकाधिक विस्तृत होता जा रहा है। मानसिक दोषवाले बालकों के विशेष स्कूलों में इलेक्ट्रोएन्त्सेफ़ालोग्राफ़ (मस्तिष्क की विद्युतीय सक्रियता का अंकन) की सहायता से छात्रों के अध्ययन तथा उच्च स्नायविक क्रियाशीलता के अनुसन्धान ने मानसिक दोषों का अधिक सटीक वर्गीकरण सम्भव बनाया। मानसिक दुर्बलता की उत्पत्ति के बाह्य और वंशगत कारकों की भूमिका के स्पष्टीकरण के लिये बहुत-से अनुसन्धान किये गये हैं।

श्रवण-शक्ति के और दृष्टिदोषों के सिलसिले में मस्तिष्क की विद्युतीय सक्रियता का अध्ययन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत दृष्टि की क्षति-सीमा और इलेक्ट्रोएन्त्सेफ़ालोग्राम के स्वरूप के बीच एक निश्चित सम्बन्ध स्थापित कर लिया गया है तथा इसकी कुछ विशिष्टताएं स्पष्ट कर ली गयी हैं,

जो अधेपन की क्षतिपूर्ति की प्रक्रियाओं की सफलता-असफलता के परिणाम निकालना सम्भव बनाता है।

श्रवण या दृष्टि के दोष-निदान के लिए दोषवाले बालकों की ज्ञानेन्द्रियों के अनुसन्धान बहुत महत्त्व रखते हैं। ऐसे अनुसन्धानों के दौरान श्रवण और दृष्टि-अनुभूतिशीलता को मापने की अनेक वस्तुगत विधियां तैयार की गयी हैं।

पोलियो और बाल-पक्षाघात के फलस्वरूप बालकों के हाथों-पैरों की गतिशीलता में जो दोष पैदा हो जाते हैं, उनका इलाज करने के उपाय और उनकी कार्यक्षमता की बहाली के तरीक़े खोजे जा रहे हैं, जिनके संयोग से हाथों-पैरों की गतिशीलता की क्षतिपूर्ति के अच्छे परिणाम निकलते हैं।

सोवियत दोषविज्ञान की मनोवैज्ञानिक और क्लीनीकल तथा शरीरक्रियात्मक खोजों को विदेशों में बड़ी मान्यता प्राप्त हुई है। इंगलैंड, स० रा० अमरीका, जापान और अनेक अन्य देशों में इन समस्याओं के बारे में बहुत-सी सोवियत किताबों के अनुवाद छप चुके हैं। सोवियत दोषविज्ञों ने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सभा-सम्मेलनों में सफलतापूर्वक भाग लिया है।

दोषविज्ञान के क्षेत्र में सोवियत देश के अनेक वैज्ञानिक केन्द्रों के संयुक्त प्रयासों से अनुसन्धान-कार्य हो रहा है। इनमें सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी का दोषविज्ञान अनुसन्धान-संस्थान, अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के दोषविज्ञान विभाग और अनेक संघीय जनतन्त्रों के अनुसन्धान-संस्थानों के अन्तर्गत दोषविज्ञान की शाखायें शामिल हैं। दोषविज्ञान का संस्थान प्रमुख अनुसंधान संस्था है, जिसमें सभी तरह के विशेषज्ञ—शिक्षाशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सक, शरीरक्रियाविज्ञ, इंजीनियर आदि काम करते हैं। ऐसे सभी तरह के दोषवाले बालकों की शिक्षा-दीक्षा तथा श्रम-प्रशिक्षण की विविध समस्याओं का बहुमुखी समाधान सुनिश्चित होता है। विशेष शिक्षा की ऐसी सर्वतोमुखी समस्याओं को अपने कार्यक्षेत्र में लेनेवाली यह संसार की एकमात्र संस्था है।

सोवियत देश में विशेष शिक्षा-प्रणाली के विकास का उच्च स्तर विदेशी विशेषज्ञों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। वैज्ञानिकों के बीच सम्पर्क विस्तृत हो रहे हैं और विशेष शिक्षा की समस्याओं के बारे में संसार के अनेक देशों के साथ काफ़ी पत्र-व्यवहार और वैज्ञानिक साहित्य का आदान-प्रदान हो रहा है।

म० न० कोल्याकोवा

वयस्कों के लिये सामान्य शिक्षा के स्कूल

वयस्कों की शिक्षा के विकास के पैमाने की दृष्टि से दुनिया का कोई भी राज्य सोवियत संघ की बराबरी नहीं कर सकता। लगभग ४५ लाख लोग कलकारख़ानों, दफ़्तरों आदि में काम करते हुए सन्ध्याकालीन, पाली और पत्र-व्यवहारवाले आम शिक्षा के स्कूलों में पढ़ाई भी जारी रख रहे हैं। १६७० में १० लाख से अधिक लोगों ने इन स्कूलों में माध्यमिक और आठवर्षीय शिक्षा पाई। लगभग ५० लाख लोग २२ हज़ार जन-विश्वविद्यालयों में व्याख्यान सुनते थे।

सोवियत सत्ता के आरम्भ से ही वयस्कों की शिक्षा को राजकीय महत्त्व के प्रश्न के रूप में हल किया गया। सोवियत राज्य को ज़ारशाही रूस से लगभग पूर्ण निरक्षरता विरासत में मिली थी। नौ साल और उससे अधिक उम्र की तीन चौथाई आबादी अपढ़ थी। निरक्षरता का उन्मूलन, दृढ़तापूर्वक जनता का आम शिक्षा-स्तर ऊंचा किये बिना किसी भी तरह का आर्थिक कायाकल्प, कोई भी महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रगति सम्भव नहीं थी।

इसलिये रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की मार्च, १६१६ की ८ वीं कांग्रेस में स्वीकृत कार्यक्रम में "मज़दूरों और मेहनतकश किसानों की

स्त्रशिक्षा ग्रौर स्वविकास को सर्वतोमुखी राजकीय सहायता देना तथा पुस्तकालयों, वयस्कों के लिए स्कूलों, जन-भवनों ग्रौर जन-विश्वविद्यालयों का निर्माण करना" जन-शिक्षा के क्षेत्र में एक सब से महत्त्वपूर्ण कार्यभार माना गया था। शिक्षा-क्षेत्र में इस कार्यक्रम को ग्रमली शक्ल देने के लिये कम्युनिस्ट पार्टी ग्रौर सोवियत सरकार ने सक्रिय काम शुरू किया। पार्टी की ८वीं कांग्रेस के कुछ ही समय बाद १९१९ की मई में ग़ैरस्कूली शिक्षा-सम्बन्धी पहली ग्रखिल रूसी कांग्रेस हुई। उसमें वयस्कों की शिक्षा प्रणाली (जिसमें निरक्षरता का उन्मूलन, कम शिक्षितों के स्कूल ग्रौर कोर्स, वयस्कों के उच्च ढंग के स्कूल शामिल थे) के प्रश्न पर विचार-विनिमय किया गया। वयस्कों की ग्राम शिक्षा में मज़दूर-विभागों, ग्रर्थात् उन शिक्षा-संस्थाग्रों ने विशेष स्थान प्राप्त किया, जिनका उद्देश्य ऐसे मज़दूरों ग्रौर किसानों को उच्च शिक्षा-संस्थाग्रों में प्रवेश के लिए तैयार करना था, जिन्होंने पहले माध्यमिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। मगर निरक्षरता-उन्मूलन का प्रश्न विशेषतः उग्र बना रहा। करोड़ों निरक्षरों को साक्षर बनाने, ग़ैररूसी ग्रल्प जातियों की लिपियां बनाने की ज़रूरत थी, जिनकी ग्रपनी लिपियां नहीं थीं, ग्रनेक जातीय, धार्मिक ग्रौर रीति-रिवाजों-सम्बन्धी पूर्वाग्रहों को दूर करना ज़रूरी था।

२६ दिसम्बर, १९१९ को जन-कमिसार-परिषद ने लेनिन द्वारा हस्ताक्षरित "रूसी संघ की ग्राबादी में निरक्षरता-उन्मूलन" की ग्राज्ञप्ति स्वीकार की। इस दस्तावेज़ में कहा गया था—"जनतन्त्र की सारी ग्राबादी को देश के राजनैतिक जीवन में सजग भाग लेने की सम्भावना देने के उद्देश्य से जन-कमिसार-परिषद ने यह निर्णय किया है कि ८ साल से ५० साल तक की जनतन्त्र की उस सारी ग्राबादी के लिये, जो पढ़ या लिख नहीं सकती, ग्रपनी इच्छानुसार रूसी या मातृभाषा में साक्षर होना ज़रूरी है।"

शिक्षा की जन-कमिसारियत को देश की सारी साक्षर ग्राबादी को ग्रनिवार्य श्रम-सेवा के रूप में निरक्षरों को पढ़ाने के काम में लगाने ग्रौर उन्हें शिक्षा-कर्मियों के स्तर के ग्रनुसार वेतन देने का ग्रधिकार दिया गया। शिक्षा पानेवालों के सारे शिक्षा-काल के दौरान कार्य-दिवस दो घंटे कम होता था, मगर वेतन पूरा मिलता था। ग्राज्ञप्ति के ग्रनुसार निरक्षरों के स्कूल जाने में बाधा डालनेवालों को क़ानूनी तौर पर जिम्मेदार ठहराया जा सकता था।

जुलाई १६२० में निरक्षरता-उन्मूलन-सम्बन्धी अखिल रूसी असाधारण आयोग बनाया गया, जिसकी स्थानीय शाखायें प्रदेशों और हलक़ों में स्थापित की गईं।

१६२४ में मि० इ० कालीनिन की अध्यक्षता में "निरक्षरता मुर्दाबाद!" समाज बनाया गया। निरक्षरता-उन्मूलन के लिये सार्वजनिक धन जुटाकर उसने निरक्षरों और कमपढ़ों में बहुत बड़ा राजनैतिक और ज्ञान-प्रचार का कार्य किया।

१६२८ में हमारे देश में जन-संस्कृति-कूच आयोजित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप लाखों लोग निरक्षरता-उन्मूलन के सक्रिय काम में शामिल हो गये। पार्टी, मेहनतकशों के सार्वजनिक संगठनों और सारी सोवियत जनता के अथक प्रयासों से देश में निरक्षरता का उन्मूलन किया गया।

१६३६ की जनगणना के अनुसार सोवियत संघ की ६ साल से ४६ साल तक की कुल आबादी का ८७.४ प्रतिशत भाग साक्षर हो चुका था, जिस में से पुरुषों की साक्षरता ६३.५ प्रतिशत थी और नारियों की ८१.६ प्रतिशत। १६५६ की जनगणना के आंकड़ों ने यह दिखाया कि निरक्षरता-उन्मूलन के बारे में लेनिन की ऐतिहासिक आज्ञप्ति को समूचे सोवियत संघ में पूरी तरह अमली शक्ल दी जा चुकी है। इस तरह लेनिन के शब्दों में रूस ने "इस बर्बरता, इस कलंक, हमारे देश में सभी तरह की संस्कृति, सभी तरह की प्रगति की सबसे बड़ी बाधा से मुक्ति पा ली"।

निरक्षरता-उन्मूलन के क्षेत्र में ऐसी तेज़ गति संसार के किसी भी देश ने कभी नहीं जानी थी। यह गति सोवियत संघ में वयस्कों की उस शिक्षा-प्रणाली की स्थापना का परिणाम थी, जिसने व्यापक साक्षरता के संघर्ष के लिए सभी साधनों और सारी जनता का जुटाया जाना सुनिश्चित किया। निरक्षरता-उन्मूलन से आगे शिक्षा पाने के लिये जनता की रुचि बढ़ी और वयस्कों के उच्च ढंग के स्कूलों का जाल बहुत विस्तृत होने लगा। १६२६ में इन संस्थाओं के कार्य-सम्बन्धी प्रश्नों की विशेष सभा ने यह उचित माना कि वयस्कों की शिक्षा-प्रणाली को अधिक लोचशीलता देने के लिये उच्च ढंग के स्कूलों के साथ-साथ मज़दूरों और किसानों के छोटी अवधि (एक साल) के कोर्स और मज़दूर-विश्वविद्यालय भी आयोजित किये जायें। १६२७-१६२८ के शिक्षावर्ष में वयस्कों के उच्च ढंग के स्कूलों की विद्यार्थी संख्या ७५,४०० थी और युद्धपूर्व के सालों में ३ लाख ६० हज़ार से अधिक तक जा पहुंची थी।

वयस्कों के स्कूलों के अस्तित्व के पहले सालों से अब तक उनके विशेष लक्षण हैं – आम स्कूलों के साथ उनका मेल खाना, उनका समान प्रशिक्षण-स्तर और इनकी पढ़ाई ख़त्म करनेवालों के आगे शिक्षा जारी रखने के समानाधिकार। सोवियत संघ में वयस्कों की स्कूली शिक्षा को ग़ैरस्कूली शिक्षा के विभिन्न प्रकारों के साथ मिलाया गया और मिलाया जाता है। १६२० में ही जन-शिक्षा-कमिसारियत के अन्तर्गत ग्लावपोलीतप्रोस्वेत (मुख्य राजनैतिक ज्ञानदान कार्यालय) संगठित किया गया था, जिसकी अध्यक्षा न० क० क्रूप्स्काया थीं। उस कार्यालय ने मज़दूरों और किसानों के लिये व्याख्यानों, मण्डलों और सन्ध्याकालीन विश्वविद्यालयों का विस्तृत आयोजन किया।

स्वशिक्षा का कार्य भी बढ़ा।

१६४१–१६४५ के युद्धकाल में बहुत से युवक-युवतियां, जो माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई ख़त्म नहीं कर पाये थे, सोवियत सेना में भर्ती हुए या उत्पादन-कार्य में लग गये थे। उनके लिये आठवर्षीय और इसके बाद, माध्यमिक शिक्षा पूरी करने की परिस्थितियां पैदा करना जरूरी था। इस सिलसिले में सोवियत सरकार ने १६४३ में "उद्यमों में काम करनेवाले किशोरों की शिक्षा के बारे में" एक विशेष निर्णय किया। युवा मज़दूरों को उत्पादन-कार्य से हटाये बिना उनकी शिक्षा के सन्ध्याकालीन स्कूल – मज़दूर युवाजन के स्कूल – क़ायम किये गये।

१६४४ में गांव के युवाजन के लिये भी ऐसे ही स्कूलों की स्थापना की गयी। युवा मज़दूरों और किसानों के स्कूलों में माध्यमिक स्कूल की ५-१० वीं कक्षाओं के शिक्षाक्रम के अनुसार पढ़ाई होती थी। इन स्कूलों के छात्रों के अधिकार आम स्कूल के छात्रों के बिल्कुल समान थे। किसी उद्यम में काम करते हुए साथ ही किसान या मज़दूर युवाजन के स्कूल में शिक्षा पानेवालों के लिये अन्तिम परीक्षाओं के समय अतिरिक्त सवेतन छुट्टी की व्यवस्था की गयी (दसवीं कक्षावालों के लिये २० और आठवीं कक्षावालों के लिये १५ कार्य-दिवसों की)। ये रियायतें अब भी दी जाती हैं।

१६४६ में वयस्कों के पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा पाने और बाहरी छात्र के रूप में आठवीं तथा दसवीं कक्षा की परीक्षा देने की प्रणाली बहाल की गयी। यह प्रणाली ऐसे मज़दूरों, किसानों और कर्मचारियों के लिये है, जो काम की स्थितियों के कारण नियमित रूप से स्कूल में पढ़ने नहीं

जा सकते। पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा पानेवालों के लिये परामर्श की व्यवस्था की जाती है, उन्हें शिक्षा-सहायक सामग्री, साहित्य और सवाल मुफ़्त भेजे जाते हैं। बन्दरगाहों, रेलवे-डिपो, भूतत्त्वीय अभियान-दलों यानी ऐसी जगहों पर परामर्श-केन्द्र बनाये जाते हैं, जहां काम लम्बी ग़ैरहाज़िरी से ताल्लुक रखता हो।

हमारे देश में सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा-कार्य में निरन्तर सुधार होता रहता है। युवाजन के सन्ध्याकालीन स्कूल अब पालीवाले बन गये हैं। इसका मतलब यह है कि वहां दिन और शाम को पढ़ाई होती है और मज़दूर सुविधानुसार वहां किसी समय भी पढ़ने जा सकता है।

१६६०–१६६१ से सन्ध्याकालीन (पालीवाले) स्कूलों में ऐसे लोगों के लिये आठवर्षीय स्कूल की शीघ्र शिक्षा-कक्षायें आयोजित की गयी हैं, जो पढ़ने में तेज़ हों और जिन्हें जीवन और उत्पादन का महत्त्वपूर्ण अनुभव प्राप्त हो। इसी तरह फ़ोरमैनों के तीनवर्षीय स्कूल स्थापित किये गये हैं, जिन में आठवर्षीय शिक्षाप्राप्त, उत्पादन-कार्य में लम्बी अवधि तक काम करनेवाले, अपने पेशों के माहिर और उच्च योग्यतावाले मज़दूर अपनी उत्पादन-सम्बन्धी योग्यता बढ़ाने के साथ-साथ माध्यमिक शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं। देहातों में ऐसे शिक्षा-संगठन हैं, जहां छात्र आठवर्षीय और माध्यमिक शिक्षा पाते हैं तथा साथ ही कृषि-उत्पादन के किसी क्षेत्र में अपनी व्यावसायिक जानकारी भी बेहतर कर सकते हैं।

वयस्कों के स्कूलों और शिक्षा-संगठनों की शिक्षा-योजनायें, शिक्षाक्रम और शिक्षा-विधियां छात्रों के जीवन और उत्पादन-सम्बन्धी अनुभव के अनुसार बनायी जाती हैं। वयस्कों के स्कूलों के लिये विशेष पाठ्यपुस्तकों, प्रश्न-पुस्तकों और सन्दर्भ-साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के अन्तर्गत वयस्कों की आम शिक्षा का अनुसन्धान-संस्थान इन सभी समस्याओं पर काम करता है।

काम जारी रखते हुए कोई भी व्यक्ति अगर किसी तरह का पेशा सीखना चाहता है, तो वह सन्ध्याकालीन व्यावसायिक-प्राविधिक स्कूलों और विद्यालयों में दाख़िल होकर सीख सकता है। सोवियत देश में सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा की क्रियान्विति के साथ-साथ वयस्कों के स्कूलों की भूमिका भी बढ़ती जा रही है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४ वीं कांग्रेस

के चालू पंचवर्षीय योजना-सम्बन्धी निर्देशों में ऐसे स्कूलों के भावी विकास और सुधार की पूर्वकल्पना की गयी है।

सोवियत समाजवादी राज्य आबादी के सामान्य सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा उठाने और जनता में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रचार करने की स्थायी चिन्ता करता है। हमारे देश में ग़ैरस्कूली शिक्षा-कार्यों, जैसे कि जन-विश्वविद्यालयों, सर्वसाधारण के लिये व्याख्यान-व्यवस्था, ललित कला के शौक़िया स्टूडियो, रुचियों के अनुसार क्लबों और समाजों का बहुत विकास हुआ है।

प० व० ज़िमीन

सोवियत अध्यापक

इस समय सोवियत संघ के स्कूलों में २७ लाख से अधिक अध्यापक काम करते हैं। क्रान्ति से पहले उनकी कुल संख्या २ लाख ६० हज़ार थी। क्रान्ति के बाद के पहले सालों में स्कूलों के लिये पर्याप्त संख्या में अध्यापकों की व्यवस्था करना एक कठिनतम कार्यभार था। भूतपूर्व ज़ारशाही रूस के सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में तो यह काम और भी ज्यादा मुश्किल था। उस समय अत्यधिक विकसित मध्य एशियाई जनतन्त्रों (उज्बेकिस्तान, किर्गीज़िया, ताजिकिस्तान, तुर्कमानिस्तान) और कज़ाख़ सोवियत समाजवादी जनतन्त्र में न केवल अध्यापक ही, बल्कि साक्षर लोग भी इने-गिने थे। रूसी संघ के अनेक क्षेत्रों (उत्तरी सीमावर्ती, साइबेरिया, सुदूर पूर्व) में तथा ग़ैररूसी जातियों के उन क्षेत्रों में, जहां सोवियत सत्ताकाल में दागिस्तान, बुर्यात और बश्कीरिया आदि स्वायत्त सोवियत जनतन्त्र बन गये हैं, शिक्षा-स्तर बहुत ही नीचा था। काकेशिया पार के जनतन्त्रों—आज़रबैजान, आर्मीनिया और जार्जिया—में भी सोवियत सत्ता के पहले सालों में अध्यापकों की काफ़ी कमी महसूस हुई।

देश के विभिन्न भागों में शिक्षा-विकास की विभिन्न परिस्थितियों ने

अध्यापक प्रशिक्षित करने के सवाल को अधिक लोचपूर्ण ढंग से हल करना आवश्यक बना दिया। प्रत्येक संघीय जनतंत्र में अपनी अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाएं क़ायम की गयीं। मगर कुछ ऐसी अवधियां भी आईं जब स्कूलों की तेज़ी से बढ़ती संख्या ने अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिये थोड़े समय के कोर्स आयोजित करना जरूरी बना दिया।

क्रान्ति से पहले जहां अध्यापक-प्रशिक्षण की या तो बिल्कुल व्यवस्था नहीं थी या वह प्रारम्भिक अवस्था में थी, वहां अध्यापक-प्रशिक्षण का विकास विशेषतः कठिन और जटिल रहा। ऐसे लोग नहीं थे, जो अध्यापक-प्रशिक्षण की माध्यमिक और विशेषकर उच्च संस्थाओं में अध्यापन-कार्य कर सकते। अनेक संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों में धार्मिक और दैनिक जीवन से सम्बन्धित पूर्वाग्रह अध्यापिकाओं के प्रशिक्षण में बड़ी बाधायें बने। अस्थायी रूप से अध्यापिकायें प्रशिक्षित करनेवाले विशेष विद्यालय और संस्थान बनाये गये। लड़कियों को इन संस्थाओं में लाना अधिक आसान था।

इस समय ४११ अध्यापक-प्रशिक्षण विद्यालयों और २०५ संस्थानों में अध्यापकों का प्रशिक्षण हो रहा है। १९६६–१९७० के पांच वर्षों में उन्होंने ४ लाख १२ हजार अध्यापकों का प्रशिक्षण किया है। सभी संघीय जनतन्त्र अब ख़ुद ही अपनी आवश्यकतानुसार अध्यापक प्रशिक्षित करते हैं। स्वायत्त जनतन्त्रों में भी अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं का विकसित जाल है। उदाहरणार्थ, रूसी संघ के १६ स्वायत्त जनतन्त्रों में १८ अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान हैं। ४६ अध्यापक-प्रशिक्षण-विद्यालय स्वायत्त जनतन्त्रों और प्रदेशों और ८ सुदूर उत्तर के जातीय क्षेत्रों के प्रारम्भिक स्कूलों के लिये अध्यापकों का प्रशिक्षण करते हैं। इन सभी संस्थाओं में स्थानीय युवाजन शिक्षा पाते हैं।

अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के अलावा विश्वविद्यालय भी माध्यमिक स्कूलों के लिये अध्यापकों का प्रशिक्षण करते हैं।

अध्यापक-प्रशिक्षण-विद्यालय – ये माध्यमिक शिक्षा-संस्थायें हैं। इनमें प्रारम्भिक स्कूलों के अध्यापकों का प्रशिक्षण होता है। अध्यापन-सम्बन्धी विशेष शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को सामान्य माध्यमिक शिक्षा भी दी जाती है। इन विद्यालयों में प्रवेश-परीक्षाओं के आधार पर दाख़िला होता है और आठवर्षीय स्कूली शिक्षा की समाप्ति का प्रमाणपत्र रखनेवाले सभी किशोर-किशोरियां इन परीक्षाओं में हिस्सा ले सकते हैं। इन विद्यालयों का शिक्षा-

काल चार साल है। अधिकतर विद्यार्थियों के लिये होस्टल और वज़ीफ़े की व्यवस्था है। अध्यापन-प्रशिक्षण-विद्यालयों की पढ़ाई समाप्त करनेवाले विद्यार्थी रूसी या अपनी मातृभाषा और उसकी शिक्षण-विधि, गणित और उसकी शिक्षण-विधि, अध्यापनशास्त्र तथा समाजशास्त्र की राजकीय परीक्षायें देते हैं। परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवालों को डिप्लोमा मिलता है, जो उन्हें पहली से तीसरी श्रेणी तक के छात्रों को पढ़ाने और तीन साल तक स्कूल में काम करने के बाद किसी भी उच्च शिक्षा-संस्था में दाखिल होने का अधिकार देता है। उत्तम अंक पानेवालों के लिये उच्च शिक्षा-संस्था में दाख़िल होने के पहले काम करना लाज़िमी नहीं होता।

अध्यापक-प्रशिक्षण विद्यालयों में सामान्य शिक्षा-विषयों के अलावा शरीररचनाशास्त्र, शरीरक्रियाविज्ञान और बालकों का आरोग्यशास्त्र, बाल और शिक्षाशास्त्रीय मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र, बाल-साहित्य और प्रारंभिक स्कूल में पाठ्य-विषयों की अध्यापन-विधि भी पढ़ाई जाती है। चित्रकला, मूर्तिकला, वर्कशॉपों में अमली काम, पियानो, वायलिन या अकार्डियन बजाने की शिक्षा की ओर ख़ास ध्यान दिया जाता है। विशेष विषयों के सैद्धान्तिक शिक्षण के साथ-साथ अध्यापन-अभ्यास भी कराया जाता है।

अध्यापक-प्रशिक्षण विद्यालयों में सामान्य माध्यमिक शिक्षाप्राप्त लोगों के लिये भी विभाग हैं। वहां शिक्षा-काल दो वर्ष है। उनकी शिक्षा-योजना में विशेष विषयों की शिक्षा और अध्यापन-अभ्यास की पूर्वकल्पना की गयी है।

कुछ अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों में प्रारम्भिक स्कूलों के विभाग भी काम करते हैं। वे प्रारम्भिक स्कूलों के लिये उच्च शिक्षावाले अध्यापक प्रशिक्षित करते हैं।

प्रारंभिक स्कूलों और कुछ हद तक चौथी से आठवीं कक्षा तक के लिये वादन, गायन और व्यायाम के अध्यापकों का प्रशिक्षण क्रमशः संगीत और व्यायाम के अध्यापक-प्रशिक्षण विद्यालयों में होता है। इनमें प्रवेश पाने और शिक्षा समाप्त करने की शर्तें अध्यापक-प्रशिक्षण विद्यालयों जैसी ही हैं। सोवियत संघ के संस्कृति-मन्त्रालय के कला और संगीत-विद्यालयों तथा सोवियत मन्त्रिपरिषद् के अन्तर्गत व्यायाम और खेलकूद की समिति के व्यावसायिक व्यायाम विद्यालयों की शिक्षा समाप्त करनेवालों के एक भाग को भी स्कूलों में काम करने के लिये भेजा जाता है।

अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान – उच्च शिक्षा-संस्थायें हैं। वे स्कूलों के लिये आवश्यक सभी विषयों (रूसी भाषा और साहित्य, मातृभाषा और साहित्य, इतिहास और समाजशास्त्र, गणित, भौतिकी, रसायन, जैविकी, भूगोल, विदेशी भाषाओं, व्यायाम, संगीत और गायन, ड्राइंग और चित्रकारी, सामान्य प्रविधि, कृषि उत्पादन के मूल सिद्धान्तों) के अध्यापकों का प्रशिक्षण करते हैं। अनेक अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान में एक विषय के नहीं, बल्कि एक-दूसरे से निकट का सम्बन्ध रखनेवाले दो विषयों, जैसे कि गणित और भौतिकी, जैविकी और रसायन, भूगोल और जैविकी आदि के अध्यापकों का प्रशिक्षण होता है। एक विषयवाले शिक्षा-विभागों का शिक्षा-काल चार और दो विषयवालों का पांच साल है।

इन संस्थानों में **प्रवेश-परीक्षाओं के आधार पर** विद्यार्थियों को दाख़िल किया जाता है। सामान्य या विशेष माध्यमिक शिक्षाप्राप्त लोग इन परीक्षाओं में बैठ सकते हैं। मुख्य विषय और उसकी अध्यापन-विधि, शिक्षाशास्त्र और वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के मूल सिद्धान्तों की राजकीय परीक्षाओं के साथ संस्थान की पढ़ाई ख़त्म होती है। परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवालों को माध्यमिक स्कूल के अध्यापक का डिप्लोमा मिलता है और वे एक या दो विषय पढ़ा सकते हैं। अधिकतर विद्यार्थियों के लिये होस्टल और वज़ीफ़े की व्यवस्था की जाती है।

अन्य उच्च शिक्षा-संस्थाओं की भांति अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों की शिक्षा-योजना में भी तीन तरह के विषय हैं – सामाजिक-राजनैतिक, पेशे की वैज्ञानिक तैयारी से सम्बन्धित और शिक्षाशास्त्रीय।

मनोवैज्ञानिक व शिक्षाशास्त्रीय विषयों में शामिल हैं – शिक्षाशास्त्र का परिचय, आयुगत शरीरक्रियाविज्ञान और स्कूली हाइजीन, शिक्षाशास्त्र का इतिहास, सामान्य मनोविज्ञान, बाल और शिक्षाशास्त्रीय मनोविज्ञान और मुख्य विषय (विषयों) की अध्यापन-विधि।

विद्यार्थियों के अध्यापन-अभ्यास में २० से ३० हफ़्ते तक का समय लगाया जाता है।

चूंकि आज-कल स्कूलों में सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है और उनमें नयी शिक्षा-योजनायें तथा कार्यक्रम चालू किये जा रहे हैं, इसलिये अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं की शिक्षा-योजनाओं तथा कार्यक्रमों को और अधिक सुधारा जा रहा है। ऐसे कार्य का मुख्य ध्येय अध्यापकों के प्रशिक्षण का वैज्ञानिक स्तर ऊंचा करना है, विद्यार्थियों के

स्वावलम्बी कार्य को बढ़ाना है, सभी प्रकार के शिक्षाशास्त्रीय व्यावहारिक कार्य को बेहतर बनाना है। भावी अध्यापक अनुसन्धान-कार्य में हिस्सा लेते हैं। वे तरह-तरह के अभियानों (भाषा, इतिहास, भूगोल और प्राकृतिक साधनों के अध्ययन-सम्बन्धी) में जाते हैं, प्रयोगशालाओं तथा पुरालेखागारों में काम करते हैं। शिक्षाशास्त्रीय अनुभव, उसके विश्लेषण और सामान्यीकरण में विद्यार्थियों के सक्रिय भाग लेने की ओर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थियों के वैज्ञानिक समाजों की संख्या बढ़ती जा रही है।

संस्थानों में विद्यार्थियों की बाधाहीन शिक्षा और विश्राम-मनोरंजन के लिये सभी आवश्यक परिस्थितियां पैदा की जाती हैं। हर संस्थान में होस्टल, पुस्तकालय, भोजनालय, क्लब और खेलकूद का हॉल आदि हैं। क्लबों में वाद-विवाद होते हैं और लेखकों, कलाकारों, उद्योग और कृषि-क्षेत्र के अग्रणी लोगों, श्रेष्ठ अध्यापकों और जन-शिक्षा के कार्यकर्त्ताओं से मुलाक़ातें आयोजित की जाती हैं।

विद्यार्थी फ़ुरसत के वक़्त का एक हिस्सा समाजोपयोगी कार्यों में लगाते हैं। वे बालकों के तरह-तरह के शौक़िया कार्यक्रमों के संगठन में हिस्सा लेते हैं, व्याख्यान देते हैं, कन्सर्टों का आयोजन करते हैं, प्रकृति-रक्षा और बाग़-बगीचे लगाने के कामों में हिस्सा लेते हैं। गर्मियों की छुट्टियों के दिनों में विद्यार्थी अपनी इच्छा से श्रम-दल बनाकर साइबेरिया, सुदूर उत्तर और परती धरती के नव-निर्माण स्थलों पर जाते हैं। "श्रम-तिमाही" कहलानेवाला गर्मियों के दिनों का यह सारा काम विद्यार्थियों की सैद्धान्तिक-राजनैतिक परिपक्वता तथा स्कूल में उन के भावी कार्य के लिये जीवन और कम्युनिज्म के निर्माण की व्यावहारिकता के साथ शिक्षा के घनिष्ट सम्बन्ध के सिद्धान्त को सफल अमली शक्ल देने की दृष्टि से बहुत महत्त्व रखता है।

अनेक संस्थानों के अन्तर्गत "सार्वजनिक व्यवसायों के विभाग" विद्यमान हैं। इनका काम विद्यार्थियों को अध्यापक के काम से घनिष्ठ सम्बन्ध रखनेवाली विविध सार्वजनिक गतिविधियों के लिये, जैसे कि तरह-तरह के कला-कार्यों के संचालक, वैज्ञानिक और राजनैतिक प्रश्नों के व्याख्याता, खेलकूद के संगठनकर्त्ता आदि प्रशिक्षित करना है। संस्थान और अन्य संगठनों के कार्यकर्त्ता पारिश्रमिक के बिना ही इन विभागों में व्याख्यान देते हैं और अभ्यास कराते हैं।

शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में अनुसन्धानक तैयार करने के लिये प्रमुख अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के अन्तर्गत तीन साल के स्नातकोत्तर शोध-कार्य की व्यवस्था है। शोध-प्रबन्ध के मंडन के बाद कैंडीडेट (पी० एच० डी०) की उपाधि दी जाती है। नियमित और पत्र-व्यवहारवाले स्नातकोत्तर विद्यार्थी भी हो सकते हैं। संस्थानों के ऐसे अध्यापकों को, जो शोध-कार्य में विशेष रुचि प्रकट करते हैं और डाक्टर की उपाधि पाने के लिये शोध-प्रबन्ध लिख रहे होते हैं, शिक्षण-कार्य से मुक्त करके संस्थान के वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता बना दिया जाता है। वे अपना सारा समय और शक्ति शोध-प्रबन्ध तैयार करने में लगा सकते हैं। अनुसन्धान-संस्थानों और दूसरे प्रकार की उच्च शिक्षा-संस्थाओं में उच्च वैज्ञानिक उपाधियांप्राप्त विशेषज्ञ भी अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों में काम करते हैं। अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के अलावा सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय विज्ञान अकादमी भी डिप्लोमाप्राप्त अध्यापकों का प्रशिक्षण करती है।

अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों में ऊंची वैज्ञानिक उपाधिप्राप्त अध्यापकों के अलावा अध्यापन-कार्य का बहुत बड़ा अनुभव रखनेवाले स्कूलों के श्रेष्ठ अध्यापक और सुयोग्य, सृजनशील उत्साही युवाजन भी काम करते हैं।

अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के शोध-अध्यापन कार्यकर्त्ता सामाजिक, प्राकृतिक और यथातथ्य विज्ञानों के क्षेत्र में विविधतापूर्ण शोध कार्य करते हैं। विशेष समस्या-विषयक प्रयोगशालायें बनायी जाती हैं। शिक्षाशास्त्रीय उपविभागों के अनुसन्धान-कार्य के अन्तर्गत छात्रों की शिक्षा-दीक्षा की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समस्याओं के समाधान ढूंढ़े जाते हैं, प्रगतिशील शिक्षाशास्त्रीय अनुभव का अध्ययन, सामान्यीकरण और प्रचार किया जाता है।

विश्वविद्यालयों में भी अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के समान सैद्धान्तिक आधारों पर ही अध्यापकों का प्रशिक्षण होता है।

पत्र-व्यवहार द्वारा अध्यापक-प्रशिक्षण-प्रणाली का विस्तृत विकास हुआ है। अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों, विश्वविद्यालयों और अध्यापक-प्रशिक्षण-विद्यालयों के अन्तर्गत पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा के विभाग विद्यमान हैं। इनका शिक्षा-काल एक साल ज्यादा है।

अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के पत्र-व्यवहारवाले विभागों के विद्यार्थी नियमतः शिक्षाशास्त्र की माध्यमिक शिक्षाप्राप्त या ऐसे अध्यापक होते हैं, जिन्होंने उच्च शिक्षा समाप्त नहीं की होती।

इस हेतु कि पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा पानेवाले विद्यार्थी गर्मियों की छुट्टियों में हर वर्ष आयोजित की जानेवाली परीक्षाओं में बैठ सकें, उन्हें नियमित दो महीने की छुट्टी के अलावा सवेतन छुट्टी दी जाती है। अन्य नगरवासियों को आने-जाने का किराया भी दिया जाता है। अन्य सभी जगहों की भांति यहां भी मुफ़्त पढ़ाई होती है।

कुछ अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों में सन्ध्याकालीन विभाग भी हैं। वहां सप्ताह में दो या तीन बार व्याख्यान, गोष्ठियां और अभ्यास-कार्य होते हैं।

जन-अर्थव्यवस्था की योजना द्वारा देश के अर्थतन्त्र और संस्कृति की भावी विकास-योजना के अनुसार अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं में विद्यार्थियों की वार्षिक प्रवेश-योजना निर्धारित की जाती है। अध्यापकों की मांग का अनुमान दस साल पहले ही लगाया जाता है।

अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान का संचालक चान्सलर होता है। विभागों के अध्यक्ष डीन होते हैं। उपविभागों के अध्यक्षों, प्रोफ़ेसरों, सहायक प्रोफ़ेसरों और प्राध्यापकों के स्थानों की प्रतियोगिता के आधार पर पूर्त्ति की जाती है।

विद्वत्-परिषद अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान का उच्चतम परामर्श-निकाय होती है। इसमें चान्सलर (अध्यक्ष), वाइस चान्सलर, डीन, उपविभागाध्यक्ष, प्रोफ़ेसरों, प्राध्यापकों तथा विद्यालय के सार्वजनिक संगठनों (पार्टी, युवा कम्युनिस्ट संघ, ट्रेड यूनियन) के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। यह परिषद शिक्षा-दीक्षा के मूलभूत प्रश्नों पर विचार करती है, विभागों के डीनों का चुनाव करती है, प्रोफ़ेसरों-प्राध्यापकों की स्थानपूर्त्ति की प्रतियोगिताओं के परिणामों पर ग़ौर करती है, सहायक प्रोफ़ेसर और प्रोफ़ेसर की उपाधियां देने के लिये नाम पेश करती है, छोटे वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता की उपाधि प्रदान करती है। गुप्त मतदान द्वारा सभी व्यक्तिगत ढंग के सवालों का निर्णय किया जाता है। विभागों की परिषदें भी इसी ढंग पर बनायी जाती हैं।

अध्यापक-प्रशिक्षण-विद्यालय का संचालन डायरेक्टर करता है। उसके एक या दो डिप्टी डायरेक्टर होते हैं। विद्यालय के सभी अध्यापन कार्यकर्त्ताओं को सूत्रबद्ध करनेवाली अध्यापक-परिषद सामूहिक परामर्श-निकाय होती है।

अध्यापन-कार्य की प्रकृति, विज्ञान, साहित्य और कला-क्षेत्र में सूचना-प्रवाह की अत्यधिक वृद्धि अध्यापकों से इस बात की मांग करती है

कि वे अपना वैज्ञानिक ज्ञान बढ़ायें और सामाजिक-राजनैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि-विस्तार के लिये निरन्तर प्रयासशील रहें।

विशेष संस्थान स्कूलों के अध्यापकों की योग्यता बढ़ाने का काम करते हैं। ऐसे संस्थान प्रत्येक प्रदेश (इलाक़े) और स्वायत्त जनतंत्र में बनाये गये हैं। संघीय जनतंत्रों में अध्यापकों की योग्यता बढ़ानेवाले केन्द्रीय अध्यापकों के ज्ञान-सुधार-संस्थान हैं। इन संस्थानों द्वारा आयोजित कोर्सों और गोष्ठियों में अध्यापकों का लगभग पांचवां भाग हर साल हिस्सा लेता है। एक-दो महीने के कोर्स आम तौर पर गर्मियों की छुट्टियों में आयोजित किये जाते हैं, मगर अध्यापकगण की वार्षिक छुट्टियां सुरक्षित रहती हैं। ये संस्थान साथ ही अध्यापन-विधि केन्द्र भी होते हैं। वे अध्यापन के प्रगतिशील अनुभव का सामान्यीकरण और प्रचार करते हैं।

उन कोर्सों में भी अध्यापकगण देश के प्रमुख विद्वानों से मिलते हैं, जिनका आयोजन उनके लिये विश्वविद्यालय, प्राविधिक और कृषि-सम्बन्धी उच्च विद्यालय करते हैं। लोमोनोसोव नामक राजकीय मास्को विश्वविद्यालय इस कार्य का श्रीगणेश कर चुका है।

हर शिक्षावर्ष के आरम्भ से पहले स्कूलों के सम्मुख प्रस्तुत मुख्य कार्य-भारों के बारे में सूचना पाने और अनुभव का आदान-प्रदान करने के लिये अध्यापकों के हलक़ा और नगर सम्मेलन होते हैं, जो परम्पराओं का रूप ले चुके हैं।

हलक़ा अध्यापन-विधि-कक्ष अथवा निकटवर्ती कई स्कूलों के अध्यापकों को सूत्रबद्ध करनेवाले विधि-संघों में अध्यापक विधि-सम्बन्धी सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षाशास्त्र और विधि-सम्बन्धी पत्र-पत्रिकायें अध्यापकों के कार्य में बड़ी सहायता देते हैं। पाठ्यपुस्तकों और शिक्षाशास्त्रीय साहित्य के प्रकाशन गृह अध्यापकों के लिये हर साल सैकड़ों पुस्तकें छापते हैं। ख़ुद अध्यापक ही इनमें से अनेक किताबों के लेखक होते हैं। अखिल सोवियत संघीय "अध्यापक-पत्र" और संघीय जनतंत्रों के अध्यापक-पत्र स्कूली काम के मूलभूत प्रश्नों के बारे में विचार और अनुभव-विनिमय की बड़ी सम्भावनायें प्रदान करते हैं।

शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में अनुसन्धान-कार्य के लिये अपने को समर्पित करने के इच्छुक अध्यापक सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी या संघीय जनतन्त्रों के किसी अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान या अध्यापक-प्रशिक्षण

संस्थान के नियमित अथवा पत्र-व्यवहारवाले स्नातकोत्तर विद्यार्थी बन सकते हैं। अध्यापकगण वैज्ञानिक-व्यावहारिक सम्मेलनों, "शिक्षाशास्त्रीय पाठन" में अपने अनुभवों की रिपोर्टें पेश करते हैं और शिक्षाशास्त्रीय अनुसन्धान-संस्थाओं के प्रयोग-कार्य में हिस्सा लेते हैं, जो वैज्ञानिक गतिविधियों में अध्यापकों की रुचि बढ़ाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

सोवियत समाज में अध्यापक की बड़ी प्रतिष्ठा है। दसियों हज़ार अध्यापक मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतों, संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों की सर्वोच्च सोवियतों और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य चुने जाते हैं, जो अध्यापकों में जनता के विश्वास और उनके प्रति सम्मान-भावना की अभिव्यक्ति है। लाखों अध्यापक सोवियत संघ के पदकों और तमग़ों से पुरस्कृत हो चुके हैं। छात्रों के अध्यापन और कम्युनिस्ट शिक्षण के क्षेत्र में बहुत बड़ी सेवा के लिये अनेक अध्यापक "समाजवादी श्रम-वीर" की सब से अधिक सम्मानित सोवियत उपाधि पा चुके हैं। सभी संघीय जनतंत्रों में "स्कूल का प्रतिष्ठित अध्यापक" उपाधि की व्यवस्था है। जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतों के अध्यक्षमण्डल यह उपाधि प्रदान करते हैं। "सोवियत संघ के श्रेष्ठ शिक्षा कार्यकर्त्ता" के बिल्ले भी दिये जाते हैं। संघीय जनतंत्रों में भी ऐसा किया जाता है।

बालकों की शिक्षा-दीक्षा में सफलतायें पाने, शिक्षाशास्त्र के विकास में योगदान करने के लिये अध्यापकों को प्रमुखतम शिक्षाशास्त्रियों – न० को० क्रूप्स्काया (सोवियत संघ), क० द० उशीन्स्की (रूसी संघ), अ० से० मकारेन्को (उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतन्त्र), य० स० गोगेबाश्वीली (जार्जियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र) के नामोंवाले तमग़ों से भी विभूषित किया जाता है।

पदकों, तमग़ों और श्रेष्ठता के अन्य चिह्नों से पुरस्कृत होने से समाज में अध्यापक की प्रतिष्ठा बढ़ती है, उसे और अधिक श्रम करने की प्रेरणा मिलती है। हर साल अक्तूबर के पहले इतवार को बड़े उत्साह से "अध्यापक-दिवस" मनाया जाता है। इस समारोह में सभी सोवियत सामाजिक हलक़े बड़े पैमाने पर हिस्सा लेते हैं।

सोवियत सरकार स्थायी रूप से अध्यापकों के जीवन और काम की परिस्थितियों की चिन्ता करती है। १९३० से सोवियत सरकार अध्यापकों

का वेतन पांच वार वढ़ा चुकी है। ऐसी २५ प्रतिशत औसतन वृद्धि १९६४ में हुई थी। पंचवर्षीय योजना के वारे में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४ वीं कांग्रेस के निर्देशानुसार पहली सितम्वर १९७२ से अध्यापकों के वेतन में फिर से २० प्रतिशत की औसत वृद्धि हुई और स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं की शिक्षिकाओं का वेतन इस से भी अधिक वढ़ाया जायेगा। गांवों के अध्यापकों को तो कई ख़ास सुविधायें और रियायतें दी गयी हैं। उन्हें मुफ़्त फ़्लैट दिया जाता है, जिसे गर्माने और विजली का ख़र्च भी उन्हें नहीं देना पड़ता। अध्यापकों को वगीचे के लिये ज़मीन का टुकड़ा भी दिया जाता है। देहातों में स्कूल की इमारत के निर्माण के साथ-साथ ही अध्यापकों के लिये रिहायशी मकान भी वनाया जाता है।

सभी अध्यापक शिक्षा, उच्च विद्यालयों और अनुसन्धान-संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं की ट्रेड यूनियन के सदस्य हैं। यह ट्रेड यूनियन अपने सदस्यों की कार्य-योग्यता की वृद्धि, उनके विश्राम-मनोरंजन, उनके अधिकारों की रक्षा, उनके जीवन की आर्थिक और रहन-सहन-सम्वन्धी परिस्थितियों की वेहतरी की चिन्ता करती है। इस समय इस ट्रेड यूनियन की तीन सौ से अधिक क्लव ढंग की संस्थायें – अध्यापक-भवन, शिक्षा-कार्यकर्त्ताओं के भवन और शिक्षा-कार्यकर्त्ताओं के संस्कृति-प्रासाद हैं।

अध्यापकों और शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में शोध-कार्यकर्त्ताओं की स्वावलम्वी संस्थायें शिक्षाशास्त्रीय समाज हैं, जो संघीय जनतन्त्रों में बनाये गये हैं। उनमें लाखों अध्यापक सूत्रवद्ध हैं और प्रदेशों, इलाक़ों, स्वायत्त जनतन्त्रों, नगरों तथा हलक़ों में उनकी शाखायें हैं। अनेक अध्यापक अखिल सोवियत संघीय समाज "ज़्नानिये" (ज्ञान) के सदस्य हैं और वे लोगों के सामने व्याख्यान देते हैं।

व्यावसायिक और सक्रिय सार्वजनिक गतिविधियों का मिलाप सोवियत अध्यापक के जीवन का सामान्य रूप है। समाजवादी जनवाद की परिस्थितियों में अध्यापकगण समाज के सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास में बहुत बड़ी सृजन-शक्ति हैं। लेनिन ने सोवियत सत्ता के प्रारम्भिक वर्षों में जो निर्देश किये थे, यह उनका व्यावहारिक रूप है। अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि अपने को अध्यापन-सम्वन्धी गतिविधियों के तंग दायरे में वन्द नहीं करना चाहिये, कि अध्यापकों को सभी संघर्षरत मेहनतकश लोगों के साथ घुल-मिल जाना चाहिये, कि नये

शिक्षाशास्त्र का कार्यभार अध्यापक की गतिविधियों को समाज के समाजवादी संगठन के कार्यभारों के साथ जोड़ना है।

अध्यापक की सामाजिक प्रतिष्ठा ऊंची करने, समाज में उसका नैतिक प्रभाव बढ़ाने, उसके जीवन की आर्थिक और रहन-सहन की स्थिति को बेहतर बनाने के लिये कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के सभी उपाय इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि लेनिन के ऐतिहासिक अनुदेश को कि "हमारे देश में जन-शिक्षक को ऐसा ऊंचा दर्जा मिलना चाहिये, जैसा कि पूंजीवादी समाज में उसे पहले कभी हासिल नहीं था और न ही हासिल हो सकता है", व्यावहारिक रूप दिया जा रहा है।

म० न० कोल्माकोवा

उच्च, माध्यमिक विशेष तथा व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा

उच्च शिक्षा। विज्ञान और प्रविधि के विकास की दृष्टि से सोवियत संघ को संसार में एक प्रमुख स्थान प्राप्त है। देश के उद्योगीकरण और कृषि के समूहीकरण, अन्तरिक्ष पर विजय और परमाणु-ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग, साइबरनैटिक्स और रेडियो-इलैक्ट्रानिकी के क्षेत्रों में सोवियत जनता की उपलब्धियों से सारी दुनिया परिचित है। सोवियत संघ में ही संसार का पहला परमाणु बिजलीघर, दुनिया का सबसे ज्यादा शक्तिशाली सिंक्रोफ़ाज़ोत्रोन (synchrophasotron), उच्च कोटि के जेट यात्री हवाई जहाज, पृथ्वी का कृत्रिम स्पूत्निक और अन्तरिक्षयान तथा मनुष्य का श्रम आसान बनानेवाले हज़ारों यंत्र, ख़राद और उपकरण बनाये गये। इन सभी कार्यों में ज्ञान की सभी शाखाओं के सोवियत वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने – जिन्होंने उच्च विद्यालयों में शिक्षा पाई – बहुत बड़ी भूमिका अदा की है।

उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा-संस्थाओं के विस्तृत जाल का निर्माण और सभी नागरिकों के लिये शिक्षा पाने के अधिकार की गारंटी – ये सोवियत जनता की महानतम सामाजिक उपलब्धियां हैं।

उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा-संस्थाओं (दिनी, सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाली) का विस्तृत जाल, सभी तरह की शिक्षा-संस्थाओं

अल्मा-अता का अध्यापक-प्रशि-
क्षणसंस्थान कज़ाख़स्तान के स्कूलों
के लिये जैविकी के अध्यापकों
का प्रशिक्षण करता है

स्वेर्दलोव्स्क का राजकीय गोर्की विश्वविद्यालय इस प्रदेश के १५ उच्च विद्यालयों में से एक है
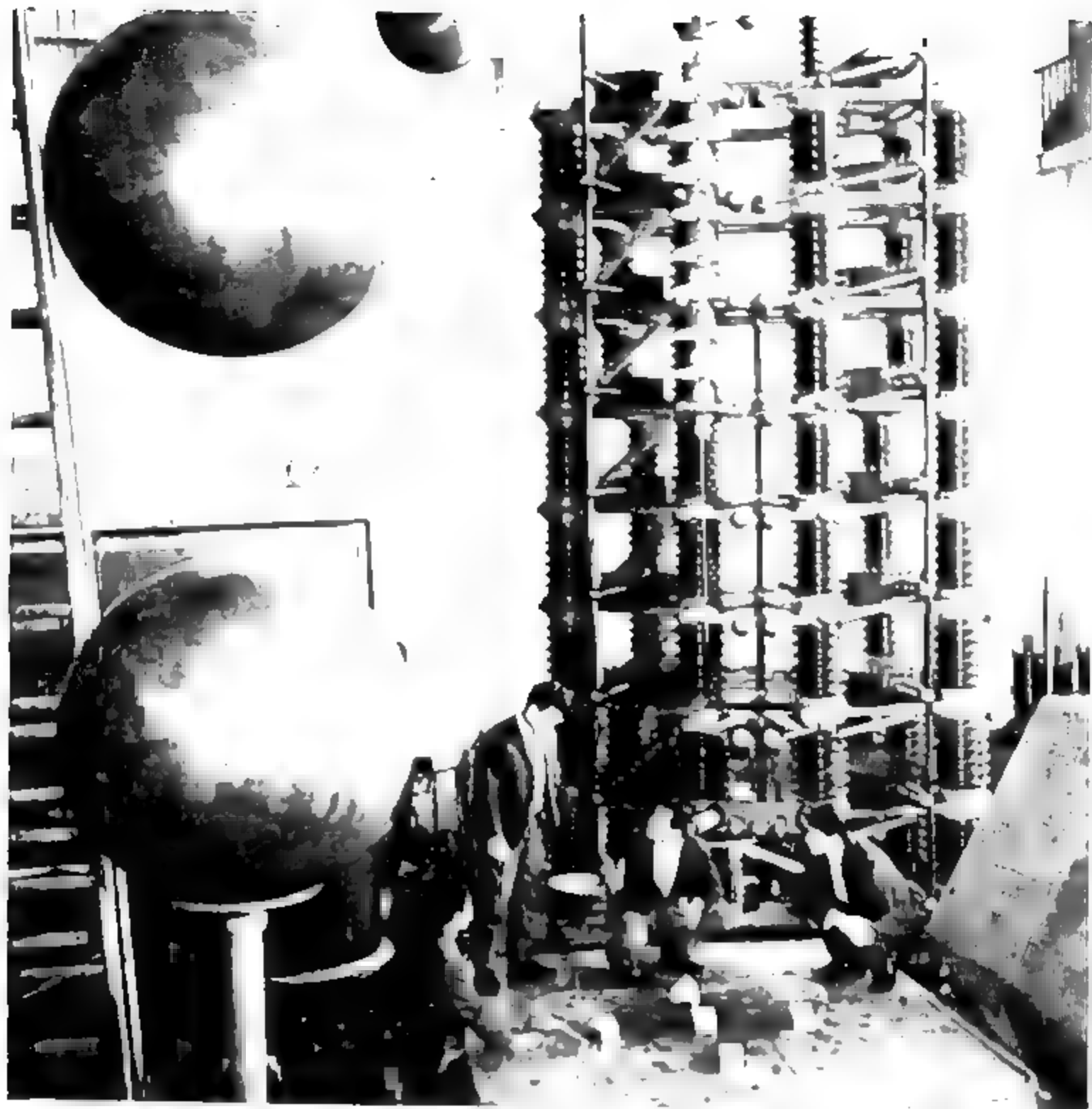
मास्को के ऊर्जा-संस्थान की
एक प्रयोगशाला में

मास्को के निकट राजकीय फ़ार्म का व्यावसायिक विद्यालय। विद्यार्थी अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का फ़ार्म की कृषि में उपयोग करते हैं

काकेशिया के पहाड़ी गांवों की बहुत-सी लड़कियां दाग़िस्तान के उच्चचिकित्सा विद्यालय में तालीम पाकर डाक्टर बनती हैं
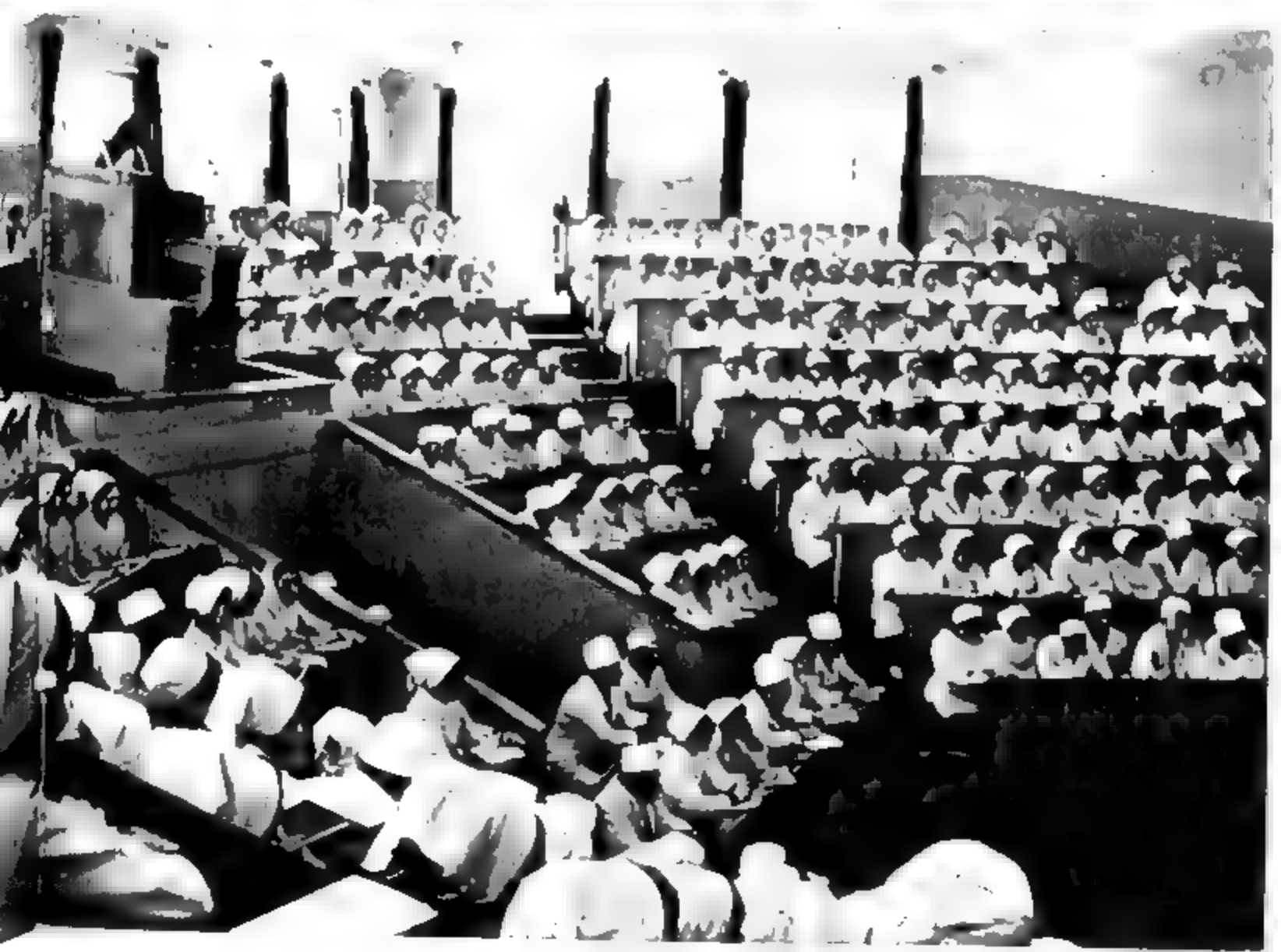
मास्को के लोमोनोसोव राजकीय विश्वविद्यालय
के दीक्षान्त-समारोह की झलक

विकासशील अफ़्रीकी देशों के विद्यार्थी मास्को की तिमिर्याजेव कृषि अकादमी में

मास्को के विद्यार्थियों का दल, जो निर्माण-कार्य में सहायता करता है

मारी स्वायत्त जनतन्त्र के इस पशु-पालन केन्द्र का निर्माण विद्यार्थियों ने किया

अलाव का धुआं और गिटार की झंकार – ये पद-यात्राओं के अभिन्न साथी हैं

में नि:शुल्क शिक्षा, विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्ति तथा उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा-संस्थाओं के सन्ध्याकालीन और पत्रव्यवहारवाले विभागों के विद्यार्थियों के लिये क़ानूनी रियायतों की व्यवस्था से सोवियत समाजवादी राज्य के संविधान द्वारा घोषित उच्च शिक्षा समेत हर तरह की शिक्षा पाने के अधिकार को वास्तव में सुनिश्चित किया गया है।

कहते हैं कि आंकड़ों की भाषा नीरस और अभिव्यक्तिहीन होती है। फिर भी सोवियत संघ में उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा के विकास का अधिक स्पष्ट रूप प्रस्तुत करने के लिये कुछ तुलनात्मक आंकड़े पेश करना उपयोगी होगा।

ज़ारशाही रूस में १६१४ में कुल १०५ उच्च और ४५० माध्यमिक विशेष विद्यालय थे, जिन में क्रमश: १ लाख २७ हज़ार और ५४ हज़ार विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। देश में लगभग २ लाख ६० हज़ार व्यक्ति उच्च, अपूर्ण उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा प्राप्त थे।

१६६६–१६६७ में सोवियत संघ के उच्च विद्यालयों में ४१ लाख २३ हज़ार तथा माध्यमिक विशेष शिक्षा-संस्थाओं में ३६ लाख ६४ हज़ार विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। दूसरे शब्दों में इंगलैंड, फ़्रांस, इटली और पश्चिमी जर्मनी की संयुक्त विद्यार्थी-संख्या से यह ३.५ गुना अधिक संख्या थी। आबादी के हर १० हज़ार लोगों के पीछे इस समय सोवियत संघ में उच्च शिक्षा-संस्थाओं के विद्यार्थियों की संख्या १७६ है, जबकि इंगलैंड में ५८, पश्चिमी जर्मनी में ४५, इटली में ५० और फ़्रांस में ७१ है। सोवियत संघ के उच्च विद्यालयों में २,६३,२०० प्रोफ़ेसर और प्राध्यापक काम करते हैं।

हमारे देश की जन-अर्थव्यवस्था में लगभग १ करोड़ ६० लाख उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षाप्राप्त विशेषज्ञ काम कर रहे हैं। १६७०–१६७१ के शिक्षावर्ष में हमारे देश के ८०४ उच्च विद्यालयों में ४६ लाख विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। गत पंचवर्षीय योजना के दौरान ६० से अधिक उच्च शिक्षा-संस्थायें खोली गयीं, जिन में ६ विश्वविद्यालय भी शामिल हैं। १६८० में सोवियत संघ के दिनी उच्च विद्यालयों में ही विद्यार्थियों की संख्या ८० लाख हो जायेगी।

ज़ारशाही रूस में कुल १३ विश्वविद्यालय थे और अब सोवियत संघ में उनकी संख्या ४४ है। सभी संघीय जनतन्त्रों और बहुत-से स्वायत्त जनतन्त्रों में भी वे विद्यमान हैं।

सोवियत राज्य को जारशाही रूस से बहुत ही कम उच्च प्राविधिक विरासत में मिले थे। १९१४ में रूस के सभी उद्योगों में उच्च प्राविधिक शिक्षाप्राप्त ८००० विशेषज्ञ काम कर रहे थे। सोवियत सत्ताकाल में इंजीनियरों की संख्या १८ लाख ६० हजार हो गयी है यानी २३० गुना से अधिक बढ़ चुकी है। इस समय २३५ उच्च विद्यालयों में २६० विशिष्टताओं के इंजीनियरों का प्रशिक्षण होता है।

१९१४ के रूस में कुल ६ उच्च चिकित्सा-विद्यालय थे, जिन में से हर साल १०००–१५०० डाक्टर तालीम पाकर निकलते थे। १९६७–१९६८ के शिक्षावर्ष में ८२ उच्च चिकित्सा-विद्यालयों में २ लाख ४० हजार विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे।

राष्ट्रीय जनतन्त्रों में तो विशेषतः बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। सोवियत सत्ता के पहले मध्य एशिया और कजाख़स्तान में तो उच्च विद्यालय थे ही नहीं। सभी उच्च विद्यालय २१ नगरों, मुख्यतः रूस के केन्द्रीय भाग में, स्थित थे। इस समय सोवियत संघ के सभी जनतन्त्रों के २२३ नगरों में उच्च विद्यालय हैं।

उदाहरण के लिये, क्रान्ति के पहले बेलोरूस में एक भी उच्च विद्यालय नहीं था। इस समय इस जनतन्त्र के २८ उच्च विद्यालयों में १ लाख १६ हजार विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। कजाख़स्तान में ४१ उच्च विद्यालय हैं और उनकी विद्यार्थी-संख्या १ लाख ६३ हजार है और उज्बेकिस्तान के ३५ उच्च विद्यालयों में १ लाख ८८ हजार विद्यार्थी पढ़ते हैं। आबादी के हर १० हजार लोगों के पीछे विद्यार्थी-संख्या की दृष्टि से सोवियत संघ के सभी जनतन्त्र यूरोप के विकसित पूंजीवादी देशों से बाजी मार चुके हैं। सभी संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों के मूलवासियों को उनकी मातृभाषा में उच्च शिक्षा पाने की सम्भावना उपलब्ध है।

क्रान्तिपूर्व के रूस में नारियों के लिये उच्च शिक्षा पाना लगभग असम्भव था। विश्वविद्यालयों में इनी-गिनी ही लड़कियां पढ़ती थीं और प्राविधिक उच्च विद्यालयों में वे बिल्कुल थीं ही नहीं। सोवियत संघ में उच्च शिक्षाप्राप्त इंजीनियरों में नारियां ३० प्रतिशत हैं, कृषिविज्ञों और पशुविज्ञों में ४० प्रतिशत, डाक्टरों में ७२ प्रतिशत, अध्यापकों और सांस्कृतिक कार्यकर्त्ताओं में ६८ प्रतिशत तथा लेखापालों में ६३ प्रतिशत।

सोवियत उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा-संस्थायें जन-अर्थव्यवस्था, विज्ञान और संस्कृति की सभी शाखाओं के लिये ५०० से अधिक पेशों के

विशेषज्ञों का प्रशिक्षण करती हैं। सोवियत संघ में उच्च शिक्षा की मूलभूत शाखायें ये हैं – **विश्वविद्यालय**, जिसके अन्तर्गत इतिहास-भाषाविज्ञान, दर्शनशास्त्र, क़ानून, अर्थशास्त्र, भौतिकी-गणित, रसायन, जैविकी-मिट्टी, भूगोल, विदेशी भाषाओं, पूर्वी भाषाओं और पत्रकारिता के विभाग हैं; **शिक्षाशास्त्रीय**, जिसके अन्तर्गत रूसी भाषा और साहित्य, मातृभाषा और साहित्य, विदेशी भाषाओं, भौतिकी और गणित, इतिहास, प्रकृतिशास्त्र, भूगोल, व्यायाम-शिक्षण, स्कूलपूर्व का शिक्षाशास्त्र, दोषविज्ञान, कलात्मक रेखाचित्रकारी, तर्कशास्त्र और मनोविज्ञान के विभाग हैं; **प्राविधिक** – जिसके अन्तर्गत खनन, धातुकर्म, पेट्रोल, यन्त्र-निर्माण, रेलवे, मोटर और जल-परिवहन, रसायन और रसायन-प्रौद्योगिकी, खाद्य और हल्के उद्योग, संचार तथा अन्य विशिष्टतायें आती हैं; **कृषि-सम्बन्धी** – जिसके अन्तर्गत कृषिशास्त्र, भूशास्त्र और कृषि-रसायन, फल, सब्ज़ी और अंगूर-उत्पादन, पौधा-रक्षा, रेशम के कीड़ों का पालन, पशुविज्ञान, पशु-चिकित्सा, भूमि-उपयोग का संगठन, भूमि-सुधार, वनशास्त्र, कृषि का आर्थिक प्रबन्ध और संगठन, कृषि का यन्त्रीकरण आदि विशिष्टतायें आती हैं; **चिकित्सीय** – जिसके अन्तर्गत चिकित्साशास्त्र (थेरापी, सर्जरी, दाई का काम और स्त्रीरोग विज्ञान), बाल-चिकित्सा, सफ़ाई और स्वास्थ्यविज्ञान, दन्त-चिकित्सा और औषध-विज्ञान आते हैं; **कला-सम्बन्धी** – इसके अन्तर्गत संगीत, थियेटर, सिनेकला, साहित्य, ललित कलाओं, वास्तुकला और व्यावहारिक कला आदि की शिक्षा दी जाती है। कुल विद्यार्थियों में से लगभग आधे तरह-तरह की इंजीनियरी, १० प्रतिशत कृषि, ६ प्रतिशत चिकित्सा और ३६ प्रतिशत समाजशास्त्रीय विभागों में शिक्षा पाते हैं।

विशिष्टता-सूची, जिसके अनुसार उच्च और माध्यमिक योग्यतावाले लोग तैयार किये जाते हैं, सोवियत समाजवादी राज्य के विकास की किसी न किसी अवस्था में जन-अर्थव्यवस्था, विज्ञान और संस्कृति की मांगों के अनुसार निर्धारित की जाती है। गत पंचवर्षीय योजना में विशेष उच्च और माध्यमिक शिक्षावाले ७० लाख से अधिक विशेषज्ञों का प्रशिक्षण किया गया। चालू पंचवर्षीय योजना में उनकी संख्या ९० लाख से अधिक हो जायेगी।

उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा-संस्थाओं की "भौगोलिक स्थिति" बदल गयी है और बदलती जा रही है। विशेषज्ञों का प्रशिक्षण उनके भावी कार्यस्थान के निकट होता जा रहा है, ताकि उच्च और माध्यमिक योग्यतावाले

विशषज्ञ स्थानीय लोगों में से ही बनें। चुनांचे, मिसाल के तौर पर, हमारे देश के पूर्वी क्षेत्रों में उद्योग, कृषि और संस्कृति के तीव्र विकास के फलस्वरूप उराल, पश्चिमी और पूर्वी साइबेरिया, सुदूर पूर्व तथा मध्य एशियाई जनतन्त्रों में उच्च विद्यालयों और प्राविधिक स्कूलों तथा उनके विद्यार्थियों की संख्या बहुत तेज़ी से बढ़ने लगी है।

सोवियत संघ के अनेक उच्च विद्यालय संसार की प्रमुखतम शिक्षण और वैज्ञानिक संस्थायें बन गये हैं। उदाहरण के लिये मास्को राजकीय विश्वविद्यालय में ३० हज़ार विद्यार्थी (१५ हज़ार से अधिक दिनी, लगभग १० हज़ार सन्ध्याकालीन और ५ हज़ार से ज्यादा पत्र-व्यवहारवाले विभाग में) शिक्षा पाते हैं। यहां १००० प्रयोगशालायें हैं। विश्वविद्यालय के २४० उपविभागों के कार्य में ४००० प्रोफ़ेसर, प्राध्यापक और वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता हिस्सा लेते हैं। मास्को विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों में ४५ अकादमीशियन, सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के ५४ सहयोगी-सदस्य और विज्ञान के ६५७ डाक्टर हैं। इसका वैज्ञानिक पुस्तकालय दुनिया के ५० से अधिक देशों की २७० वैज्ञानिक संस्थाओं के साथ साहित्य-विनिमय करता है।

लेनिनग्राद का हर्ज़ेन नामक अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान, जिसकी स्थापना नवम्बर, १९१८ में हुई, अपने अस्तित्वकाल में ६० हज़ार उच्च शिक्षाप्राप्त अध्यापकों का प्रशिक्षण कर चुका है। १९१८ में यहां ३१५ और १९६६ में १३२८७ विद्यार्थी थे।

सामान्य या विशेष माध्यमिक शिक्षाप्राप्त लोग उच्च विद्यालयों में दाख़िल हो सकते हैं। १७ से कम और ३५ से अधिक आयुवालों को दाख़िल नहीं किया जाता (सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले उच्च विद्यालयों के लिये उम्र की कोई पाबन्दी नहीं है)। उच्च विद्यालयों में दाख़िल होनेवाले (बेशक वे दिनी, सन्ध्याकालीन या पत्र-व्यवहारवाले विभाग में दाख़िल हों) सभी लोगों को उस शिक्षा-संस्था के मुख्य विषयों (४ से अधिक नहीं) की प्रवेश-परीक्षा में बैठना पड़ता है। रूसी भाषा और साहित्य (लिखित निबन्ध) की, और राष्ट्रीय जनतन्त्रों में मातृभाषा और साहित्य की परीक्षा सभी के लिये अनिवार्य है।

प्रवेश-परीक्षा की प्रणाली, उच्च विद्यालयों में प्रवेश करनेवालों की प्रतियोगिता-प्रणाली अभी तक तो अपेक्षाकृत अधिक अच्छी तरह से तैयार और सुयोग्य उम्मीदवार चुनने की सम्भावना देती है।

युवाजन का सामान्य शिक्षा-स्तर ऊंचा उठाने और उच्च शिक्षा-संस्थाओं में उनके प्रवेश के लिये आवश्यक परिस्थितियां पैदा करने के लिये सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद ने १९६९ में "उच्च शिक्षा-संस्थाओं के अन्तर्गत तैयारी विभाग संगठित करने के बारे में" एक विशेष निर्णय किया। इन विभागों में उद्यमों और सार्वजनिक संगठनों की सिफ़ारिश पर माध्यमिक शिक्षाप्राप्त अग्रणी मजदूरों, सामूहिक किसानों और सोवियत सेना से अलग किये गये सैनिकों को दाख़िल किया जाता है। अपना काम छोड़कर इन विभागों में शिक्षा पानेवालों को वज़ीफ़ा मिलता है। ८-१० महीने में तैयारी विभाग की पढ़ाई समाप्त करने और अन्तिम परीक्षा में सफल रहनेवालों को उच्च विद्यालय के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के रूप में दाख़िल कर लिया जाता है। ज़ाहिर है कि तैयारी विभागों के पाठ्यक्रम उच्च विद्यालयों की आधुनिक मांगों के बिल्कुल अनुरूप होते हैं। १९६९–१९७० के शिक्षावर्ष में ही २० हज़ार से अधिक युवाजन तैयारी विभागों में शिक्षा पाते थे। अगले कुछ सालों में इनकी संख्या १ लाख तक जा पहुंचेगी।

उच्च विद्यालयों का स्कूलों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है और वे प्रवेश-परीक्षाओं के पहले ही स्कूली छात्रों को पेशों के चुनाव में मदद देते हैं। उच्च विद्यालयों के प्रोफ़ेसर और प्राध्यापक तथा अन्तिम वर्षों के विद्यार्थी अक्सर स्कूलों में जाते रहते हैं। वे उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिये मण्डल बनाते हैं, उनके सम्मुख व्याख्यान देते हैं, उन विषयों के गहन अध्ययन में उनकी मदद करते हैं, जिन में छात्र विशेष रुचि प्रकट करते हैं, स्कूली बालकों की गणित, भौतिकी, रसायन और जैविकी की प्रतियोगितायें आयोजित करते हैं।

मास्को, लेनिनग्राद, कीयेव और नोवोसिबीर्स्क विश्वविद्यालयों, मास्को के बाउमन नामक उच्च प्राविधिक विद्यालय, मास्को ऊर्जा-संस्थान, नोवोसिबीर्स्क के रेलवे-इंजीनियरी संस्थान और अनेक अन्य उच्च विद्यालयों में स्कूली छात्रों के लिये स्थायी रूप से काम करनेवाले व्याख्यान-कक्ष हैं। उच्च विद्यालयों में तथाकथित "खुले द्वार का दिवस" आयोजित किया जाता है। इस दिन भावी विद्यार्थियों के लिये सभी प्रयोगशालाओं, कक्षों और पुस्तकालयों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं। विद्वान उन्हें विशिष्टताओं के स्वरूप, उच्च विद्यालय की शिक्षा-योजना और भावी कार्य की परिस्थितियां स्पष्ट करते हैं।

उच्च विद्यालयों के अधिकतर विद्यार्थी (दिनी विभाग के लगभग ७० प्रतिशत) सरकारी वज़ीफ़ा पाते हैं। चालू पंचवर्षीय योजना में उच्च विद्यालयों के विद्यार्थियों का वज़ीफ़ा २० प्रतिशत बढ़ाने की पूर्वकल्पना की गयी है। उत्तम विद्यार्थियों के लिये प्रमुख राजकीय कार्यकर्त्ताओं, वैज्ञानिकों, लेखकों और कलाकारों के नामवाले ज्यादा बड़े वज़ीफ़ों की व्यवस्था है। दूसरे नगरों से आये विद्यार्थियों के लिये होस्टल का प्रबन्ध किया जाता है। उच्च विद्यालयों के नियमतः अपने क्लब, भोजनालय, बहुरूपी खेलकूद-स्थल तथा पोलीक्लीनिक होते हैं और वहां रहन-सहन की सेवाओं की व्यवस्था भी होती है। अन्य सभी नागरिकों की भांति विद्यार्थियों का भी मुफ़्त इलाज होता है। बच्चों वाले विद्यार्थी अपने बच्चों को शिशुसदनों और बालोद्यानों में मुफ़्त दाख़िल कर सकते हैं। ट्रेड यूनियनें विद्यार्थियों को बहुत बड़ी संख्या में आरोग्यसदनों, विश्राम-गृहों और पर्यटन-शिविरों में मुफ़्त भेजती हैं।

विज्ञान और प्रविधि की नवीनतम उपलब्धियों पर आधारित आधुनिक उत्पादन उच्च विद्यालयों की पढ़ाई समाप्त करनेवालों से सैद्धान्तिक तैयारी के उच्च स्तर और व्यवहार की अच्छी जानकारी की अपेक्षा करता है। उच्च विद्यालय ऐसे सृजनशील कर्मी तैयार करने का प्रयत्न करते हैं जो आधुनिक प्रविधि और उत्पादन को केवल समझते और जानते ही न हों, बल्कि अपनी हिम्मत से ही नये धन का उत्पादन और नई प्रविधि की रचना तथा उत्पादन-कार्य की विधियों में सुधार करने को तैयार हों। इसलिये उच्च विद्यालयों के शिक्षा-सार का वैज्ञानिक-प्राविधिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक प्रगति और उत्पादन के विकास के भावी अनुमानों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहता है।

सभी तरह के उच्च विद्यालयों की शिक्षा-योजना में तीन तरह की विषय-मालायें होती हैं – सामाजिक-आर्थिक, सामान्य वैज्ञानिक और विशेष। चुनांचे मिसाल के लिये, विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जानेवाले विषयों का इस तरह वर्गीकरण किया जाता है –

१) सामाजिक विज्ञान – सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, राजनैतिक अर्थशास्त्र, द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, वैज्ञानिक कम्युनिज़म।

२) सामान्य वैज्ञानिक विषय, जो विशेष विषयों के आधार बनते हैं, जैसे कि भौतिकी-गणितीय विभागों में गणित, भौतिकी, रसायन,

सैद्धान्तिक मैकेनिकी, ऐतिहासिक विभागों में इतिहास, साहित्य, लैटिन भाषा और भौगोलिक विभागों में खगोलशास्त्र, सामान्य रसायन और भौतिकी आदि।

३) वे विषय, जो विशेषज्ञ का पेशा निर्धारित करते हैं। मिसाल के तौर पर भाषाशास्त्र के विभागों के अन्तर्गत इस विषय-माला में शामिल हैं — भाषाविज्ञान का परिचय, सामान्य भाषाविज्ञान, रूसी या मातृभाषा का इतिहास, रूसी या मातृभाषा के साहित्य का इतिहास, सोवियत संघ की जातियों का साहित्य, विदेशी साहित्य आदि; भौतिकी-गणितीय विभागों के अन्तर्गत ये विषय आते हैं — गणित, सामान्य भौतिकी, इलैक्ट्रोरेडियो तकनीक के मूल तत्व, सैद्धान्तिक भौतिकी आदि।

इस विषय-माला के अध्ययन में कुल शिक्षा-काल का ५० प्रतिशत भाग खर्च किया जाता है। इतना ही नहीं, इस विषय-माला के मुख्य विषयों पर विद्यार्थी शोध-प्रबन्ध लिखते हैं या प्रारूप तैयार करते हैं।

उच्च विद्यालयों के शिक्षा-विषयों पर नियमित रूप से सोच-विचार किया जाता है और वैज्ञानिक-प्राविधिक प्रगति की मांगों के अनुसार उनमें परिवर्त्तन किये जाते हैं। उच्च विद्यालयों के संचालकों और विद्वत्-परिषदों को जन-अर्थव्यवस्था और संस्कृति की किसी विशेष शाखा के लिये विशेषज्ञों का प्रशिक्षण करने के ठोस कार्यभारों को ध्यान में रखते हुए ऐसे परिवर्तन करने का अधिकार दिया जाता है।

हमारे देश के बहुत-से उच्च विद्यालय अपनी अलग शिक्षा-योजनायें तैयार करते हैं। उनमें मास्को, लेनिनग्राद और सरातोव विश्वविद्यालय, मास्को का बाउमन नामक उच्च प्राविधिक विद्यालय, मास्को ऊर्जा-संस्थान, लेनिनग्राद का पॉलीटेक्निकल संस्थान और अन्य संस्थायें शामिल हैं। इस तरह ये उच्च विद्यालय, जो प्रौढ़ वैज्ञानिक संस्थायें बन चुके हैं, शिक्षा-कार्य में अर्जित अपने अनुभव का उपयोग कर सकते हैं।

सभी उच्च विद्यालियों में, उनकी विशिष्टता चाहे कुछ भी क्यों न हो, विद्यार्थी सामाजिक शास्त्रों — वैज्ञानिक कम्युनिज्म, द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास तथा अनेक विभागों में राजनैतिक अर्थशास्त्र पढ़ते हैं। इससे नागरिकता और देशभक्ति की भावना तथा देश-विदेश की महत्त्वपूर्ण राजनैतिक घटनाओं में युवाजन की स्थायी रुचि पैदा करने में सहायता मिलती है।

उच्च विद्यालयों के संचालक, विद्वत्-परिषद, प्रोफ़ेसर और प्राध्यापक स्थायी रूप से शिक्षा-विधियों को सुधारते रहते हैं, विद्यार्थियों की सक्रियता और स्वावलम्बिता का विकास और उनकी ज्ञान-अर्जन-सम्बन्धी रुचियों का दायरा विस्तृत करते हैं। अनिवार्य शिक्षा के घंटे धीरे-धीरे कम होते जाते हैं और विद्यार्थियों के आत्मनिर्भर कार्य की सम्भावनायें बढ़ती जाती है। परिचायक-व्याख्यानों, गोष्ठियों, विद्यार्थियों की मर्जी के मुताबिक अभ्यास-कार्य, देशी और विदेशी विज्ञान तथा प्रविधि की नवीनतम उपलब्धियों के ऐच्छिक पाठ्यक्रमों तथा विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा-योजनाओं की पूर्ति की वैयक्तिक तालिकाओं आदि का काफी प्रचलन है।

मगर इन सब बातों के बावजूद सोवियत संघ के उच्च विद्यालयों में शिक्षा-प्रक्रिया काफी सुनियमित है। विशिष्टता के अनुसार कड़ाई से शिक्षा की अवधि निर्धारित की जाती है, जो चार साल से कम और साढ़े छः साल से अधिक नहीं होती। उच्च विद्यालय के हर विद्यार्थी के लिये निर्धारित समय में अपनी पढ़ाई समाप्त करना लाजिमी होता है। विद्यार्थियों को बीमारी या पारिवारिक परिस्थितियों के कारण विशेष छुट्टी दी जा सकती है, मगर वह कुल शिक्षा-काल में १ वर्ष से अधिक नहीं हो सकती। दिनी उच्च विद्यालयों की विद्यार्थिनियों को आम क़ानून के मुताबिक गर्भ और शिशु-जन्म-सम्बन्धी छुट्टियों का अधिकार है। हर शिक्षावर्ष को दो हिस्सों में बांटा जाता है। हर हिस्से की समाप्ति पर कुछ विषयों की जांच और परीक्षायें होती हैं, जो विद्यार्थियों की शिक्षा-सफलता के मापदण्ड बनती हैं। इसके अलावा पूरे शिक्षा-काल के दौरान विद्यार्थी कई निबन्ध लिखते हैं, जो कुछ हद तक शोध और कुछ हद तक सन्दर्भ-कार्य होते हैं। उच्च विद्यालयों की शिक्षा-योजना में प्रयोगशालीय कार्य को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अनुसन्धान और प्रयोगों की विधि से सम्पन्न करना और नवीनतम आधुनिक साजसामान तथा मापन-यन्त्रों से परिचित कराना होता है। प्रयोगशालीय कार्य के लिये विशिष्टता के अनुसार समय निर्धारित किया जाता है। उदाहरण के लिये, विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के विद्यार्थी कुल शिक्षा-काल का २५ प्रतिशत और रसायन विभाग के विद्यार्थी ४० प्रतिशत भाग प्रयोगशालीय कार्य में लगाते हैं।

सोवियत उच्च विद्यालयों की शिक्षा का एक प्रमुख सिद्धान्त है – जीवन के साथ, व्यावहारिक कार्यकलाप के साथ उसका सम्बन्ध। विद्यार्थियों का उत्पादन-सम्बन्धी अभ्यास इसमें बहुत हद तक सहायक होता है। प्राविधिक

उच्च विद्यालयों के विद्यार्थी मजदूर से इंजीनियर के काम तक, उत्पादन की सभी अवस्थाओं से परिचित होते हैं। उन्हें कारखाने, उसके साजसामान, प्रौद्योगिकी, आर्थिक प्रबन्ध, श्रम-संगठन, वेतन-प्रणाली आदि की सामान्य जानकारी हो जाती है। भावी इंजीनियर कुल शिक्षा-काल के १८ से २८ हफ़्ते तक अभ्यास-कार्य में लगाते हैं। कृषि-सम्बन्धी उच्च विद्यालयों में इसके लिये २६ हफ़्ते, अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थान में २० से ३० हफ़्ते तक और विश्वविद्यालय में ४ से २६ हफ़्ते तक ख़र्च किये जाते हैं। विद्यार्थियों के प्रशिक्षण की अन्तिम अवस्था होती है — डिप्लोमा पाने के पहले अभ्यास-कार्य। प्राविधिक उच्च विद्यालयों के विद्यार्थी इस अवधि में उत्पादन के विस्तृत क्षेत्रों (वर्कशापों, शाखाओं, उप-विभागों, विभागों, रूपांकनब्यूरो, प्रयोगशालाओं) का अध्ययन और उत्पादन-संगठन की निपुणता प्राप्त करते हैं। यहीं उन्हें अपने निबंधों की सामग्री भी मिलती है। उच्च चिकित्सा विद्यालय के विद्यार्थी अभ्यास के समय अनुभवी डाक्टरों की निगरानी में क्लीनिकों तथा पोलीक्लीनिकों में काम करते हैं। विश्वविद्यालयों और अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के विद्यार्थी स्कूलों में पढ़ाते हैं और अन्य प्रकार का शिक्षण-कार्य करते हैं। उच्च विद्यालय की पढ़ाई की समाप्ति पर प्राविधिक उच्च विद्यालय के विद्यार्थी डिप्लोमा का मण्डन करते हैं, जबकि सामाजिक शास्त्रों और उच्च चिकित्सा-विद्यालयों के विद्यार्थी अपनी विशिष्टताओं के अनुसार ४-५ विषयों की परीक्षायें देते हैं। भावी वास्तुशिल्पियों, थियेटर, सिनेकला-कार्यकर्त्ताओं तथा चित्रकारों के लिये क्रमशः इमारत का नमूना या हल्के के निर्माण की योजना, नाटक का प्रस्तुतीकरण या फ़िल्म, चित्र अथवा मूर्त्ति की रचना डिप्लोमा-कार्य होते हैं। उच्च विद्यालयों की पढ़ाई समाप्त करनेवाले सभी लोग विशेषज्ञ का डिप्लोमा पाते हैं और अनिवार्य रूप से उन्हें उनकी विशिष्टतानुसार काम दिया जाता है।

विज्ञान और शिक्षा एक-दूसरे से अभिन्न हैं। उच्च विद्यालय में वैज्ञानिक और शैक्षणिक कार्य का अभिन्न सम्बन्ध शिक्षा-प्रक्रिया को समृद्ध बनाता है, अध्यापकों के वैज्ञानिक विकास और विद्यार्थियों तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को विस्तृत रूप से विज्ञान की ओर आकर्षित करने की परिस्थितियां पैदा करता है। पांच लाख से अधिक विद्यार्थी, विद्यार्थियों के वैज्ञानिक समाजों में सूत्रबद्ध हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षा-विभागों के अनुसन्धान और समस्यागत प्रयोगशालीय कार्य, उत्पादन स्थल पर प्रौद्योगिकी के अध्ययन, नये साजसामान के रूपांकन और निर्माण तथा उद्योग द्वारा प्रस्तुत विषय के

सुधार-कार्य में हिस्सा लेते हैं। उच्च विद्यालयों में विद्यार्थियों के रूपांकन और निर्माण ब्यूरो बनाये जाते हैं। विद्यार्थियों के वैज्ञानिक सम्मेलन और सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक रचना की प्रतियोगितायें परम्परागत बन गयी हैं। विद्यार्थियों के वैज्ञानिक समाजों की संख्या साल-दर-साल बढ़ती जा रही है। उच्च विद्यालय उत्पादन-सुधार में सक्रिय भाग लेते हैं। वैज्ञानिक कार्य में आज़माइश और उपयोग के लिये उन्हें नई मशीनों, खरादों, उपकरणों और साज़सामानों के नमूने दिये जाते हैं। प्रमुख उच्च विद्यालयों में साज़सामान से ख़ूब अच्छी तरह लैस प्रयोगशालायें बनायी गयी हैं, जिन में देश की जन-अर्थव्यवस्था के विकास के लिये अत्यधिक महत्त्व रखनेवाली समस्याओं के समाधान ढूंढ़े जाते हैं। प्रोफ़ेसर और प्राध्यापकगण उच्च विद्यालयों के शिक्षा-विषयों और शिक्षा-प्रक्रियाओं को और सुधारने का अनुसन्धान-कार्य करते हैं। यह ज़रूरी है कि विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत सीमित शिक्षा-काल में वैज्ञानिक सूचना-सामग्री की तूफ़ानी बाढ़ में से सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज़ें ही चुनकर दी जायें। सोवियत संघ के कई उच्च विद्यालयों में शिक्षा-प्रक्रिया में तथाकथित "जालगत नियोजन" विधियों के उपयोग के प्रयास किये जाते हैं। आधुनिक इलैक्ट्रानिक गणन-यन्त्रों की मदद से शिक्षा-योजनाओं और कार्यक्रमों के अनुकूलतम रूप, शिक्षा-प्रक्रिया के संगठन की तालिका और व्याख्यान-हॉलों, कक्षों, प्रयोगशालाओं तथा क्लीनिकों और प्रोफ़ेसरों-प्राध्यापकों के व्याख्यान-सम्बन्धी समय के युक्तियुक्त उपयोग के उद्देश्य से विद्यार्थियों के समय-पत्रक तैयार किये जाते हैं। मशीनों द्वारा शिक्षण-विधियों का काम भी अधिक विस्तृत होता जाता है। इस समय उच्च विद्यालयों के लिये नियन्त्रण और नियन्त्रण शिक्षण के १०० से अधिक मशीनों के नमूने तैयार किये जा चुके हैं। शिक्षण-प्रक्रिया में टेलीविजन का भी अधिकाधिक विस्तृत उपयोग हो रहा है।

सोवियत संघ में उच्च विद्यालयों के लिये वैज्ञानिकों और अध्यापन-कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण की राजकीय प्रणाली बना ली गयी है। अधिकतर उच्च विद्यालयों के अन्तर्गत स्नातकोत्तर विभाग है। उच्च विद्यालयों के प्राध्यापकों को, जो डाक्टरेट के शोध-प्रबन्ध पर काम करते होते हैं, विशेष सुविधायें दी जाती हैं—एक या दो वर्ष के लिये उन्हें शिक्षण-कार्य से मुक्त करके वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता बना दिया जाता है और वे केवल शोध-प्रबन्ध पर ही काम करते हैं।

उच्च विद्यालयों के विद्यार्थी-संगठनों (ट्रेड यूनियन, युवा कम्युनिस्ट

संघ) को बहुत स्वतन्त्रता प्राप्त है। वे विद्यार्थियों के रहन-सहन, उनके विश्राम-मनोरंजन की चिन्ता करते हैं, विद्यार्थियों का स्वशासन संगठित करते हैं, उन्हें समाजोपयोगी कार्य में सक्रिय भाग लेने की ओर आकर्षित करते हैं। विद्यार्थियों की कला-मण्डलियां, खेलकूद विभाग और क्लब संगठित किये जाते हैं, कन्सर्टों, व्याख्यानों और फ़िल्म-प्रदर्शनों का आयोजन किया जाता है।

सोवियत विद्यार्थी देश के सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भाग लेते हैं। उच्च विद्यालयों के विद्यार्थी कारख़ानों में, निर्माण-स्थलों पर राजकीय और सामूहिक फ़र्मों में व्याख्यान और भाषण देते हैं और जनता में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रचार करते हैं। पिछले वर्षों में सोवियत संघ में जन-अर्थव्यवस्था की सहायता के लिये विद्यार्थियों का विस्तृत सार्वजनिक आन्दोलन चल पड़ा है। हर साल गर्मियों की छुट्टियों में लाखों लड़के-लड़कियां विद्यार्थियों के निर्माण-दलों में काम करते हैं। फ़सल बटोरना, रिहायशी मकानों का निर्माण करना और भूमि सुधारना – सोवियत विद्यार्थी इन और बहुत-से अन्य कार्यों में भाग लेते हैं। इस देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन के पैमाने का स्वरूप प्रस्तुत करने के लिये कुछ आंकड़ों का उल्लेख ही पर्याप्त होगा।

एक साल की अवधि में ही विद्यार्थियों के निर्माण-दलों द्वारा एक हज़ार से अधिक स्कूलों, क्लबों, बालोद्यानों, रिहायशी मकानों का निर्माण किया गया, ५.५ हज़ार किलोमीटर लम्बे बिजली के तार लगाये गये, नयी रेलवे लाइनें बिछायी गयीं और मोटर-मार्ग बनाये गये। केवल कज़ाख़स्तान में १७० स्कूल, क्लब और बालोद्यान बनाये गये और २ लाख ३० हज़ार वर्गमीटर रिहायशी स्थान का निर्माण किया गया। देश के उच्च विद्यालयों के इतिहासशास्त्र के विद्यार्थियों ने सोलोवेत्स्की द्वीपों, सूज़्दल, वोलोग्दा और स्मोलेन्स्क प्रदेश के प्राचीन स्मारकों को बहाल किया है, चित्रकला के विद्यार्थियों ने दसियों क्लबों, स्कूलों, बालोद्यानों और संस्कृति-भवनों की सज्जा की, परिवहन-संस्थानों के विद्यार्थियों ने रेलवे लाइनें बिछायीं और ऊर्जा-संस्थानों के विद्यार्थियों ने पनबिजलीघर बनाये। विद्यार्थी अपने श्रम से राज्य को बड़ी मदद देते हैं। दूसरी ओर राज्य उन्हें उनके श्रम का अच्छा पारिश्रमिक देता है – विद्यार्थी-दलों में काम करनेवाले छुट्टियों के दौरान २०० से ४०० रूबल तक कमा लेते हैं।

* * *

उत्पादन-कार्य से लोगों को अलग किये बिना उच्च शिक्षाप्राप्त विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के लिये सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा की राजकीय प्रणाली का बहुत विकास किया गया है। सोवियत संघ में २६ सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले उच्च विद्यालय तथा १२०० सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले विभाग तथा शाखायें हैं। इनमें २३ लाख ८३ हजार विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। पत्र-व्यवहारवाले और सन्ध्याकालीन उच्च विद्यालय तथा दिनी उच्च विद्यालयों के सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले विभाग ३०० से अधिक पेशों के विशेषज्ञों का प्रशिक्षण करते हैं। केवल उन्हीं उच्च विद्यालयों में पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा की व्यवस्था नहीं है, जहां स्थायी अभ्यास और उत्पादन के साथ स्थायी सम्बन्ध जरूरी होता है। चिकित्सा तथा कला-सम्बन्धी उच्च विद्यालयों और प्राविधिक उच्च विद्यालयों के कुछ विभाग इसके उदाहरण हैं।

आयु-सम्बन्धी किसी भी पाबन्दी के बिना ऐसे लोगों को पत्र-व्यवहारवाले और सन्ध्याकालीन उच्च विद्यालयों में दाखिल किया जाता है, जो माध्यमिक शिक्षाप्राप्त और किसी जगह काम कर रहे होते हैं। नियमतः इन विद्यालयों में, दिनी विद्यालयों की तुलना में शिक्षा-काल एक वर्ष अधिक होता है, मगर ६ साल से ज्यादा नहीं। सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले उच्च विद्यालयों के विद्यार्थियों को कुछ सुविधायें दी जाती हैं। चुनांचे, पहले और दूसरे वर्ष के विद्यार्थियों को प्रयोगशालाओं का काम पूरा करने के लिये और जांच तथा परीक्षा के समय अतिरिक्त सवेतन छुट्टी दी जाती है – पत्र-व्यवहारवालों को ३० दिन की और सन्ध्याकालीन विद्यार्थियों को २० दिन की। बाद के वर्षों में क्रमशः ४० और ३० दिनों की छुट्टी दी जाती है। अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों को सरकारी परीक्षायें देने के लिये ३० दिनों की सवेतन छुट्टी मिलती है। डिप्लोमा की तैयारी और मण्डन के लिये पत्र-व्यवहारवाले और सन्ध्याकालीन उच्च विद्यालयों के विद्यार्थियों को चार महीने की छुट्टी दी जाती है, जिसके दौरान उन्हें सरकारी वज़ीफ़ा मिलता है। काम करते हुए उच्च शिक्षा पानेवालों को अत्यधिक सामाजिक महत्त्व दिया जाता है और इसलिये उनके कार्य-स्थान पर आत्मनिर्भर ढंग से पढ़ाई जारी रखने के लिये सभी आवश्यक परिस्थितियां पैदा की जाती हैं।

सोवियत उच्च विद्यालय उन लोगों की योग्यता बढ़ाने का बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य पूरा करते हैं, जो जन-अर्थव्यवस्था, संस्कृति और शिक्षण

के क्षेत्र में काम कर रहे होते हैं। उच्च विद्यालयों तथा इसी तरह प्रमुख उद्यमों, अनुसन्धान-संस्थानों और रूपाकन ब्यूरो के अन्तर्गत योग्यता बढ़ानेवाले स्थायी कोर्सों, सेमिनारों और विभागों की व्यवस्था की गयी है।

उच्च शिक्षा-प्रणाली में नये ढंग की शिक्षा-संस्थाओं की एक कड़ी जोड़ी गयी है। ये संस्थायें हैं – कारख़ाने के उच्च प्राविधिक विद्यालय। ऐसे विद्यालय उन प्रमुख कारख़ानों के अभिन्न अंग होते हैं, जिनके अन्तर्गत उनकी स्थापना की जाती है। वे उत्पादन-श्रम और सैद्धान्तिक शिक्षण के सांघटिक संयुक्तीकरण के आधार पर विशेषज्ञों का प्रशिक्षण करते हैं। दूसरे प्रकार के पत्र-व्यवहारवाले और सन्ध्याकालीन उच्च विद्यालयों की तुलना में कारख़ानों के उच्च प्राविधिक विद्यालयों की श्रेष्ठता इस बात में निहित है कि वे काम और शिक्षण की नियमित अदला-बदली अधिक सफलता से सुनिश्चित कर सकते हैं। कारख़ाने के कर्मी-विद्यार्थी को उसकी भावी विशिष्टता से सम्बन्धित सभी उत्पादन-प्रक्रियाओं से विधिपूर्वक और नियमित रूप से परिचित होने की सम्भावना प्राप्त होती है।

सन्ध्याकालीन या पत्र-व्यवहारवाले उच्च विद्यालयों की पढ़ाई समाप्त करनेवालों को दिनी उच्च विद्यालयों के स्नातकों के समान ही अधिकार प्राप्त होते हैं। वे अपनी योग्यता के अनुरूप एक ही तरह के डिप्लोमा पाते हैं।

सोवियत उच्च विद्यालयों के डिप्लोमा प्राप्त विशेषज्ञ संसार के विभिन्न देशों में मिल सकते हैं। १६६० में मास्को में पैट्रिस लुमुम्बा नामक जन-मैत्री-विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। यह विश्वविद्यालय अफ़्रीका, एशिया और लैटिन अमरीका के विकासशील देशों को आवश्यक राष्ट्रीय बुद्धिजीवियों के प्रशिक्षण में सहायता देता है। इस समय इस विश्वविद्यालय में ८५ देशों के ४ हज़ार से अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इस विश्वविद्यालय के लगभग ३ हज़ार स्नातक अपने देशों में काम कर रहे हैं। जन-मैत्री-विश्वविद्यालय में विद्यार्थी केवल गहन सैद्धान्तिक ज्ञान ही नहीं प्राप्त करते। उन्हें पारस्परिक सम्मान की भावना, शान्ति, जनवाद और राष्ट्रीय प्रगति के लिये प्रयासशीलता की शिक्षा भी मिलती है।

सोवियत संघ विकासशील देशों में राष्ट्रीय बुद्धिजीवियों के प्रशिक्षण में भी बड़ी मदद देता है। एशिया और अफ़्रीका के अनेक देशों में सोवियत संघ

की मदद से शिक्षा-संस्थाओं का निर्माण और उन्हें साजसामान से लैस किया जा रहा है। वहां सोवियत उच्च विद्यालयों के प्राध्यापक काम करते हैं।

सोवियत उच्च विद्यालयों के विस्तृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क हैं। सोवियत संघ ५० से अधिक देशों के साथ नियमित विद्यार्थी-विनिमय करता है। सोवियत विद्वान और विद्यार्थी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, सभा-सम्मेलनों और गोष्ठियों में सक्रिय भाग लेते हैं। विश्वविद्यालय और उच्च विद्यालय हर वर्ष दसियों विदेशी प्रतिनिधिमण्डलों का अपने यहां स्वागत करते हैं। दूसरी ओर सोवियत प्रोफ़ेसर, प्राध्यापक और विद्यार्थी अपने विदेशी साथियों के अनुभव से परिचित होने के लिये दूसरे देशों में जाते हैं।

* * *

विशेष माध्यमिक शिक्षा। विशेष माध्यमिक शिक्षा सोवियत देश में कार्यकर्त्ताओं की प्रशिक्षण-प्रणाली का अभिन्न अंग है। विशेष माध्यमिक विद्यालय (प्राविधिक विद्यालय, विद्यालय और स्कूल) उद्योग, कृषि और संस्कृति की सभी शाखाओं के लिये विशेषज्ञों का प्रशिक्षण करते हैं। क्रान्तिपूर्व विशेष माध्यमिक शिक्षा का रूस में बहुत ही कम विकास हुआ था। १९१४–१९१५ में सारे देश में कुल ४५० विशेष विद्यालय थे जिन में ५४ हजार विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। पूरे साइबेरिया में सिर्फ़ इर्कूत्स्क में एक माध्यमिक प्राविधिक विद्यालय था। मध्य एशिया, कज़ाख़स्तान, जार्जिया और आर्मीनिया में एक भी ऐसी संस्था नहीं थी।

१९७०–१९७१ में सोवियत संघ के प्राविधिक माध्यमिक विद्यालयों, विशेष माध्यमिक विद्यालयों और स्कूलों में ४४ लाख विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। आबादी के प्रति १० हजार व्यक्तियों के पीछे माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या १७० थी। सोवियत संघ के सभी विशेष माध्यमिक विद्यालय सरकारी ख़र्च पर चलते हैं। उनमें मुफ़्त शिक्षा दी जाती है। अच्छे और जरूरतमन्द विद्यार्थियों को सरकारी वज़ीफ़े दिये जाते हैं, होस्टलों की व्यवस्था की जाती है। चालू पंचवर्षीय योजना में विशेष माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के वज़ीफ़े में औसतन ५० प्रतिशत की बढ़ती की पूर्वकल्पना की गयी है।

दिनी विशेष माध्यमिक विद्यालयों में १४ से ३० साल तक के ऐसे लोगों को दाख़िल किया जाता है, जिन्होंने आठवर्षीय या माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई समाप्त की हो और जो प्रवेश-परीक्षा में सफल रहे हों। उनमें पढ़ाई की अवधि ३-४ साल होती है (सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले विभागों में १ साल अधिक होता है)। सामान्य शिक्षा के माध्यमिक स्कूलों की पढ़ाई समाप्त करनेवालों के लिये प्राविधिक और विशेष माध्यमिक विद्यालयों की पढ़ाई की अवधि १ से २.५ साल तक कम होती है। इन विभागों में सामान्य शिक्षा के विषयों की पढ़ाई पर कम समय ख़र्च किया जाता है और विशेष तैयारी पर ही मुख्यतः ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

प्राविधिक और विशेष विद्यालय माध्यमिक योग्यतावाले विशेषज्ञों का प्रशिक्षण करते हैं, जैसे कि निर्माण और उत्पादन की सभी शाखाओं के लिये प्राविधिक, प्रारम्भिक स्कूलों के लिये अध्यापक, डाक्टरों के सहायक, जनाइयां और नर्सें, सेवाओं के विशेषज्ञ। सैद्धान्तिक पाठ्यक्रमों और शिक्षा तथा उत्पादन के अभ्यास में पारंगत होने पर हर विद्यार्थी सरकारी परीक्षा देता है या डिप्लोमा का मण्डन करता है।

विशेष माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा पूरी करनेवालों को अवश्य ही उनकी विशिष्टता के अनुसार काम दिया जाता है। आगे पढ़ाई जारी रखने के इच्छुकों को तीन साल तक काम करने के बाद उच्च विद्यालयों में दाख़िल होने का अधिकार प्राप्त है। उत्तम अंकों के साथ विशेष माध्यमिक शिक्षा समाप्त करनेवाले ५ प्रतिशत विद्यार्थियों को मन्त्रालय या विभाग के आदेशानुसार प्रवेश-परीक्षाओं के बिना उच्च विद्यालयों में दाख़िल होने का अधिकार होता है। विशेष माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा-प्रक्रिया एक तरह से माध्यमिक स्कूल और उच्च शिक्षा-संस्था की शिक्षण-प्रणाली और विधियों के बीच की कड़ी है। विशेष माध्यमिक विद्यालयों में पाठों और व्याख्यानों तथा कक्षों, प्रयोगशालाओं, वर्कशॉपों, शिक्षण-उद्यमों और क्लीनिकों में अमली काम के रूप में तालीम दी जाती है। उत्पादन-अभ्यास सभी विद्यार्थियों के लिये अनिवार्य है। विशेष माध्यमिक विद्यालयों का कार्यभार ऐसे विशेषज्ञों का प्रशिक्षण करना है, जो ख़ुद ही उत्पादन के प्राविधिक और संगठन-सम्बन्धी प्रश्नों को हल कर सकें।

* * *

व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा। सोवियत संघ में कुशल मजदूरों के प्रशिक्षण की राजकीय प्रणाली विद्यमान है। इसके संगठनात्मक रूप और विधियां उद्योगों और कृषि के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में मजदूर के श्रम-स्वरूप के परिवर्तन के अनुसार बदलते हैं और उन्हें सुधारा जाता है। विभिन्न व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालय और स्कूल उद्योगों, निर्माण, कृषि, संचार, नगरीय व्यवस्था और व्यापार के लिये एक हज़ार से अधिक पेशों के मजदूरों का प्रशिक्षण करते हैं। व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों के मुख्य रूप हैं ऐसे विद्यालय और स्कूल, जिनमें आठवर्षीय स्कूली शिक्षा के आधार पर विशिष्टता के अनुसार ६ महीने से ३ वर्ष तक शिक्षण होता है। इन विद्यालयों और स्कूलों में किसी प्रकार की परीक्षाओं के बिना दाख़िल हुआ जा सकता है। शिक्षा निःशुल्क है और छात्रों को सरकार की ओर से काम की वर्दी और खाना मुफ़्त दिया जाता है। दूसरे शहरों से आनेवालों के लिये होस्टलों की मुफ़्त व्यवस्था की जाती है।

१९७० में सोवियत संघ में ५ हज़ार से अधिक व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालय थे, जिनमें २० लाख से अधिक छात्र शिक्षा पा रहे थे। १ लाख ६० हज़ार इंजीनियर-शिक्षक, जिन में से १ लाख ३५ हज़ार उच्च और विशेष माध्यमिक शिक्षाप्राप्त हैं, भावी मजदूरों का शिक्षण करते हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४ वीं कांग्रेस के जन-अर्थव्यवस्था के विकास-सम्बन्धी निर्देशों में यह कहा गया है कि अगले पांच वर्षों में व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों में कम से कम ७५ लाख कुशल मजदूरों का प्रशिक्षण किया जाये।

उत्पादन-प्रविधि बहुत तेजी से विकसित हो रही है और लगातार बदलती जाती है। मजदूर से उत्पादन के वैज्ञानिक आधारों के बहुमुखी ज्ञान-विकास और उच्च प्राविधिक तथा सामान्य तैयारी की अपेक्षा की जाती है। इसलिये व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों और स्कूलों की शिक्षा-योजनाओं में सामान्य शिक्षा के विषयों के साथ-साथ सामान्य प्रौद्योगिकी, उत्पादन के संगठन और आर्थिक प्रबंध के मूल सिद्धान्तों और साथ ही विशिष्टता के अनुसार कई विशेष विषयों के अध्ययन को भी स्थान दिया गया है। सभी विद्यालयों और स्कूलों में श्रम के वैज्ञानिक संगठन के मूल सिद्धान्तों और समाजशास्त्र का अध्ययन किया जाता है।

प्राविधिक प्रगति लाखों मजदूरों के श्रम की प्रकृति में परिवर्तन करती

हैं और उनके श्रम को इंजीनियर, प्राविधिक और कृषिविज्ञ के श्रम के निकट कर देती है। उदाहरण के लिये, खराद और यन्त्र-मिस्तरी तथा इस्पात ढालनेवाला अपने कुल समय का लगभग ६० प्रतिशत नियन्त्रण, नियमन और विश्लेषणात्मक हिसाब-किताब में खर्च करता है यानी मुख्यत: मानसिक श्रम में लगाता है। ऐसे मजदूर के लिये केवल प्राविधिक विषयों की नहीं, बल्कि गणित, भौतिकी और रसायन की गहन जानकारी भी जरूरी है। कुशल मजदूर के प्रशिक्षण के लिये माध्यमिक शिक्षा जरूरी शर्त बनती जा रही है। इसीलिये कुछ व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा-संस्थाओं को माध्यमिक शिक्षावाले कुशल मजदूरों के ३-४ वर्षीय व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों में बदल दिया गया है। इस ढंग की माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओं का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। निकट भविष्य के सालों में ऐसे स्कूलों की पढ़ाई समाप्त करनेवाले ३-४ लाख युवा मजदूर उद्यमों में काम करने आ जायेंगे। ये विद्यालय कुछ अधिक जटिल पेशों के कुशल मजदूरों – स्वचालित लाइनों और कम्प्यूटरों से संचालित खरादों के मिस्तरियों, रासायनिक उत्पादन के यन्त्र-चालकों, कोयला और खनन तथा निर्माण-उद्योगों के लिये मशीन-चालकों आदि का प्रशिक्षण करते हैं। इन विद्यालयों की पढ़ाई खत्म करनेवालों को पेशे की पारंगतता के साथ-साथ माध्यमिक शिक्षा की समाप्ति का प्रमाणपत्र भी दिया जाता है। भविष्य में ऐसे विद्यालय व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा-प्रणाली की मूलभूत और निर्णायक कड़ी बन जायेंगे।

प्राविधिक विद्यालय, जिनमें माध्यमिक (दसवर्षीय) शिक्षाप्राप्त युवाजन शिक्षण पाते हैं, २५० से अधिक विशिष्टताओं के कुशल कारीगरों का प्रशिक्षण करते हैं। इन में शामिल हैं – मापन-उपकरणों के फ़िटर-मिस्तरी, रेडियो और टेलीविजनों के फ़िटर और नियामक, बिजली-वैक्यूम यन्त्रों और सेमीकंडक्टर-उपकरणों के जांचकर्त्ता और मरम्मत करनेवाले, कम्प्यूटरों के मिस्तरी। प्राविधिक विद्यालयों में सिखाये जानेवाले अधिकतर पेशों का प्रशिक्षण-काल १ साल और अधिक जटिल का १.५-२ साल है।

व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों और स्कूलों के कार्य का सब से अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि पेशे को उत्पादन-श्रम की प्रक्रिया में ही सिखाया जाता है और श्रम शिक्षण के ध्येयों की ही अच्छी तरह पूर्ति करता है। भावी कारीगर उत्पादन-प्रशिक्षण-प्रक्रिया में अपनी विशिष्टता के अनुसार

कुशलता और असली जानकारी ही हासिल नहीं करता, बल्कि अपने काम के युक्तियुक्त नियोजन और उपयुक्त प्राविधिक प्रक्रियायें चुनने की योग्यता भी प्राप्त कर लेता है।

किन्तु उत्पादन की सामान्य गति के अनुसार काम करने और श्रम तथा उत्पादन के प्रगतिशील संगठन के उपयोग की शिक्षा कारखाने, खान और निर्माण स्थल की वास्तविक परिस्थितियों में पाना ही सम्भव है। इसीलिये इन स्कूलों और विद्यालयों में छात्रों का प्रशिक्षण उद्यमों में अभ्यास के साथ समाप्त होता है।

जन-अर्थव्यवस्था में नई प्रविधि के विस्तृत उपयोग के सिलसिले में व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों की गतिविधियों के सभी पहलुओं में निरन्तर सुधार हो रहा है – पेशों की सूची क्रमिक रूप से अधिक बड़ी होती जा रही है, इस बात की पूर्वकल्पना की जाती है कि छात्र आधुनिक प्रविधि, प्रगतिशील प्रौद्योगिकी और अग्रणी श्रम-विधियों में अच्छी पारंगतता प्राप्त कर लें। उच्च उत्पादनवाली मशीनों और यन्त्रों का दोषहीन कार्य सुनिश्चित करनेवाले उपायों की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षण-कार्य के लिये नियमतः अधिक जटिल माल-उत्पादन को चुना जाता है।

भावी कुशल मजदूर केवल अपने पेशे में ही पारंगत नहीं होता, बल्कि उसका सर्वतोमुखी विकास भी हो जाता है। सभी व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों में सौन्दर्यशास्त्र का कोर्स पढ़ाया जाता है। पाठ्येतर कार्य के रूप और विधियां बहुत विविध है, उनका ध्येय व्यावसायिक रुचियों और सामाजिक-राजनैतिक ज्ञान को विस्तृत और गहन बनाना है, उनके गुणों और झुकावों का विकास करना है, युवाजन की सक्रियता और पहलक़दमी को बढ़ाना है तथा उनके फ़ुरसत के वक़्त की अच्छी व्यवस्था करना है। इन शिक्षा-संस्थाओं में प्राविधिक सृजन-कार्य काफ़ी विकसित है। हर साल व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों और स्कूलों के छात्रों के प्राविधिक सृजन की इलाक़ाई, प्रादेशिक और जनतन्त्रीय प्रदर्शनियां आयोजित की जाती हैं। अमरीका और यूरोप के कई देशों में उनकी कृतियों का सफल प्रदर्शन हो चुका है।

व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों और स्कूलों में इतिहास और प्रदेश-ज्ञान-मण्डल तथा सहगान, संगीत, नाटक और नृत्य-दल संगठित किये गये हैं। पर्यटकों, डाकटिकट और कला-प्रेमियों के क्लब और शौक़िया सिने-

स्टूडियो बनाये जाते हैं। इन संस्थाओं के अखिल सोवियत संघीय शौक़िया कला-कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हैं।

भावी कुशल मज़दूर खेलकूद में बहुत दिलचस्पी लेते हैं। विद्यालयों और स्कूलों में प्रातःकालीन व्यायाम और उत्पादन-सम्बन्धी विशेष व्यायाम अनिवार्य है तथा पर्यटनों का बहुधा आयोजन किया जाता है। अधिकांश विद्यालयों और स्कूलों के अपने स्टेडियम और खेलकूद-मैदान हैं। व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा-संस्थाओं का खेलकूद-समाज हमारे देश का एक सर्वाधिक सशक्त संगठन है। इस समाज ने सैकड़ों प्रमुख खिलाड़ियों-चैम्पियनों और खेलकूद-विशारदों का प्रशिक्षण किया है।

म० न० कोल्माकोवा

शिक्षाशास्त्र

सोवियत जन-शिक्षा-प्रणाली, माध्यमिक और उच्च विद्यालयों, व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों और स्कूलों का शिक्षा-सार, बालोद्यान से उच्च शिक्षा-संस्थाओं तक उगती पीढ़ी की नैतिक, शारीरिक और सौन्दर्यशास्त्रीय शिक्षा-दीक्षा ठोस वैज्ञानिक नींव पर खड़ी की गयी है।

सोवियत शिक्षाशास्त्र ने अपने उद्देश्यों, सार और विधियों की दृष्टि से उगती पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा तथा छात्रों की श्रमगत और सामाजिक गति-विधियों की तैयारी की मूलतः नयी प्रणाली निरूपित की है और उसे सामान्य शिक्षा के स्कूलों में व्यावहारिक रूप देने में सहायता की है। अतीत के जनवादी शिक्षाशास्त्र, उसकी श्रेष्ठ परम्पराओं और प्रगतिशील विचारों का सुयोग्य उत्तराधिकारी होने के नाते वह रूसी और विदेशी शिक्षाशास्त्र की समृद्ध विरासत का ऊंचा मूल्यांकन, उसका उपयोग और सृजनात्मक विकास करती है। रूसी क्रान्तिकारी जनवादियों – हर्जेन, बेलीन्स्की, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्यूबोव और पिसारेव के शिक्षाशास्त्रीय विचारों, महान काल्पनिक-समाजवादियों – सेन-सीमोन, फ़ूरिये और ओवेन के दृष्टिकोण, पेरिस कम्यून के बहुमूल्य शिक्षाशास्त्रीय अनुभव, कोमेन्स्की, रूसो और पेस्तालोत्सि के

मानवतावाद तथा उशीन्स्की और तोल्स्तोय की शिक्षाशास्त्रीय विरासत को सोवियत शिक्षाशास्त्र के स्वर्ण कोश में स्थान दिया गया है और सोवियत संघ की पनपती पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा की मूलभूत समस्याओं के समाधान ढूंढ़ते वक़्त इन सभी को ध्यान में रखा गया है। मगर साथ ही सोवियत शिक्षाशास्त्र शिक्षाशास्त्रीय विचारों के विकास की नयी अवस्था है। समाजवादी समाज की परिस्थितियों में नयी पीढ़ियों के विकास की लेनिनवादी शिक्षा इसका वैचारिक आधार है।

तथ्यों के गहन विश्लेषण के आधार पर व्ला० इ० लेनिन ने अच्छी तरह यह स्पष्ट कर दिया कि पूंजीवाद की परिस्थितियों में स्कूल अनिवार्य रूप से पूंजीपतियों के वर्ग-प्रभुत्व का साधन बन जाता है। पूंजीपति वर्ग की भावनाओं से सराबोर स्कूल पूंजीवादी उत्पादन के लिये आज्ञाकारी और समझदार मज़दूरों का प्रशिक्षण ही अपना ध्येय बना लेता है। व्ला० इ० लेनिन के निष्कर्ष आज भी ऐसे लोगों का भंडाफोड़ करने में मदद देते हैं, जो पूंजीवादी समाज में स्कूल के वर्गीय लक्ष्यों पर पर्दा डालते हैं, "जन-शिक्षा" और "भागीदारों की भावना की शिक्षा" जैसे शब्दों के साथ चालाकी से खिलवाड़ करते हैं, मगर वास्तव में उच्च वर्गों की पूंजीवादी शिक्षा-प्रणाली को सुरक्षित रखते हैं और मज़बूत करते हैं। व्ला० इ० लेनिन ने शिक्षा-दीक्षा के क्षेत्रों में सर्वहारा के सिद्धान्त और मांगें निरूपित कीं। नये समाज के सर्वतोमुखी विकसित और सक्रिय निर्माताओं के प्रशिक्षण का कार्यभार सोवियत शिक्षा-प्रणाली के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए उन्होंने शिक्षण के साथ उत्पादन-श्रम के मिलाप, सिद्धान्त और व्यवहार के घनिष्ठ सम्बन्ध को इसकी पूर्ति की अनिवार्य शर्त माना। लेनिन ने इस बात का स्पष्ट कार्यक्रम पेश किया कि युवाजन को क्या सिखाया जाये और कैसे सिखाया जाये। लेनिन के शब्दानुसार, मानवजाति द्वारा संचित ज्ञान-भण्डार में से हमें वह ले लेना चाहिये, जो कम्युनिज्म के निर्माण के लिये वास्तव में ही ज़रूरी है। मानवजाति द्वारा अर्जित सारी ज्ञान-सम्पत्ति की जानकारी हासिल करनी चाहिये।

विज्ञानों के मूलभूत सिद्धान्तों की जानकारी, युवाजन का विस्तृत पॉलीटेक्निकल शिक्षण, उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण और उच्च नैतिक गुणों की शिक्षा, लेनिन इन सभी चीजों को अविच्छेद्य शृंखला मानते थे।

महान अक्तूबर क्रान्ति के बाद के पहले वर्षों में सोवियत शिक्षाशास्त्र

के सामान्य ध्येयों और सिद्धान्तों का निरूपण हुआ। ये थे — मानवतावाद, सामूहिकतावाद, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, स्कूलों का विस्तृत स्वसंचालन, छात्रों तथा अध्यापकों के बीच नये सम्बन्ध तथा सर्वतोमुखी व्यक्तित्व-विकास की अनिवार्य शर्त के रूप में शिक्षा और श्रम की सूत्रबद्धता। ये विचार एकरूपी श्रमगत स्कूल के उन क़ानूनों के आधार बने, जो सोवियत सत्ताकाल के पहले सालों में स्वीकार किये गये थे।

रूसी युवा कम्युनिस्ट संघ की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस (अक्तूबर १९२०) में व्ला० इ० लेनिन का भाषण सोवियत शिक्षाशास्त्र के लिये विशेष रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। लेनिन ने अपने उस भाषण में पुरानी शिक्षा-प्रणाली की गहन और सैद्धान्तिक रूप से आलोचना की और सिद्धान्त तथा व्यवहार, शिक्षा और जीवन के बीच सम्बन्ध के प्रश्न को नये ढंग से प्रस्तुत किया।

लेनिन ने सिखाया कि नये कम्युनिस्ट समाज के निर्माता को केवल विज्ञानों के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान ही नहीं होना चाहिये, बल्कि पोलीटेक्निकल तैयारी भी होनी चाहिये। लेनिन ने उगती पीढ़ियों के नैतिक शिक्षण के मूलभूत कार्यभारों का निरूपण और यह स्पष्ट किया कि कम्युनिज्म की विजय का संघर्ष कम्युनिस्ट नैतिकता का आधार है। उन्होंने ऐसे नैतिक सूत्रों की निरर्थकता और निराधारिता ज़ाहिर की, जिनका लोगों के जीवन और संघर्ष से कोई सम्बन्ध नहीं है और जो नैतिक चेतना को नैतिक व्यवहार से अलग करते हैं। इसके विपरीत उन्होंने यह स्थापना प्रस्तुत की कि सामान्य जन-श्रम में हिस्सा लेते हुए ही असली कम्युनिस्ट बना जा सकता है।

युवा कम्युनिस्ट संघ की तीसरी कांग्रेस में लेनिन का भाषण शिक्षाशास्त्र को राजनीति से मिलाने, मार्क्सवाद और समाजवादी क्रान्ति के कार्यभारों के प्रकाश में महत्त्वपूर्ण शिक्षाशास्त्रीय समस्याओं के सृजनात्मक निर्णय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह भाषण सोवियत शिक्षाशास्त्र की वह सैद्धान्तिक बुनियाद है, जिस पर उसके अनेक निष्कर्ष और स्थापनायें आधारित हैं। सोवियत शिक्षाशास्त्र के निरूपण और विकास में सोवियत राज्य के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं न० कों० क्रूप्स्काया, अ० व० लुनाचार्स्की, म० न० पोक्रोव्स्की और सोवियत स्कूल-प्रणाली के प्रतिभाशाली शिक्षाशास्त्रियों तथा संगठनकर्त्ताओं स० त० शात्स्की और अ० स० मकारेन्को ने अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। उन्होंने नयी शिक्षा-प्रणाली के सार की

समस्याओं के समाधान ढूंढ़ने के लिये बहुत काम किया, बालकों में नये सम्बन्धों के निर्माण और उनके कार्यकलापों, बालकों और युवाजन की सक्रियता तथा आत्मनिर्भरता का सिद्धान्त रखा। उनकी रचनायें अध्यापकों के लिये आज भी बहुत महत्व रखती हैं। उगती पीढ़ियों की शिक्षा-दीक्षा की सामयिक समस्याओं के समाधान ढूंढ़ने के लिए वे बार-बार उनके विचारों की सहायता लेते हैं।

इस समय सोवियत संघ की दसियों वैज्ञानिक संस्थाओं में शिक्षाशास्त्र, बाल और शिक्षाशास्त्रीय मनोविज्ञान, शरीरक्रियाविज्ञान और दोषविज्ञान पर अनुसन्धान-कार्य हो रहा है। इन में से प्रमुखतम है – सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी, जो जन-शिक्षा-क्षेत्र के प्रमुखतम विद्वानों और कार्यकर्त्ताओं को सूत्रबद्ध करती है।

अक्तूबर १९४३ में, जब फ़ासिस्ट जर्मनी के साथ जंग अपनी चरम सीमा पर थी, सोवियत सरकार ने वैज्ञानिक शिक्षाशास्त्रीय केन्द्र के रूप में रूसी संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी की स्थापना को आवश्यक माना। इसे बहुत ही उत्तरदायित्वपूर्ण ये कार्य सौंपे गये – देश में जन-शिक्षा के विकास और शिक्षाशास्त्रीय ज्ञान-प्रसार में सहायता देना, सामान्य और विशेष शिक्षाशास्त्र, शिक्षण के मनोविज्ञान और विधियों-सम्बन्धी प्रश्नों के हल ढूंढ़ना, शिक्षाशास्त्र और मनोविज्ञान के वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण करना।

१९६६ में रूसी संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के आधार पर सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी बनाई गयी। ज़ाहिर है कि उसके कार्य अधिक विस्तृत और जटिल हो गये। यह अकादमी अब देश की अनुसन्धान-संस्थाओं और उच्च शिक्षा-संस्थाओं द्वारा शिक्षाशास्त्र, सामान्य और शिक्षाशास्त्रीय मनोविज्ञान, बाल तथा तरुणावस्था की शरीरक्रिया-सम्बन्धी समस्याओं पर किये जा रहे अनुसन्धान-कार्य में ताल-मेल पैदा करती है। वह अनुसन्धान-कार्य की मुख्य दिशायें निर्धारित करती है, संघीय जनतंत्रों के स्कूलों और शिक्षाशास्त्र-सम्बन्धी अनुसन्धान-संस्थानों, शिक्षाशास्त्रीय संस्थानों तथा अन्य वैज्ञानिक संस्थाओं की योजनाओं को जांचती है और विभिन्न शिक्षाशास्त्रीय समस्याओं के बारे में वैज्ञानिक कार्यों के परिणामों को अमली शक्ल देने की अखिल सोवियत संघीय योजना बनाती है।

सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के ५३ सदस्य और ७८ सहयोगी सदस्य हैं। उसकी संस्थाओं में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के

१००० से अधिक विशेषज्ञ काम करते हैं। उनके अलावा अकादमी एक हजार से अधिक ऐसे कार्यकर्त्ताओं को भी सूत्रबद्ध करती है, जो इसके स्थायी कर्मचारी नहीं हैं और नियमत: सर्वश्रेष्ठ अध्यापकों में से होते हैं। अकादमी में तीन शाखायें बनाई गई हैं–शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्त और इतिहास की शाखा, अध्यापनशास्त्र और वैयक्तिक विधियों की शाखा तथा मनोविज्ञान और आयुगत शरीरक्रियाविज्ञान की शाखा। ये शाखायें शिक्षा-दीक्षा के सिद्धान्तों और व्यवहारों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर सृजनात्मक वाद-विवादों का आयोजन करती है, स्कूल-कार्य के बारे में सिफारिशें तैयार करती हैं, उन पर विचार-विमर्श करती हैं।

सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी १२ अनुसन्धान-संस्थानों को शृंखलाबद्ध करती है। ये हैं–सामान्य शिक्षाशास्त्र का संस्थान, शिक्षा-सार और विधियों का संस्थान, वयस्कों की सामान्य शिक्षा का संस्थान, कलात्मक शिक्षण का संस्थान, सामान्य और शिक्षाशास्त्रीय मनोविज्ञान का संस्थान, स्कूली साजसामान और शिक्षण के प्राविधिक साधनों का संस्थान, बालकों और किशोरों के शरीरक्रियाविज्ञान का संस्थान, दोषविज्ञान का संस्थान, स्कूलपूर्व के पालन-शिक्षण का संस्थान, जातीय स्कूलों में रूसी भाषा के अध्यापन का संस्थान, श्रम और व्यवसाय-उन्मुख शिक्षा का संस्थान। १९६९ में अकादमी के अन्तर्गत विश्वविद्यालयों और अध्यापक प्रशिक्षण-संस्थान के शिक्षाशास्त्रीय विषयों के प्राध्यापकों की योग्यता बढ़ाने का संस्थान क़ायम किया गया। अकादमी के अन्तर्गत ही आते हैं "शिक्षाशास्त्र" नामक प्रकाशन गृह, जन-शिक्षा का उशीन्स्की नामक राजकीय पुस्तकालय जिसमें २० लाख से अधिक पुस्तकें हैं, १४ प्रयोगीय स्कूल, कुछ संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों तथा देश के कुछ प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों में भी शाखायें और समस्यामूलक प्रयोगशालायें। अकादमी के ३०० से अधिक स्नातकोत्तर विद्यार्थी हैं। अकादमी "सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी की रिपोर्टें" तथा "सोवियत शिक्षाशास्त्र", "मनोविज्ञान के प्रश्न", "परिवार और स्कूल", "जातीय स्कूल में रूसी भाषा" और "दोषविज्ञान के प्रश्न" वैज्ञानिक-सैद्धान्तिक पत्रिकायें प्रकाशित करती है। सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के साथ मिलकर शिक्षाशास्त्रीय विज्ञान अकादमी "क्वान्त" नामक भौतिकी-गणितीय पत्रिका निकालती है।

अकादमी का ध्यान मुख्यत: बालकों और युवाजन की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा के व्यावहारिक पक्ष के अध्ययन और सामान्यीकरण, बालकों पर अन्य

बच्चों, परिवार और सामाजिक हलकों के शिक्षात्मक प्रभाव, उगती पीढ़ियों की कम्युनिस्ट नैतिकता, देशभक्ति और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना के अनुरुप शिक्षण से सम्बन्धित प्रश्नों के बारे में वैज्ञानिक सिफ़ारिशों की तैयारी पर केन्द्रित है।

सामाजिक और वैज्ञानिक-प्राविधिक प्रगति को ध्यान में रखते हुए शिक्षण के सार, रूपों, विधियों तथा साधनों के और अधिक सुधार तथा सर्वसामान्य माध्यमिक शिक्षा की ओर संक्रमण के उपाय ढूंढने के लिये बहुत-से अनुसन्धान किये जा रहे हैं। इस समस्या पर कई सालों से शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के प्रमुख विद्वानों के साझे प्रयास से काम किया जा रहा है। सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी और सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के विशेष आयोग ने माध्यमिक स्कूल का नया शिक्षा-सार, नये पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें तैयार की हैं। इस कार्य में अकादमीशियनों अ० न० कोल्मोगोरोव, इ० क० किकोइन, म० व० नेचकिना, न० न० सेम्योनोव, म० अ० लाव्रेन्त्येव तथा बहुत-से अन्य विशेषज्ञों ने सक्रिय भाग लिया और ले रहे हैं। स्कूलों के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध है, वे नये पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों की प्रयोगीय जांच में हिस्सा लेते हैं और अध्यापकों के लिए सहायक पुस्तकें लिखते हैं। ज्ञान की सभी शाखाओं के विद्वानों ने शिक्षाशास्त्रियों के साथ मिलकर सामान्य शिक्षा के माध्यमिक स्कूल की पाठ्य-योजना को सुधारा। नये पाठ्यक्रम पहले के पाठ्यक्रमों से मूलतः भिन्न हैं। उन में विज्ञान-प्रविधि की उपलब्धियों के अनुरूप स्कूली शिक्षा के वैज्ञानिक-सैद्धान्तिक स्तर को ऊंचा करने, छात्रों के वैचारिक-राजनैतिक, नैतिक, सौन्दर्यबोधात्मक और शारीरिक शिक्षण पर अधिक जोर देने की पूर्वकल्पना की गयी है, वे स्कूली छात्रों की श्रम और पोलीटेक्निकल तैयारी के कार्यभारों को अधिक अच्छी तरह से पूरा करना सम्भव बनाते हैं, शिक्षावर्षों में पाठ्यसामग्री का अधिक युक्तियुक्त विभाजन और मिले-जुले तथा सम्बन्धित विषयों के बीच अधिक क्रमिक सम्पर्क सुनिश्चित करते हैं। नयी शिक्षा-योजना छात्रों पर पढ़ाई के बोझ को काफ़ी हद तक कम करना सम्भव बनाती है। उसमें स्कूल की एकरूपता और छात्रों के वैयक्तिक रुझानों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखने के दो सिद्धान्तों का मिलाप किया गया है।

सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी में सामान्य, शिक्षाशास्त्रीय और सामाजिक मनोविज्ञान का बहुत विकास किया गया है। व्यक्तित्व-निर्माण

को निर्धारित करनेवाली परिस्थितियों और नियमितताओं, बालकों और किशोरों की व्यक्तिगत और आयुगत क्षमताओं, उनके रुझानों और रुचियों, सामान्य मानसिक और शारीरिक विकास के दोषों के कारणों और उनकी रोक-थाम के सम्भव उपायों का अध्ययन किया जा रहा है। विद्वान स्कूलों के लिये शिक्षा-दीक्षा की प्रक्रिया के सुधार, छात्रों की ज्ञान-अर्जन की क्षमताओं के विकास और उनकी चिन्तन-क्रिया की सक्रियता के सम्बन्ध में सिफ़ारिशें तैयार करते हैं। छात्रों के नैतिक और सौन्दर्यगत शिक्षण, सामाजिक और श्रमगत सक्रियता के शिक्षण, श्रम के प्रति कम्युनिस्ट रवैये के निर्माण की समस्याओं के समाधान ढूंढ़े जा रहे हैं, छात्रों के जीवन-दृष्टिकोण के निर्माण में ज्ञान और श्रम-सम्बन्धी गतिविधियों की भूमिका का अध्ययन किया जा रहा है। स्कूलों की शिक्षा-दीक्षा के सार और विधियों का अनुसन्धान किया जा रहा है।

आयुगत शरीरक्रियाविज्ञान के विशेषज्ञ बालकों और किशोरों की उच्चतम स्नायविक क्रियाशीलता, व्यायाम और स्कूली स्वास्थ्य-सफ़ाई की समस्याओं का अध्ययन करते हैं और स्कूली छात्रों की शिक्षा तथा श्रम-सम्बन्धी गतिविधियों का वैज्ञानिक कार्यक्रम बनाते हैं।

ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के विशेषज्ञ शारीरिक और मानसिक दोषवाले बालकों की शिक्षा-दीक्षा के प्रश्नों के हल ढूंढ़ने में व्यस्त हैं। दोषविज्ञान के संस्थान ने दोषवाले बालकों के दोष-निश्चय के वैज्ञानिक तरीक़े और उन्हें श्रेणीबद्ध करने के सिद्धान्त निरूपित किये हैं। सभी प्रकार के ऐसे स्कूलों के लिए शिक्षा-योजनायें, कार्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें बनाई जा चुकी हैं।

स्कूलों, स्कूलपूर्व और ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं के शिक्षकों की तैयारी, उनकी योग्यता-वृद्धि की अनुकूलतम परिस्थितियों, अध्यापक के सर्वोत्तम श्रम-संगठन तथा शिक्षा-दीक्षा की प्रक्रियाओं के विभिन्न रूपों के श्रेष्ठ संचालन के अध्ययन को सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी के अनुसन्धानों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शिक्षा के आयोजन और आर्थिक प्रबन्ध तथा जन-अर्थव्यवस्था के लिए उसकी प्रभावशीलता के प्रश्नों की ओर भी विद्वान लोग ध्यान दे रहे हैं।

सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी सोवियत संघ और विदेशों में शिक्षाशास्त्र तथा स्कूली मामलों से सम्बन्धित प्रश्नों के बारे में विस्तृत वैज्ञानिक सूचना-संग्रह करती है।

अकादमी की अनुसन्धान-संस्थायें, विश्वविद्यालयों और अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के शिक्षाशास्त्र तथा मनोविज्ञान-सम्बन्धी उपविभाग और शिक्षाशास्त्री विदेशों के शिक्षाशास्त्रियों के साथ सम्पर्क बनाये हुए हैं। सोवियत विद्वान उगती पीढ़ियों की शिक्षा-दीक्षा से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय सभा-सम्मेलनों और गोष्ठियों में सक्रिय भाग लेते हैं। सोवियत शिक्षाशास्त्रीय प्रेस में विदेशी अनुभव का विस्तृत उल्लेख किया जाता है, शिक्षाशास्त्रीय साहित्य का नियमित रूप से आदान-प्रदान किया जाता है। जनशिक्षा-सम्बन्धी उशीन्स्की नामक पुस्तकालय ही १०० से अधिक विदेशी शिक्षाशास्त्रीय संस्थाओं, संगठनों और प्रकाशन गृहों के साथ पुस्तक-विनिमय करता है। अकादमी के स्नातकोत्तर विभाग में बहुत-से विदेशी विद्यार्थी हैं।

जनता में शिक्षाशास्त्रीय ज्ञान-प्रचार का सक्रिय कार्य किया जा रहा है। अकादमी माता-पिताओं के सम्मुख व्याख्यान देने, शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान और आयुगत शरीरक्रिया के बारे में सुबोध वैज्ञानिक साहित्य तैयार करने के लिये विद्वानों को आमन्त्रित करती है, रेडियो तथा टेलीविजन पर विद्वानों, अध्यापकों और जन-शिक्षा-निकायों के संचालकों के भाषणों का आयोजन करती है।

अध्यापकों, जन-शिक्षा-निकायों के कार्यकर्त्ताओं तथा माता-पिताओं की मदद के लिये सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय अकादमी बहुत बड़ी मात्रा में शिक्षाशास्त्रीय साहित्य प्रकाशित करती है।

शिक्षाशास्त्र के विद्वान देश के स्कूलों और अध्यापकों के अनुभव का लगातार अध्ययन करते हैं। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये वैज्ञानिक-व्यावहारिक सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है, जिनमें अध्यापक, स्कूलों के संचालक और जन-शिक्षा-निकायों के कार्यकर्त्ता हिस्सा लेते हैं। हर दो साल के बाद प्रादेशिक, जनतन्त्रीय और अखिल सोवियत संघीय "शिक्षाशास्त्रीय सम्मेलन" आयोजित किये जाते हैं, जिनमें अध्यापकगण बालकों और युवाजन के साथ अपने कार्य-अनुभव की चर्चा करते हैं। हजारों लोग इन सम्मेलनों में हिस्सा लेते हैं। इनकी सामग्री को प्रेस में विस्तृत स्थान दिया जाता है।

सोवियत संघ की शिक्षाशास्त्रीय विज्ञान अकादमी के अलावा देश के संघीय जनतन्त्रों के स्कूल तथा शिक्षाशास्त्रीय अनुसन्धान-संस्थाओं और देश के विश्वविद्यालयों तथा अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों के शिक्षाशास्त्र और मनोविज्ञान-सम्बन्धी २०० से अधिक उपविभागों में शिक्षाशास्त्र,

12*

मनोविज्ञान और आयुगत शरीरक्रियाविज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धान-कार्य हो रहा है।

संघीय जनतन्त्रों के शिक्षाशास्त्रीय अनुसन्धान-संस्थान जनतन्त्र के स्कूलों और जन-शिक्षा-प्रणाली की विशिष्ट समस्याओं के समाधान ढूढ़ते हैं – अपनी जनता और सोवियत संघ की अन्य जातियों के शिक्षाशास्त्रीय विचारों के इतिहास का अध्ययन करते हैं, स्कूलों में मातृभाषा, जनतंत्र के इतिहास और भूगोल-शिक्षण के सार तथा विधियों पर काम करते हैं, स्कूलों के लिए मातृभाषा में पाठ्यपुस्तकें तैयार करते हैं।

म० इ० कोन्द्राकोव

सोवियत संघ में जन-शिक्षा-कार्य का संचालन

जन-शिक्षा का संचालन सोवियत राज्य का एक सब से महत्त्वपूर्ण कार्य है। शिक्षा के सभी राजकीय निकाय जन-शिक्षा के अखिल सोवियत संघीय क़ानूनों के अनुसार काम करते हैं।

सोवियत संघ का शिक्षा-मन्त्रालय, सोवियत संघ का उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा का मन्त्रालय, सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद के अन्तर्गत व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा की राजकीय समिति, सोवियत संघ का स्वास्थ्य-रक्षा-मन्त्रालय और संस्कृति मन्त्रालय, देशव्यापी पैमाने पर जन-शिक्षा का संचालन करते हैं। संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों में अपने शिक्षा-मन्त्रालय हैं। हां, पर इन में उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा के मन्त्रालय नहीं हैं।

बाल-परामर्श-केन्द्र, अस्पताल, आरोग्यसदन और शिशुसदनों का विस्तृत जाल सोवियत संघ, संघीय और स्वायत्त जनतन्त्रों के स्वास्थ्य-रक्षा-मन्त्रालयों के संचालन में हैं। शिक्षा-मन्त्रालय स्कूलपूर्व की बाल-संस्थाओं (बालोद्यानों), सामान्य शिक्षा के स्कूलों (सन्ध्याकालीन और पत्र-व्यवहारवाले स्कूलों समेत),

यतीमखानों, छात्रावास-स्कूलों, ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं, अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं (अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों और विद्यालयों) और अध्यापकों की योग्यता बढ़ानेवाली सभी संस्थाओं (अध्यापकों के ज्ञान-सुधार-संस्थान, नगरीय और हलकों के विधि-कक्षों) का संचालन करते हैं।

विभिन्न मन्त्रालय और विभाग उच्च तथा माध्यमिक विशेष शिक्षा-संस्थाओं का संचालन करते हैं। उच्च चिकित्सा विद्यालय, स्कूल और विद्यालय स्वास्थ्य-रक्षा-मन्त्रालय, कृषि अकादमी, उच्च विद्यालय और प्राविधिक स्कूल कृषि-मन्त्रालय, परिवहन-सम्बन्धी उच्च विद्यालय और प्राविधिक स्कूल यातायात-मन्त्रालय, संस्कृति के उच्च विद्यालय, संगीत-महाविद्यालय, ललित कला के स्कूल और उच्च विद्यालय, थियेटर तथा सिने-सम्बन्धी उच्च विद्यालय आदि संस्कृति-मन्त्रालय के संचालन में हैं।

उच्च विद्यालय और प्राविधिक स्कूल जिन मन्त्रालयों या विभागों के संचालन में होते हैं, वे ही उनकी अध्यापक और छात्र-संख्या की योजना बनाते हैं, शैक्षणिक-आर्थिक आधार, निर्माण और साज़सामान की चिन्ता करते हैं।

वे सोवियत संघ की उच्च और माध्यमिक विशेष शिक्षा के मन्त्रालय और उसी के अनुरूप संघीय जनतन्त्रीय मन्त्रालयों द्वारा तैयार और पुष्ट की गयी स्थापनाओं के आधार पर शिक्षा-संस्थाओं के शिक्षा-दीक्षा-विधियों और विज्ञान-सम्बन्धी सारे कार्य का संचालन करते हैं।

इस तरह की संचालन-प्रणाली शिक्षा-संस्थाओं का उचित प्रबन्ध, विद्यार्थियों के विशेष प्रशिक्षण के सार के प्रति उपयुक्त रवैया और उच्च योग्यतावाले वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं का अध्यापन-कार्य की ओर खींच जाना सुनिश्चित करती है।

सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद के अन्तर्गत व्यावसायिक-प्राविधिक शिक्षा की राजकीय समिति व्यावसायिक-प्राविधिक विद्यालयों और स्कूलों के माध्यम से जन-अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं के लिये कुशल मजदूर प्रशिक्षित करने के सारे काम का निर्देशन करती है।

सोवियत देश में जन-शिक्षा-प्रणाली राज्य की सारी सांस्कृतिक तथा ज्ञान-वर्द्धन की गतिविधियों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है।

स्कूलों के समान प्रेस, रेडियो, सिनेमा, टेलीविज़न और विचारधारात्मक शिक्षण के अन्य साधन भी मेहनतकशों के राजनैतिक-सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा करने में सहायता देते हैं।

सोवियत राज्य के कुल बजट का ४० प्रतिशत से अधिक भाग शिक्षा, स्वास्थ्य-रक्षा, सामाजिक सुरक्षा और अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यों पर ख़र्च किया जाता है।

आइये, सामान्य शिक्षा के संचालन-निकायों के ढांचे का अधिक विस्तारपूर्वक वर्णन करें। सोवियत संघ का शिक्षा-मन्त्रालय उच्चतम संचालन-निकाय है। पन्द्रह के पन्द्रह संघीय जनतन्त्रों में अपना शिक्षा-मन्त्रालय है। वे अपने जनतन्त्रों की मन्त्रिपरिषदों और सोवियत संघ के शिक्षा-मन्त्रालय के निर्देशन में काम करते हैं।

स्वायत्त जनतन्त्रों में शिक्षा-मन्त्रालय और प्रदेशों, इलाक़ों, जातीय क्षेत्रों, नगरों और हलक़ों में मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतों की कार्यकारिणी समितियों के शिक्षा-विभाग शिक्षा-कार्य का संचालन करते हैं।

शिक्षा-मन्त्री और मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की कार्यकारिणी समितियों के जन-शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष जनतन्त्र, प्रदेश, इलाक़े, क्षेत्र, नगर और हलक़े की जन-शिक्षा की स्थिति के लिये व्यक्तिगत रूप से ज़िम्मेदार हैं।

जन-शिक्षा के संचालन में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का सिद्धान्त मूलभूत प्रश्नों के हल के मामले में सामूहिकता के साथ अविच्छिन्न रूप से घुल-मिल जाता है। इस से जन-शिक्षा की जटिल प्रणाली के संचालन के लिये कर्मियों के बड़े दायरे के अनुभव और ज्ञान, अध्यापकगण की पहलक़दमी तथा सक्रियता का उपयोग करना सम्भव हो जाता है। इस उद्देश्य से मन्त्रालयों में मन्त्रियों की अध्यक्षता में बोर्ड बनाये गये हैं, जो परामर्शदाता निकाय हैं। मन्त्री उनके निर्णयों की पुष्टि करते हैं।

बोर्ड स्कूल की गतिविधियों के बहुत-से प्रश्नों (शिक्षा-योजनाओं, पाठ्यक्रमों, हिदायतों, पाठ्यपुस्तकों, विधि-सम्बन्धी सहायक सामग्री आदि) पर विचार करते हैं।

जन-शिक्षा के प्रदेश, इलाक़ा, क्षेत्र, नगर और हलक़ा-विभागों के अन्तर्गत जन-शिक्षा-सम्बन्धी परिषदें बनाई जाती हैं।

जनवादी केन्द्रवाद के सिद्धान्तों के अनुरूप, जिन्हें अडिग रूप से अमल में लाया जाता है, शिक्षा-संचालन का प्रत्येक निकाय मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियत और उससे ऊंचे शिक्षा-निकाय के अधीन होता है। इससे जन-शिक्षा के देशव्यापी विकास के मूलभूत प्रश्नों के निर्णयों की अवश्यक एकता और स्थानीय जरूरतों तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखना सम्भव होता है। कार्यों की आदर्श जानकारी और लोगों के बीच सजीव संगठनात्मक कार्य पर आधारित सक्रिय संचालन के रूप में जनवादी केन्द्र-वाद ठोस शक्ल में सामने आता है।

सोवियत संघ के शिक्षा-मन्त्रालय के मुख्य कार्यभार हैं—

सर्वसामान्य आठवर्षीय अनिवार्य शिक्षा तथा बालकों और युवाजन के लिये सर्वसामान्य माध्यमिक (दसवर्षीय) शिक्षा की ओर संक्रमण सुनिश्चित करना, उन्हें विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों की पक्की जानकारी देना, उनमें उच्च कम्युनिस्ट चेतना पैदा करना, उनका सौन्दर्यबोधात्मक, मानसिक और शारीरिक विकास करना, युवाजन को जीवन, श्रम और सजग व्यवसाय-चुनाव के लिये तैयार करना;

जन-शिक्षा-प्रणाली को और विकसित करना तथा सुधारना, सामान्य शिक्षा के स्कूलों और स्कूलपूर्व तथा ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं के जाल और बालकों की सार्वजनिक शिक्षा-दीक्षा के अन्य रूपों का भी विकास करना;

सामान्य माध्यमिक पोलीटेक्निकल शिक्षा और छात्रों के श्रम-प्रशिक्षण का सार-निरूपण, सामान्य शिक्षा के माध्यमिक स्कूलों की शिक्षा-योजनाओं और पाठ्यक्रमों को सुधारना, उनके आधार पर प्रामाणिक पाठ्यपुस्तकों की तैयारी और उन्हें प्रकाशित करना, स्कूलों, स्कूलपूर्व और ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं के विधि-सम्बन्धी निर्देशन को बेहतर बनाने के लिये संघीय जनतन्त्रों को सहायता देना;

अध्यापकों, शिक्षकों और उच्च तथा माध्यमिक अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं के वैज्ञानिक-शिक्षाशास्त्रीय कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण और योग्यता बढ़ाने की प्रणालियों का संगठन और उनका सुधार करना;

देश में शिक्षाशास्त्रों के क्षेत्रों में अनुसन्धान का विकास और स्कूलों और अन्य शिक्षा-संस्थाओं में इन शास्त्रों की उपलब्धियों का व्यावहारिक उपयोग करना;

शिक्षा-प्रक्रिया और विज्ञान तथा प्रविधि के विकास के आधुनिक स्तर

के अनुरूप सामान्य शिक्षा-स्कूलों, अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं, स्कूलपूर्व तथा ग़ैरस्कूली बाल-संस्थाओं को साज़सामान तथा शिक्षण-सहायक सामग्री से लैस करना ;

श्रम का वैज्ञानिक संगठन लागू करना, मन्त्रालय के अन्तर्गत संस्थाओं, संगठनों और उद्यमों के लिये कुशल कार्यकर्त्ताओं की पूर्ति सुनिश्चित करना, कर्मियों के ज्ञान और अनुभव के उपयोग की श्रेष्ठ परिस्थितियां पैदा करना, अपने को अच्छे विशेषज्ञ सिद्ध करनेवाले युवाजन को संचालन-कार्य में आगे बढ़ाना ;

अध्यापकों, उच्च और माध्यमिक अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थाओं के विद्यार्थियों और मन्त्रालय के अन्तर्गत आनेवाली अन्य संस्थाओं, संगठनों तथा उद्यमों के मजदूरों और कर्मचारियों की रिहायशी, सांस्कृतिक और रोज़मर्रा के जीवन की परिस्थितियों को बेहतर बनाना।

सोवियत संघ का शिक्षा-मन्त्रालय संघीय जनतन्त्रों के शिक्षा-मन्त्रालयों के माध्यम से मूलभूत कार्यभारों को पूरा करता है। स्वावलम्बी जनतन्त्रीय शिक्षा-मन्त्रालयों की स्थापना स्थानीय जातीय विशिष्टताओं, रस्म-रिवाजों, जीवन के ढंग, आबादी की परम्पराओं तथा मनोरचना को पूरी तरह और सभी पहलुओं से ध्यान में रखना तथा इस तरह जातीय समाजवादी संस्कृति के विकास के लिये अधिक अनुकूल परिस्थितियां पैदा करना सम्भव बनाती है। संघीय जनतंत्रों के शिक्षा-मन्त्रालयों का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है। शिक्षा-विकास का संचालन करते हुए वे प्रारम्भिक स्कूलों के लिये पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यक्रम, मातृभाषा और रूसी भाषा तथा साहित्य, जनतन्त्र के इतिहास और भूगोल के पाठ्यक्रम तथा दृश्यमान सहायक सामग्री तैयार, पुष्ट और प्रकाशित करते हैं और उनके अनुरूप विधि-सम्बन्धी तथा सहायक शिक्षा-सामग्री तैयार और प्रकाशित करते हैं, स्कूलों के लिये आवश्यक अध्यापकों की व्यवस्था करते हैं तथा नियमित रूप से स्कूलों के शिक्षा-दीक्षा कार्य को जांचते हैं।

शिक्षा-मन्त्रालय जन-शिक्षा की संस्थाओं के संचालन का व्यावहारिक कार्य जन-शिक्षा के प्रदेश, इलाक़ा, नगर और हलक़ा विभागों के माध्यम से पूरा करते हैं।

संघीय जनतंत्र के शिक्षा-मन्त्रालय द्वारा नियुक्त किये गये अध्यक्ष जन-शिक्षा के प्रदेश (इलाक़ा) विभागों का संचालन करते हैं।

अध्यापकों के ज्ञान-सुधार का संस्थान, स्कूलों को शिक्षा-सामग्री और प्रयोगशाला के आवश्यक साजसामान से लैस करनेवाला केन्द्र, बाल-प्रकृति-प्रेमियों और बाल-प्राविधिकों के केन्द्र, पर्यटन-केन्द्र और अन्य बाल-संस्थायें सीधे तौर पर प्रदेश (इलाक़ा) जन-शिक्षा-विभागों के अधीन हैं।

जन-शिक्षा के प्रदेश (इलाक़ा) विभागों की संगठनात्मक गतिविधियों के क्षेत्र में शामिल हैं –

१) स्कूलों के शिक्षा-दीक्षा कार्य, जन-शिक्षा-संस्थाओं की शिक्षण और प्रशासकीय-प्रबन्धकीय गतिविधियों के प्रश्नों के बारे में सोवियत संघ तथा संघीय जनतन्त्रों की सर्वोच्च सोवियतों के आदेशों, सरकार और उच्च संस्थाओं के निर्णयों और आदेशों की पूर्त्ति।

२) संचालन और अध्यापन-कार्यकर्ताओं की जांच, चुनाव, नियुक्ति और प्रशिक्षण।

३) जन-शिक्षा के हलक़ा (नगर) विभागों, स्कूलों, अध्यापकों और अन्य बाल-संस्थाओं के कार्य का नियन्त्रण।

४) शिक्षाशास्त्रीय और विधि-सम्बन्धी हिदायतें।

५) सम्पादन-प्रकाशन-सम्बन्धी कार्यकलाप।

६) श्रेष्ठ स्कूलों, अध्यापकों और जन-शिक्षा-संस्थाओं के अनुभव का अध्ययन, सामान्यीकरण और प्रचार।

स्कूली कार्यों के संचालन-निकायों की शृंखला में जन-शिक्षा का हलक़ा (नगर) विभाग सब से नीचे की, आधारभूत कड़ी है।

वे स्कूलों, बालोद्यानों और जन-शिक्षा की अन्य संस्थाओं का सीधे संचालन करते हैं।

जन-शिक्षा के हलक़ा (नगर) विभाग के संचालन-अधिकारियों में शामिल हैं – संचालक, स्कूलों के इन्स्पेक्टर, अन्य शिक्षा-दीक्षा-संस्थाओं (उनकी कुछ संख्या होने पर) के इन्स्पेक्टर और अन्य कर्मचारी।

ये विभाग मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतों और उनकी कार्यकारिणी समितियों, जन-शिक्षा के प्रदेश (इलाक़ा) विभागों तथा स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतन्त्रों के शिक्षा-मन्त्रालयों के निर्देशन में काम करते हैं।

जन-शिक्षा के क्षेत्रीय, हलक़ा और नगर विभागों के संगठनात्मक-शिक्षाशास्त्रीय कार्य में शामिल है –

१) जन-शिक्षा-संस्थाओं की शिक्षा-दीक्षा-सम्बन्धी और प्रशासकीय-प्रबन्धकीय गतिविधियों के प्रश्नों के बारे में क़ानूनों, निर्णयों और आदेशों को अमली शक्ल देना;

२) अध्यापकों की जांच, चुनाव और प्रशिक्षण;

३) स्कूलों और अन्य शिक्षा-संस्थाओं के कार्य का नियन्त्रण;

४) शिक्षाशास्त्रीय अनुदेश।

विभाग-संचालक को उच्च निकायों के निर्णयों, आदेशों और आज्ञाओं के आधार पर आदेश और आज्ञायें देने का अधिकार है।

जन-शिक्षा-विभागों की सारी गतिविधियां सबसे पहले तो स्कूलों के संचालकों और अध्यापकों के कार्य को संगठित करने, उनके बहुमुखी कार्यकलापों से सम्बन्धित प्रश्नों के चिन्तनपूर्ण और ठोस हल ढूंढने की दिशा में उन्मुख रहती हैं।

जन-शिक्षा के हलक़ा (नगर) विभागों का मुख्य कार्यभार है – स्कूलों के काम को बेहतर बनाना, प्रत्येक स्कूल की शिक्षा-दीक्षा प्रक्रिया की जानकारी हासिल करना और जटिलतम तथा कठिनतम प्रश्नों के हल के लिये ठीक वक़्त पर अध्यापकों की मदद करना।

शिक्षा-संचालन-निकायों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है – अपने नीचेवाले निकायों और शिक्षा-संस्थाओं के कार्य का निरीक्षण करना, नियन्त्रण के साथ-साथ काम के दोषों को दूर करने और उनकी रोक-थाम के लिये अमली मदद देना, प्रगतिशील शिक्षाशास्त्रीय अनुभव को व्यवहार में लाना।

जन-शिक्षा-विभागों के इन्स्पेक्टर स्कूली जीवन के सभी पहलुओं का गहन तथा विधिवत् निरीक्षण और इसके बाद अपने आदेशों की पूर्त्ति की जांच करते हैं। स्कूली निरीक्षण से सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मांगें ये की जाती हैं – तथ्यों के विश्लेषण और सामान्यीकरण की क्षमता, नवीनतम ज्ञान और प्रगतिशील अनुभव से अध्यापकों को समृद्ध करना, अच्छे काम के उदाहरणों को सब की उपलब्धि बनाना।

स्कूलों के कार्य-जांच की योजना इस तरह बनाई जाती है कि शिक्षावर्ष के दौरान हर स्कूल की कम से कम एक बार जरूर जांच हो जाये। जांच-

कार्य के लिये अध्यापक-प्रशिक्षण-संस्थानों और विद्यालयों, अध्यापकों के ज्ञान-सुधार के संस्थानों और शिक्षाशास्त्रीय कक्षों के कार्यकर्त्ताओं को हिस्सा लेने के लिये आमन्त्रित किया जाता है। इससे स्कूल की प्रक्रियाओं के सार की गहराई में जाना और इस आधार पर अध्यापकों के शिक्षा-दीक्षा-कार्य का स्तर और प्रभावशीलता बढ़ाने के लिये आवश्यक क़दम उठाना सम्भव होता है।

स्कूली छात्रों की सामान्य शिक्षा के नये सार की ओर संक्रमण ने अध्यापन की नयी विधियों की मांग की।

स्कूलों का कार्यभार छात्रों को विज्ञानों के मूलभूत सिद्धान्तों की अच्छी जानकारी देना, उन में किसी क्षेत्र की योग्यता और कुशलता पैदा करना ही नहीं है, बल्कि पढ़ने के शौक़ को जन्म देना, ज्ञान-अर्जन की तीव्र इच्छा जगाना, ज्ञान-वर्द्धन की उनकी सक्रियता और स्वावलम्बिता का अधिकतम विकास करना भी है।

इस समय स्कूलों के विधि-सम्बन्धी संचालन का मुख्य सार यह है कि शिक्षण के प्रगतिशील, अधिक प्रभावपूर्ण रूपों और विधियों तथा शिक्षाशास्त्रीय उपलब्धियों का अध्ययन किया जाये और उन्हें शिक्षा-संस्थाओं के व्यवहार में लाया जाये।

हलक़ा (नगर) विधि-कक्षों के माध्यम से हलक़ों और नगरों में विधि-सम्बन्धी संचालन किया जाता है। संचालन का यह रूप पुराना है, मगर अब इसने नया सार प्राप्त कर लिया है, अधिक उद्देश्यपूर्ण तथा उपयुक्त हो गया है। इस समय विधि-कक्षों के अन्तर्गत अनुभवी अध्यापकों की परिषदें बनायी जाती हैं, जो अध्यापकों के दलों और स्कूली विधि-सम्बन्धी संघों के काम का निर्देशन करती हैं।

स्कूलों की अध्यापक-परिषदों की भूमिका भी बढ़ती जाती है। वे केवल विचार-विनिमय ही नहीं करतीं, बल्कि शिक्षा-दीक्षा-प्रक्रिया के और सुधार से सम्बन्धित ढेरों प्रश्नों को भी हल करती हैं।

सोवियत राज्य में पूरा समाज स्कूल की ओर बहुत ध्यान देता है, सारी जनता इसकी चिन्ता करती है। कारख़ानों, सामूहिक और राजकीय फ़ार्मों, कार्यालयों और विभिन्न संस्थाओं के पार्टी संगठन, ट्रेड यूनियन और युवा कम्युनिस्ट संघ स्कूलों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं और परिवारों में छात्रों के पालन-शिक्षण की परिस्थितियों में दिलचस्पी लेते हैं।

सोवियत देश का वर्त्तमान और भविष्य बहुत हद तक जन-शिक्षा और स्कूली कार्य के संगठन पर निर्भर है। इसीलिये कोई भी स्कूली समस्या किसी एक विभाग की समस्या नहीं मानी जा सकती। जन-शिक्षा के ध्येय को सारे सोवियत समाज की उदारतापूर्ण और निस्स्वार्थ सहायता सोवियत शिक्षा-प्रणाली के लिये कम्युनिस्ट समाज के भावी निर्माताओं की शिक्षा-दीक्षा के कार्य को सफल ढंग से सम्पन्न करना सम्भव बनाती है।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन
२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ